3.4

बृहज्ज्योतिषसार

भाषा टीका सहित

* प्रकाशक-फर्म *

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर

राजादरवाजा, वाराणसी - २२१००१

❀ श्रीहरिः ❀

❀ बृहज्ज्योतिषसारः ❀

देवज्ञरत्न हारान्वितः

सोदाहरण भाषा टीका सहितः ।

अस्य सङ्गृहीता-तथा टीकाकार—

श्रीमज्ज्यौतिषीन्द्र मुकुटमणि श्री ६ छत्रधर पाण्डेयात्मजोऽखिल

भारत वर्षीय संस्कार समिति प्रधान वैदिक

कर्मकाण्डाचार्य श्रीशङ्कर पाठशाला ध्यक्ष ।

देवज्ञभूषण पण्डित श्री मातृ प्रसाद पाण्डेय

श्रौत्र स्मार्तः

❀ प्रकाशक-फर्म ❀

बाबू बैजनाथप्रसाद बुकसेलर,

राजादरवाजा वाराणसी—२२१००१

मुद्रक—श्री विश्वेश्वर प्रेस बुलानाला वाराणसी ।

सम्वत् २०४४ मूल्य० ६०) | सन् १९८७ ई०

* श्री *

विज्ञप्तिः—

अत्यक्षाणि शास्त्राणि विवाद स्तस्य केवलः ।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्क यत्र साक्षिणौ ॥

जन साधारण से लेकर बड़े बड़े विद्वान तक मानते आये हैं कि समयपर आरम्भ किया हुआ कार्य थोड़े प्रयत्न से भी सहज साध्य हो जाता है, असमय का प्रारम्भ किया कार्य कोटि यत्न करने पर भी प्रायः सिद्ध नहीं होता है। यही कारण है कि प्राचीन कालमें कार्य आरम्भ करने के निमित्त शुद्ध समय निर्णय पर अधिक ध्यान दिया गया है इतना अधिक कि इसका एक पृथक् विज्ञान ही बन गया है सब विज्ञान या ज्योतिष विद्या इसी विज्ञान का नाम है जिसकी आवश्यकता रंक कुटीर से लेकर राज भवन तक समान रूपसे रहती है पर समय निर्धारण की कला सहजगम्य नहीं वह गहन है कि उसके परिज्ञान के लिये सूर्य सिद्धान्त आदि सिद्धान्त ग्रन्थ और भास्वती आदि करण ग्रन्थों की रचना करनी पड़ी है मुहूर्त्तादि साधन के निमित्त नारद संहितादि तथा मुहूर्त्त चिन्तामणि आदि ग्रन्थ बनाये गये हैं।

इस कराल कलिकाल का ज्यों ज्यों प्रभाव बढ़ता है त्यों त्यों लोगों की बुद्धि क्षीण होती जाती है ऐसी अवस्था में समस्त शास्त्र पढ़ लेनेपर भी तत्त्व समझना दुरूह होरहा है अतएव सबजनोपकारार्थ "बृहज्ज्योतिषसार नामक ग्रन्थका संग्रह हुआ। उसको प्रायः प्रसिद्ध २ सभी प्रकाशकोंने प्रकाशित किया है परन्तु संग्रह कर्ता इसके सुधारकी ओर दृष्टि न देकर" "मक्षिका स्थाने मक्षिका पातः" लिखते जाते हैं सन् १९३७ ईसवी में मैं अपने बृहज्ज्योतिषसार में दैवज्ञ रत्न हार में से ७ रत्नों को समावेशित करदिया जिससे जनता को बहुतही श्रेयस्कर हुआ बृहज्ज्योतिषसार के सुधार के लिये विद्वानों का विशेष आग्रह देखकर अतः प्रकरण के अनुसार इसको मैं सरला नाम्नि सोदाहरण भाषा टीका सहित संगुम्फित किया पृ० १२ में १६४ वर्षो का अधिकमास तथा पृ० १३, १४ में ३६० वर्षों के मेषादि द्वादश संक्रान्तियों के प्रवृत्ति के वारादि लिखदिया है और १७४ पृ० में ६०० वर्षोंका अयनांश लिखदिया है और आगे इनको जान लेने के सरल उपाय भी दर्शा दिया है, आशा है कि इससे विद्वान तथा छात्रवर्गों का विशेष कल्याण होगा।

यह संस्करण बाबू बैजनाथ प्रसाद जी बुक्सेलर, के चिरंजीवी पुत्रके परमोत्साह से हुआ हैं। अतः श्री विश्वेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि आपको चिरजीवी बनाये रहें और धार्मिक मेधाकी वृद्धि करते रहें।

विद्वद्वृन्द प्रेमाभिलाषी

मातृप्रसाद पाण्डेय श्रौत्र स्मार्त

श्री शंकर पाठशाला मो० आही, पो० कछवा

जि० मिरजापुर ।

समर्पण

श्रीपूज्यतात चरणकमल !

उसपरब्रह्मपरमेश्वर की परम पूज्य बैकुण्ठ धाम में आपके वही जान
प्रफुल्लता हो सकती है जो आपने मेरे हृदय क्षेत्रपर ज्योतिषागम
आदिका अंकुर जमाया है उसके परिणामस्वरूप हमने
कई पुस्तकें पुष्पवत् आपके कर सरोरुह में समर्पित
किया है अब यह "बृहज्ज्योतिषसार-दैवज्ञ-
रत्नहारान्वित" भाषाटीका सहित सुमन
भी आपके ही करकमलों में समर्पित
करता हूँ, इस हृदय ग्राही
स्वच्छ सुमन को अवश्य
अपनायेंगे।

भवदीय वात्सल्य भाजन
मातृ प्रसाद पाण्डेय (मलाँव)
सरयू पारीण

वृहज्ज्योतिषसार विषयानुक्रमणिका

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त ।

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

राजादरवाजा, वाराणसी ।

शोधनपत्र-

शुभौ शुभो ३५	ज्यहि ज्यांहि ४६	
भद्रा 'जया ३८	वर्णे वारुणो ६०	चारो वारो १५२
पूज्यः पूज्यः ४५	कज कुज ६१	रचै रसै १५२
१६ २६ ४५ प० २४	वीज्य रवीज्य ८४	अक्तयायु अक्तयायुश्च १५२
चार चर ४५-२६	कौत्र क्षौत्र ६१	मान्य मन १७६
वं० ध० ४५-३१	चरय चरत्रयदोषको १०६	सूर्येक सूर्येर्क ३८
भुम्निः भूम्निः ४६	राशिविचार दशाविचार १४६	भौगे भौमे ३८
शव्य श्व्य ३८		

१ नोट—पेज २६ में जो चक्र है उसमें नामके दो कोष्ठ है प्रथमकोष्ठ शुद्ध है दूसरा अशुद्ध है उसका सुधार इस प्रकार करना समुचित होगा प्रथम नाम कोष्ठ में जहां जहां लघु है दूसरे में क्षिप्रजाने इसी प्रकार उग्र क्रूर। मिश्र-साधारण। ध्रुव-स्थिर। मृदु मैत्र। तीक्ष्ण दारुण ! चर-चल। इस प्रकार शुद्ध करिये।

२ नोट—रविवार वालीलैनमें अनुराधा के जगह अभिजित मंगलवार के दो जगह भ. मृ. जगह आर्द्रा बुध मृगशिरा के जगह मूल। पेज २१६ में जो चक्र है वह २१३ पेज में समझना।

बेचने का और दुकान को धरनेका मुहूर्त—

३ नोट—पूर्वा द्वीश कृशानुसार्प यमभे केन्द्र त्रिकोणे शुभैः।
षट् त्र्यायेष्व शुभै विनाघटतनु सद्विक्रयः सत्तिथौ॥
रिक्ता भौमघटान् विता च विपणमैत्र ध्रुवक्षिप्रभे।
लग्ने चन्द्रसिते व्ययाष्ट रहितैः पापैः शुभै द्व्याय खे॥

पूर्वा ३ विशाखा कृत्तिका श्लेषा और भरणी नक्षत्र केन्द्र १।४।७।१० और त्रिकोण ९।५ में शुभ ग्रह छठे तीसरे और ११ वें पापग्रह हो कुम्भ लग्न छोड़कर अन्य लग्नहो श्रेष्ठ तिथियों में बेचना शुभ है। रिक्ता (४।९।१४) तिथि मंगलवार, कुंभ लग्नको छोड़कर मृगशिरा, रेवती, चित्रा अनुराधा, तीनों उत्तरा रोहिणी, हस्त, अश्विनी पुष्य अभि-जित नक्षत्रों में लग्नमें चन्द्रमा शुक्र हो अष्टम स्थान में पापग्रह न हो और दूसरे ग्यारहवें और दशम स्थान में शुभ ग्रह होतो दुकान खोलना उत्तम है।

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

अथ बृहज्ज्योतिषसारः--

भाषाटीका सहितः ।

मङ्गला चरण—

विश्वेश्वरं विश्ववन्द्यं पार्वती वल्लभं विभुम् ।
प्रणम्यकमलाकान्तं श्रीराधारमणं हरिम् ॥ १ ॥
मया मातृप्रसादेन सरलाटीकयान्वितः ।
क्रियते हि बृहज्ज्योतिः सारोऽयंविदुषां मुदे ॥ २ ॥

टीका-जगत संवन्दनीय पार्वति के पति व्यापक विश्वेश्वर को तथा कमलाकान्त राधारमण को प्रणाम करके दैवज्ञों (विद्वानों) के प्रसन्नार्थ मैं मातृप्रसाद पाण्डेय सरयू पारीण श्रौत स्मार्त सरला टीका से युक्त बृहज्ज्योतिषसार को बनाता हूँ ॥ १ ॥ २ ॥

संवत्सर नाम परिज्ञान—

शाकेन्द्रकालेऽर्कयुते कृते शून्यरसैर्हृते ।
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभावाद्याः बुधैः क्रमात् ॥ ३ ॥

टीका-शालिवाहन के शाके में संवत्सर के नाम जानने की यह रीति है कि शाके की संख्या में १२ मिलावे और उसको ६० से भाग दे जो शेष बचे वही संवत्सरका नाम जाने ॥ ३ ॥

संवत्परिज्ञान ।

स एव पञ्चाग्निकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ।
रेवायाः उत्तरे तीरे संवन्नाम्नाऽतिविश्रुतः ॥ ४ ॥

टीका-शालिवाहन के शाकेमें १३५ मिलाने पर वही संवत् हो जाता है जो रेवा नदीके उत्तर तट में संवत् नाम से प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥

संवत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्हृतः ।
शेषाः संवत्सराः ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ५ ॥

टीका-संवत्सर के अङ्कों में ९ मिलाकर ६० से भाग देने से जो शेष बचे

उन्हें प्रभवादि संवत्सर जानना। जैसे सम्वत् १९६६ में ९ मिलाने से १९७५ हुए और ६० का भाग देनेसे शेष ५५ रहे अतः प्रभवादि ५५ वीं संख्या का "दुर्मति" नामक सम्वत् हुआ ॥ ५ ॥

संवत्सरोंके नाम।

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः।
अंगिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥ ६ ॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ ७ ॥
सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः।
नंदनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ ८ ॥
हेमलंबी विलंबी च विकारी शार्वरी प्लवः।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ ९ ॥
प्लवंगः कीलकः सौम्यः साधारणो विरोधकृत।
परिधावी प्रमादी च आनंदो राक्षसो नलः ॥ १० ॥
पिंगलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्र दुर्मतिः।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥ ११ ॥

प्रभवादिक ६० संवत्सरों के नाम नीचे के चक्र से स्पष्ट हैं।

सं० नाम	सं० नाम	सं० नाम	सं० नाम	सं० नाम
१ प्रभव	१३ प्रमाथी	२५ खर	३७ शोभन	४९ राक्षस
२ विभव	१४ विक्रम	२६ नंदन	३८ क्रोधी	५० नल
३ शुक्ल	१५ वृष	२७ विजय	३९ विश्वावसु	५१ पिंगल
४ प्रमोद	१६ चित्रभानु	२८ जय	४० पराभव	५२ कालयुक्त
५ प्रजापति	१७ सुभानु	२९ मन्मथ	४१ प्लवंग	५३ सिद्धार्थी
६ अङ्गिरा	१८ तारण	३० दुर्मुख	४२ कीलक	५४ रौद्र
७ श्रीमुख	१९ पार्थिव	३१ हेमलंबी	४३ सौम्य	५५ दुर्मती
८ भाव	२० व्यय	३२ विलंबी	४४ साधारण	५६ दुंदुभि
९ युवा	२० सर्वजित्	३३ विकारी	४५ विरोधकृत्	५७ रुधिरोद्गारी
१० धाता	२२ सर्वधारी	३४ शर्वरी	४६ परिधावी	५८ रक्ताक्षी
११ ईश्वर	२३ विरोधी	३५ प्लव	४७ प्रमादी	५९ क्रोधन
१२ बहुधान्य	२४ विकृति	३६ शुभकृत	४८ आनन्द	६० क्षयः

संवत्सरों का फल ।

प्रभवाद् द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं च कारयेत् ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाऽशुभम् ॥
एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पञ्चद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ।
त्रिषष्ठे तु समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः ॥१२॥

टीका–प्रभवादि संवत्सरोंमें से वर्तमान् संवत को दूना करे फिर तीन घटाकर सातसे भागदे जो शेष बचे उनसे शुभाशुभ फल जाने, जैसे १ वा ४ बचे तो दुर्भिक्ष, ५ वा २ बचे तो सुभिक्ष ३ वा ६ बचे तो साधारण और शून्य बचे तो निःसंदेह पीडा जानो ॥ १२ ॥

संवत्सरों के स्वामी ।

युगं भवेद्वत्सरपंचकेन युगानि च द्वादशवर्षषष्ट्या ।
भवन्ति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥
विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टा अहिर्बुध्न्य पितरः ।
विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनौ नासत्यनामानौ च भगः ॥१३॥

टीका—पाँच वर्षका एक युग होता है इस रीति से ६० वर्ष में बारह युग हुए इन बारह युगों के क्रमसे विष्णु, बृहस्पति, इन्द्र, अग्नि, ब्रह्मा, शिव, पितर, विश्वे-देव, चन्द्र, अग्नि, अश्विनीकुमार और सूर्य्यभगवान् को स्वामी जानो १३॥

संवत्सरों के भेद ।

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोन्यस्तस्मादिडान्विदिति पूर्वपदाद्वत्सरयुः
एवंयुगेषुसकलेषुतदीय नाथावन्ह्यर्कशीतगुविरंचिशिवाःक्रमेण १४

टीका–इष्टशक में ५ का भाग देने से जो बचे उनसे क्रमानुसार संवत् के स्वामी जाने, प्रथम संवत् के स्वामी अग्नि, दूसरे के सूर्य, तीसरे के चन्द्र, चौथे के ब्रह्मा और पाँचवें संवत् के स्वामी शिव हैं ॥ १४ ॥

दूसरामत ।

आनन्दादेर्भवेद्ब्रह्मा भावादेर्विष्णुरेव च ।
जयादेः शङ्करः प्रोक्तः सृष्टिपालननाशकाः ॥ १५ ॥

टीका–आनन्दादि २० संवत्सरों के स्वामी सृष्टि रचनेवाले ब्रह्माजी हैं, भावादि २० सम्वत्सरों के स्वामी सृष्टि के पालन पोषण करने वाले विष्णु हैं और जयादि २० सम्वत्सरों के स्वामी सृष्टि के संहार करनेवाले रुद्र हैं ॥ १५ ॥

प्रभवादि सम्वत्सरों का फल—

काश्यपस्थामीतयश्चाग्निकोपश्चव्याधयोभुवि। प्रभवाब्देमंदवृष्टिस्तथापिसुखिनोजनाः ॥ १ ॥
दंडनीतिपराभूपाबहुसस्यार्घवृष्टयः। विभवाब्देऽखिलालोकाः सुखिनस्युर्विवैरिणः ॥ २ ॥
शुक्लाब्देनिखिलालोकासुखिनःस्वजनैः सह। राजानोयुद्ध निरताः परस्परजयैषिणः ॥ ३ ॥
प्रमोदाब्देप्रमोदंति राजानोनिखिलाजनाः। वातरोगावीतभयादितिशत्रुविनाशकाः ॥ ४ ॥
नचलंतिचलालोकास्वस्वमार्गात्कथंचन। अब्दे प्रजापतौनूनं बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ ५ ॥
अन्नाद्यं भुज्यतशश्वज्जनैरतिथिभिःसह। अङ्गिराब्देऽखिलालोकाभूपाश्चकलहोत्सुकाः ॥ ६ ॥
श्रीमुखाब्देखिलाधात्रीबहुसस्यार्घसंयुता। अध्वरेनिरता विप्रा वीतरागाविवैरिणः ॥ ७ ॥
भावाब्दे प्रचुरारोगामध्यसस्यार्घवृष्टयः। राजानोयुद्धनिरतास्तथापिसुखिनोजनाः ॥ ८ ॥
प्रभूत पयसोगावः सुखिनः सर्वजंतवः। सर्वकामक्रियायुक्तोयुवाब्दयुवतीजनः ॥ ९ ॥
धात्रिवर्षेऽखिलाःराज्ञा सदा युद्धापरायणाः। सम्पूर्णधरणीभाति बहुसस्यार्घ वृष्टिभिः॥१०॥
ईश्वराब्देऽखिलाजंतु धात्रीधात्रीवसर्वदा। पोषयत्यतुलेनान्नफलतोयस्तुत्रीहिभिः ॥११॥
अनीतिरतुलावृष्टिबहुधान्याख्य वत्सरे। विविधधान्य निचयः सुखपूर्णाखिलाधरा ॥१२॥
नमुंचहिपयोवाहः कुत्रचित्कुत्रचिज्जलम्। मध्यमावृष्टिरर्घस्वन्नमब्दे च प्रमाथिनि ॥१३॥
विक्रमाब्देधराधीशा विक्रमाक्रांतभूमयः। सर्वत्र सर्वदा मेघामुंचति प्रचुरं जलम् ॥१४॥
वृषाब्देनिखिलाःचमेशायुध्यंति वृषभाद्दव। विद्याप्रसक्ता विप्रेन्द्राः पूज्यते सततं भुवम् ॥१५॥
चित्तार्घवृष्टिसस्याद्यैर्विचित्रानिखिलाधरा। निराकुलाखिलालोकश्चित्रभान्वाख्यवत्सरे ॥१६॥
सुभानुवत्सरे नूनंभूमिपानां च विग्रहः। भातिभूरिसस्याढ्याभयंकरभुजंगमाः ॥१७॥
कस्यचिन्निखिलालोकास्सरंति प्रतिपन्नतां। नृपाहुर्वंदयता द्रोगाभैषज्यस्तारणाब्दके ॥१८॥
पार्थिवाब्दे तु राजानः सुखिनः सुप्रजाभृशम्। बहुभिः फलपुष्पाद्यैर्विविधैश्च पयोधरैः॥१९
व्ययाब्दे निखिलालोकाबहुव्ययपराभृशम्। विरमन्तीह तुरगैरथैर्भूताति सर्वदा ॥२०॥
सर्वजिद्वत्सरे सर्व जनास्तिदशरात्रिकाः। राजानोविलयं यांति भीमसंग्रामभूमिपाः ॥२१॥
सर्वधार्यब्दकेभूपाः प्रजापालनतत्पराः। प्रशांतवैराः सर्वत्र बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥२२॥
विरोधीवत्सरे भूपाः परस्परविरोधिनः। भूरिभूरियुताभूमिभूरिवारि समाकुलाः ॥२३॥
प्रकृतिर्विकृतिर्यातिविकृतिप्रकृतिस्तथा। तथापि सुखिनोलोकाश्चास्मिन्विकृति वत्सरे ॥२४॥
खराब्दे निःस्वनालोका अन्यो न्यसमरोत्सुकाः। मध्यमावृष्टि रत्युग्रे रोगभूयात्प्रकंपनं ॥२५॥
नंदनाब्दे सदापृथ्वी बहुसस्यार्घवृष्टयः। आनन्दाख्येखलानांचजन्तूनांसमहीभुजाम् ॥२६॥
विजयाब्दे तु राजानः सदाविजयकांक्षिणः। सुखिनोजंतवः सर्वे बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥२७॥
जयमङ्गलघोषाद्यैर्धरणी भाति सर्वदा। जयाब्दे धरणीनाथाःसंग्रामे जयकांक्षिणः ॥२८॥
मन्मथाब्दे जनाः सर्वे तस्करायां तिलोलुपाः। शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवाधराः ॥२९॥
दुर्मुखाब्दे मध्यवृष्टि रीति चौराकुलाधराः। महावैरामहीनाथा वीरवारणवाजिभिः ॥३०॥

हेमलंबे त्वीतिभीतिर्मध्ये सस्यार्घवृष्टयः । भातिभूपतिक्षोभाखड्गविद्युल्लतादिभिः ॥३१॥
विलंबवत्सरे भूपाः परस्पर विरोधनः । प्रजापीडात्वनर्घत्वं तथापि सुखिनोजनः ॥३२॥
विक्रमेऽब्दे खिलालोकाः सरोगा वृष्टिपीडिताः । पूर्वसस्यफलंस्वल्पं बहुलंचापरं फलम् ॥३३॥
शर्वरीवत्सरेपूर्णधरासस्यार्थवृष्टिभिः । जनाश्चसुखिनः सर्वेराजानः स्युर्विवैरिणः ॥३४॥
प्लवाब्दे निखिलाधात्री वृष्टिभिः परिपूरिता। प्रभवं महातिरोगाव्याकुलात्वीतिभीतितः॥३५॥
शुभकृद्वत्सरेपृथ्वीराजते विविधोत्सवैः । आतङ्कचौराभयदा राजानः समरोत्सुकाः ॥३६॥
शोभने वत्सरे धात्री प्रजानां रोगशोकदा । तथापि सुखिनो लोकाबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥३७॥
क्रोधब्दे त्वखिलालोकाः क्रोध लोभपरायणाः । इति दोषेण सततंमध्यसस्यार्घवृष्टयः॥३८॥
अब्देविश्वावसोः शश्वद्घोरः रोगधरांसु च। स्वल्पवृष्टिःप्रभवति राजानोभयकातराः ॥३९॥
पराभवाब्दे राजा स्यात्स परसह शत्रुभिः । गृहंत्यक्त्वानरारोगात् सस्यंपूर्वोऽल्पवृष्टयः॥४०॥
प्लवङ्गाब्दे मध्यवृष्टी रोग चौराकुलाधरा । अन्योन्य समरेभूपाः शत्रुभिर्हृतभूतयः ॥४१॥
कीलकाब्दे त्वीतिभीतिप्रजाक्षोभनृपभयो। तथापिवर्द्धते लोकः समाधान्यर्घवृष्टिभिः ॥४२॥
सौम्याब्देत्वखिलालोका बहुसस्यार्घवृष्टिभिः । विवैरिणो धराधीशाविप्राश्चांधपरंपरा ॥४३॥
साधारणाब्दे वृष्ट्यर्द्धभयं च मरणंमनः । मध्यसंपद्धराधीश प्रजाः स्युः स्वस्थचेतसः ॥४४॥
विरोधकृद्वत्सरे तु परस्पर विरोधिनः । सर्वेजनानृपाश्चैव मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥४५॥
भूपालत्रोमहा रोगोमध्य सस्यार्घवृष्टयः । दुखिनो जंतवः सर्वे वत्सरे परिधाविनः ॥४६॥
प्रमाथीवत्सरे तत्र मध्य सस्यार्घवृष्टयः । प्रजानां जीवदुःखेसमात्सर्याः क्षितीश्वराः ॥४७॥
आनन्दाब्दे खिलालोकाः सर्वादनन्दचेतसः । राजानःसुखिनः सर्वे बहुसस्यार्घवृष्टिभिः॥४८॥
स्वस्वकार्येरताः सर्वे मध्यसस्यार्घवृष्टयः। राक्षसाब्देखिलालोकाराक्षसाइवनिष्क्रिया ॥४९॥
नलाब्देमध्य सस्यार्घवृष्टिभिः प्रवराधरा । नृपसंक्षोभसंजाता भूरितस्करभीतयः ॥५०॥
पिंगलाब्दे त्वीतिभीतिमध्यसस्यार्घवृष्टयः । राजानो विक्रमक्रांताभुज्यते शत्रुमेदिनीम् ॥५१॥
वत्सरेकालयुक्ताख्येसुखिनः सर्वजंतवः । सन्त्यथापि च सस्यानि प्रचुराणि तथा गदाः॥५२॥
सिद्धार्थ वत्सरे भूपो ज्ञानवैराग्ययथाप्रजाः । सकाल वसुधा भाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः॥५३॥
रौद्राब्द नृपसंभूत क्षोभक्लेश सभागिने । सततंत्वखिलालोका मध्य सस्यार्घवृष्टयः ॥५४॥
दुर्मत्यब्देऽखिलालोका भूपादर्भतयेत्सदा । तथापि सुखिनः सर्वे संग्रामाः संतिचेदपि॥५५॥
सर्वसस्ययुताधात्री पालिता धरणीधरे । पूर्वदेशोविनाशः स्यात्क्वदुंदुभिवत्सरे ॥५६॥
आवहेनिहिताः सर्व भूपारोगैस्तथाजनाः । यथाकथंचिज्जीवंति रुधिरोद्गारि वत्सरे॥५७॥
रक्ताक्षिवत्सरे संस्थंवृद्धिवृष्टिरनुत्तमा । प्रभवंति सर्वदान्योन्यं राजानोरक्तलोचनः ॥५८॥
क्रोधनाब्दे मध्यवृष्टिः सर्वदेशे च वृष्टयः । संपूर्णमितरत्सर्वे भूपाक्रोधपरायणाः ॥५९॥
कार्पासगंध तैलेक्षुमधुसस्यविनाशनम् । क्षयमाणश्चापिनराजीवतिक्षय वत्सरे ॥६०॥

सूर्य सिद्धान्तोक्तकाल परिभाषा—

लोकानामन्त कृत्कालः कालोऽन्यः कलनात्मकः ।
सद्विधा स्थूल सूक्ष्मत्वा न्मूर्तामूर्तश्च उच्यते ॥ १६ ॥
प्राणादिः कथितो मूर्तस्त्रुट्याद्योऽमूर्तसंज्ञकः ।
षड्भिः प्राणैर्विनाडी स्यात् तत् षष्ट्यानाडिका स्मृता १७
नाडी षष्ट्या तु नाक्षत्रम होरात्रं प्रकीर्तितम् ।
तत् त्रिंशता भवेन्मासः सावनोऽर्कोदयैस्तथा ॥ १८ ॥

टीका—काल दो हैं एक लोकों को अन्त्य करने वाला और दूसरा ज्ञान स्वरूप (कलनात्मक) ज्ञानस्वरूप दो प्रकार का है एक स्थूल दूसरा सूक्ष्म स्थूल मूर्त, सूक्ष्म अमूर्त है प्राण आदि मूर्त त्रुटि आदि अमूर्त छः प्राण का विनाडी (पल) ६० पलकी नाडी (दंड) ६० घटी का अहोरात्र (एक दिन रात्रि) ३० दिनका एक सावन मास होता है ॥१६॥१७॥१८॥

मास भेद—

दर्शावधिं मासमुशन्तिचांद्रं सौरं तथा भास्कर राशि भोगात् ।
त्रिंशद्दिनं सावन संज्ञमार्या नाक्षत्रमिन्दोर्भगणाश्रयाच्च ॥ १६ ॥

टीका—शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से अमावस तक का चान्द्रमास, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक को भी चन्द्रमास कुछ लोग मानते हैं । सूर्य को एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रांति तक सौर मास होता है । किसी तिथि से आरम्भ करके ३० दिन पर्यन्त को सावन मास कहते चन्द्रमा के प्रत्येक नक्षत्रों पर घूमने से नाक्षत्र मास होता है (अश्विनी से रेवती तक एक नाक्षत्र मास) ॥१९॥

कार्यपरक ग्रहण मास—

सौरेकार्यं विवाहादि ग्रहवारादिके तथा ।
सावनगर्भ वृद्ध्यादि नाक्षत्रे मेघगर्भजम् ॥ २० ॥
व्रत यज्ञादि कं चान्द्रे मासे परिणयः चित् ।
चान्द्रस्तुद्विविधो मासो दर्शान्तः पौर्णिमान्तिकः ।
देवार्थे पौर्णिमास्यान्तो दर्शान्तर पितृ कर्मणि ॥ २१ ॥

टीका—सौर मास में विवाहादि कार्य करे, और ग्रह वारादि कार्य करे । सावन

मास में गर्भवृद्धि आदि नक्षत्र मासमें मेघ के गर्भ आदि का विचार, चान्द्र में व्रतयज्ञादिक और कोई कोई विवाह भी चान्द्र में कहा है, चान्द्रमास दो प्रकार का है एक शुक्ल प्रतिपदा से अमावस पर्यन्त, दूसरा कृष्ण प्रदिपदा से पूर्णिमा पर्यन्त । देवकार्य में पूर्णिमा पर्यन्त वाला और पितृ कार्य के लिये अमावस पर्यन्त वाला मास श्रेष्ठ है ॥ २० ॥ २१ ॥

अयन ।

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरह श्वतदामरम् ।
भवति दक्षिणमन्य ऋतुत्रयं निगदिता रजनी मारुतां हि सः २२

टीका--शिशिर, वशंत और ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की गति उत्तर दिशा में होने से इन तीनों ऋतुओं के समय को उत्तरायण कहते हैं और यही देवताओं का दिन है, इसी प्रकार वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतु में सूर्य की गति दक्षिण दिशा में होनेसे इन तीनों ऋतुओं के समयको दक्षिणायन कहते हैं और यही देवताओं की रात्रि है ॥ २२ ॥

अयनों में शुभाशुभ कर्म ।

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठा विवाहचौलव्रतबंधदीक्षाः ।
सौम्यायने कर्मशुभं विधेयं यद्गर्हितंतत्खलुदक्षिणे च ॥२३॥

टीका--गृहप्रवेश, देवप्रतिष्ठा, विवाह, मुण्डन, यज्ञोपवीत, दीक्षादि समस्तशुभकर्म उत्तरायणमें होने चाहियें और सब निन्दित कर्म दक्षिणायनमें होने चाहिये ॥२३॥

संक्रांति अनुसार ऋतुवर्णन ।

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्षट्ऋतवः स्युः शिशिरोवसन्तः ।
ग्रीष्मश्च वर्षा च शरच्च तद्वद्धेमंतनामा कथितश्च षष्ठः ॥२४॥

टीका--मकर आदि से लेकर दो राशि में सूर्य के चलने पर एक ऋतु होता है, इस रीति से जब सूर्य १२ राशियों में भ्रमण करता है तब ६ ऋतु हो जाते हैं ॥ २४ ॥

१ मकर २ कुंभ	शिशिर ऋतु १	७ कर्क ८ सिंह	वर्षा ऋतु ४
३ मीन ४ मेष	वसंत ऋतु २	९ कन्या १० तुला	शरद ऋतु ५
५ वृष ६ मिथुन	ग्रीषमऋतु ३	११ वृश्चिक १२ धन	हेमन्त ऋतु ६

तथा मतांतर ।

चैत्रादि द्विद्विमासाभ्यां वसंताद्दतवश्च षट् ।
दाक्षिणात्याः प्रगृह्णन्ति दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥ २५ ॥

टीका--चैत्रादिक दो २ महीने में एक एक ऋतु होती है, इस रीति से भी १२ महीने में ६ ऋतु हो जाती हैं, ये दक्षिण देश में देव और पितृ कर्म में प्रसिद्ध हैं ॥ २५ ॥

मतान्तर राशि के अनुसार मेषादि दो दो राशि में सूर्य के जाने से वसंत आदि ६ ऋतु होते हैं				महीने के अनुसार चैत्र से लेकर दो दो महीने में वसंत आदि ६ ऋतु होते हैं			
१ मेष २ वृष	वसंत	७ तुला ८ वृश्चिक	शरद	१ चैत्र २ वैशाख	वसंत	७ आश्विन ८ कार्तिक	शरद
३ मिथुन ४ कर्क	ग्रीष्म	९ धन १० मकर	हेमन्त	३ ज्येष्ठ ४ आषा.	ग्रीष्म	९ मार्ग. १० पौष	हेमन्त
५ सिंह ६ कन्या	वर्षा	११ कुंभ १२ मीन	शिशिर	५ श्रावण ६ भाद्र.	वर्षा	११ माघ १२ फाल्गु.	शिशिर

मास प्रकरण और मास परिज्ञान ।

पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरां याति भास्करः ।
स राशिः संक्रमाख्या स्यान्मासर्त्वयनहायने ॥ २६ ॥

टीका--पहिली राशि को छोड़कर दूसरी राशि पर जब सूर्य जाता है तब उसी राशि की संक्रांति होती है, इसी प्रकार १२ संक्रांति, मास, अयन वर्ष की गणना है ॥ २६ ॥

मासों के नाम तथा सूर्य देवता और देवी ।

मधुस्तथा माधव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथ नभो नभस्यः ।
तथैव उर्जश्च सहाःसहस्य स्तपस्त पस्यश्च यथाक्रमेण॥२७॥
अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा ।
चैत्रे मासे तु वेदांगो भानुर्वैशाख एव च ॥ २८ ॥
ज्येष्ठमासे तपेदिन्द्र आषाढे तपते रविः ।
गभस्तिः श्रावणे मासे यमो भाद्रपदे तथा ॥ २९ ॥

सुवर्णरेताश्वयुजि कार्तिके च दिवाकरः ।
मार्गशीर्षे तपेन्मित्रः पौषे विष्णुःसनातनः ॥३०॥
इत्येतेद्वादशादित्या मासनामान्यनुक्रमात् ।
केशवं मार्गशीर्षे तु पौषे नारायणं विदुः ॥
माधवं माघमासे तु गोविंदमथ फाल्गुने ॥३१॥
चैत्रे विष्णुं तथा विद्याद्वैशाखे मधुसूदनम् ।
त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आषाढे वामनं विदुः ॥३२॥
श्रावणे श्रीधरं विद्धि हृषीकेशं तु भाद्रके ।
आश्विने पद्मनाभं च ऊर्जे दामोदरं विदुः ॥३३॥
मार्गशीर्षे विशालाक्षी पौषे लक्ष्मीश्च देवताः ।
माघेतु रुक्मिणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिनामिका ॥३४॥
चैत्रेमासि रमादेवी वैशाखे मोहिनी तथा ।
पद्माक्षी ज्येष्ठमासे तु आषाढे कमलेति च ॥३५॥
कांतिमती श्रावणे च भाद्रे तु अपराजिता ।
पद्मावति आश्विने तु राधादेवी तु कार्तिके ॥३६॥

टीका-अर्थात् चैत्रादिक मासों की मधुआदि संज्ञा और सूर्य्य एवं हर महीने के देवी तथा देवता निम्नांकितचक्र सेस्पष्टतः समझ लेना चाहिए ॥३०॥३६

सं.	नामानि	नामानि	सूर्य.	देवता	देवी
१	चैत्रमास	मधु	वेदांग	विष्णु	रमा
२	वैसाखमास	माधव	भानु	मधुसूदन	मोहिनी
३	ज्येष्ठमास	शुक्र	इन्द्र	त्रिविक्रम	पद्माक्षी
४	आषाढ़मास	शुचि	रवि	वामन	कमला
५	श्रावण मास	नभ	गभस्ति	श्रीधर	कान्तिमती
६	भाद्रपदमास	नभस्य	यम	हृषीकेश	अपराजिता
७	आश्विनमास	इष	सुवर्णरेता	पद्मनाभ	पद्मावती
८	कार्तिकमास	ऊर्ज	दिवाकर	दामोदर	राधा
९	मार्गशीर्षमास	सहा	मित्र	केशव	विशालाक्षी
१०	पौषमास	सहस्य	विष्णु	नारायण	लक्ष्मी
११	माघमास	तप	अरुण	माधव	रुक्मिणी
१२	फाल्गुनमास	तपस्य	सूर्य	गोविंद	धात्रा

वार के अनुसार मास का फल।

पञ्चार्कवासरे रोगाः पञ्चभौमे महद्भयम्।
पञ्चार्किवाराद् दुर्भिक्षंशेषाःवाराःशुभप्रदाः ॥ ३७ ॥

टीका–महीने में ५ रविवार पड़ने से रोग, ५ भौम पड़ने से अधिक भय, ५ शनि पड़ने से दुर्भिक्ष और शेष ५ वारों के पड़ने से शुभ जानो ॥ ३७ ॥

पक्ष।

पूर्वापरे मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सितनीलसंज्ञौ।
पूर्वस्तुदैवश्चपरश्चपित्र्यः केचित्तु कृष्णोसितपंचमीतः॥
आदौशुक्लः प्रवक्तव्यः केचित्कृष्णोपि मासके ॥ ३८ ॥

टीका–शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमासी तक शुक्लपक्ष, कृष्ण प्रतिपदा से अमावस तक कृष्ण पक्ष होता हैं। शुक्लपक्ष देवताओं का और कृष्णपक्ष पितरों का माना गया है, किसी के मत से शुक्ल पञ्चमी से कृष्ण पञ्चमी तक शुक्ल पक्ष होता है और प्रथम शुक्लपक्ष पीछे कृष्ण पक्ष माना जाता है। अमावस्या को मासपूर्ण होने से पहले कृष्णपक्ष और पीछे शुक्लपक्ष होता है। यदि पूर्णमासी को मासान्त हो तो दोनों पक्ष पहले और पीछे देश की रीति के अनुसार माने जाते हैं॥ ३८ ॥

अधिकमास।

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा।
घटिकानांचतुष्केण पतत्यधिकमासकः॥ ३९ ॥
शाकेबाणकरांकराक्कविरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते।
शेषावन्हिमधौ च माधवशिवे ज्येष्ठे वरेचाष्टके॥
आषाढ़े नृपतौ नभश्चशरके भाद्रे च विश्वांशके।
नेत्रेचाश्विनकेऽधिमाससुदिते शेषेऽन्यके स्यान्नहि ॥४०॥

टीका–वर्तमान शक में ९२५ घटादे शेष में १९ का भाग दे, ३ बचने से अधिक चैत्र जानो, ११ बचने से वैशाख, ०० वा ८ बचने से ज्येष्ठ १६ बचने से आषाढ़, ५ बचने से श्रावण, १३ बचने से भाद्रपद और २ बचने से आश्विन मास की वृद्धि होगी, अन्य अंकों के बचने से अधिक मास नहीं होता है ॥४०॥

१ शाकेऽङ्गेन्दु गजेन्द्र गजेन्द्रके, (१८५७) सुलभपाठोऽयम्।

अधिक मास ।

शेष	२	३	५	८	११	१३	१६	०
शाका	आ०	चैत्र	श्राव.	ज्ये०	वैशा.	भाद्र	आ	ज्येष्ट
	१८५८	१८५९	१८६१	१८६४	१८६७	१८६९	१८७२	१८७५
	१८७७	१८७८	१८८०	१८८३	१८८६	१८८८	१८९१	१८९४
	१८९६	१८९७	१८९९	१९०२	१९०५	१९०७	१९१०	१९१३
	१९१५	१९१६	१९१८	१९२१	१९२६	१९२६	१९२९	१९३२
	१९३४	१९३५	१९३७	१९४०	१९४३	१९४५	१९४८	१९५१
	१९५३	१९५४	१९५६	१९५९	१९६२	१९६४	१९६७	१९७०
	१९७२	१९७३	१९७५	१९७८	१९८१	१९८३	१९८६	१९८९
	१९९१	१९९२	१९९४	१९९७	२०००	२००२	२००५	२००८
	२०१०	२०११	२०१३	२०१६	२०१९	२०२१	२०२४	२०२७

अधिकमास क्षयमास निरूपण ।

असंक्रांतिमासोधिमासः स्फुटंस्याद्
द्विसंक्रांतिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतःस्या-
त्तदावर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ॥ ४१ ॥

टीका–दो अमावास्याओं के बीच में संक्रांति न होने पर अधिक मास होता है और दो अमावास्याओं के बीच दो संक्रान्ति होने से क्षयमास जानो । कार्तिक आदि ३ मास ही क्षय होते हैं । जिस सम्वत् में क्षयमास होगा उसी सम्वत् में अधिक मास २ होंगे । इन श्लोकों का भाव ग्रहण के सूर्य चन्द्र का स्पर्श मोक्ष सहित चक्र में स्पष्ट देखो ॥ ४१ ॥

मेषादि संक्रान्ति के आरम्भ की ३० वर्ष पर्यन्त की तिथि—

शाका	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
१८६७	१	३	४	७	९	११	१२	१२	१२	११	११	११
१८६८	१२	१४	१५	१८	२०	२२	२३	२३	२३	२२	२२	२२
१८६९	२३	२५	२६	२९	१	३	४	४	४	३	३	३
१८७०	४	६	७	१०	१२	१४	१५	१५	१५	१४	१४	१४
१८७१	१५	१७	१८	२१	२३	२५	२६	२६	२६	२५	२५	२५
१८७२	२६	२८	२९	२	४	६	७	७	७	६	६	६
१८७३	७	९	१०	१३	१५	१७	१८	१८	१८	१७	१७	१७
१८७४	१८	२०	२१	२४	२६	२८	२९	२९	२९	२८	२८	२८
१८७५	२९	१	२	५	७	९	१०	१०	१०	९	९	९
१८७६	१०	१२	१३	१६	१८	२०	२१	२१	२१	२०	२०	२०
१८७७	२१	२३	२४	२७	२९	१	२	२	२	१	१	१
१८७८	२	४	५	८	१०	१२	१३	१३	१३	१२	१२	१२
१८७९	१३	१५	१६	१९	२१	२३	२४	२४	२४	२३	२३	२३
१८८०	२४	२६	२७	३०	२	४	५	५	५	४	४	४
१८८१	५	७	८	११	१३	१५	१६	१६	१६	१५	१५	१५
१८८२	१६	१८	१९	२२	२४	२६	२७	२७	२७	२६	२६	२६
१८८३	२७	२९	३०	३	५	७	८	८	८	७	७	७
१८८४	८	१०	११	१४	१६	१८	१९	१९	१९	१८	१८	१८
१८८५	१९	२१	२२	२५	२७	२९	३०	३०	३०	२९	२९	२९
१८८६	३०	२	३	६	८	१०	११	११	११	१०	१०	१०
१८८७	११	१३	१४	१७	१९	२१	२२	२२	२२	२१	२१	२१
१८८८	२२	२४	२५	२८	३०	२	३	३	३	२	२	२
१८८९	३	५	६	९	११	१३	१४	१४	१४	१३	१३	१३
१८९०	१४	१६	१७	२०	२२	२४	२५	२५	२५	२४	२४	२४
१८९१	२५	२७	२८	१	३	५	६	६	६	५	५	५
१८९२	६	८	९	१२	१४	१६	१७	१७	१७	१६	१६	१६
१८९३	१७	१९	२०	२३	२५	२७	२८	२८	२८	२७	२७	२७
१८९४	२८	३०	१	४	६	८	९	९	९	८	८	८
१८९५	९	११	१२	१५	१७	१९	२०	२०	२०	१९	१९	१९
१८९६	२०	२२	२३	२६	२८	३०	१	१	१	३०	३०	३०

मेषादि छः संक्रान्ति के वारादि जानने के लिये शकांक—

शाका		१८६७	१९०७	१९४७	१९८७	२०२७	२०६७	२१०७	२१४७	२१८७	२२२७
मेष	वा.	६	०	१	३	४	६	०	१	३	४
	घ.	१७	३८	५९	२०	४१	२	२३	४४	५	२६
	प.	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८
	वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वृष		२	३	४	६	०	२	३	४	६	०
		१५	३६	५७	१८	३९	०	२१	४२	३	२४
		१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
मिथुन		५	०	१	२	४	५	६	१	२	३
		४०	१	२२	४३	४	२५	४६	७	२८	४९
		१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
कर्क		२	३	५	६	०	२	३	४	६	०
		१८	३९	०	२१	४२	३	२४	४५	६	२७
		२९	२९	२	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९
सिंह		५	०	१	२	४	५	६	१	२	३
		४६	७	२८	४९	१०	३१	५२	१३	३४	५५
		२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३
कन्या		१	३	४	५	७	१	२	४	५	६
		४७	८	२९	५०	११	३२	५३	११	३५	५६
		४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४

तुलादि छः संक्रान्ति के वारादि जानने के लिये शकांक—

शाका		१८६७	१९०७	१९४७	१९८७	२०२७	२०६७	२१०७	२१४७	२१८७	२२२७
तुला	वा.	४	५	६	१	२	३	५	६	१	२
	घ.प	१२	३३	५४	१५	३६	५७	१८	३९	०	२१
	वि.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
वृश्चिक		६	०	१	३	४	५	०	१	२	४
		५	२६	४७	८	२९	५०	११	३२	५३	१४
		४९	४९	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९
धन		०	१	३	४	५	०	१	३	४	५
		३५	५६	१७	३८	५९	२०	४१	२	२३	४४
		३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
मकर		१	३	४	५	०	१	३	४	५	०
		५५	१६	३७	५८	१९	३०	१	२२	४३	४
		८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
कुम्भ		२	४	६	०	१	३	४	५	०	१
		२३	४४	५	२६	४७	८	२९	५०	११	३२
		१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
मीन		५	६	०	१	२	३	५	६	०	२
		११	३२	५३	१४	३५	५६	१७	३८	५९	२०
		३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४

शेषाङ्क ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	संख्या
१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	वार
१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	घटी
३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	पल
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	विपल
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	संख्या
६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	
५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	
४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	संख्या
५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	
२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	
१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	संख्या
४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	
१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	
१६	४८	१९	३१	२२	५४	२५	५७	२८	०	
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	

बारहों संक्रान्ति स्पष्ट करने के लिये शेषांक चालिस और शकांक शाक १८६७ से चालिस २ वर्ष तक लिख दिया है। जिस वर्ष की जो संक्रान्ति जानने की इच्छा हो उसके पीछे की शाका को घटावैं जो शेष बचे उसको शेषांक और शकांक दोनों के अंक को एकत्र जोड़ने पर संक्रान्ति स्पष्ट होगी।

उदाहरण–शाका १८७० में मेष संक्रान्ति जानने की इच्छा है इससे इसमें पुस्तकीय शक १८६७ को घटाया तो शेष ३ बचे शेषांक तीन के नीचे ३।४६। ३४।३० है इसको पुस्तकीय शक १८६७ की मेष संक्रान्ति के ६।१७।३९।०में जोड़ा तो वारादि १०।४।१२।३० वार में, निकाल दिया तो वारादि ३।४। १२।३० मेष की संक्रान्ति स्पष्ट हुई।

तिथि प्रकरण अथवा तिथि परिज्ञान ।

मासभाच्चांद्रभं यावद्गणयेत्तापदेव तु ।
यावंतिगणनाद्धानि तावत्यस्तिथयः क्रमात् ॥४२॥

टीका—चैत्रादि बारह मासों के नाम और उन नामों के नक्षत्र से मास नक्षत्र जाने जैसे कि चैत्र की चित्रा, विशाषा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपदा, अश्विनी, कृत्तिका, मृर्गशिरा, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी परन्तु-पूर्णिमान्त महीने से गिनती बराबर होती है ॥ ४२ ॥

प्रतिपदादि तिथियों का शुभाशुभ फल ।

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी ।
तृतायारोग्यदात्री च हानिदा च चतुर्थिका ॥४३॥
शुभा तु पंचमी ज्ञेया षष्ठिकात्वशुभा मता ।
सप्तमी तु शुभा ज्ञेया अष्टमी व्याधिनाशिनी ॥४४॥
मृत्युदात्री तु नवमी द्रव्या दशमी तथा ।
एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा ॥४५॥
त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी ।
पुष्टिदा पूर्णिमा ज्ञेया त्वमावास्या शुभातिथिः ॥४६॥
वृद्धिश्चाथ सुमंगलाथ सवला प्रोक्ता खला श्रीमती ।
कीर्तिर्मित्रपदा तथा वलवती स्वग्रा क्रमाद्धर्म्मिणी ॥
नंदाख्या हि यशोवती जयकरी क्रूरा हि सौम्यातिथिः ।
नाम्ना तुल्यफला क्रमात्प्रतिपदा दर्शस्त्वमासंज्ञकः ॥४७॥

नन्दासुदेवोत्सव वास्तुतंत्रे । चैत्रादिकुर्वीत तथैव नृत्यम् ॥
विवाहभूषा शकटाध्वयाने । भद्रासु कार्याण्यपि पौष्टिकानि ॥ ४४ ॥
जयासु संग्रामबलोपयोगी । कार्याणि सिध्यन्त्यपि निर्मितानि ॥
रिक्तासु विद्वद्वधघातसिद्धिः । विषादिशस्त्रादि च यांति सिद्धिम् ॥ ४५ ॥
पूर्णासुमांगल्य विवाह यात्रा सुपौष्टिकं शांतिक कर्म कार्यम् ॥
सदैवदर्शे पितृकर्मयुक्तं नांन्यद्विदध्यान्छुभमंगलानि ॥ ४६ ॥

१ परिवा, छठ और एकादशी को नन्दा कहते हैं। २ द्वितीया सप्तमी और द्वादशी को भद्रा कहते ३ तीज, अष्टमी और त्रयोदशी को जया कहते हैं। ४ चौथ नौमी और चतुर्दशी को रिक्ता कहते हैं पंचमी, दशमी और पूणिमाको पूर्णा कहते हैं।

नंदा सिते सोमसुते च भद्रा । कुजे जया चैव शनौ च रिक्ता ॥
पूर्णागुरौताश्च मृता कुजार्के । सितांबुजेड्ये च गुरौशनि स्युः ॥४८

अर्थात्—नीचे लिखे चक्र में जो दोनों पक्षों की प्रतिपदादि तिथि से अन्त्य पर्यन्त तिथि हैं उनके फल, स्वामी और संज्ञा एवं त्याज्य पदार्थ का ज्ञान चक्र से करें।

ति०	तिथि नाम	तिथि	फल	स्वाम	संज्ञा	शुक्ल	कृष्ण	तिथिपालन करने
१	वृद्धि	प्रतिपदा	सिद्धि	अग्नि	नन्दा	अशुभ	शुभ	कूष्मांड
२	सुमङ्गला	द्वितीया	कार्यसा	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	कटेरीफल
३	सबला	तृतीया	आरोग्य	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	लवण
४	खला	चतुर्थी	हानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
५	श्रीमती	पञ्चमी	शुभा	सप	पूर्णा	अशुभ	शुभ	खटाई
६	कीर्ति	षष्ठी	अशुभा	स्कन्ध	नन्दा	मध्यम	मध्यम	तैल
७	मित्रप्रदा	सप्तमी	शुभा	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आँवला
८	बलवती	अष्टमी	व्याधि.	शिव	जया	मध्यम	मध्यम	नारियल
९	उग्रा	नवमी	मृत्यु	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	काशीफल
१०	धर्मिणी	दशमी	धनदा	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	परवल
११	नन्दा	एकादशी	शुभा	विश्वेदेव	नन्दा	शुभ	अशुभ	दलिया
१२	यशोबला	द्वादशी	सर्वसि.	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	जयकरी	त्रयोदशी	सर्वसि.	मदन	जया	शुभ	अशुभ	बैंगन
१४	क्रूरा	चतुर्दशी	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	मधु
१५	सौम्या	पूर्णिमा	पुष्टिदा	चन्द्र	पूर्णा	शुभ	अशुभ	घृत
३०	दर्श	अमावा.	अशुभा	पितर	०	०	०	स्त्रीसंगम

आठों दिशाओं के स्वामी ।

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ।
बुधोबृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथाग्रहाः ॥४९॥

टीका—१ पूर्व दिशा के स्वामी रवि, २ अग्नेय के शुक्र, दक्षिण के मंगल ४ नैऋत्य के राहु, ५ पश्चिम के शनि, ६ वायव्य के चन्द्र, ७ उत्तर के बुध और ८ ईशान्य दिशा के स्वामी गुरु हैं । इन दिशाओं के स्वामी नवग्रह हैं ॥५१॥

वारों के नाम ।

आदित्यश्चन्द्रमाभौमोबुधश्चाथ बृहस्पति ॥
शुक्रः शनैश्चरश्चैव वासराः परिकीर्तिता ॥ ५० ॥

वारों के स्वामी और अधिदेवता ।

सूर्यादितः शिवशिवागुहविष्णुकेन्द्रे, कालाः क्रमेण
पतयः कथिता ग्रहाणाम् । वन्ह्यम्बुभूमिहरिशक्र
शची विरंचि, स्तेषांपुनर्मुनिवरैरधिदेवताश्च ॥५१॥

ग्रहों की जाति ।

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौ च क्षत्रियौ भौमभास्करौ ।
सोमसौम्यौ विशौप्रोक्तौ राहुमन्दौतथांत्यजौ ॥ ५२ ॥

टीका-बृहस्पति और शुक्र जातिके ब्राह्मण, मंगल और रवि जातिके क्षत्रिय बुध और चन्द्र जातिके वैश्य, एव राहु केतु और शनि जाति के शूद्र हैं ॥५२॥

ग्रहों का वर्ण ।

रक्तावङ्गारकादित्यौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ।
गुरुसौम्यौपीतवर्णौ शनिराहूवसितौ शुभौ ॥ ५३ ॥

टीका-मंगल और रवि का लाल रंग, चन्द्र और शुक्र का श्वेत रंग, गुरु और बुध का पीला रंग एवं शनि और केतु का काला रंग है ।। ५३ ॥

वारों के अनुसार रविवार के कर्म ।

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवा गोवह्निमन्त्रौषधशस्त्रकम ।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्टसंग्रामपण्यादिरवौविदध्यात् ॥५४॥

टीका—रविवार के दिन, गाना, बजाना, सवारी पर चढ़ना, राज सेवा, गौ का लेन देन करना, हवन यज्ञादि मन्त्र के उपदेश को लेना और देना, औषधि व्यवहार शस्त्र का व्यवहार, सोना, तांबा, ऊन, वस्त्र, चर्म और काठ का लेन देन, युद्ध, क्रय और विक्रय के काम को करे ॥ ५४ ॥

सोमवार के कर्म ।

शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्यस्त्रीवृक्षभक्ष्यांबुविभूषणाद्याः ।
गीतक्रतुक्षीरविकारशृंगीपुष्पांबरारंभणमिन्दुवारे ॥ ५५ ॥

टीका—सोमवार के दिन शंख, कमल, मोती, चांदी, ऊख, भोजन, स्त्री-संभोग, वृक्ष, भक्ष्य, जलादि कर्म, आभूषण, गाना, यज्ञादि, गोरस, गाय, भैंस, पुष्प और वस्त्रादि का व्यवहार करना चाहिये ॥ ५५ ॥

भौमवार के कर्म ।

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्र वध्याभिघाताहवशाठ्यदंभान् ।
सेनानिवेशाकरधातुहेम प्रवालरक्तानि कुजे विदध्यात् ५६

टीका—मङ्गलवार के दिन के भेद करना, मिथ्या व्यवहार, झूठ, चोरी विष प्रयोग, अग्नि एवं शस्त्र प्रयोग, वध नाश, संग्राम, कपट, दम, सेना काम विराम, खान, धातु, सोना, मूंगा और रुधिर का व्यवहार करना चाहिये ॥५६॥

बुधवार के कर्म ।

नैपुण्यपुण्याध्ययनं कलाश्च शिल्पादिसेवा लिपि लेखनानि ।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसंधि व्यायाम वादाश्चबुधे विधेयाः ॥५७॥

टीका—बुधवार के दिन चातुरी, पुण्य, पढ़ना, कला, शिल्प, विद्या, सेवा, लिखना चित्रकारी, धातुक्रिया, सुवर्ण, युक्ति, मित्रता, व्यायाम और वाद करना ये उचित है ॥५७॥

गुरुवार के कर्म ।

धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्या मांगल्यहेमांबर वेश्मयात्राः ।
रथाश्वभैषज्यविभूषणादिकार्यंविदध्यात्सुरमंत्रिवारे ॥ ५८ ॥

टीका—बृहस्पतिवार के दिन धर्म नवग्रहों की पूजा, यज्ञ, विद्याभ्यास और मांगलिक काम करें वस्त्र का व्यवहार, घर का काम, यात्रा, रथ, घोड़ा, औषधि एवं अलंकारादि विषयक शुभ कार्य करे ॥ ५८ ॥

शुक्रवार के कर्म ।

स्त्रीगीतशय्या मणिरत्नगन्ध वस्त्रोत्सवालंकरणादिकर्म ।
भूपण्यगोकोशकृषिक्रियाश्च सिध्यन्ति शुक्रस्य दिने समस्ताः ५६

टीका-शुक्रवार के दिन स्त्री, शय्या, मणि,रत्न, हीरा, गंध, वस्त्रोत्साह, आभूषण, पृथ्वी, दूकान, गाय, द्रव्य और खेती विषयक, कर्म करना योग्य है ॥ ५९ ॥

शनिवार के कर्म ।

लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदास पापानृतस्तेयविषार्कविद्याम् ।
गृहप्रवेशद्विपबंधदीक्षा स्थिरं च कर्मार्कसुतेऽह्निकुर्यात् ॥६०॥

टीका—शनिवार के दिन लोहा, पत्थर, शीशा, जस्ता, शस्त्र, दास, पाप मिथ्या भाषण, चोरी, विष अर्कनिकालना, गृह प्रवेश, हाथी बाँधना, मंत्र लेना और अचल काम करना चाहिये ॥ ६० ॥

वारों में विचार करने का समय।

पतंगसूनोर्दिवसाधिपत्यं निशाप्यहश्चैव तु तिग्मभानोः।
रात्रिद्वयं चैक दिने च सोमे शेषग्रहाणामुदयप्रवृत्तिः ॥६१॥

दिन रात्रि भेद से वारों का दोष।

न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्।
दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निंद्यो बुधवारदोषः ॥६२॥

वारों का कृत्य।

सोमसौम्यगुरुशुक्रवासरास्सर्वकर्मभवतिः सुसिद्धिदाः।
भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्मसिध्यति ॥६३॥

वारों में तेल लगाने का ज्ञान।

रविस्तापं कांति वितरतिशशी भूमितनयो-मृतिं लक्ष्मींसौम्यः सुरपतिगुर्वित्तहरणम् ॥ विपतिंदैत्यानांगुरुरखिलभोगानुगमनं नृणांतैलाभ्यंगात्सपदिकुरुते सूर्यतनयः ॥ ६४ ॥

नक्षत्रों का ज्ञान।

द्विनिघ्नमासस्तिथियुग्विधूनो भशेषितः स्यादुडुशेषसंख्या ॥

वारों के नाम	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वारों के स्वामी	शिव	पार्वती	स्कन्ध	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	काल
वारोंके अधिदेवता	अग्नि	जल	पृथ्वी	हरि	इन्द्र	इन्द्राणि	ब्रह्मा
वारों में विचार का समय	८ प्रहर	२ रात्रि ४ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर
वारों में दोषकाल	रात्रि दोष	दिन दोष	दिन दोष	दिन दोष	रात्रिदोष	रात्रि दोष	दिन दोष
वारों में का कृत्य	उक्त कर्म सिद्ध	सर्व काम सिद्धि	उक्त कर्म सिद्धि	कर्म सिद्धि	कर्म सिद्धि	कर्म सिद्धि	उक्त कर्म सिद्धि
तेल लगाने का ज्ञान	ज्वरप्रद	कांतिप्रद	मृत्युप्रद	लक्ष्मीप्रद	वित्तना	दुःखद	संप. प्रा.
वस्त्र पहिरने का ज्ञान	जीर्णहोता है	सदा गोला रहता	शोक प्रा.	धन प्राप्ति	ज्ञान प्रा.	इष्ट संगम	मलिन रहता है
क्षौर कराने का ज्ञान	एक मासकी आयु नष्ट	७ मास आयुवृ-	८ मास आयुनष्ट	५ मास आयु वृ.	१० मास आयु वृ.	११ मास आयुवृ.	७ मास आयु नष्ट
विद्यारम्भ करने का ज्ञान	मध्यम	जड़ता	मृत्यु	आयु वृ. अर्थ सि	अर्थ सि.	अर्थ सि.	मृत्यु

मासस्तुशुक्लादित एव बोध्यः कृष्णेद्विहीने मुनयो वदंति ॥६५॥

टीका—चैत्र से लेकर गत मासों की संख्या वर्तमान मास की संख्या समेत दूना करै, उसमें गत तिथियों की संख्या वर्तमान दिन सहित की संख्याको मिलावे। पीछे मास और दिन जोड़कर १ घटा दे, बाकी संख्या को सत्ताइस से भाग देने पर जो शेष बचे उसी को नक्षत्र की संख्या जानो। इतना ध्यान रहै कि शुक्लपक्ष में १ और कृष्णपक्ष में २ घटा के ही देवै ॥ ६६ ॥

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः।
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततः श्लेषा मघा ततः ॥६६॥
पूर्वाफल्गुनिका तस्मादुत्तराफाल्गुनी ततः।
हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ॥ ६७ ॥
अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते।
पूर्वाषाढोत्तराषाढस्त्वभिजिच्छ्रवणस्ततः ॥६८॥
धनिष्ठा शततारारव्यं पूर्वभाद्रपदा ततः।
उत्तराभाद्रपदश्चैव रेवत्येतानि भानि च ॥६९॥

होढाचक्र—

अश्वि	भ.	कृ.	रो.	मृ	आ.	पु.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	चि
चू	ली	अ	ओ	वे	कु	के	हू	डी	मा	मो	टे	पु	पे
चे	लु	इ	वा	वो	घ	को	हे	डू	मी	टा	टो	ष	पो
चो	ले	उ	वि	का	ङ	ह	हो	डे	मु	टी	पा	ण	र
ला	लो	ए	वु	की	छ	ही	डा	डो	मे	टु	पी	ठ	री
स्वा.	**वि.**	**अ.**	**ज्ये.**	**मू.**	**पू.**	**उ.**	**अ.**	**श्र.**	**ध.**	**श.**	**पू.भा.**	**उ.भा**	**रे.**
रु	ती	ना	नो	ये	भु	भे	जू	खी	गा	गो	से	दू	दे
रे	तु	नी	या	यो	धा	भो	जे	खू	गी	सा	सो	थ	दो
रो	ते	नू	यी	भ	फा	जा	जो	खे	गू	सी	द	झ	चा
ता	तो	ने	यू	भी	ढा	जी	खा	खो	गे	सु	दी	ञ	ची

१ नोट—कार्तिक मास से दून करीजै। उसमें वर्तमान तिथि दीजै॥
एक जोरि सत्ताइस भागै। शेष नक्षत्र यथा तिथि लागै॥

२–अश्विनीतु शुभा प्रोक्ता भरणी नाशकारिणी। कार्यघ्नी कृत्तिका चोक्ता रोहिणीसिद्धिदाबुधैः मृगः शुभस्ततश्चार्द्रा मध्यमस्त पुनर्वसुः। पुष्यः शुभः सर्पमघा पूर्वाः सुखनाशमृत्युदा २ उत्तरा हस्त चित्रास्तु विद्यालक्ष्मिशुभप्रदाः। स्वातीत्रिशाखेत्वशुभे मैत्रं सर्वार्थसिद्धिदम् ३ ज्येष्ठा मूलंक्रमात्तोयं क्षयनाशार्थ हानिदम्। विश्वब्रह्मविष्णवश्च बुद्धिवृद्धिसुखप्रदाः ४ वासवं वारुणं शर्वं शुभं भद्र मृतिप्रदम्। उत्तराभाद्रकं मोदं रेवतीकामदायिका ५

राशि निर्णय ।

अश्विनीच भरणी चैव कृतिकैक पादो मेषः ।
कृत्तिका त्रिचरण रोहिणी मृगशिरार्धोवृषः ॥
मृगशिरार्धः आर्द्रा पुनर्वसु पादत्रयो मिथुनः ।
पुनर्वसु चरणान्त्य पुष्य श्लेषान्त्यः कर्कः ।
मघा भगोत्तरा प्रथम चरण यावत् सिंहः ।
उत्तरा फाल्गुनो त्रिचरण हस्त चित्राध कन्या ।
चित्रार्ध स्वाती विशाखा पादत्रयं तुला ।
विशाखा पादमेक मनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ।
मूलपूर्वाषाढोत्तराषाढं प्रथमाग्निधनं ।
उत्तराषाढस्य चरण त्रयं श्रवण धनिष्ठार्धो मकरः ।
धनिष्ठोत्तरार्धशमिष पूर्व भाद्रपद पादत्रयं कुम्भः ।
पूर्व भाद्रपद पादैक उत्तरा भाद्रपद रेवत्यन्तो मीन राशिर्ज्ञेय।

राशि (चन्द्र) दिशा निर्णय ।

मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे वृषे च कन्या मकरेतु याम्ये ।
युग्मे तुले कुम्भगते प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशिचोत्तरस्याम्।

टीका–पूर्व में मेष सिंह धन राशि, दक्षिण में वृष कन्या मकर राशि पश्चिम में मिथुन तुला कुंभ राशि तथा कर्क वृश्चिक राशि उत्तर की है इन राशियों पर सूर्य चन्द्र आदि ग्रह भी उसी दिशा में रहते हैं ॥ ७० ॥

चन्द्र राशि विचारः ।

आद्यश्चन्द्रः श्रियं कुर्य्या मनस्तोषंद्वितीयके ।
तृतीये धन सम्पत्तिं चतुर्थे कलहागमम् ॥ ७१ ॥
पञ्चमे ज्ञान वृद्धिंच षष्ठे सम्पत्ति मुत्तमाम् ।
सप्तमे राज सन्मानमष्टमेप्राणनाशनम् ।
नवमे धर्म लाभं च दशमे मानसे ऽसितम् ॥ ७२ ॥

नोट–सर्वे कर्मसु जन्मर्क्ष स्थितश्चन्द्रः शुभ प्रदः । यज्ञ चौरे च भैषज्ये संग्रामे वर्जयेत्सदा

एकादशे सर्व लाभं द्वादशे हानि मेव च ।
स्वीय राशौ सोच्च राशौ श्रेष्ठं चन्द्रबलंतथा ।
कृष्ण पक्षे द्वितीयस्तु पञ्चमे नवमेऽशुभः ॥७३॥
अभिषेके निषेके च प्राशने व्रतबन्धने ।
पाणिग्रहे च यात्रायां चन्द्रोद्वादशगः शुभः ॥

चन्द्रोदय फल ।

मीने मेषे स्थितश्चन्द्रः सततं दक्षिणोन्नतः ।
शेषोन्नतश्चोत्तरायां समतां बृष कुंभयोः ॥
फलं साम्ये समेचन्द्रेर्भिदं दक्षिणोन्नते ।
सुभिक्षं क्षेम मारोग्यमुत्ताश्रित्य चन्द्रमा ॥

पुष्प नक्षत्र के गुण ।

परम मखिलं निहन्ति पुष्यो नखलु निहन्ति परन्तु पुष्प दोषम् ।
ध्रुवममृतकरोऽष्टमेऽपि पुष्यो विहित मुपैति सदैव कर्म सिद्धिम् ॥

टीका–पुष्य नक्षत्र, पर कृत सब दोषों को नष्ट करता है, परन्तु अपने दोषों को नहीं कर सकता है, अष्टम चन्द्रमा के होने पर भी पुष्य नक्षत्र कार्य को सिद्ध करता है ॥ ७४ ॥

पुष्य नक्षत्र का फल ।

सिंहो यथा सर्व चतुष्प दानां तथैव पुष्यो बलवान् भूनाम ।
चन्द्र विरुद्धेऽप्यथ गोचरेऽपि सिद्धयन्ति कार्याणि कृतानि पुष्ये ॥

टीका—जिस प्रकार सम्पूर्ण चौपायों में सिंह बलवान् है ॥ ७५ ॥
उसी प्रकार सम्पूर्ण नक्षत्रों में पुष्य बलवान् है, चन्द्रमा के गोचर में चौथे आठवें बारहवें होने पर भी पुष्य नक्षत्र कार्य सिद्ध करता है ।

ग्रहेण विद्धोऽप्यशुभान्वितोऽपि विरुद्धतारोऽपि विलोमगोऽपि ।
करोत्य वश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणं तु पुष्यः ॥७६॥

टीका-विवाह को छोड़ पुष्य नक्षत्र ग्रह विद्ध होने से पाप ग्रह युक्त होने से और तारा के प्रतिकूल होने पर भी सम्पूर्ण कार्य की सिद्धि करता है ॥७६॥

१ अपने नक्षत्र से ३-१२-२१ वां नक्षत्र विपत् तारा, ५-१४-२३ वां नक्षत्र प्रत्यरितारा और ७-१६-२५ वाँ नक्षत्र वध तारा है ये विरुद्ध तारा है ।

अश्विनी के दोनों अश्विनीकुमार, भरणी के यमराज, कृत्तिका के अग्नि रोहिणी के ब्रह्मा, मृगशिरा के चन्द्रमा, आर्द्रा के रुद्र, पुनर्वसु के अदिति, पुष्य के बृहस्पति, श्लेषा के सर्प, मघाके पितर, पूर्वाफाल्गुनी, के भग, उत्तराफाल्गुनी के अर्यमा, हस्त के सूर्य, चित्राके त्वष्टा, स्वाती के वायु, विशाखाके इन्द्र और अग्नि, अनुराधा के मित्र, ज्येष्ठाके इन्द्र, मूलके राक्षस, पूर्वाषाढाके विश्वेदेव अभिजित् के ब्रह्मा, श्रवण के गोविन्द, धनिष्ठाके वसु, शतभिषा के वरुण, पूर्वाभाद्रपद के अजपात्, उत्तरा भाद्रपद के अहिर्बुध्न्य और रेवतीके पूषा स्वामी हैं ७७

ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र ।

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ।
तत्र स्थिरं बीजगेह शान्त्यारामादिसिद्धये ॥७८॥

उत्तरा फाल्गुनी उत्तराषाढा, उत्तरा भाद्रपद, रोहिणी और रविवार की "ध्रुव स्थिर" संज्ञा है इन नक्षत्रों में स्थिर कर्म जैसे बीज बोना, और गृहारम्भ शान्तिकर्म प्रवेश और बाग लगाना (और मृदुनक्षत्रोक्तकर्म) काम शुभ होते हैं ॥

चरसंज्ञक नक्षत्र ।

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम् ।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥७९॥

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, और सोमवार की "चर और चल" संज्ञा है इन नक्षत्रों में पहिले पहल हाथी, घोड़ा, ऊँट आदि पर चढ़ना और फुलवारी में जाना (आदि शब्दसे लघुसंज्ञक नक्षत्रोक्त कर्म भी) शुभ हैं ॥७९॥

उग्रसंज्ञक नक्षत्र--

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा ।
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादिसिध्यति ॥८०॥

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ, पूर्वाभाद्रपद, भरणी, मघा और मङ्गलवार की 'उग्र और क्रूर" ये दोनों संज्ञायें हैं इन नक्षत्रों में उग्र कार्यशत्रु मारना, अग्नि लगाना, शठता करना, हथियार चलाना, विष देना (आदि शब्द से दारुण संज्ञक नक्षत्रोक्त कर्म भी) कार्य शुभ होवे हैं ॥ ८० ॥

विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम् ।
तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिध्यति ॥८१॥

विशाखा और कृत्तिका नक्षत्र तथा बुधवारकी "मिश्र और साधारण" संज्ञा हो इन नक्षत्रों तथा इन वारों में अग्नि सम्बन्धी कार्य तथा वृषोत्सर्ग, (आदि शब्द से उग्र नक्षत्रोक्त कर्म भी करना शुभ होता है ॥ ८१ ॥

लघुसंज्ञक नक्षत्र ।

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा ।
तस्मिन् पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम् ॥८२॥

हस्त अश्विनी, पुष्य और अभिजित् नक्षत्र तथा गुरुवार की संज्ञा " क्षिप्र और लघु" है इसमें दुकान खोलना, मैथुन करना, भूषण (जेवर) बनाना और शिल्पकला [चित्रकारी] (आदि शब्द से चर नक्षत्रोक्त कर्म भी) शुभ होता है ॥ ८२ ॥

मृदु संज्ञक नक्षत्र ।

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा ।
तत्र गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यविभूषणम् ॥८३॥

मृगशिरा, रेवती और अनुराधा नक्षत्र तथा शुक्रवारकी "मृदु और मैत्र" संज्ञायें हैं इनमें गानविद्या का अभ्यास करना, नया वस्त्र पहिरना, क्रीडा करना, और आभूषण पहिरना ये शुभप्रद हैं ॥ ८२ ॥

तीक्ष्ण संज्ञक नक्षत्र—

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ ८४ ॥

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, और श्लेषा नक्षत्र तथा शनिवार की "तीक्ष्ण और दारुण' संज्ञायें हैं । इनमें अभिचार घात मारण प्रयोग करना, शस्त्र से मारना, क्रूर कर्म करना और पशुओं को वशमें करना आदि कार्य सिद्ध होते हैं ॥८४॥

१ अधोमुख ऊर्ध्वमुख और तिर्यग मुख नक्षत्र—

मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखंभवे
दूर्ध्वास्यमार्द्रेज्यहरित्रयंध्रुवम् ।
तिर्यङ्मुखं मैत्रकरानिलादिति
ज्येष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषु सत् ॥८५॥

मूल, अश्लेषा कृत्तिका, विशाखा, तीनों पूर्वा, मघा और भरणी का मुख नीचे [अधोमुख] आर्द्रा, पुष्य, श्रवण धनिष्ठा शतभिषा, रोहिणी और तीनों उत्तरा का मुख ऊपर [ऊर्ध्वमुख] और मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा, हस्त, स्वाती पुनर्वसु ज्येष्ठा और आश्विनी का मुख तिरछा [तिर्यङ्मुख] होता है। इसमें इनके नामानुरूप कार्य सिद्ध शीघ्र होते हैं जैसे—अधोमुखमें कूँवा आदि खुदवाना, ऊर्ध्व मुखमें गृह आदिका आरम्भ करना, तिर्यङ्मुखमें गमन करना, बाँधना शुभ है ॥ ८५ ॥

अंधादिक नक्षत्र और उनके स्वरूप ।

अंधकं तदनुमंदलोचनं मध्यलोचनमतः सुलोचनम् ।
रोहिणी प्रभृतिभं चतुष्टयं साभिजिच्च गणयेत्पुनःपुनः ॥८६॥
तरगमुखसदृशं योनिरूपं क्षुराभं,
शकटसममथैणस्योत्तमांगेन तुल्यम् ।
मणि गृह शरचक्रम्भाति शालोपमंभं,
शयनसदृशमन्यच्चात्र पर्यकरूपम् ॥८७॥
हस्ताकारमतं च मौक्तिकसमं चा यत्प्रवालोपमं ।
विष्णयंतोरणवत्थितं बलिनिभंसत्कुंडलाभं परम् ॥
क्रुध्यत्केसरिविक्रमेण सदृशं शय्यासमानं परं ।
चान्यद्दंतिविलासवत्स्थितमतः शृङ्गानिभंव्यक्तिमत् ॥८८॥
त्रिविक्रमाभं च मृदंग रूपं वृत्तं ततोऽन्यद्यमलद्वयाभम् ।
पर्यंकरूपं मुरजानुकारी इत्येवमश्वादिभचक्ररूपम् ॥८९॥

नक्षत्रों के तारों की संख्या ।

वह्नित्रित्र्यत्विषुगुणेन्दुकृताग्निभूत, बाणाश्विनेत्र शर
भूकुयुगाब्धिरामाः । रुद्राब्धिरामगुणवेदशतद्वियुग्म
दन्ताबुधैर्निगदिताः क्रमशोभताराः ॥९०॥

संख्या	नक्षत्रों के नाम	शुभाशुभ संज्ञा	स्वामी के नाम	मुखसंज्ञा	नामसंज्ञा		लोचनसंज्ञा	रूपकी आकृति	सं. तारोंकी
					नाम	नाम			
१	अश्विनी	शुभ	अश्विकु.	तिर्यग्मुख	लघु	लघु	मन्दलोचन	अश्वरूप	३
२	भरणी	नाशक	यम	अधोमुख	उग्र	साधा	मध्यलोचन	योनिरूप	३
३	कृत्तिका	कार्यनाश	अग्नि	,,	मिश्र	स्थिर	सुलोचन	छुररूप	६
४	रोहिणी	सिद्धि	ब्रह्मा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	मैत्र	अन्धलोचन	शकट	५
५	मृगशिरा	शुभ	चन्द्र	तिर्यग्मुख	मृदु	दारुण	मन्दलोचन	मृगसम	३
६	आर्द्रा	शुभ	शिव	ऊर्ध्वमुख	तीक्ष्ण	चल	मध्यलोचन	मणिसम	१
७	पुनर्वसु	मध्यम	अदिति	तिर्यग्मुख	चर	क्षिप्र	सुलोचन	गृहसम	४
८	पुष्य	शुभ	गुरु	ऊर्ध्वमुख	लघु	दारुण	अन्धलोचन	शरसम	३
९	आश्लेषा	शोक	सर्प	अधोमुख	तीक्ष्ण	क्रूर	मन्दलोचन	चक्रसम	१
१०	मघा	नाशक	पितर	,,	उग्र	,,	मध्यलोचन	शालासम	४
११	पूर्वा फा.	मृत्युद	भग	,,	,,	स्थिर	सुलोचन	शय्यासम	३
१२	उ. फा.	विद्या	अर्यमा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	क्षिप्र	अन्धलोचन	पर्यङ्कसम	५
१३	हस्त	लक्ष्मी	रवि	तिर्यग्मुख	लघु	मैत्र	मन्दलोचन	हस्ताकृति	५
१४	चित्रा	शुभद	त्वष्टा	,,	मृदु	चल	मध्यलोचन	मौक्तिक	१
१५	स्वाती	अशुभ	वायु	,,	चर	साधा	सुलोचन	प्रवाल	१
१६	विशाखा	अशुभ	इन्द्राग्नि	अधोमुख	मिश्र	मैत्र	अन्धलोचन	तोरण	४
१७	अनुराधा	सर्वसि	मित्र	तिर्यग्मुख	मृदु	क्षिप्र	मन्दलोचन	बलिसम	४
१८	ज्येष्ठा	क्षयनाश	इन्द्र	,,	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलोचन	कुण्डल	१३
१९	मूल	अर्थनाश	राक्षस	अधोमुख	,,	,,	सुलोचन	सिंहासन	१२
२०	पूर्वाषा.	हानि	उदय	,,	उग्र	क्रूर	अन्धलोचन	शय्यासन	४
२१	उत्त. षा.	बुद्धिदा	विश्वेदेव	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	मन्दलोचन	हस्तीसम	३
२२	अभिजि.	वृद्धिदा	ब्रह्मा	,,	लघु	क्षिप्र	मध्यलोचन	त्रिकोण	३
२३	श्रवण	सुखदा	विष्णु	,,	चर	चल	सुलोचन	व्यक्ताकार	३
२४	धनिष्ठा	शुभदा	वसु	,,	,,	,,	अन्धलोचन	वामनसम	४
२५	शतभिष।	कल्याण	वरुण	,,	,,	,,	मन्दलोचन	मृदंगसम	१००
२६	पूर्वाभा.	मृत्युदा	अजैकपा	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलोचन	वर्तुलाकार	२
२७	उत्तराभा	लक्ष्मी	अहिबु.	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	सुलोचन	यमलाकार	२
२८	रेवती	कामदा	पूषा	तिर्यग्मुख	मृदु	मैत्र	अन्धलोचन	मृदङ्गाकार	३२

नष्टवस्तु विचार।

नक्षत्रों की लोचन संज्ञा के अनुसार वस्तु के पाने न पाने का ज्ञान।

अन्धके लभते शीघ्रं मन्दके च दिनत्रयम्।
मध्यके च चतुःषष्टिर्न प्राप्नोतिसुलोचने ॥६१॥

टीका--अन्धनक्षत्र में जाने से वस्तु शीघ्र मिलती है, मन्दलोचन में जाने से ३ दिन पीछे, मध्यलोचन में जाने से ६४ दिन तक और सुलोचन में जाने से वस्तु कभी नहीं मिलती है ॥ ९१ ॥ अन्यमते ।

अन्धे सद्यः प्राप्यते वस्तु नष्टं कष्टात्प्राप्यं मंदनेत्रे च तद्वत् ।
दूराच्छ्राव्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं न श्रोतव्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे ॥९२॥

टीका--मतान्तर से अन्धनक्षत्र में जाने सेवस्तु शीघ्र मिलती है, मन्दलोचन में जाने से परिश्रम करने से विलम्ब में, मध्यलोचन में जाने से वस्तु दूर हो जाती है और मिलती नहीं एवं सुलोचन में जाने से वस्तु न सुनन में आती है और न मिलती ही है ॥ ९२ ॥ नष्टवस्तु दिग्ज्ञान ।

अन्धके पूर्वतो वस्तु मन्दके दक्षिणे तथा ।
पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने ॥ ९३ ॥

टीका--अंधनक्षत्र में जाने से वस्तु पूर्व दिशा में होती है, मन्दलोचन में जाने से दक्षिण में, मध्यलोचन में जाने से पश्चिम में और सुलोचन में जाने से वस्तु उत्तर दिशा में होती है ॥ ९३ ॥

नक्षत्रों के अनुसार प्रश्न ।

मघादिश्चार्यमान्तं च समीपे वस्तु दृश्यते ।
हस्तादि वसुपर्यन्तमन्यहस्ते च दृश्यते ॥ ९४ ॥
शततारांद्यमान्तं तु स्वगृहे वस्तु दृश्यते ।
अग्न्यादि सार्पपर्यन्तमदृष्टं दुर्गमं तथा ॥ ९५ ॥

टीका--मघा से उत्तरा फाल्गुनी तक नक्षत्र में गई वस्तु समीप में ही जानी जाती है, हस्त से धनिष्ठा तक में गई वस्तु दूसरे के हाथ में शतभिषा से भरणी तक में गई घरही में और कृत्तिका से श्लेषा तक में गई वस्तु प्राप्त नहीं होती ॥ ९४-९५ ॥

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् ।
दिक्संख्यया हतञ्चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः ॥ ९६ ॥
एकेन भूतले द्रव्यं द्वयंचेद्भांडसंस्थितम् ।
तृतीये जलमध्यस्थ मन्तरिक्षे चतुर्थके ॥ ९७ ॥

तुषस्थं पञ्चमे तु स्यात् षष्ठे गोमयमध्यगम् ।
सप्तमेभस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥ ९८ ॥

टीका—प्रश्न समय के तिथि वार और गत नक्षत्र को एकत्रित कर प्रहर मिलाय अठगुणा करै फिर सात के भाग देने पर जो बचे उनके फल को विचारै १ बचने से गई वस्तु भूमि में, २ बचने से गई हुई वस्तु बरतन में, ३ बचने से जल में, ४ बचने से अन्तरिक्ष में, ५ बचने से तुष में, ६ बचने से गोबर में और ७ के बचने से वस्तु को भस्म में जानें ॥ ९६ ॥ ९८ ॥

मुहूर्त प्रकरण दिन रात्रि के मुहूर्त ।

शिवोऽहिर्मित्रपितरौवस्वंभो विश्ववेधसः ।
विधिरिंद्रोऽथशक्राग्नि रक्षोब्धीशोऽर्यमाभगः ॥ ९९ ॥
मुहूर्त्तेशा इमे प्रोक्ता दिवापञ्चदशक्रमात् ।
मुहूर्त्ता रजनी शम्भुरजैकचरणाश्रयः ॥ १०० ॥
दस्रात्पश्चादितेजीवो विश्वकौ तत्वमारुतैः ।
दिनमानस्यतिथ्यंशोरात्रेरपिमुहूर्त्तकाः ॥ १०१ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८
शिव अश्वि रुद्र अश्वि	सर्प श्लेषा अजै पूभा	मित्र अनु अहि उभा.	पितर मघा पूषा. रेवती	वसु धनि दस्र अश्वि	अंबु पूर्वा यम भर	विश्व उत्त अग्नि कृत्ति	विधि अभि ब्रह्मा रोहि
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	स
विधि रोहि चन्द्र मृग	इन्द्र ज्ये आदि पुन	इन्द्रा वि गुरु पुष्य	रास मूल वि. श्रवण	वरुण शत सूर्य हस्त	अर्य उ. त्वा चि.	भग पू. वायु स्वा	मुहू नक्ष रा. नक्षत्र

नक्षत्रनाथतुल्येस्मिन् स्थित कार्यात् स्वभोदितम् ।
दिनमध्येऽभिजिन्मध्येदोषसंधेयुसत्स्वपि ।
सर्वकुर्याच्छुभंकर्म याम्यदिग्गमनंविना ॥ १०२ ॥

वारों में त्याज्य मुहूर्त ।

अर्यमाभानुमद्वारे चन्द्रेऽह्नि विधिराक्षसो ।
पिताग्नी कुजवारे तु चन्द्रपुत्रे तथाऽभिजित् ॥ १०३ ॥
पित्र्याब्राह्मौ भृगोर्वारे राक्षसाम्बू गुरोर्दिने ।
रौद्रसार्पौ शनेरह्नि इमे त्याज्या मुहूर्तकाः ॥ १०४ ॥

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
अर्यमा	ब्रह्मराक्षस	पितृअग्नि	अभिजित	राक्षसअंबु	पितृब्रह्म	शिवसर्प	मु.
उ. फा	रोहिणी	मघाकृत्ति	अभिजित	मूलपूर्वाषा	मघारो.	आर्द्राश्लेषा	न.
दिन	दिन १२	दिन ४	दिन ८	दिन १२	दिन ४८	दिन १।२	दि.
१४	रात्रि ७	रात्रि ७	रात्रि ०	रात्रि ६	रात्रि ६	रात्रि ४	रा.

योगप्रकरण ।

प्रति दिनके योग जानने की रीति ।

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चान्द्रमेव च ।
गणयेत्तद्युतिकुर्याद्योगः स्याद्दक्षशेषतः ॥ १०५ ॥

टीका—पुष्य नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र तक चलते नक्षत्रों को गिने, फिर श्रवण से दिन नक्षत्र तक गिने और दोनों संख्याओं को मिलाय सत्ताइस से भाग देने पर जो बचे वही संख्या का योग जाने ॥ १०३ ॥

विष्कुंभः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।
अतिगंडः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥ १०६ ॥
गण्डोवृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।
वज्रसिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥ १०७ ॥
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मेन्द्रौ वैधृतिः क्रमात् ।
सप्तविंशति योगास्तु कुयुर्नामसमंफलम् ॥ १०८ ॥

टीका—विष्कुंभ १ प्रीति २ आयुष्मान् ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अतिगंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शूल ९ गंड १० वृद्धि ११ ध्रुव १२ व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्धि १६ व्यतीपात १७ वरीयान १८ परिघ १९ शिव २० सिद्धि २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४ ब्रह्मा २५ ऐन्द्र २६ वैधृति २७ यह सत्ताइस योग अपने नाम के अनुसार फल करते हैं ॥ १०८ ॥

पुष्य ते रवि नक्षत्र गनि, श्रवण ऋक्ष ते चन्द्र सत्ताइस के भाग ते योग कहत कविवृन्द।

योगों में वर्जित घड़ी ।

विरुद्धसंज्ञा इह येचयोगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः
सवैधृतिस्तु व्यतिपातनामा सर्वाप्यनिष्टः परिघस्यचार्द्धम् ।
तिस्रस्तुयोगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नवपंचशूले ।
गंडेतिगंडे च षडेवनाड्यः शुभेषुकार्येषु विवर्जनीयाः ॥१०९

टीका—समस्त शुभ कामों में अशुभ योगोंके आदिका चौथा भाग पूर्ण व्यतीपात और वैधृतियोग, परिघ का पूर्वार्द्ध विष्कुंभकी ३ घड़ी, वज्र की और व्याघातकी ९ घड़ी, शूल की ५ घड़ी, गंडकी और अतिगंडकी ६ शूलकी १५ घड़ी वर्जित हैं ॥ १०९ ॥

करण जानने की रीति ।

गततिथ्योद्विनिघ्नश्च शुक्लप्रतिपदादितः ।
एकोनः सप्तहृच्छेषः करणांस्याद्ववादिकम् ॥ ११० ॥

टीका—जिस दिन का करण जानना हो तब शुक्ल प्रतिपदा से वर्त्तमान तिथितक गिनकर दूना करै, फिर उसमें एक मिलाय ७ से भाग देने पर जो शेष बचे उसेही उस दिनका करण जाने ॥ ११० ॥

करणों के नाम ।

ववाह्वयंबालवकौलवाख्य ततोभवेत्तैतिलनामधेयम् ।
गराभिधानं वणिजं च विष्टि रित्याहुरार्याः करणानिसप्त॥१११
अंते कृष्णचतुर्दश्यां शकुनिर्दर्शभोगयोः ।
ज्ञेयं चतुष्पदं नागं किंस्तुघ्नं प्रतिपद्दले ॥ ११२ ॥

करणों के स्वामी ।

इन्द्रब्रह्ममित्रनमार्यमभूः श्रीः कृतान्तश्चेति तिथ्यर्धनाथा ।
कल्युत्ताख्यौ सर्पवायू तथैव ये चत्वारस्तेचस्थिराणां चतुर्णाम् ११३

करणों के कृत्य ।

पौष्टिकस्थिरशुभानिबवाख्ये बालवेद्विजहितान्यपिकुर्यात् ।
कौलवेप्रमदमित्रविधानं तैतिले शुभ मंगल कर्म ॥ ११४ ॥
गरे च बीजाश्रयकर्षणानिवाणिज्यके स्थैर्यवणिक्क्रियाश्च ।
न सिद्धिमायातिकृतं च विष्ट्यां विषारिघातादिषु तंत्रसिद्धिः ॥

मंत्रौषधानि शकुनौ तु सपाष्टिकानि
गोविप्रराज्यपितृकर्मचतुष्पदे तु।
सौभा ग्यदारुणधृतिध्रु वकर्मनागे
किंस्तुघ्ननाम्नि निखिलं शुभकर्म कार्यम् ॥ ११६ ॥

भद्रा का स्वरूप।

दैत्येंद्रैः समरेऽमरेचविजितेश्वीशः क्रुधाद्दृष्टवान्।
स्वंकायात्किलनिर्गताखरमुखी लांगूलिनी च क्रपात्।
विष्टिः सप्तभुजामृगेंद्रगलकाक्षीणोदरी प्रेतगा
दैत्यघ्नी मुदितः सुरैस्तुकरणप्रांतेनियुक्ता तु सा ॥ ११७ ॥

शुक्ल तिथि				कृष्ण तिथि				नाम	स्वामी	कृत्य
पूर्वदल		उत्त०		पूर्वदल		उ.द.				
१	स्थिर			०	०	०	०	किंस्तु	वायु	सब शुभ काम करै
५	८	१	१५	४	११	७	०	बव	इन्द्र	व्रतोत्सव, देवालय आदि शुभ काम करै
२	१२ ९	५	१२	१	८	४	११	बालव	ब्रह्मा	ब्राह्मणों का हित करै
६	१३	२	९	५	१२	१	८	कौलव	मित्र	उन्माद और मित्रता करै
३	१०	६	१३	२	९	५	१२	तैतिल	सूर्य	विवाहादि मांगलिक कार्य करै
७	१४	३	१०	६	३	२	१	गर	भूमि	बीज बोए, हल चलावै।
४	११	७	१४	३	०	६	१३	वणिज	लक्ष्मी	देवप्रतिष्ठा, घर बनावै और व्यापार करै।
८	१५	४	११	७	१४	३	१०	विष्टि	यम	विषजनितघात और क्रूरता के कामों को करै।
स्थिर		०	०	०	०	०	१४	शकुनि	कलि	मित्रोपदेश, औषधि ग्रहण और ग्रहों का पूजन करै।
स्थिर		०	६	३०	०	०	०	चतुष्पद	वृषभ	गौ ब्राह्मण राजा और पितृ सम्बन्धी काम करै।
स्थिर		०	०	०	०	०	३०	नाग	सर्प	सौभाग्य के काम करै, युद्ध में जाय, धीरज रक्खे, विद्या पढ़े।

टीका—देवासुर संग्राम में दैत्यों से देवताओं की पराजय हुई, तब महादेव जी क्रोधित हुए, उस समय, महादेवजी के शरीर से भद्रानाम्नी शक्ति उत्पन्न हुई, उस गधे की समान पुच्छयुक्त मुखवाली, चक्र के समान घूटनेवाली, सात भुजाओं को धारण किये, सिंह की समान कंठ, कृशोदरी और प्रेत पर बैठकर चलनेवाली, भद्रा को देवताओं ने देख हर्ष सहित करण के अन्तभाग में नियुक्त कर दिया। तब उसकी सहायता से देवताओं ने दैत्यों को पराजित किया। इस भांति से भद्रा का स्वरूप और पराक्रम प्राचीन ऋषियोंके उपकारके लिये वर्णन किया है ॥ ११७ ॥ भद्रा का तिथिमान

शुक्लेपूर्वार्धेऽष्टमीपञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यांचतुर्थ्यापरार्द्धे।
कृष्णेऽन्त्यार्द्धेस्यात्तृतीयादशम्योः पूर्वेभागेसप्तमीशम्भुतिथ्योः ११८

टीका-शुक्लपक्ष में ८ और १५ को पूर्वदल में भद्रा को जाने, एवं शुक्लपक्ष की ४ और ११ को परदल में भद्रा को जाने, तथा कृष्णपक्ष की ३ और १० को परदलमें भद्राको जाने तथा ७ और १४ को पूर्वदल में भद्राको जाने ॥११८॥

भद्रा के मुख और पुच्छ का विचार।

पंचद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघट्यःशरा
विष्टेरास्यमसद्गजेंदुरसरामाद्यश्विबाणाब्धिषु।
यामेष्वंत्यघटित्रयंशुभकंपुच्छं तथा वासरे-
विष्टिस्तिथ्यपरार्धजाशुभकरी रात्रौ तु पूर्वार्धजा ॥११९॥

टीका-शुक्लपक्षमें चौथकी पांचवेंप्रहरकी पहिलीपाँच घड़ी को भद्राका मुख, एवं अष्टमी के दूसरे प्रहरकी आदिकी पाँच घड़ी को मुख, एकादशी के सातवें प्रहरकी आदिकी पांच घड़ीको मुख और पूर्णिमा के चौथेप्रहरकी ५ घड़ी को भद्राका मुख जानै। तथा कृष्णपक्ष में तीज के आठवें प्रहर की आदि कि ५ घड़ी को भद्रा का मुख, एवं सप्तमी के आदि की ५ घड़ी को मुख, चौदस के पहिले प्रहर की आदि की ५ घड़ी को मुख और पंचमी के छठे प्रहर की आदि की ५ घड़ी को भद्रा का मुख जानै, यह सब कामों में वर्जित है। ऐसे ही शुक्ल पक्ष में चौथ के आठवें प्रहर की अंतकी ३ घड़ी को भद्रा का पुच्छ, अष्टमी के प्रथम प्रहर के अंत की ३ घड़ी को पुच्छ, एकादशी, के छठें प्रहर की अंत की ३ घड़ी पुच्छ, पूर्णिमा के अंत की ३ घड़ी को भद्रा का पुच्छ जाने इसी भाँति कृष्णपक्ष की तीज के सातवें प्रहरकी अंत की ३ घड़ी को

१—दिवासर्पमुखीभद्रा रात्रौभद्रा च वृश्चिकी। सर्पस्य च मुखत्याज्यं रात्रौपुच्छंपरित्यजेत्
रात्रिभद्रा यदाह्निस्यात्दिवाभद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः स्यात्सर्वकार्याणिसाधयेत्

भद्राकी पुच्छ, दशमीके पाँचवें प्रहरके अन्तकी २ घड़ी को भद्रा की पुच्छ जाने, यह सब शुक्ल और कृष्णपक्ष की पुच्छवाली घड़ी शुभ होती हैं इसी प्रकार पूर्व दलकी भद्रा परदल में होने से सम्पूर्ण कार्यों में शुभदायक है ॥११९॥

भद्रा का शरीरभाग ।

मुखेपंच गलेत्वेक वक्षस्येकादशःस्मृताः ।
नाभौचतस्रः षट्कट्यां तिस्रः पुच्छे तु नाडिकाः ॥१२०॥

टीका—मुखमें ५ कंठ में १ हृदय में ११ नाभि में ४ कटि में ६ और पुच्छमें ३ घड़ी इस प्रकार ३० घड़ीमें भद्रा का शरीर विभाग जाने ॥१२०॥

भद्रा के शरीर भाग का फल ।

कार्यहानिर्मुखेमृत्युर्गलेवक्षसिनिस्वता ।
कट्यामुन्मत्तता नाभौमुच्यतिः पुच्छेध्रुवोजयः ॥१२१॥

टीका-मुख की भद्रा कार्यनष्ट करती है,कंठकी मृत्यु हृदयकी दरिद्रता,कमर की उनमत्तता,नाभिकी कार्यनष्टऔर पुच्छकी भद्रा जय लाभ करती है ॥१२१॥

भद्रा का वास ।

कर्ककुंभद्वयोर्भूस्था कौर्पेजत्रितयेद्युगा ।
कन्याचापद्वयेचन्द्रो भद्रापातालवासिनी ॥ १२२ ॥

टीका-कर्क,सिंह,कुम्भ, और मीन राशि के चन्द्रमामे भद्राका वास पृथिवी में । वृश्चिक, मेष, वृष और मिथुन के चन्द्रमा में भद्रा का वास स्वर्ग में कन्या,तुला,धन और मकर के चन्द्रमा में भद्रा का वास पाताल में जाने॥१२२॥

भद्रा के वासस्थान का फल ।

स्वर्गेभद्रा भवेत्सौख्यं पाताले च धनागमः ।
मृत्युलोके यदा भद्रा कार्यसिद्धिस्तदा नहि ॥ १२३ ॥

टीका—स्वर्ग की भद्रा सुख देती, पाताल की भद्रा धन देती और मृत्यु लोक की भद्रा सर्व कार्यों को नष्ट करती है ॥ १२३ ॥

वार के अनुसार भद्रा के नाम ।

सोमे शुक्रे च कल्याणी शनौ चैव तु वृश्चिकी ।
गुरौ पुण्यवती ज्ञेया चान्यवारेषु भद्रिका ॥१२४॥

टीका—सोम और शुक्रवार की भद्रा को कल्याणी,शनिवार की भद्रा को

वृश्चिकी, गुरुवार की भद्रा को पुण्यवती एवं रवि, मंगल और बुधवार की भद्रा को भद्रिका जाने। इनका फल नाम के अनुसार होता है ॥ १२४ ॥

शुभभद्रा।

युद्धे भूपति दर्शने भयवने घाते च पाते हठे,
वैद्यस्यागमने जलप्लवतरणे शत्रोस्तथो च्चाटने।
सिंहोष्ट्रे खरे माहिषाज मृगके चाश्वे गृह पातने,
स्त्री सेवा ऋतुमज्जनेषुसकटे भद्रा सदासौख्यदा ॥१२५॥

टीका-युद्ध, राजदर्शन, घात, पात, हठ, वैद्यागम, जल में तैरना, शत्रु उच्चाटन सिंह, ऊँट, गदहा, भैंस बकरी मृगा घोड़ा को घर में लानेपर, स्त्री सेवा, ऋतु स्नान, और गाड़ी चलाना ये सब कार्य भद्रा में करने से सुख होता है ॥१२५॥

आनन्दादि योग जानने की रीति।

दास्रादर्के मृगादिन्दौसार्पाद्भौमे कराद्बुधे।
मैत्राद् गुरौभृगौवैश्वाद् गण्या मन्दे च वारुणात् ॥१२६॥

रविवार के जो नक्षत्र होय उसको अश्विनीसे गिने सोमवार के मृगशिरा से मंगल के श्लेषा से बुधके हस्त से बृहस्पतिको अनुराधा से शुक्र को उत्तराषाढ़से और शनि के शतभिषा से गिनने से जो संख्या हो उतने संख्या वाला उस दिन आनन्दादिक योग में कोई योग होगा ॥ १२६ ॥

योगों के नाम		रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल
१	आनन्द	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ. षा.	शतभि.	सिद्धि
२	कालदण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजि.	पू. भा.	मृत्यु
३	धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	असुख
४	धाता	रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	विशाखा	पू. षा.	धनिष्ठा	रेवती	सौभाग्य
५	सौम्य	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त.	अनुराधा	उ. षा.	शतभि.	अश्विनी	अधिसौ.
६	ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजि.	पू. भा.	भरणी	धनक्षय
७	केतु	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	पुष्य	उ. फा.	विशाखा	पू. षा,	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	सौख्य
९	वज्र	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ. षा.	शतभि.	अश्विनी	मृगशिरा	क्षय
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजि,	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	लक्ष्मीना
११	छत्र	पू. फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	राजस.
१२	मित्र	उ. फा.	विशाखा	पू. षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	पुष्टि
१३	मानस	हस्त	अनुराधा	उ. षा.	शतभि.	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	सौभाग्य
१४	पद्माख्य	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजि.	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	धनप्राप्ति

योगों के नाम		रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल
१५	लुंबक	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू. फा.	धन हानि
१६	पात	विशा.	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	प्राणना.
१७	मृत्यु	अनु.	उत्त. षा.	शतभि.	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	मृत्यु
१८	काणाख्य	ज्येष्ठा	अभिजि.	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश
१९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाती	कार्यसि.
२०	शुभ	पू. षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	विशाख	कल्याण
२१	अमृत	उ. भा.	शतभिष	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	राजसुख
२२	मुसल	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	धन क्षय
२३	गदाख्य	श्रवण	उत्तराभा	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाती	मूल	अक्ष वृ
२४	मातंग	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	विशाखा	पू. षा.	महाकष्ट
२५	राक्षस	शतभि.	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ. षा.	कुलवृ.
२६	चर	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजि.	कार्यसि.
२७	सुस्थिर	उ. भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वा फा.	स्वांती	मूल	श्रवण	गृहारम्भ
२८	प्रवर्धमा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	विशाखा	पू. षा.	धनिष्ठा	शुभ

आनन्दः कालदंडश्च धूम्राख्योऽथ प्रजापतिः ।
सौम्योध्वांक्षो ध्वजानाम्नो श्रीवत्सो वज्रमुद्गरः ॥ १२७ ॥
छत्रं मित्रं मानसश्च पद्माख्यो लुम्बकस्तथा ।
उत्पातो मृत्यु काणाख्यः सिद्धश्चैवशुभौऽमृतौ ॥ १२८ ॥
मुसलोऽथ गदाख्यश्च मातंगो राक्षसश्चरः ।
स्थिरः प्रवर्द्धमानश्च योगाष्टाविंशतिः क्रमात् ॥ १२९ ॥

फलम्

आनंदेलभतेसिद्धिं कालदंडे मृतिं तथा ।
धूम्राख्येन सुखं प्रोक्तं सौभाग्यं च प्रजापतौ ॥ १३० ॥
सौम्ये चैव महात्सौख्यं ध्वांक्षे चैव धनक्षयम् ।
ध्वजनाम्निश्च सौभाग्यं श्रीवत्से सौख्यसम्पदे ॥ १३१ ॥
वज्रे क्षयोमुद्गरे च श्रीनाशस्तु तथैव च ।
छत्रे च राजसन्मानं मैत्रे पुष्टिं न संशयः ॥ १३२ ॥

मानसे चैव सौभाग्यं पद्माख्ये च धनागमम् ।
लुम्बके धनहानिश्च उत्पाते प्राणनाशनम् ॥ १३३ ॥
मृत्युयोगे भवेन्मृत्युः काणे च क्लेशमादिशेत् ।
सिद्धियोगे भवेत्सिद्धिः शुभे कल्याणमेव च ॥ १३४ ॥
अमृते राजसन्मानं मुसले च धनक्षयः ।
गदाख्ये चाऽक्षय विद्या मातङ्गे कुलवर्द्धनम् ॥ १३५ ॥
राक्षसे तु महत्कष्टं चरेकार्यं च सिद्ध्यति ।
स्थिरयोगे गृहारम्भो प्रवृद्धे पाणिपीडनम् ॥ १३६ ॥

टीका—अनन्दादि २८ योग हैं, उनमें १ योगके ७ वार और ७ नक्षत्र हैं। इस रीति से रविवारको अश्विनी, सोमवारको मृगशिरा, मंगलको आश्लेषा, बुधको हस्त, गुरुको अनुराधा, शुक्रको उत्तराषाढ और शनिवारको शतभिषा नक्षत्र होने से आनन्दादि योग होते हैं, सो ऊपरके चक्रमें स्पष्ट देखो ॥ १२७ ॥

चरयोगः ।

रवौपूषा गुरौपुष्यः शनौमूलं भृगौमघा ।
सौम्येब्राह्मं विशोभौमे चन्द्रेर्द्रा चरयोगकः ॥ १३७ ॥

क्रकचयोगः ।

रवौ तु द्वादशीप्रोक्ता भौमे च दशमी तथा ।
चन्द्रेचैकादशीप्रोक्ता नवमीबुधवासरे ॥१३८॥
शुक्रे च सप्तमी ज्ञेया शनौ चैव तु षष्ठिका ।
गुरौचाष्टमिका ज्ञेया योगस्तु क्रकचो बुधैः ॥ १३९ ॥

दग्धयोगः ।

बुधेतृतीयाकुजपञ्चमी च षष्ठ्यांगुरावष्टमिशुक्रवारे ।
एकादशासामशनिर्नवम्यां द्वादश्यर्कामतिदग्धयोगः॥१४०॥

मृत्युदायोगः ।

रवौभौमेभवेन्नन्दा भद्राजीवशशांकयोः ।
जयाशुक्रे बुधेरिक्ता शनौपूर्णा च मृत्युदा ॥ १४१ ॥

सिद्धियोगः ।

शुक्रेनन्दा बुधेभद्रा जयाभौमे प्रकीर्तिताः ।
शनौरिक्ता गुरौपूर्णा सिद्धियोगा उदाहृताः ॥ १४२ ॥

उत्पातमृत्युकालसिद्धियोगः ।

विशाखादिचतुष्कं तु भास्करादिक्रमेण तु ।
उत्पातमृत्युकालाख्यं सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥ १४३ ॥

यमदंष्ट्रयोगः ।

मघाधनिष्ठासूर्ये तु चन्द्रेमूलेविशाखके ।
कृत्तिकाभरणीभौमे सौम्येपूषापुनर्वसुः ॥ १४४ ॥
गुरौपूषाश्विनीशुक्रे रोहिणी चानुराधिका ।
शनौविष्णुः शतभिषक् यमदंष्ट्राः प्रकीर्तिताः ॥ १४५ ॥

यमघण्टयोगः ।

रवौ मघा बुधे मूलं गुरौ चैव च कृत्तिका ।
भौमे चार्द्रा शनौहस्तः शुक्रे चैव तुरोहिणी ॥ १४६ ॥
चन्द्रेविशाखा योगोऽयं यमघण्टः प्रकीर्तितः ॥ १४७ ॥

मुसलवज्रयोगौ ।

चन्द्रेचित्रा भृगौज्येष्ठा शनौ चैव तुरेवती ।
चन्द्रजे तुधनिष्ठोक्ता रवौ तु भरणी तथा ॥ १४८ ॥
ऊषाश्चैव तु भौमे च गुरौ चैवोत्तरा तथा ।
अयं मुशलवज्राख्ययोगौ वर्ज्यः शुभे बुधैः ॥ १४९ ॥

योगों के नाम		रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१	चरयोग	पूर्वापा.	आर्द्रा	विशाखा	रोहिणी	पुष्प	मघा	मूल
२	क्रकचयोग	१२ तिथि	११ तिथि	१० तिथि	९ तिथि	८ तिथि	७ तिथि	६ तिथि
३	दग्धयोग	१२ तिथि	११ तिथि	५ तिथि	३ तिथि	६ तिथि	८ तिथि	९ तिथि
४	मृत्युदा	नन्दा	भद्रा	नन्दा	रिक्ता	भद्रा	भद्रा	पूर्णा
५	सिद्धियोग	०	०	जया	भद्रा	पूर्णा	नन्दा	रिक्ता
६	उत्पात	विशाखा	पूर्वा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तरा
७	मृत्युयोग	अनुराधा	उत्तरा	शततारा	अश्विनी	मृग	ऽश्लेषा	हस्त
८	कालयोग	ज्येष्ठा	अनुराधा	पूर्वा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उत्तरा	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वा	स्वाती
१०	यमदंष्ट्र	मघाधनि	मूलविश	कृ. रोहि.	पू.षा. पू.	उ.षा. आ	रोहिणी	श्रव.शत.
११	यमघंट	मघा	विशाखा	मृगशिरा	मृगशिरा	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
१२	मुसलयोग	भरणी	चित्रा	उत्तराषा	धनिष्ठा	उत्तरा	ज्येष्ठा	रेवती
१३	अमृतसिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी

अमृतसिद्धियोगः ।

आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधानुराधा शनिरोहिणी च ।
सोमे च विष्णुर्भृगुरेवती च भौमाश्विनी चामृतसिद्धियोगः १५०

टीका—चरयोगादि तेरह योग और सातों वार चक्र में लिखे हैं, उनमें जिस वार में नक्षत्र वा तिथि हो उस दिन योग जाने ॥ १५० ॥

सर्वार्थ सिद्धियोग ।

सूर्ये कमूलोत्तर पुष्य दास्रं चन्द्रेश्रुति ब्राह्मशशीज्यमैत्रे ।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् १५१
जीवेऽन्त्यमैत्रा श्व्यदितीज्यधिष्ण्यं ।
शुक्रेऽन्त्य मैत्राश्व्यदितिश्रवोभम् ॥
शनौ श्रुति ब्राह्म समीर भानि ।
सर्वार्थ सिद्ध्यै कथितानिपूर्वैः ॥ १५२ ॥

टीका—रविवार को हस्त, मूल, तीनों उत्तरा, पुष्य, अश्विनी सोमवार को श्रवण, रोहिणी मृगशिरा, पुष्य अनुराधा,मंगल को अश्विनी, उत्तरा फाल्गुनी, कृत्तिका, श्लेषा, बुधको रोहिणी अनु०हस्त, कृत्त०मृगसिरा बृहस्पतिको रेवती

अनु० अश्वि० पुन० पुष्य, शुक्रको रेवती अनुराधा अश्विनी पुन, श्रव, शनिको श्रवण, रोहिणी, स्वाती नक्षत्र हो तो सर्वार्थ सिद्धि योग होता है ॥१५१-१५२॥

रवियोग।

सूर्यभाद् वेद गोतर्क दिग् विश्व नख सम्मिते।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्यु दोष सङ्घविनाशकाः ॥१५३॥

टीका- सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमाकी ४-९-६-१०-१३ और २० वीं नक्षत्रों पर रवियोग होता है यह दोषों के संघों का नाश करता ॥ १५३ ॥

सामान्यतः वर्ज्य पंचाङ्ग दूषणम्।

जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रा-
वैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयर्द्धी।
न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्द्धपाता-
विष्कुम्भवज्रघटिकात्रयमेववर्ज्यम् ॥ १५४ ॥
परिघाध पञ्च शूले षट् च गण्डातिगण्डयोः।
व्याघाते नव नाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेसु कर्मसु ॥ १५५ ॥

टीका-जन्मनक्षत्र, जन्ममास, जन्मतिथि, व्यतिपात, भद्रा, वैधृत्य, अमावस्या पितृश्राद्ध दिन, तिथियों की क्षय एवं वृद्धि न्यूनाधिक मास, कुलिक, अर्द्धयाम वारवेला और महापात ये सब शुभ कार्यों में वर्जित हैं। विष्कुम्भ और वज्रयोग के आदि की तीन घड़ी परिघ योग की पूर्वार्ध शूल योग की पाँच घड़ी गन्ड तथा अतिगन्ड योग की छः घड़ी और व्याघातयोगकी नव घडी आदही की सब शुभ कार्यों में वर्जित हैं ॥ १५४ ॥ १५५ ॥

पक्ष रंध्र तिथि और वर्ज्य घटिका-

वेदाङ्गाष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौ त्यजेत्।
वस्वङ्कमनुतत्वाशाः शरा नाडीः पराः शुभाः ॥ १५६ ॥

टीका-दोनों पक्षों की चतुर्थी षष्ठी अष्टमी नवमी द्वादशी और चतुर्दशी ये रंध्र (छिद्र) तिथि हैं इन तिथियों को क्रम से ८।९।१४।२५।१०।५ घड़ी त्याग देवे शेष घड़ियाँ शुभ हैं ॥१५६॥

कुलकादि दोष -

कुलिकः कालवेला च यमघण्टश्च कण्टकः ।
वाराद्द्विघ्ने क्रमान्मन्दे बुधे जीवे कुजे क्षणः ॥ १५७ ॥

टीका-वर्तमान वारोंसे शनिवार तक गिनने सेजो अङ्क मिले उसे दूना करे वो उस अङ्क का मुहूर्त कुलिक योग, बुधवार तक गिनकर दूना करनेसे कालवेला और गुरुवार तक गिनकर दूना करने से यमघंटयोग मंगलवार तक गिनकर दूना करने से कंटक योग होता है ॥ १५७ ॥

कुलिकादि मुहूर्त—

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कुलिक	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेला	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघण्ट	१०	८	६	४	२	१४	१२
कण्टक	६	४	२	१४	१२	१०	८

उदाहरण-रविवार को देखना हो तो रविवार से शनिवार तक गिनने से ७ मिला इसे दूना करने से १४ हुआ इसलिये रविवार को चौदहवाँ मुहूर्त कुलिकयोग हुआ । रविवार से बुधवार तक गिना तो ४ मिला, इसे दूना किया तो ८ हुआ इसलिए आठवाँ मुहूर्त कालवेला हुआ । रविवार से गुरुवार तक गिना तो ५ मिला दूना किया तो १० हुआ इस लिये दशवाँ मुहूर्त यमघंट हुआ । रविवार से मंगलवार तक गिनने से ३ मिला, दूना करने से ६ हुआ इसलिये छठाँ मुहूर्त कण्टक हुआ इसी प्रकार अन्य वारों को भी जानना ये चारों योग शुभ कार्यों में वर्जित हैं ॥

रवि आदि वारों में दुष्ट मुहूर्त—

सूर्येषट्स्वरनागदिङ् मनुमिताश्चन्द्रेब्धि षट्कुञ्जरा-
ङ्कार्काद्विश्वपुरन्दराः नितिसुतेङ्कपञ्च्यग्नितर्का दिशः ॥
सौम्ये द्व्यग्निगज ङ्कदिङ् मनुमिता जीवेद्विषड् भास्कराः।
शुक्राख्यास्तिथयः कलाश्च भृगुजे वेदेषुतर्कग्रहाः ॥१५८॥

दिग्भास्करा मनुमिताश्च शनौ शशिद्विनागादिशो भव-
दिवाकरसंमिताश्च । दुष्टःक्षणः कुलिककण्टककालवेलाः
स्युश्चार्धयाम यमघण्टगताः कलांशाः ॥ १५६ ॥

रविवार को ६, ७, ८, १०, और १४
सोमवार को ४, ६, ८, ९, १२, १३, और १४
मंगलवार को २, ३, ४, ६, और १०
बुधवार को २, ४, ८, ९, १० और १४
गुरुवार को २, ६, १२, १४, १५, और १६
शुक्रवार को ४, ५, ६, ९, १०, १२, और १४
शनिवार को १, २, ८, १०, ११, और १२ ये मुहूर्त निन्दित हैं । इनमें कोई तो दुष्ट क्षण कुलिक, कोई कंटक, कोई कालवेला, कोई अर्द्धयाम और कोई यमघण्ट हैं । मुहूर्त दो घड़ी का होता है पर यहाँ दिनमान के सोलहवें अंशको मुहूर्त माना है ॥ १५८ ॥ १५९ ॥

उदाहरण–शुभाशुभ प्रकरण के ३७ वें श्लोकके अनुसार–सूर्य वार में ६वाँ मुहूर्त कंटक, आठवा कालवेला १० वाँ यमघट, १४ वाँ कुलिक है और विवाह प्रकरण के २४ श्लोक के अनुसार ७ वाँ अर्द्धयाम है इसी प्रकार और वारों में भी जानना ।

होलाष्टकवर्णन—

विपाशेरावतीतीरे शुतुद्रयाश्च त्रिपुष्करे ।
विवाहादिशुभे नेष्टं होलिकाप्राग्दिनाष्टकम् ॥ १६० ॥

विपाशा, ऐरावती और शुद्र (शतलज) इन चार नदियों के दोनों ओर और त्रिपुष्कर देश में होलाष्टक अर्थात् होली के आठ दिन प्रथम शुभ कार्यों में वर्जित हैं ॥ १६० ॥

दुष्ट योगों का परिहार—

मृत्युक्रकचदग्धादीनिन्दौ शस्ते शुभान् जगुः ।
केचिद्यामोत्तरं चान्ये यात्रायामेव निन्दितान् ॥ १६१ ॥

यदि चन्द्रमा श्रेष्ठ हों तो मृत्यु क्रकच और दग्धादि योग शुभ होते हैं । अन्यान्य मुनियों का यह मत है कि एक पहर दिन चढ़ जाने पर सब योग शुभदायक हो जाते हैं और कोई कोई यह कहते हैं कि केवल यात्रा काल में योग निन्द्य होते हैं अन्यान्य समय शुभ ही होते हैं ॥ १६१ ॥

अयोगे सुयोगोऽपि चेत्स्यात्तदानी-
मयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति ।
परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं-
दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम् ॥ १६२ ॥

दुष्ट योग के दिन सुयोग हो तो दुष्टयोग के फलों को नाश कर शुभ फल प्राप्त होता है। किसी किसी का यह भी मत है कि लग्नशुद्धि होने से दुष्ट योगादि नाश हो जाते हैं। मध्याह्न के बाद भद्रा आदि दोष शुभ है अर्थात् भद्रा मंगलवार, व्यतीपात, वैधृति, प्रत्यरि तारा और जन्म नक्षत्र मध्याह्न के पश्चात् शुभप्रद होते हैं ॥ १६२ ॥

शुक्रोदयास्तनिर्णय-

यमशराभुजवासर वज्रिशो नयन सप्तदिनान्युशनोस्तगः ।
गगन बाणयमादिशिपश्चिमे नव दिनानि भृगूरविमण्डले ॥१६३

पूर्व में जिस दिन शुक्र उदय होते हैं उस दिन से २५२ दिन (८ मास, १२ दिन) उदय रहते हैं। फिर ७२ दिन (२ मास, १२ दिन) अस्त रहते हैं, फिर पश्चिम में उदय होते हैं, और २५० दिन (८ मास १० दिन) उदय रहकर १० दिन अस्त हो पूर्व में उदय हो जाते हैं। यह स्थूल विचा है भौमादिक का भी स्थूल प्रकार टिप्पणी में देखिये उदय अस्त का विचार सूर्य सिद्धान्त, ग्रहलाघ, भास्वती आदि में केन्द्रांश के नियम से जो लिखा है उसी अनुसार ठीक है ॥ १६३ ॥

गुरु और शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म-

वाप्यारास तड़ाग कूप भवनारम्भ प्रतिष्ठे व्रता
रम्भोत्सर्ग वधूप्रवेशनमहादानानि सोमाष्टके ॥
गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्मवेदव्रतं
नीलोद्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्कारान् सुरस्थापनम् ॥ १६४ ॥

---

१ पूर्व में मङ्गल २२ मास बुध १ मास ६ दिन, गुरु १ वर्ष २८ दिन, शुक्र ८ मास १६ शनि १० मास १८ दिन उदय रहते हैं, और बुध ३२ दिन, शुक्र २ मास १८ दिन अस्त रहते हैं।

पश्चिम में बुध ३६ दिन, शुक्र ८ मास, १६ दिन उदय रहते हैं, और मङ्गल ४ मास बुध १६ दिन गुरु ३२ दिन, शुक्र १० दिन, शनि एकमास १२ दिन अस्त रहते हैं।

दाता मौञ्जिविवाहमुण्डनमपूर्वं देवतीर्थेक्षणं
संन्यासाग्निपरिग्रहौ नृपतिसंदर्शाभिषेकौ गमम् ॥
चातुर्मास्यसमावृती श्रवणयोर्वेधं परीक्षां त्यजेद्
वृद्धत्वास्तशिशुत्वइज्यसितयोन्यूनाधिमासे तथा ॥ १६५ ॥

अथ-बावली, बाग, तालाब, कुआ, मकान, इनका आरंभ और उत्सर्ग, प्रतिष्ठा व्रतारम्भ, वधूप्रवेश, तुलादानादि महादान, सोमयाग, अष्टका श्राद्ध, गोदान (केशान्त कर्म) नूतनान्न का यज्ञ, जलशाला (पौसरा) प्रथम उपाकर्म प्रथम वेदव्रत वृषोत्सर्ग बालकों का कालव्यतीत संस्कार, देवताओं की प्रतिष्ठा (स्थापना गुरुदीक्षा, यज्ञोपवीत विवाह, मुण्डन अपूर्व देवता व तीर्थों का दर्शन, संन्यासधारण, अग्नि आधान (अग्निहोत्र) (राजा का दर्शन, राज्याभिषेक, प्रथम यात्रा चातुर्मास्य नामक याग, समावर्तन, (गुरुसे पढ़के घरको आना और मूंजोंकी मेखला उतारना) कर्णछेदन और परीक्षा देना य कर्म बृहस्पति और शुक्रके अस्त बाल वृद्ध तथा न्यूनाधिमासमें नहीं करना चाहिये ॥ १६४॥१६५

गुरु शुक्रके बालक वृद्ध के दिन—

पुरः पश्चाद् भृगोर्बाल्यं त्रिदशाहं च वार्धकम् ।
पक्षं पञ्च दिनं वृद्धे गुरोः पक्षमुदाहृते ॥ १६६ ॥

शुक्रके पूर्व उदय में ३ दिन, पश्चिम उदयमें १० दिन बाल्यावस्था रहती है और पूर्वास्त में और पश्चिमास्तमें भी पन्द्रह पन्द्रह दिन वृद्ध रहते हैं । बृहस्पति १५ दिन बाल्य, १५ दिन वृद्ध रहते हैं ॥ १६६ ॥

ते दशाहं द्वयोः प्रोक्तं कश्चित् सप्तदिनं परैः ।
त्र्यहं त्वात्ययिकेऽप्यन्यैरर्धाहं च त्र्यहं विधोः ॥ १६७ ॥

कोई कोई आचार्य बृहस्पति के उदय अस्त में बाल्य और वृद्धके दश दश दिन कहते हैं और कोई कोई सातदिन कहते हैं कोई कोई आवश्यकता में तीन दिन कहते हैं । चन्द्रमाका आधा दिन बाल्यकाल और तीन दिन वृद्ध हैं । अमावस के अस्त होते हैं ॥ १६७ ॥

सिंह और मकरगत गुरुका निषेध—

अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे ।
गुर्वादित्ये विश्वधस्रेऽपि पक्षे प्रोचुस्तद्वन्तरत्नादिभूषाम् ॥ १६८॥

मुनियों ने जिन जिन कर्मों को बृहस्पति में वर्जित किया है वेही सिंह तथा मकर राशि के बृहस्पति में भी वर्णित हैं। अन्यान्य मुनियोंका मत है कि जब बृहस्पति वक्री अथवा अतिचार होवे तब शुभ कर्म वर्जित है और यदि सूर्य और बृहस्पति एकही राशि में स्थित हों और पक्ष १३ दिन का होवे तब भी शुभ-कर्मों को नहीं करना चाहिए हाथी के दाँत तथा रत्न आदि जड़ित भूषण भी न पहिरे और न बनवावे ॥ १६८ ॥

सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत् ।
भागीरथीयाम्यतटे हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेषे ॥१६९॥

टीका–यदि बृहस्पति सिंह राशि में हों और सिंह ही का नवांश भी हो तो विवाह शुभ नहीं है यह गोदावरी के उत्तर तट से गंगा के दक्षिण तट तक वर्जित है। जब मेष राशि के सूर्य और सिंह के बृहस्पति हों तब विवाह कर्म श्रेष्ठ है, इस विषय में अन्यान्य ग्रन्थों में अनेक मुनियों के भिन्न भिन्न मत हैं (मेरा सिंहस्थ गुरु मीमांसा देखो) ॥ १६९ ।

सिंहराशिस्थ गुरु का परिहार —

मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः ।
गङ्गा गोदान्तरं हित्वा शेषाङ्घ्रिषु न दोषकृत् ॥ १७० ॥
मेषेऽर्के सत्र ओद्वाहो गङ्गागोदान्तरेऽपि च ।
सर्वः सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गे गौडगुर्जरे ॥ १७१ ॥

मघा नक्षत्र के चार चरणों में और पूर्वाफलगुनी के प्रथम चरण में बृहस्पति रहे तो विवाहादि शुभ कार्य सब देश में निंदित हैं और शेषपूर्वाफाल्गुनी के दो चरण से उत्तरा फाल्गुनी के एक चरण तक गंगा और गोदावरी के मध्य देशों में सब कर्मों में निन्दित है। अन्य देश में दोषप्रद नहीं है। मेष राशि में सूर्य हो तब सिंह के बृहस्पति में, गंगा और गोदावरी के मध्यदेशों में विवाह तथा यज्ञोपवीत करना शुभ है पर कलिंग, गौड और गुजरात देश में सम्पूर्ण वर्जित है ॥१७०॥१७१॥

गुरुशुद्धि विचार—

वटु कन्या जन्मराशेस्त्रिकोणाय द्विसप्तगः ।
श्रेष्ठो गुरुः खषट् त्र्याद्ये पूजयान्यत्र निन्दितः ॥ १७२ ॥
स्वोच्चे स्वभे स्वमित्रेवा स्वांशेवर्गोत्तमो गुरुः ।
रिस्फाष्टतुर्यगोपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ॥ १७३ ॥

टीका—बटु (जिस बालक का उपनयन करना हो) की जन्मराशि और कन्या की जन्म राशि से पंचम नवम एकादश द्वितीय सप्तमस्थ गुरु श्रेष्ठ होते हैं और दशम-षट्-तृतीय प्रथम (जन्म) के होने पर मध्यम, और अन्यत्र चतुष्ट महाद.स्थान में हो तो मध्यम जानना। अपनी उच्च[1] राशि अपनी[2] राशि मित्र[3] की राशि, अपने नवांश अपने [4]वर्गोत्तम में बृहस्पति हो तो चतुर्थ अष्टमद्वादश भी गुरु उत्तम होते हैं। अपनी, (१०) शत्रु बुध शुक्र राशि (३-६-२-७) होने पर शुभ भी हो तो अशुभ है॥ १७२॥ १७३॥

रवि शुद्धि विचार—

शुभप्रदो दिनेश्वरो त्रिषट् दशायजोयदा
चतुर्थ रिष्फरन्ध्रगो हि निन्दितो निरंतरम्।
द्विपञ्च सप्तात्नजन्म संस्थितो विवाहके
सु पूज्यकः शुभाशुभं विचारयेद् द्विजोत्तम।

टीका—हे द्विजोत्तम! वर की जन्म राशि से ३-६-१०-११ भाव यदि सूर्य स्थित हो तो शुभ है, ४-८-१२ भावमें होतो निश्चय निन्दित हैं,और २-५-७-९-१ भावमें हो तो सूर्य की पूजा करके विवाह करने से शुभ होते हैं।

चन्द्र शुद्धि विचार—

निशाकरो त्रिषट् सप्तदशायेषु शुभप्रदः।
दुष्टो रिफाष्ट तूर्येषु पूज्यश्चा न्यत्रगोयदा॥

प्रत्येक कार्योंमें जन्मा अपनी राशि से ३-६-७-१०-११ भावमें रहै तो शुभ है,

(१) कर्क राशि उच्चराशि है।

(२) धन मीन स्वगृह है।

(३) मेष वृश्चिक कर्क सिंह मित्र राशि है। (मित्र राशि होनेपर भी सिंह के गुरु का सर्वांश सब जगह शुभ नहीं है)।

(४) मेष सिंह धन का नवां अंश (२६ अं० ४० क० के बाद ३०अंशतक) वृष कन्या मकर का तीसरा अंश (६ अं० १० कलाके बाद १० अंशतक) मिथुन-तुला कुम्भ का तीसरा अंश और छठवां अंश (१६ अंश ४० कलाके बाद २० अंश तक) कर्क वृश्चिक मीन राशि का छठवां और नवां अंश १६ अंश ४० कलाके बाद २० अंश तक तथा २६ अंश ४० कलाके बाद ३० अंश तक स्वांश है।

चरराशि (मे० कर्क तु० म०) का प्रथमांश (आरम्भ से ३ अंश २० कलातक) स्थिरराशि वृष० सिं० वृ० कुं० का पंचमांश (१३ अंश २० कलाके बाद १६ अंश ४० कलातक) द्विस्वभाव राशि (मिथुन कन्या ध० मी०) का नवाअंश (२६) अंश ४० कलाके बाद ३ अंश पर्यन्त) वर्गोत्तम है।

४-८-१२ में दुष्ट और अन्यत्र (१-२-५ ९) भावमें होतो पूज्य है ।

अथ प्रत्येकग्रहाणां रेखाष्टकवर्गसाधनाय सारिणीयम् ।

तत्रादौरवेरष्टकवर्गाङ्काः ४८

सू	च.	मं.	बु.	बृ.	शु	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	
४	१०	४	६	७	१२	४	६
७	११	७	९	११	००	७	१०
८	००	८	०	००	००	८	११
९	००	९	११	००	००	९	१२
१०	००	१०	१२	००	००	१०	००
११	००	११	००	००	००	११	००

चन्द्रस्याष्टकवर्गाङ्काः ४९

चं.	मं	बु.	बृ	शु.	श.	सू.	ल.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	३	७	१०
७	६	५	८		११	८	११
०	९	७	०	९	००	१०	००
१	१०	८	१	१०	००	११	००
००	११	१०	२	११	००	००	००
०		११	०	००	००	००	००

भौमस्याष्टकवर्गाङ्काः ३९

मं.	बु.	बृ.	शु.	श	सू.	चं.	ल.
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	-	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०	००	१०
८	००	००	००	९	११	००	११
१०	००	००	००	१०	००	००	००
११	००	००	०	११	००	००	००
००	०		०	००	००	००	००

बुधस्याष्टकवर्गाङ्काः ५४

बु.	बृ.	शु.	श	सू.	चं.	म.	ल.
१	६	१	१	५	२	१	१
३	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	९	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
९	००	५	८	१२	०	८	८
१०	००	८	९	००	१	९	१०
११	००	९	१०	००	००	१०	११
१२	००	११	११	००	००	१	००

गुरोरष्टकवर्गाङ्काः ५६

बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल
१	२	३	१	२	१	१	१
२	५	५	२	५	२	२	२
३	६	६	३	७	४	४	४
४	९	१२	४	९	७	५	४
७	१०	००	९	११	८	६	६
८	११	००	८	००	१०	९	७
१०	००	००	९	००	११	१०	९
११	००	००	१०	००	००	११	१०
००	००	००	११	००	००	००	११

शुक्रस्याष्टकवर्गाङ्काः

शु.	श.	सू.	च.	मं.	बु	बृ	ल.
१	३	८	१	३	३	५	१
२	४	१०	२	५	५	८	२
३	५	१२	३	६	६	९	३
४	८	००	४	९	९	१०	४
५	९	००	५	११	१	११	५
८	१०	००	८	२	०	००	८
९	१०	००	९	००	०	००	९
१०	००	००	११	००	००	००	११
११	००	००	१२	००	००	००	००

शनिरष्टकवर्गाङ्काः ३९

श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	ल.
३	१	३	३	६	५	६	१
५	३	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७	००	१०	१०	१२	००	६
००	८	००	११	११	००	००	१०
००	१०	००	१२	१२	००	००	११
००	०	००	००	००	००	००	००
००	००	००	००	००	००	००	००
००	००	००	००	००	००	००	००

लग्नस्याष्टकवर्गाङ्काः ५२

ल.	सू.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	१०	११	१०	६	५	४	६
००	११	००	११	८	६	५	१०
००	१२	००	००	१०	७	८	११
००	००	००	०	११	९	९	००
०	००	००	००	००	१०	११	००
००	००	००	०	००	१	००	००

अथप्रत्येकरेखाफलमिदम्

म. सं.	फलानि
१	क्लेशाभीतिः
२	अर्थहानि
३	प्रवासकष्टम्
४	समलाभः
५	शास्त्रसुखम्
६	धनाप्तिः
७	परमानन्दप्राप्ति
८	सर्वकार्यसिद्धिः

प्राचीनमते गोचरबलाभावेऽष्टकशुद्धिरेव ।

तदुक्तम् । अष्टवर्गविशुद्धेषु गुरुशीतांशुभानुषु ॥ व्रताद्वाहौ च कर्तव्यौ गोचरेण कदाचन । उपलक्षणमप्युक्तं तत्रैव । अष्टवर्गेण ये शुद्धा सर्वकर्मसु ॥ सूक्ष्माष्टवर्गसंशुद्धिःस्थूलाशुद्धिःसुगोचरे इति ।

नीच राशिके गुरु का विचार—

जिस ग्रह का अष्टवर्ग बनानाहो उसकी कुण्डली, बनाये, ऊपर ऊस ग्रहको राशि लिखकर जन्माङ्ग के अनुसार ग्रहोंको लिखदेय, फिर जिस अष्टवर्ग के जिनग्रहां के सामने जो जो संख्या लिखी है उन उन संख्याओं के सामने एक एक रेखा लिखे इस प्रकार वह अष्टवर्ग बनेगा-जैसे सूर्याष्टक वर्ग बनाना है और सूर्य मिथुन में हैं तो ऊपर मिथुन राशि लिखा और उसपर सूर्य को लिखा वहाँ हा बुध भी है, और शुक्र सिंहपर, चन्द्र बृहस्पति तुलाका, मंगल कन्या का, कुम्भ का शनि है-सूर्य से १।२।४-७-८-९-१०-११ वें एक एक रेखा लिखा चन्द्रमा से ३।६।१०-११ वे भावमे एक एक रेखा लिखा इसी प्रकार सूर्याष्ट वर्ग का रेखा लिखा तो रेखा की संख्या इस प्रकार हुई कि-वृश्चिक में दो रेखा वृष मिथुन मकर राशि मे तीन तीन रेखा है। कर्क कन्या तुला धन तथा मेष में चार चार रेखा। सिंह में पांच रेखा कुम्भ तथा मीन राशि में छः छः रेखा हैं, सिंह कुम्भ मीन राशिके सूय में उत्तम्, मे, कर्क, कं, तु, ध, में मध्यम वृश्चिक धनहानि, वृष मिथुन मकर राशि में क्लेश होना फल है इसीप्रकार सब ग्रह का बनाना, यह वागीश कान्तजी के कुण्डली का उदाहरण है।

रेवापूर्वं गण्डकी पश्चिमे च शोणस्योदग् दक्षिणे नीच इज्यः ।
वर्ज्योनायं कौंकणेमागधेचगौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु ॥१७४॥

मकर राशि में बृहस्पति नर्मदा के पूर्व गण्डकी के पश्चिम, शोणनद के उत्तर और दक्षिण के प्रदेशों में शुभ है तथा कौंकण, मगध गौड, बंगाल और सिन्धुर इन देशों में वर्जित है ॥ १७४ ॥

गोजान्त्यकुम्भेतरभेऽतिचारगो नो पूर्वराशिं गुरुरेति वक्रितः ।
तदा विलुप्ताब्द इहातिनिन्दित शुभेषु रेवासुरनिम्नगान्तरे ॥१७५॥

वृष, मेष, मीन, और कुम्भ को छोड अन्य मिथुन, कर्क सिंह, कन्या, तुला वृश्चिक धनु और मकर राशि पर अतिचार प्राप्त बृहस्पति मार्गी हो जाय तो वक्री होकर जब तक पूर्व राशि पर न आवें तब तक लुप्तसंवत्सर जानना चाहिये जो नर्मदा और गङ्गा के मध्य देशों में, सब शुभ कार्यों में निन्दनीय हैं १७५

पादोनरेखापरपूर्वयोजनः पलैयुतोनाभ्तिथयो दिनार्धतः ।
ऊनाधिकास्तद्विवरोद्भवैः पलैरूर्ध्वं तथाधोदिनपप्रवेशनम् ॥१७६॥

जिस देश की वार प्रवृत्ति देखना हो वह देश मध्य रेखा के जितने योजन

१ मध्यरात्रि प्रमाणे तु युते पञ्चादशोसति । वारप्रवृत्तिर्निर्दिष्टो विद्वद्भिस्त्वदर्शिभिः ।

उन—योजनों का चतुर्थांश १५ घटी में घटावना और पूर्व हो पश्चिम उतने योजन का चौथाई पन्द्रह घटिका में जोड़ना इस प्रकार जोड़ने और घटाने से जो घड़ी पल मिले वह घड़ी पल यदि दिनार्ध से कम होतो जितना कम हो उतना ही घटी अल्प सूर्योदय के बाद वार प्रवृत्ति होती है, यदि दिनार्ध से जितना अधिक हो तो उतनी ही घटी सूर्योदय से पहले वार प्रवृत्त जानना ॥ १७६ ॥

उदाहरण—कुरुक्षेत्र से ६३ योयन पर काशी है इसका चतुर्थांश १५।४५ हुआ इसको ६३ में घटाया तो ४७।१५ रहा। इसको १५ में घटाया तो १४।१२।४५ घट्यादि बचा यह वार प्रवृत्ति का ध्रुवा है, दिन मान २९।१० है, इसका आधा १४।३५ है, इसमें ध्रुवा को घटाया तो पलादि २२।१५ बचा, इससे ज्ञात हुआ कि २२ पल १५ विपल दिन चढ़े वार प्रवृत्ति होगा. यदि दिनार्ध ध्रुवा में घटता तो जो शेष बचता उतना रात्रि रहते वार प्रवृत्त होगी। वार प्रवृत्तिका हेतु और कालहोरा—

वारादेर्घटिका द्विघ्नाः स्वाक्षहृच्छेषवर्जिताः ।
सैकास्तष्टा नगैःकालहोरेशा दिनपात् क्रमात् ॥ १७७ ॥

जिस दिन के जितनी घड़ी पर होरा देखने की इच्छा हो उस घड़ी को दूना करके दो स्थानों में रखे। एक जगह वाले में पाँच का भाग देवे और लब्ध को त्याग शेष बचे अंक को दूसरी जगह के अंक में घटा देवे जो बचे उसमें एक जोड़कर सात का भाग देने से जो शेष बचे उससे जिस दिन होरा देखना हो उस दिन के वार तक गिनके होरा का स्वामी जानना चाहिये ॥ १७७ ॥

उदाहरण-रविवार को आठ घड़ी दिन चढ़े होरा देखना है इसलिये इस आठ को दूना किया तो १६ मिला इसे दो स्थान में लिखा अब एक १६ में ५ को भाग दिया तो ३ लब्धि मिली और १ शेष बचा अब लब्धि ३ को त्याग कर शेष बचे १ को दूसरे १६ में घटाया तो १५ हुआ इसमें पुनः एक जोड़ कर सात से भाग दियातो शेष २ बचा इस रविवार से दूसरा दिन सोमवार होता है इसलिये सोमवार का होरा जानना चाहिये ॥ इसी प्रकार और वारों को भी जानना। रात्रि दिनमें ६० घड़ीके प्रमाणसे २ घटी३ पलके प्रमाण से२४ होरा हुई फिर उसमें छठे २ ग्रहकी होरा होगी, फिर क्रम से छठे २ ग्रह की होगी।

कालहोरा का हेतु—

वारे प्रोक्तं कालहोरासु तस्याधिष्ण्ये प्रोक्तंस्वामितिथ्यंशकेऽस्य ।
कुर्याद्दिक्शूलादिचिन्त्यं तु गेषु नैवोल्लंघ्यःपारिघश्चापिदण्डः १७८

जो कर्म जिस दिन उचित कहा है सो उसीके कालहोरा में करना चाहिये और जो कर्म जिस नक्षत्रमें कहा है सो उसके स्वामीके तीक्ष्यंश (श्लो० ५२ विवाह प्रकरणोक्त मुहूर्त) नक्षत्र में करना चाहिये । मुहूर्तमें दिक्शूल आदि अर्थात् वार शूल, नक्षत्र शूल, ललाटिक का अवश्य चिन्तवन करना चाहिये तथा परिघदंडका कदापि उल्लंघन न करना चाहिये ॥ १७८ ॥

भूमिशयन विचार—

रेवर्भाच्छरागाङ्क सूर्याः ग्रहेन्दू, रसाद्रिः शशाङ्कस्य तारा यदाचेत्
तदारुद्र मन्वर्क मन्वर्क वेदाः क्रमेणैव नाड्यःसुशेतेधरित्री ।१७९
शरादौनवादौ तथा द्वादशे च,
तथै कोन विंशेऽपि चाद्यास्तुनाड्यः ॥
नगेमध्यनाड्यो विवर्ज्यीहविप्राः !
नखेऽङ्का न्विते चान्त्यभागे विवर्ज्या ॥१८०॥

टी०—सूर्य के नक्षत्रसे यदि चंद्रका नक्षत्र ।५ ७।९।१२।१९।२६ वाँ हो तो क्रमशः । ११।१४।१२।१४ १२।४ नाड़ी भूमिशयन करती है अर्थात् ५ वें नक्षत्र की ११ घटी ७ वें १४, ९ वें १२,१२ वें का १४, १९ वें का १२ और २६ वें का ४ घटी पृथ्वी भूमि शयन करती है भूमि शयन के समय भूमि खोदना बीज बोना ये त्याज्य है । ५।९।१२।१९ वें नक्षत्र के आदिके नाड़ी में ७ वें के मध्य नक्षत्र में और २६ वें के अंत्य नाड़ी में पृथ्वी सोती है॥ १७९॥१८०

पाँच सात नव बारह, ओनइस औ छब्बीश ।
यह नक्षत्रमें पृथ्वी सूतै, जानि लेव जगदीश ॥

मन्वादि और युगादि तिथियाँ—

मन्वाद्यास्त्रितिथी मधौ तिथिरवी. ऊर्जेशुचौदिक् तिथी ।
ज्येष्ठेऽन्त्ये च तिथिस्त्विषे नवतपस्यश्वाः महस्ये शिवा ॥
भाद्रेऽग्निश्च सिते त्वमाष्टनभसः कृष्णे युगाद्याः सिते ।
गोऽग्नि बाहुलराधयोर्मदनदशौ भाद्रमाघासिते ॥ १८१ ॥

१ शून्यं तु भाजकोऽङ्गो यो नागनापरिपूर्तये । नारे मघवने राशौद्वादशमृत्युयागया । सप्तविंशतिसंख्यानकमेणानगनीषिगः ।

चैत्र शुक्ल तृतीया तथा पूर्णमासी, कार्तिक शुक्ल द्वादशी तथा पूर्णमासी, आषाढ़ शुक्ल दशमी तथा पूर्णमासी, ज्येष्ठ और फाल्गुनकी पूर्णमासी, आश्विन शुक्ल नवमी माघ शुक्ल सप्तमी, पौष शुक्ल एकादशी, भाद्र शुक्ल तृतीया, श्रावण कृष्ण अमावस्या और अष्टमी ये तिथियाँ मन्वादि हैं, कार्तिक शुक्ल नवमी को सतयुग, वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेता भाद्रकृष्ण त्रयोदशी को द्वापर और माघ कृष्ण अमावस को कलियुग ये युगादि तिथियाँ हैं ॥ १८१ ॥

वारके अनुसार संक्रान्ति के नाम—

घोराख्यौ ध्वांक्ष्य मृतग्नुतौच्च संक्रान्ति भौमेच्च महोदरी स्यात् ।
मन्दाकिनी ज्ञे च गुरौच मन्दा मिश्राभृगौ राक्षसि कार्कपुत्रे ॥ १८२

नक्षत्रके अनुसार नाम—

उग्रक्षिप्रचरैर्मित्र ध्रुव मिश्राख्य दारुणैः ।
ऋक्षैःसंक्रान्तिरर्कस्यघोराद्याः क्रमशो भवेत् ॥ १८३ ॥

फल ।

ध्वांक्षीवैश्यान् सुखयति महोदर्यलंचौरसार्थान्
घोराशूद्रानथनरपती नेवमंदाकिनी च ।
नंदाख्या च द्विजवरगणान्मिश्रकाख्यापशूंश्च
चाण्डालान्तां प्रकृतिमखिलां राक्षसीसंज्ञिता च ॥१८४॥

कालफल ।

पूर्वाह्नकालेनृपतिद्विजेन्द्रान्मध्येदिनेचाथविशोपराह्ने ।
शूद्रांरवावस्तमिते प्रदोषेपिश।चकां रात्रिचरान्निशीथे॥ १८५ ॥
नटादिकांश्चापररात्रिकाले प्रत्यूषकालेपशुपालकांश्च ।
संक्रान्तिरर्कस्यसमस्तलिंगां प्रभातसंध्यासमये निहंति ॥१८६॥

संक्रान्ति का मुख ।

अर्केशुक्रेमुखंपूर्वे सौम्येभौमे च दक्षिणे ।
शनौचन्द्रेमुखंपश्चाद् गुरौचेवोत्तरामुखी ॥ १८७ ॥

वार और नक्षत्रों के जानने की रीति ।

वार	नक्षत्र	नाम	फल	काल	फल	मुख
रवि	उग्र	घोरा	शूद्रों को सुख	पूर्वाह्न	विप्रराजाको दुःख	पूर्व को मुख
सोम	क्षिप्र	ध्वांक्षी	वैश्यों को सुख	मध्याह्न	वैश्यों को दुःख	पश्चिम को मुख
भौम	चर	महोदरी	चोरों को सुख	अपराह्न	शूद्रों को दुःख	दक्षिण को मुख
बुध	मैत्र	मन्दाकिनी	राजाओं को सुख	प्रदोष	पिशाचोंको दुःख	दक्षिण को मुख
गुरु	ध्रुव	मन्दा	ब्राह्मणों को सुख	अर्द्धरात्रि	राक्षसों को दुःख	उत्तर को मुख
शुक्र	मिश्र	मिश्रा	पशुओं को सुख	अपरात्रि	नटादिकोंकोदुःख	पूर्व को मुख
शनि	दारुण	राक्षसी	चांडालों को सुख	प्रत्यूषकाल	पशुपालकोंकोदु.	पश्चिम को मुख

करण में संक्रान्ति का मुख ।

बवेपूर्वमुखंचोक्तं बालवेयमदिङ्मुखम् ।
कौलवेपश्चिमसुखं तैतिलेचोत्तरामुखम् ॥ १८८ ॥
गरेवायव्यदिग्वक्त्रं वाणिज्याग्नेयदिङ्मुखम् ।
भद्रायामीशदिग्वक्त्रं शकुनेनैंऋतंमुखम् ॥ १८९ ॥
चतुष्पदी च पाताले नागेचोर्ध्वमुखीभवेत् ।
किंस्तुघ्नेसर्वदिग्वक्त्रं संक्रान्तिमुखलक्षणम् ॥१९०॥

करण में संक्रान्ति की दृष्टि ।

चन्द्रेगुरौदृष्टिदिगीशाने सूर्येसितेनैऋतिकोणदृष्टिः ।
धात्रोसुतेदृग् च वायौ निरुक्ता बुधेशनौरुद्रदिशीक्षयांभवेत्॥१९१॥

संक्रान्ति का गमन ।

मंदेचन्द्रेगमःसौम्ये बुधेभौमे च वारुणे ।
रवौशुक्रेगमोयाम्ये गुरौप्राग्गमनंस्मृतम् ॥ १९२ ॥

स्थिति ।

चतुष्पदे तैतिलनागयोश्च सुप्तो रविः संक्रमणं करोति ।
विद्याद् बवाख्ये च गराह्वये वा सबालवाख्ये स्थित एव विष्टौ ॥१९३॥

फल ।

किंस्तुघ्ननाम्निशकुनौवणिग्कौलवाख्ये-
चोर्ध्वस्थितस्यखलुसंक्रमणं रवेस्स्यात् ।
धान्यार्थवृष्टिषुभवेत्क्रमशस्त्वनिष्टेमध्येष्ट
तेतिमुनयः प्रवदंति पूर्वे ॥१९४॥

वाहन ।

सिंहोव्याघ्रोवराहश्च गर्दभः कुंजरस्तथा ।
महिषीघोटकःश्वा च छागोवृषभकुक्कुटौ ॥१९५॥
गजोवाजीवृषोमेषःखरोष्ट्रौकेसरीक्रमात् ।
शार्दूलमहिषीव्याघ्रवानरश्चववादितः ॥१९६॥

वाहन फल ।

गजेलक्ष्मीर्वृषेस्थैर्यं घोटकेवाहनेतथा ।
सिंहेव्याघ्रेभयंप्रोक्तं सुभिक्षंगर्दभेमुनि ॥१९७॥

फल ।

वाराहेमहती पीडा जायते मेषवाहने ।
महिष्यां च भवेत् क्लेशः कुक्कुटे मृत्युरेव च ॥१९८॥

वस्त्र ।

श्वेतपीतहरितं च पांडुरं रक्तश्याममसितं बहुवर्णम् ।
कंबलोविवसनंघनवर्णान्यंशुकानि च ववाऽदितःक्रमात् ॥१९९॥

आयुध ।

भुशुण्डी च गदाखड्गदंडकोदंडतोमरान् ।
कुंतपाशांकुशास्त्रं च बाणश्चैवायुधंववात् ॥२००॥

भोजनपात्र

सौवर्णं रजतंताम्रं कांस्यं लोहं च खर्परम्।
पत्रं वस्त्रं करौ भूमिः काष्ठपात्रं ववादितः ॥२०१॥

भक्ष्यपदार्थ।

अन्नं च पायसं भक्ष्यं पक्वान्नं च पयोदधि।
चित्रान्नं गुडमध्वाज्यं शर्करा तु ववादितः ॥२०२॥

गन्ध।

कस्तूरी कुंकुमं चैव चंदनं मृत्तिका तथा।
सिन्दूरमगुरुश्चैव कर्पूरश्च ववादित ॥२०३॥

जाति।

देवभूताहिविहगो पशवो मृग एव च।
ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्र मिश्रजातिर्ववादितः ॥२०४॥
पुन्नागजातीवकुलाश्चकेतकीबिल्वस्तथार्कः कमलं च दूर्वा।
मल्लीतथापाटलिकाजपा च ववादि पुष्पाणि च योजयेत्तु ॥२०५॥

भूषण।

नूपुरंकंकणंमुक्ता विद्रुमंमुकुटंमणिम्।
गुञ्जावराटकंनीलंगारुत्मंरुक्मकंववात् ॥२०६॥

कंचुकी।

विचित्रपर्णां शुकभूर्जपत्रका सितातथापाटलनीलवर्णा।
कृष्णाजिनंचर्म च वल्कपांडुराववादिश्चैव तु कंचुकीस्यात् ॥२०७॥

करण में संक्रांति का मुख इत्यादि १७५ से १९६ श्लोक के अर्थ की रीति इस कोष्टचक्र में समझना।

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनी	चतुष्पद	नाग	किंस्तुघ्न
मुख	पूर्व मुखी	दक्षिण मुखी	पश्चिम मुखी	उत्तर मु०	वायव्य मु०	अग्नेय मु०	ईशान मु०	नैऋत्य मु०	पाताल मु०	ऊर्ध्व मु०	सर्व दि. मु०
दृष्टि	सोम गुरू शनि	अग्नि कोणमें उत्तर	रवि शुक्र बुध	नैऋत्य में	मङ्गल रवि शुक्र	वायव्य में दक्षिण	बुध शनि गुरु	ईशानमें पूर्व	० ०	० ०	० ०
गमन	सोम		भौम	पश्चिम							
स्थिति	बैठी	बैठी	सोती	बैठी	बैठी	सोती	बैठी	सोती	सोती	सोती	खड़ी
फल	मध्यम	मध्यम	महँगा	सस्ता	मध्यम	महँगा	मध्यम	महँगा	सस्ता	सस्ता	महँगा
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गधा	हाथी	भैंस	घोड़ा	कुत्ता	मेंढा	बैल	मुर्गा
उपवाह	गज	अश्व	बैल	मेंढ़ा	गधा	ऊँट	सिंह	व्याघ्र	भैंसा	व्याघ्र	बानर
फल	भय	भय	पीड़ा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	सुख	स्थिर	क्लेश	स्थिर	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीला	हरा	पांडुर	लाल	नीला	काला	छींट	कंबल	सफेद	धूम्र
आयुध	भुशुण्डी	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	भाला	पाश	अंकुश	तेगा	बाण
पात्र	सुवर्ण	चांदी	तांबा	कांसा	लोहा	ठीकरा	पत्ता	कपड़ा	कर	भूमि	काष्ट
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वान	दूध	दधि	खिचड़ी	गुड़	मधु	घी	शक्कर
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	मिट्टी	गोरोचन	लालचंद	हल्दी	कागज	सिन्दूर	अगर	कपूर
वर्ण	देव	भूत	सर्प	पशु	मृग	ब्राह्मण	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	वर्णशङ्कर	अन्त्य.
पुष्प	पुन्नाग	चमेली	बकुल	केतकी	बेल	मन्दार	कमल	दूब	मल्ली	पाटल	जपा
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	मूङ्गा	मुकुट	मणि	गुंजा	कौड़ी	नीलम	पुन्नाग	सोना
कंचुकी	विचित्र	परोकी	हरी	भोजपत्र	सफेद	गुलाबी	नीली	काली	चर्म	वल्कल	पांडुर
वय	बाला	कुमारी	गताल	युवा	प्रौढा	तेजस्वी	वृद्धा	बंध्या	अतियं	पुत्रार्थी	संन्यासी
अवस्था	पंथा	भोग	रति	हास्य	दु०मु०	ज्वर	भुक्ति	कंपित	मृता	ध्यान	कर्कश

वय।

शिशुःकुमारी च गतालका युवा प्रौढ प्रगल्भाथ ततश्च वृद्धा।
वंध्यातिवंध्या च सुतार्थिनी च प्रव्राजिका चैव फलंशुभं ववात्॥२०८॥

अवस्था।

पंथा च भोगोरतिहास्यदुर्मुखी ज्वरान्विता भुक्ति सुकंपिता मृता।

ध्यानस्थिता कर्कश वृद्धरूपिणी ववाद्यवस्थाः कथितामुनीन्द्रैः२०९

संक्रान्ति के वाहनादि का फल ।

वाहनादिक वस्तूनां संक्रमात्तु विनाशता ।
यत्तस्याभोग्यवस्तुस्यात्तस्यस्यात्तु महद्भयम् ॥ २१० ॥

टीका—जिस जिस वाहनादि पर संक्रान्ति हो उस २ का नाश होता है या जिस जिससे जो भाग्य वस्तु है उसे बड़ा भय होता है ॥ २१० ॥

संक्रांति के मूर्तिभेद और फल ।

संक्रांतौ मूर्तिभेदा हरपवनयमे वारुणे सार्प रौद्रे,
एषां पंचेंदुसंज्ञा गुरु करपितृभे चाग्निदस्र च सौम्ये ।
त्वाष्टे मैत्रे च मूले श्रुतिवसुवपुषा त्रीणिपूर्वाखिरांभे,
ब्रह्मे दित्येद्विदैवेभवतिशरकृतादुत्तरात्रीणिऋक्षम् ॥२११॥
वाणवेदैः समर्घस्यान्मध्यस्थंव्योमरामयोः ।
मूर्तौपञ्च दशे याते दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥ २१२ ॥

टीका--स्वाती, भरणी, शतभिषा, श्लेषा, आर्द्रा और ज्येष्ठा नक्षत्र में संक्रान्ति होने से १५ मुहूर्ति होती है, यह दुर्भिक्ष करती है । पुष्य, हस्त, मघा, कृतिका, अश्विनी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, तीनोंपूर्वा में संक्रान्ति होने से ३० मुहूर्ति की होती है, इसका साधारण फल है । रोहिणी, पुनर्वसु, विशाखा, तीनों उत्तरा में संक्रान्ति होने से ४५ मुहूर्ति की होती है यह स्वस्थता देती है ॥ २११ ॥ २१२ ॥

अन्य प्रकार से ।

पूर्वसंक्रान्तिनक्षत्रात्परसंक्रातिऋक्षकम् ।
द्वित्रिसंख्यासमर्घस्याचतुः पञ्चमहर्घता ॥ २१३ ॥

टीका—गत मास की संक्राति जिस नक्षत्र पर लगी हो उससे प्राप्त के नक्षत्र तक गिनकर जो दो या तीन नक्षत्रों का अनन्तर संक्राति हो तो दुर्भिक्ष जानना ॥ २१३ ॥

धान्य विचार ।

संक्रान्ति नाडीनवमिश्रिता च सप्ताहता पावकभाजिता च ।
एकेसमर्घ द्वितये च साम्यं शून्ये महर्घं मुनयो वदंति ॥२१४॥

टीका—संक्रान्ति की घड़ी में नौ और मिलावे फिर सात से गुणा कर तीन से भाग दे यदि १ बचे तो उत्तम जाने । २ बचे तो मध्यम और न बचने से महर्घता जाने ॥ २१४.॥

संक्रान्ति के नक्षत्र का फल ।

संक्रांत्याक्रांतनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावधि ।
त्रिकंषट्कंत्रिकंषट्कंत्रिकंषट्कं पुनः पुनः ।
पंथाभोगोव्यथावस्त्रहानिश्च विपुलंधनम् ॥ २१५ ॥

टीका—संक्रान्ति जिस नक्षत्र में लगे उससे जन्म नक्षत्र तक गिने इस रीति से उसका फल जाने, ३ नक्षत्र तक पंथा, फिर तीन नक्षत्र तक भोग, फिर तीन नक्षत्र तक व्यथा, ऐसे ही ६ नक्षत्र तक वस्त्र, ३ नक्षत्र तक हानि और ६ नक्षत्र तक धन की प्राप्ति जाने ॥ २१५ ॥

जन्मनक्षत्र जन्ममास और जन्मतिथि को संक्रान्ति का फल ।

यस्यजन्मर्क्षमासाद्यांतिथौ संक्रमणं भवेत् ।
तन्मासाभ्यंतरे तस्य वैरं क्लेशो धनक्षयः ॥ २१६ ॥

टीका—जन्मनक्षत्र में संक्रान्ति होने से वैर, जन्म मास में क्लेश और जन्म तिथि में संक्रान्ति होने से धन का नाश जाने ॥ २१६ ॥

संक्रान्ति का स्वरूप ।

षष्टियोजनविस्तीर्णासंक्रान्तिः पुरुषाकृतिः ।
एकवक्त्रानवभुजा लम्बोष्टी दीर्घनासिका ॥
पृष्ठेलोकाभ्रमत्येव गृहीत्वा खर्परंकरे ।
एवं संक्रमणे यस्याः फलं प्रोक्तं मनीषिभिः ॥ २१७ ॥

टीका-संक्रान्ति का शरीर २४० को लंबा है, पुरुषाकार १ मुख, ९ भुजा, लम्बे होठ, बड़ी नासिका है, आगे को देखने और पीछे को चलनेवाली, हाथ में खप्पर लिये भ्रमण करती है, ऐसा संक्रान्ति का रूप मुनियों ने कहा है ॥२१७

चन्द्रमा से संक्रान्ति का वर्ण और फल ।

मेषालिकर्के च तथैवरक्तं चापे च मीने च तुले च पीतम् ।
श्वेतंवृषे स्त्रीमिथुने च चन्द्रे कृष्णो च नक्रेऽथघटे च सिंहे ॥२१८॥

रक्ते फलं भवेद् दुःखं श्वेते चैव सुखं शुभम्।
पीते श्रीस्तुतथाप्रोक्ता श्यामेमृत्युर्नसंशयः ॥ २१९ ॥

टीका— मेष वृश्चिक और कर्क राशि में चन्द्रमा के होने से संक्रान्ति का प्रवेश हो तो उसका लालवर्ण जाने, वह सुखदायक है। धन, मीन और तुला के चन्द्रमा में संक्रान्ति होने से उसका पीला वर्ण जाने, वह लक्ष्मी प्राप्ति करती है। वृष, कन्या, मिथुन के चन्द्रमा में संक्रान्ति होने से उसका श्वेत वर्ण जाने, यह सुख और शुभदायक है। मकर, कुंभ और सिंह के चन्द्रमा में संक्रान्ति होने से उसका काला वर्ण जाने, यह मृत्युदायक है ॥ २१८ ॥ २१९ ॥

राशिगत चन्द्रमा के अनुसार संक्रान्ति का फल।

यादृशेन हिमरश्मिमालिना संक्रमो भवति तिग्मरोचिषा।
तादृशं फलमवाप्नुयान्नरः साध्वसाध्वपिवशेनशीतगोः ॥२२०॥

टीका—जैसे चन्द्रमा नष्ट स्थान वा उत्तम स्थान में होकर शुभाशुभ फल करता है वैसेही नष्ट वा उत्तम स्थान में स्थिति की रवि संक्रान्ति चन्द्रमा के अनुसार फल करती है ॥ २२० ॥

संक्रान्ति का पुण्यकाल।

पूर्वतोपिहिरवेश्वसंक्रमात्पुण्यकालघटिकास्तुषोडश।
अर्धरात्रिसमयादनंतरसंक्रमेपरदिनंहिपुण्यम् ॥ २२१ ॥

टीका—संक्रान्ति का १६ घड़ी पुण्यकाल होता है। जो संक्रान्ति दिन में लगे तो पूर्वरात्रि तक पुण्यकाल उसी दिन जाने और आधीरात के उपरांत संक्रान्ति के लगने से दूसरे दिन पुण्यकाल होता है ॥ २२१ ॥

ग्रहणप्रकरण।

चन्द्रग्रहण।

भानोः पञ्चदशेऋक्षे चन्द्रमा यदि तिष्ठति।
पौर्णमास्यां निशाशेषे चन्द्रग्रहणमादिशेत् ॥ २२२ ॥

टीका—सूर्य के पन्द्रहवें नक्षत्र में जो चन्द्रमा स्थित हो तो पूर्णिमासी की रात्रि के अन्त में और प्रतिपदा की संधि में चन्द्रग्रहण होता है ॥ २२२ ॥

सूर्यग्रहण।

विधूनग्रस्तनक्षत्रात्षोडशं यदि सूर्यभम्।
अमावास्यां दिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत् ॥ २२३

टीका—सब महीने में सूर्य और चन्द्रमा अमावस्या को एक राशि में हो जाते हैं, परन्तु अमावस्या के दिन सूर्य का नक्षत्र और दिन का नक्षत्र एक होने से अमावस्या और प्रतिपदा की संधि में सूर्यग्रहण होता है, उस दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र को देखे उसमें से ११ दिन काटकर शेष १६ वां सूर्य नक्षत्र हो तो वही सूर्यग्रहण होना जाने ॥ २२३ ॥

राशि के अनुसार ग्रहण का शुभाशुभ फल ।

त्रिषड्दशायोपगते नराणां शुभप्रदेस्याद्ग्रहणोरवीन्द्वोः ।
द्विसप्तनंतेषु च मध्यमंस्याच्छेपेष्वनिष्टं मुनयो वदन्ति ॥२२४॥

टीका—सूर्य वा चन्द्रग्रहण अपनी जन्मराशि से तीसरी छठीं दसवीं और ग्यारहवीं राशि में होने से शुभ होता है । दूसरी सातवीं और नवीं राशि में होने से मध्यम, शेष पहली चौथी आठवीं पांचवीं और बारहवीं राशि में होने से अनिष्टकारक जाने ॥ २२४ ॥

अन्यमत ।

ग्रासात्तृतीयोष्टमगश्चतुर्थ स्तथाऽयसंस्थः शुभगः स्वराशेः ।
ग्रासाद्रविःपञ्चनवर्त्तमध्य स्ततोधमोक्तश्च बुधैश्च शेषाः ॥२२५॥

टीका— जिस राशि पर सूर्यग्रहण हो उस राशि से अपनी राशि तक गिने यदि ३ । ८ । ४ वा ११ वीं हो तो उत्तम, ५ । ९ । ६ हो तो मध्यम, और १ । २ । ७ । १ । १२ होने से अधम जाने ॥ २२५ ॥

तिथिआदि के गुण ।

तिथिरेकगुणाप्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ।
वारः षष्ठगुणोज्ञेयो मासश्चाष्टगुणः स्मृतः ॥ २२६ ॥
वस्त्रं शतगुणं विद्याद्दर्शनं च ततोधिकम् ॥ २२७ ॥

टीका—तिथि का एक गुण, नक्षत्र के चार गुण, वार के छः गुण, महीने के आठ गुण, और वस्त्र के सौ गुण हैं, परन्तु ऋतु दिन के अच्छा होने से वह अच्छे गुणवाली होती है और ऋतु दिन के बुरे होने से वह दुष्टा होती है ॥ २२६ ॥ २२७ ॥

इति संज्ञा प्रकरणं सम्पूर्णम् ।

मुहूर्त प्रकरण—

श्रीगणेशं रमाकान्तं वन्दे गौरीं हरं रविम् ।
सु मुहूर्त प्रकाशोऽयं रच्यते विदुषांमुदे ॥

हल चलाने के नक्षत्र—

मृदु ध्रुव च्छिप्रचरेषुमूले मघाविशाखा सहितेषु भेषु ।
हल प्रवाहं प्रथमं विदध्यान्नीरोगमुष्कान्वित सौरभेयः ॥१॥

टीका—मृदु, ध्रुव, छिद्र, चर, संज्ञक तथा मूल, मघा, विशाखा नक्षत्र में रोग रहित अडुवा बैल से प्रथम हल चलावै ॥ १ ॥

हल चलाने का चक्र—

रविभतोऽनलभं ह्यशुभं शुभं वसुभकं नवभं ह्यशुभंततः ।
गज हिमांशुमिया शुभदा ततः मुनिवरैः कथिता किल लाङ्गले॥२॥

बीजोप्ति के मुहूर्त—

हस्ताश्विपुष्योत्तररोहिणीषु चित्रानुराधामृगरेवतीषु ।
स्वाती धनिष्ठा सु मघासुमूले बीजोप्तिरुत्कृष्टफलप्रदिष्ठा ॥ ३ ॥

टीका – हस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा मृगशिरा, रेवती, स्वाती, धनिष्ठा, मघा, और मूल नक्षत्र में बीज बोनेसे अधिक फल प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

बीजोप्ति चक्र—

राहुभाष्टकं यावद् द्वादशं षोडशं तथा ।
विंशान्मितं तथा चान्ते वेदसंख्यात्यजेद् बुधः ॥ ४ ॥

टीका—राहु के नक्षत्र से ८ नक्षत्रतक औ १२ वाँ १६ वाँ २० वाँ नक्षत्र तथा २४ वें से ४ नक्षत्र अन्य संख्या वाले नक्षत्र यदि बीजोप्ति में कहे हुए नक्षत्रों में से मिले तो बीज बोना शुभ है ॥ ४ ॥

धान्यच्छेदन मुहूर्त—

तीक्ष्णाजपाद-कर-वह्नि-वसु-श्रुतीन्दु-
स्वाती मघोत्तरजलान्तक-तत्तपुष्ये ।
मन्दाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता
धान्यच्छिदानिगदिता स्थिरभे विलग्ने ॥ ५ ॥

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, श्लेषा, पूर्वाभाद्रपद, हस्त, कृत्तिका, धनिष्ठा, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, मघा तीनों उत्तरा पूर्वाषाढ़ा, भरणी, चित्रा और पुष्य नक्षत्रों में मङ्गलवार और शनिवार न हो तथा रिक्ता तिथि न हो और स्थिर लग्न हो तो धान्यच्छेदन अति शुभदायक होता है ॥ ५ ॥

धान्य मर्दन और सस्यरोपण मुहूर्त—

भाग्यार्यम-श्रुति-मघेन्द्रविधातृ-मूल-
　मैत्रान्त्यभेषु कथितं कणमर्दनं सत् ।
द्वीशाजपान्निर्ऋतिधातृशतार्यमर्क्षे
　सस्यस्य रोपणमिहार्किकुजौ विना सत् ॥ ६ ॥

टीका—पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, श्रवण, मघा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मूल अनुराधा और रेवती इन नक्षत्रों में कर्णमर्दन करना शुभ है । विशाखा, पूर्वाभाद्रपद, मूल, रोहिणी, शतभिषा और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रोंमें शनिवार मङ्गलवार को छोड़ अन्य वारमें धान्य रोपन शुभ है ॥ ६ ॥

धान्य की स्थिति और वृद्धि का मुहूर्त—

मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषु
　कर्काजतौलिरहिते च तनौ शुभाहे ।
धान्यस्थितिः शुभकरी गदिता ध्रुवेज्य
　द्वीशेन्द्रदस्रवरभेषु च धान्यवृद्धिः ॥ ७ ॥

टीका—विशाखा, कृत्तिका, तीनों पूर्वा, भरणी, मघा, आर्द्रा, श्लेषा और ज्येष्ठा को छोड़ अन्य कोई नक्षत्र हो मेष, कर्क और तुला को छोड़ अन्य लग्न हो और गुरुवारादि शुभवार हों तो धान्यस्थिति उत्तम है (गाड़खाता, कोठिला में अन्न धरना) शुभ है और तीनों उत्तरा, रोहिणी पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्विनी, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों में सवैया, डेवढ़ों पर लगाना श्रेष्ठ है ॥ ७ ॥

नवान्नभोजन मुहूर्त—

मृगे हस्तेऽशिवभे पुष्ये त्वाष्ट्रेऽन्त्येवायुभेऽदितौ ।
वर्णोवसुभे मैत्रे श्रवेऽन्नप्राशनं शुभम् ॥ ८ ॥

टीका—मृगशिरा अश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाती अनुराधा श्रवण

धनिष्ठा शतभिष और रेवती नक्षत्रमें प्रत्येक वर्ष श्यामाधान यव प्रथम खाना शुभ है (अग्निमें हवनकर गायको खिलाकर नारायणको भोग लगाकर खाय) ॥८॥

शान्तिक पौष्टिक मुहूर्त—

क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासु शस्तं
स्याच्छान्तिकं च सह पौष्टिकमङ्गलाभ्याम् ।
खेऽर्केविधौ सुखगते तनुगे गुरौ नो
मौढ्यादिदुष्टसमयेशुभदं निमित्ते ॥ ९ ॥

टीका—अश्विनी, हस्त, पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा रोहिणी रेवती, स्वाती पुनर्वसु श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा, मघा इनमें से कोई भी नक्षत्र हो सूर्य्य लग्न से दशम स्थान में हो, चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो और गुरु (बृहस्पति) लग्न में हो तो मङ्गल पौष्टिक कर्म (विनायक शान्ति) शुभ होता है। गुरु और शुक्रास्त समय में शान्ति करना उत्तम नहीं है (राहु केतु उत्पातोंके दर्शन होने पर उनकी शान्ति दुष्ट समय में भी शुभ है) ॥ ९ ॥

अग्निवासचक्र—

सैकातिथिर्वार युता कृताप्ता
'शेषेगुणेभ्रे भुविवह्निवासः ।
सौख्याय होमे शशियुग्म' शेषे
प्राणार्थनाशौ दिविभूतलेच ॥ १० ॥

टीका—जिसदिन शान्ति करना हो उस तिथि में एक जोडकर उसदिन के वारकी संख्या को जोड़े, फिर उसमें ४ का भाग देनेसे शेष३ वा शून्य बचे तो भूमिपर अग्निवास हवन करने से सुख होगा । यदि एक शेष बचेतो स्वर्ग में अग्निवास, जानना प्राण नाशक है, और दो बचनेपर पाताल में अग्निवास समझना, पातालमें अग्निके रहने पर हवन करे तो धनका नाश होता है १०

ग्रहके मुख आहुति विचार—

तरणिविद् भृगुभाकरिचन्द्रमा, कजसुरेज्यविधुंतुद केतवः ।
रविभतोदिनभंगणयेत्क्रमात् ,प्रतिखगंत्रितयंत्रितयंन्यसेत्॥ ११ ॥

टीका-सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र पर्यन्त गिने, जितने नक्षत्र हों उनका फल क्रमसे जानना। प्रथम तीन नक्षत्र सूर्य के फल अशुभ, फिर ३ नक्षत्र बुध के फल शुभ, फिर ३ नक्षत्र शुक्र के फल शुभ, फिर ३ नक्षत्र शनिके फल अशुभ, फिर३

नक्षत्र चन्द्रके फल शुभ, फिर तीन नक्षत्र मङ्गल के फल अशुभ, फिर ३ नक्षत्र राहुके फिर ३ केतुके इन दोनों का फल अशुभ है। सूर्यके चौथे नक्षत्र से नववें तक और १३-१४-१८ १९-२०-२१ वें नक्षत्र में हवनकरना शुभ है ॥११॥

नवीन वस्त्रधारण –

धातृभेव करपञ्चके शिवभे त्र्युत्तरेऽउपिच पुनर्वसुद्वये ।
पौष्णांभेच वसुभे महीसुराः । नव्यवस्त्र परिधान मिष्यते १२

टीका–रोहिणी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, उत्तरा, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती और धनिष्ठा, में नवीन वस्त्र धारण करना चाहिये ॥ १२ ॥

मोती सुवर्ण और रक्त वस्त्र धारण ।

नासत्यपौष्णवसुभे करपञ्चके च
मार्तण्ड भौमगुरुमंत्रिशशांकवारे ।
मुक्तासुवर्णमणिविद्रुमदन्तशंख
रक्ताम्बराणि विधृतानि भवन्ति सिध्यै ॥ १३ ॥

टीका–अश्विनी, रेवती, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, और अनुराधा नक्षत्र में तथा मंगल बृहस्पति, शुक्र एवं सोमवार में मोती, सुवर्ण, मणि, मूँगा, हाथीदांत के भूषण, शंख और रक्त वस्त्र को धारण करना श्रेष्ठ है ॥१३॥

विप्राज्ञयातथो द्वाहे राज्ञाप्रीत्यार्पितं तु यत् ।
निन्धेऽपिजिष्णो वारादौ वस्त्रंधार्यं जुगुर्बुधाः ॥ १४ ॥

टीका— ब्राह्मण की आज्ञा से तथा विवाह में प्रसन्नता राजा से मिले वस्त्र को निन्द्य नक्षत्र वारों में धारण करना कहा है ॥ १४ ॥

राज्याभिषेक मुहूर्तः-

मैत्र शाक्र कर पुष्प रोहिणी वैष्णवेषु तिसृषूत्तरासु च ।
रेवती मृगशिरा शिवनीषुच क्ष्माभृता समभिषेक इष्यते १५

टीका–अनुराधा, ज्येष्ठा, हस्त, पुष्य, रोहिणी, श्रवण, तीनों उत्तरा रेवती मृगशिरा, और अश्विनी नक्षत्र में राजतिलक करना चाहिये ॥ १५ ॥

राजदर्शन मुहूर्तः-

सौम्याश्वि तिष्य श्रवण श्रविष्टा हस्त ध्रुवत्वाष्ट्रमपूपभानि ।
मैत्रेणयुक्तानि नरेश्वराणां विलोकने भाति शुभप्रदानि १६

टीका—मृगशिरा, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, ध्रुव, चित्रा, रेवती और अनुराधा नक्षत्र में राजा का प्रथम दर्शन करना शुभ है ॥ १६ ॥

गाने के आरम्भ का विचार—

हस्त स्तिष्यो वासवं चानुराधा जेष्ठा, पौष्णां वारुणं चोत्तराच ।
पूर्वाचार्यैः कीर्तितश्चन्द्रवतींनृत्यारम्भेशोभनो ऋक्षवर्गः १७

टीका-हस्त, पुष्य, धनिष्ठा, अनुराधा, ज्येष्ठा रेवती, शतभिषा तीनो उत्तरा और शुभ चन्द्रमा हो तो नाचना और गाना आरंभ करना शुभ होता है॥१७॥

क्षौर करम ।

पुष्येपौष्णे चाश्विनीष्वैन्दवे च शाक्रे हस्ताद्ये त्रिकेभेष्वदित्यः ।
क्षौरंकार्यंवैष्णवाद्ये त्रये च मुक्त्वा भौमादित्यमातंगिवारान् १८

टीका—पुष्य, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा में क्षौर करना चाहिये परन्तु मंगल रवि और शनिवार में उक्त नक्षत्र होने पर भी क्षौर न करावे । रविवार को ब्राह्मण मंगल को क्षत्रिय शनिको शूद्र और करावे तो शुभ है पुत्रवान् भौमवार को क्षौर न करावे ॥ १८ ॥

दंतबंधन ।

येषु येषु प्रशंसन्ति क्षौरकर्म महर्षयः ।
तेषु तेष्वेवशसंति नखदन्तादिलेखनम् ॥ १९ ॥

टीका—दांतों के बाँधने में और नाखून कटाने में उपरोक्त क्षौर कर्म के नक्षत्र कहे हैं ॥ १९ ॥

आज्ञयानरपतेर्द्विजन्मनां दाहकर्म मृतसूतकेषु च ।
बंधमोक्षमखदीक्षणेषु च क्षौरमिष्टमखिलेषुपुष्टिदम् ॥२०॥

टीका—राजा व ब्राह्मण की आज्ञा से दाह क्रिया करने में सूतक के अन्त में यज्ञ की दीक्षा में और बन्धन से मुक्त होने पर क्षौर करना पुष्टिदायक होता है ॥ २० ॥

ताराशुद्धं क्षौरं रविगुरुशुद्धौ व्रतं दीक्षा ।
शुक्रविशुद्धौ यात्रा सर्वं शुद्धं शशांकेन च ॥२१॥

टीका—और कर्म में नक्षत्र की शुद्धि, व्रत के आरम्भ में सूर्य की शुद्धि, दीक्षा लेने में बृहस्पति की शुद्धि लेवे ॥ २१ ॥

भद्रापर्वान्तरिक्ताव्रतदिनवसुभूश्राद्धषष्ठीपुरात्रौ,
संध्यापातारभास्वच्छनिषु घटधनुः कर्ककन्यागतेऽर्के।
जन्मर्क्षे जन्ममासे सुरयजनदिने भूषितो ग्रामयायी,
भक्तोभ्यक्तोभिषिक्तः समदिनरजगः श्मश्रुकार्यं न कुर्यात्२२

टीका–भद्रा, पूर्णिमा, अमावस, चौथ, नवमी चौदस, अष्टमी, परिवा और षष्ठी तिथि में व्रत के दिन, श्राद्ध के दिन, रात्रि के समय, सायंकाल में व्यतीपातादिक दुष्ट योग में, मंगल, रविवार और शनिवार में कुम्भ, धन, और कर्क राशि में स्थित सूर्य के समय जन्म के दिन और जन्म के महीने में देव पूजन व हवन के दिन अलंकारादि धारण करने के दिन भोजन करने के पीछे तेल लगाने और स्नान करने के पीछे मांगलिक अभिषेकादि के दिन स्त्री के रजोदर्शन के दिन और सम दिनों में क्षौर न करावे ॥ २२ ॥

अग्निहोत्रारम्भ–

प्रजापत्ये पूषभे सद्धिदैवे पुष्येज्येष्ठास्वैन्दवे कृत्तिकासु।
अग्न्याधानं चोत्तराणांत्रयेऽपि श्रेष्ठं प्रोक्तंतैर्विप्रमुख्यैः ॥२३

टीका–रोहिणी, रेवती, विशाखा, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिरा, कृत्तिका और तीनों उत्तराओं में प्रथम अग्निहोत्रका आरम्भ करे ॥ २३ ॥

औषधि ग्रहण मुहूर्त्त।

पौष्णाद्वये चादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च।
मैत्रेषु मूलेषु मृगे च शस्तं भैषज्यकर्मं प्रवदन्ति सन्तः॥२४॥

टीका—रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा, मूल, और मृगशिरा नक्षत्र में औषधि को बनावें और सेवन करे ॥ २४ ॥

रोगोत्पत्ति में शुभाशुभ नक्षत्र।

स्वाती श्लेषारौद्र पूर्वात्रयेषु शाक्रे भौमे सूर्यजे सूर्यवारे।
नन्दारिक्तास्वेवरोगस्यचास्मिमृ त्युञ्जयः शंकरारक्षितोपि ॥ २५ ॥

टीका—स्वाती, श्लेषा आर्द्रा, तीनों पूर्वा और ज्येष्ठा नक्षत्र में। मंगल, शनि एवं रविवार में। नन्दा और रिक्ता तिथि में रोग उत्पन्न होने से रोगी की शिव भी रक्षा नहीं कर सकते अर्थात् वह मरजाता है ॥ २५ ॥

रोग से मुक्त होने के प्रमाण ।

व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णोसमैत्रे प्राणात्राणं जायते तस्य कृच्छ्रात् ।
वस्येसौम्येरोगमुक्तिस्तु मासाद् विंशत्यास्याद् वासराणांमघासु॥२६

टीका–रोग उत्पन्न होने के दिन रेवती वा अनुराधा के होने से रोगी के प्राण कठिनता से बचते हैं, उत्तराषाढा वा मृगशिरा के होने से एक महीने तक और मघा के होने से रोगी बीस दिन तक कष्ट भोगता है ॥ २६ ॥

पक्षाद्धस्तेवासवे सद्विदेवे मूलाश्विन्योरग्निधिष्ण्येनवाहनात् ।
याम्येत्वाष्ट्रे वैष्णवे वारुणे च नैरुज्यंस्यान्नूनमेकादशाहात् ॥२७

टीका–हस्त नक्षत्र के होने से १५ दिन तक, धनिष्ठा, विशाखा, मूल, अश्विनी और कृत्तिका के होने से ९ दिन तक, भरणी, चित्रा, श्रवण और शतभिषा के होने से ११ दिन तक रोगी कष्ट भोगता है ॥ २७ ॥

अहिर्बुध्न्येतिष्यसंज्ञेसभागे प्राजापत्यादित्ययो सप्तरात्रात् ।
रोगान्मुक्तिर्जायते मानवानां निःसंदिग्धं जल्पितं गर्गमुख्यैः॥२८

टीका—गर्ग मुनि कहते हैं कि उत्तराभाद्रपद, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, अभिजित् और पुनर्वसु नक्षत्रों में रोग उत्पन्न होने से रोगी ७ दिन तक निश्चय कष्ट भोगता है ॥ २८ ॥

रोगमुक्तस्नान के नक्षत्र ।

इन्दोर्वारे भार्गवे च ध्रुवे चसार्पादित्यस्वातियुक्तेषु भेषु ।
पित्र्येचांत्येचैवकुर्यात्कदाचिन्नैवस्नानंरोगमुक्तस्य जातेः ॥२९॥

टीका—सोम और शुक्रवारमें, ध्रुवनक्षत्रोंमें, रोहिणी, तीनों उत्तरा, श्लेषा, पुनर्वसु और स्वाती नक्षत्र में रोगी को प्रथमस्नान करना चाहिये । मघा और रेवती नक्षत्र में रोगी को स्नानकराना अशुभ और दुःख दायक होता है ॥२९॥

रोगमुक्तस्नान के लग्न ।

लग्नेचरे सूर्यकुजेज्यवारे रिक्तातिथौ चन्द्रबले च हीने ।
केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे स्नानं हितं रोगविमुक्तिकानाम् ॥३०

टीका—मेष, कर्क, तुला और मकर लग्न में रवि, मंगल एवं बृहस्पतिवार के दिन, रिक्ता तिथि होने पर, चन्द्रमा के बलहीन होनेसे और त्रिकोणमें पापग्रह के होने पर स्नान कराने से रोग नष्ट हो जाता है ॥ ३० ॥

सर्प दंश विचारः-

यः कृत्तिका मूलमघाविशाखा सर्पान्तकार्द्रा सुभुजङ्गदष्टः ।
सवैनतेयेन सुरक्षितोऽपि प्राप्नोतिमृत्युर्वदनं मनुष्यः ॥३१॥

टीका—कृत्तिका मूल मघा विशाखा श्लेपा रेवती और आर्द्रा नक्षत्र में सर्प के काटने से गरुड़ के रक्षा करने पर भी मनुष्य की मृत्यु होती है ॥३१॥

लता औषधि वृक्षारोपण मुहूर्त—

सावित्रतिष्याश्विनवारुणानि मूलं विशाखा च मृदु ध्रुवाणि ।
लतौषधोपादपरोपणे च शुभानि भानिप्रतिपादितानि ॥३२॥

टीका—हस्त, पुष्य, अश्विनी, शतभिषा, मूल, विशाखा, मृदु और ध्रुव नक्षत्रों में लता, औषधि और वृक्षों को लगाना चाहिये ॥ ३२ ॥

द्रव्यदेना व स्थापित करना ।

साधारणोग्रध्रुवदारुणाख्ये धिष्ण्ये यदत्रद्रविणप्रयुक्तं ।
हस्तेनविन्यस्तवसुप्रनष्टं न लभ्यतेनन्नियतं कदाचित् ॥३३॥

टीका—साधारण उग्र, ध्रुव और दारुण नक्षत्रों में दूसरे को दिया व दूसरे पर स्थापित किया हुआ धन फिर नहीं प्राप्त होता ॥ ३३ ॥

हस्ती लेना या देना ।

हस्तेषु चित्रासु तथाश्विनीषु स्वातौ च पुष्ये च पुर्नवसौ च ।
प्रोक्तानि सर्वाण्यपि कुञ्जराणां कर्माणि गर्गप्रमुखैःशुभानि ॥३४॥

टीका—हस्त, चित्रा, अश्विनी स्वाती, पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र में हाथी का लेनदेन और उसके शृङ्गारादिक के लिये अलंकारादिक का बनवाना गर्गादि मुनियों ने शुभ कहा है ॥ ३४ ॥

घोड़े का लेना या देना ।

पुष्यश्रविष्ठाश्विनिसौम्यमेषु पौष्णानिलादित्यकराह्वयेषु ।
सवारुणार्जेषुबुधैःस्मृतानिसर्वाणि कार्याणि तुरंगमाणाम् ॥३५॥

टीका—पुष्य, धनिष्ठा, अश्विनी, मृगशिरा, स्वाती, रेवती और शतभिषा नक्षत्र में घोड़े को ले और दे एवं उसके शृङ्गार के लिये अलंकारादि को बनवावे ॥ ३५ ॥

गवादि पशुओं के नगर में लाने और भेजने का वर्जित समय ।

चित्रोत्तरावैष्णवरोहिणीषु चतुर्दशी दर्श दिवाष्टमीषु ।
ग्रामप्रवेशं गमनं विदध्याद्धीमान्यशूनां न कदाचिदेव ॥ ३६ ॥

टीका--चित्रा, तीनों उत्तरा, श्रवण और रोहिणी नक्षत्र में एवं चौदस, अमावस, अष्टमी तिथि गौ आदि पशुओं को ग्राम में न लावै और न बाहर ग्रामसे भेजे ॥ ३६ ॥

गवादि पशुओं के क्रय विक्रय में वर्जित नक्षत्र ।

शुक्रवासवकरेषु विशाखा पुष्य वारुण पुनर्वसु भेषु ।
अश्विपूषभयुतेषु विधयो विक्रयक्रयविधिः सुरभीणाम् ॥ ३७ ॥

टीका--ज्येष्ठा, धनिष्ठा हस्त, विशाखा, पुष्य, शतभिषा, पुनर्वसु, अश्विनी और रेवती नक्षत्र में गौआदि पशुओं को न मोल ले और न बेचै ॥ ३७ ॥

दास दासी क्रूर मुहूर्तः-

नरा कारं लिखे चक्रं सेवार्थ भृत्य संग्रहे ।
शीर्षे त्रीरयर्थ लाभः स्यान्मुखे त्रीणि विनाशनम् ॥ ३८ ॥
हृदिपञ्च धनं धान्यं पादेषट्कं दरिद्रता ।
पृष्ठे द्वे प्राणसन्देहो नाभौवेदाः शुभावहम् ॥
गुदे द्वे भयपीडा च दत्तहस्तैकमर्थकम् ।
एकं वामे नाशकरं भृत्य भात्स्वामिभान्तकम् ॥ ३९ ॥

टीका--मनुष्य का स्वरूप बनाकर उसके समस्त स्थानों में २७ नक्षत्र रक्खे और उनका फल इस प्रकार जाने । शिरमें ३ नक्षत्र धन देते हैं, मुखमें ३ नाश करते हैं, हृदय में ५ धन धान्य बढ़ाते हैं, चरणों में ६ दरिद्र करते हैं, दृष्टि में २ मृत्यु देते हैं, नाभिमें ४ शुभ, गुदा में २ भय और पीड़ा देते हैं, बायें हाथ में १ धन देता है । दहिने हाथ में १ नक्षत्र नाश करता है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

दासी चक्रम् ।

दासीचक्रं प्रवक्ष्यामि दासीभास्वामिभान्तकम् ।
शीर्षत्रीणि मुखेत्रीणि स्कंधयोश्च द्वयंस्मृतम् ॥ ४० ॥
हृदये पंचऋक्षाणि नाभौपंच भगैककम् ।
जानुद्वये द्वयं ज्ञेयं पादयोश्च त्रयं त्रयम् ॥ ४१ ॥

शिरः स्थाने भवेल्लाभो मुखे हानिः प्रजायते ।
स्कन्धे च स्वामिनोमृत्यु र्हृदये पुष्टिवर्द्धनम् ॥ ४२ ॥
नाभौ हानिप्रदं प्रोक्तं भगेचैव पलायनम् ।
जानौ सेवां लभेन्नित्य पादयोस्तु धनक्षयः ॥ ४३ ॥

टीका—दासीके जन्म नक्षत्र से स्वामीके जन्म नक्षत्र तक जितने नक्षत्र हों उनको इन भाँतिसे रक्खे और फल जाने। शिरपर ३ नक्षत्र लाभ करते हैं, मुखमें ३ हानि करते, कंधोपर २ स्वामीकी मृत्यु करते, हृदय में ५ पुष्टि देते, नाभिमें ५ हानि करते, भगपर १ पलायन, जानुपर २ सेवा कराते, पैरोंपर ६ नक्षत्र धन नष्ट करते हैं ॥ ४० ॥ ४३ ॥

गवादिक्रयमुहूर्त्तः ।

गोवृषमहिषीचक्रम् ।

शीर्षत्रयं मुखेद्वे च पादेष्वष्टौ विनिर्दिशेत् ।
हृदये पञ्चऋक्षाणि स्तनेष्वष्टौ भगेकक्म् ॥ ४४ ॥

फलम् ।

शिरः स्थाने भवेल्लाभो मुखेहानिः प्रजायते ।
पादयोरर्थलाभःस्याद् हृदये सौख्यवर्द्धनम् ॥ ४५ ॥
स्तनयोस्तु महालाभो गुह्यस्थाने महद्भयम् ।
अर्यमादि गवां ज्ञेयं महिष्यां सूर्यभान्यसेत् ।
इदमेव वृषे ज्ञेयं विशेषः पत्सुषोडश ॥ ४६ ॥

टीका–गौ वा बैल लेना हो तो उत्तराफाल्गुनीसे दिनके नक्षत्र तक गिने. उसमें से माथेपर ३ लाभ करते, मुखमें २ हानि करते पैरोंपर ६ धन देते, हृदयमें ५ सुख देते, स्तनोंमें ६ विशेष लाभ कराते, भगपर १ प्रजाकी वृद्धि करता, गुदापर ४ नक्षत्र भय देते हैं। यदि भैंस लेना हो तो भी इसी रीतिसे शुभाशुभ फल जानना, परन्तु सूर्यनक्षत्र से दिनके नक्षत्र तक गिने। बैलके लेनेमें १६ नक्षत्र पैरोमें धरे और शेष स्थानों में २-२ धरे और गायके समान शुभाशुभ फल जाने ॥ ४४ ॥ ४६ ॥

अश्वक्रयमुहूर्तः।

अश्वे तु सूर्यभाच्चैव साभिजिद्भानि विन्यसेत।
पंचस्कन्धे जन्मभांतं पृष्ठे तु दशकंन्यसेत् ॥४७॥
पुच्छे ज्ञेयं द्वयं पादैश्चतुष्पादे चतुष्टयम्।
उदरे पंचधिष्ण्यानि मुखे द्वे च प्रकीर्तिते ॥ ४८ ॥

फलम्।

सौभाग्यमर्थलाभश्च स्त्रीनाशो रणभंगता।
नाशश्च अर्थलाभश्च फलं प्रोक्तं मनीषिभिः ॥ ४९ ॥

टीका—सूर्यके नक्षत्र से अपने जन्म नक्षत्र तक अभिजित सहित नक्षत्र इस क्रम से रक्खे। कंधेपर ५ नक्षत्र सौभाग्य देते हैं, पीठपर १० धन देते, पूँछ पर २ स्त्रीका नाश करते, पैरों पर ४ रणभङ्ग करते, उदर में ५ नाश करते, मुखपर २ नक्षत्र धन देते हैं, ऐसा फल विद्वानों ने कहा है ॥ ४७ ॥ ४९ ॥

हस्तीक्रयमुहूर्त्तः।

गजाकारं लिखेच्चक्रं जन्मभान्तं च सूर्यभात्।
कर्णौ शीर्षे द्विजे पुच्छे द्वयं सर्वत्र योजयेत् ॥ ५० ॥
शुण्डायां तु द्वयं योज्यं वेदाः पृष्ठोदरे मुखे।
षड्वै चतुर्षु पादेषु साभिजिद्धै न्यसेत्क्रमात् ॥ ५१ ॥

फलम्।

कर्णौ चैव महाँल्लाभो मस्तके लाभ एव च।
दन्तेचैव भवेल्लाभो पुच्छे हानिः प्रजायते ॥ ५२ ॥
शुण्डायां तु शुभं ज्ञेयं पृष्ठे तु सुखसम्पदः।
उदरे रोगसंभूति मुखे तु मध्यमं स्मृतम् ॥
पादयोश्च भवेल्लाभो गजे चैव विनिर्दिशेत् ॥ ५३ ॥

टीका—प्रथम सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक नक्षत्रोंके स्थापित करने का क्रम जो लिखा है उससे इसका क्रम भिन्न है। इसमें प्रथम कानों में २ नक्षत्र लाभ देते, मस्तक पर २ नक्षत्र लाभ देते दांतों पर २ लाभ देते, पूँछपर २ नक्षत्र हानि करते, शुण्डापर २ शुभ, पीठपर ४ सुख संपत्ति देते पेटपर ४ रोग करते मुखपर ४ मध्यम, पैरोंपर ६ लाभ देते हैं ॥ ५० ॥ ५३ ॥

शिबिकारोहणमुहूर्त्तः ।

सूर्यभाद्दिनभंयावत्पंचपंचचतुर्दिशि ।
मध्ये तु सप्तदेयानि चक्रं ज्ञेयं सुखावहम् ॥ ५४ ॥

फलम् ।

पूर्वभागे तु चारोग्यं दक्षिणे कष्टकारकम् ।
पश्चिमे कृशता चैव उत्तरे व्याधिसम्भवः ॥ ५५ ॥
मध्यमे च शुभं प्रोक्तमायुर्वृद्धिकरं परम् ।
पालकारोहणंतद्वद्धालकस्य बुधैर्हितम् ॥ ५६ ॥

टीका—सूर्यनक्षत्र से दिनके नक्षत्र तक पालकी वा पालना जिसमें चढ़ना चाहे उसके चारों ओर और बीचमें इस क्रमसे लिखे । पूर्व भागमें ५ निरोगता, दक्षिण में ५ कष्ट, पश्चिम में ५ कृशता, उत्तर में ५ व्याधि नष्ट करते और मध्य में ७ नक्षत्रों का शुभकारक एवं आयुवर्द्धक जाने ॥ ५४ ॥ ५६ ॥

छत्रचक्रम्

त्र्युत्तरा रोहिणी रौद्रं पुष्यश्च शततारका ।
धनिष्ठा श्रवणं चैव शुभानिच्छत्रधारणे ॥ ५७ ॥

फलम् ।

मूले त्रीणि सप्तदण्डे कण्ठे चैव तु पञ्चकम् ।
मध्ये वसुप्रदातव्यः शिखरे वेद एव च ॥ ५८ ॥
मूले च जायतेनाशो दंडे हानिर्धनक्षयः ।
कण्ठे च राजसंमानं मध्ये छत्रपतिर्भवेत् ॥
शिखरे कीर्तिवृद्धिश्च जन्मभात्सूर्यभान्तकम् ॥ ५९ ॥

टीका—तीनों उत्तरा, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, शतभिषा, धनिष्ठा और श्रवण नक्षत्र छत्रधारण करने में शुभ हैं, परन्तु अपने जन्म नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र तक लिखने की रीति से प्रथम मूलपर ३ नक्षत्र जीव नाशक, दंडपर ७ धनक्षयकारक, कंठ में ५ राजा से सन्मान करानेवाले मध्य में ८ छत्रपति, शिखर पर ४ कीर्ति वर्धक जाने ॥ ५९ ॥ ५८ ॥

मञ्चकचक्रम् ।

सूर्यभाद् गणयेच्चान्द्रं मञ्चमूले चतुश्चतुः ।
गात्रेऽथित्वेकविन्ध्यासु मध्ये सप्तविनिर्दिशेत् ॥ ६० ॥

फलम् ।

मूले तु सुखसौभाग्यं गात्रे प्रोक्तं भयंमहत् ।
मध्ये सत्पुत्रलाभाय आयुर्वृद्धिकरंपरम् ॥ ६१ ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक मचकचक्र में अंक स्थापित करने की विधि यह है कि मुख में १६ सुखदाता, मध्यगात्र पर ४ भयदाता, विन्ध्यापार १ फल दायक, मध्य में ७ पुत्र लाभ और आयुको बढ़ानेवाला जाने ॥६०॥६१॥

शरसहितधनुषचक्रम् ।

सूर्यभाजन्मभान्तं च धनुष्येवं च योजयेत् ।
चापाग्रे बाणसंख्याकरं शराग्रे पञ्चयोजयेत् ॥ ६२ ॥
शरमूले तथा पञ्च पंच संधौ प्रकीर्तयेत् ।
दण्डेचैव च दद्याद्वै धनुश्चक्रमनुत्तमम् ॥ ६३ ॥

फलम् ।

अग्रे हानिः शरेलाभः शरमूले जयस्तथा ।
चापसंधौ तु शौर्यस्याद्दण्डेभंगः प्रजायते ॥ ६४ ॥

टीका—सूर्यनक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक धनुषपर अंक स्थापित इस भाँति से करे कि पहिले आगे ५ हानिकारक, शराग्रपर ५ लाभदायक, शरमूलपर ५ जयदाता, संधिपर ५ पराक्रमदाता, बीचके दंडपर ३ राजभंग कारक जाने । इस प्रकार शुभाशुभ फल जान धनुष धारण करे करावे ॥ ६२ ॥ ६४ ॥

रथचक्रम् ।

रथाकारं लिखेच्चक्रं सूर्यभाज्जनिभंन्यसेत् ।
रथाग्रे त्रीणि ऋक्षाणि पञ्चचक्रेषु ततो न्यसेत् ॥ ६५ ॥
ऋक्षत्रयं मध्यदण्डे रथाग्रेभं त्रयं तथा ।
युगे च भं त्रयं ज्ञेयं षड्दृक्षाण्यन्तिमेऽध्वनि ।
शेषमृक्षत्रयं योज्यं चक्रज्ञैः सर्वतोमुखे ॥ ६६ ॥

फलम् ।

शृङ्गे मृत्युर्जयश्चक्रे सिद्धिर्ज्ञेया च दण्डके ।
रथाग्रे दंडश्चध्वानं मध्ये चैव सुखं शुभम् ॥ ६७ ॥
बुधैरेवं फलं ज्ञेयं जन्मभान्तं क्रमेण च ।
गर्गेणोक्तानि चक्राणि विज्ञेयानि सदा बुधैः ॥ ६८ ॥

टीका—रथ के समान चक्र बनाय उसके स्थानों पर सूर्य नक्षत्र से जन्म-नक्षत्र तक इस प्रकार लिखे। पहिले सींगोंपर ३ मृत्यु देवे, पहियोंपर ६ जय देवे, मध्य दंडोंपर ३ सिद्धि देवे, रथके अग्रभाग पर ३ धन देवे, जुआपर ३ राज, भंग करते, अन्त के मार्ग पर ६ नक्षत्रों को सुखदाता जाने ॥ ६५ ॥ ६८ ॥

तैलकारचक्रम् ।

घाणाचक्रं प्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चान्द्रमेव च ॥ ६९ ॥
त्रीणि त्रीणि त्रयं त्रीणि त्रीणि त्रयं तथा ।
त्रीणि त्रीणि तु भान्यत्र योजयेत् घाणके शुभम् ॥ ७० ॥

फलम् ।

हानिरैश्वर्यमारोग्यं विनाशो द्रव्यमेव च ।
स्वामिघातो निर्धनता मृत्युरेव सुखं क्रमात् ॥ ७१ ॥

इक्षुरसनिष्कासन मुहूर्तः ।

वेदद्विनेत्रभूभूतबाणहस्तरसाः क्रमात् ।
प्रथमे च भवेल्लक्ष्मी द्वितीये हानिरेव च ॥ ७२ ॥
तृतीये सर्वलाभश्च चतुर्थे च क्षयस्तथा ।
पंचमे च भवेन्मृत्युः षष्ठस्थाने शुभंस्मृतम् ॥ ७३ ॥
सप्तमे चैव पीडास्यादष्टमेधनधान्यकम् ।
सूर्यभाद् गणयेच्चन्द्रमिक्षयन्त्रे नियोजयेत् ॥ ७४ ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक घानी चक्र के ९ भागों का और ऊखों के रस की घानी के ८ भागों का फल नीचे लिखते हैं। इनमें जिस दिन शुभ फल आवे उस दिन पेरे ॥ ६९ ॥ ७४ ॥

तेलकी घानी			ऊखोंके रसकी घानी		
३	प्रथम भाग	हानि	४	प्रथमभाग	लक्ष्मी
३	भाग	ऐश्वर्य	२	भाग	हानी
३	भाग	निरोगता	२	भाग	सर्वलाभ
३	भाग	नाश	१	भाग	जय
३	भाग	द्रव्य	५	भाग	मृत्यु
३	भाग	स्वामिघात	५	भाग	शुभ
३	भाग	निर्धन	२	भाग	पीडा
३	भाग	मृत्यु	६	भाग	धनधान्य
३	भाग	सुख			

नौकाघट्टनजलावरोहणमुहूर्तौ—

पौष्णादितिस्तुरगवारुणमित्र शीतोष्णारश्मिवसुजीवकभान्यमूनि ।
वारेव जीव भृगुनन्दनकौप्रशस्तौ नौकादिसंघटनवाहनमेषुकुर्यात्७५

टीका—रेवती, पुनर्वसु, अश्विनी, ऽश्लेषा, शतभिषा, अनुराधा, चित्रा, मृगशिर, हस्त, धनिष्ठा और पुष्य नक्षत्र में, गुरु एवं शुक्रवार के दिन नौका बनवावे वा जल में डारे ॥ ७५ ॥

रविभुक्तर्क्षमारभ्य कुर्यात् त्रीभ्युदये च षट् ।
नाल्यांत्रीणि हृदित्रीणि पृष्ठेभूः पार्श्वगं त्रयम् ॥७६॥
शुक्काणेत्रीणिषण्मध्ये नौकाचक्रे भ संस्थितिः ।
उपरिस्थं च मध्यस्थं षट् श्रेष्ठं च परं नसत् ॥ ७७ ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से नक्षत्र लिखने का क्रम यह है कि ऊपर के भाग में ३ नाली २ हृदय पर ३ पीठमें १ पार्श्व में ३ शुक्कण में नौका के बीच में ६ नक्षत्र स्थापित करें, उनमें से ऊपर और मध्यके नक्षत्र शुभ एवं अन्य स्थानों के अशुभ जाने ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

लग्नबल ग्रहबल—

त्रिषडायगतः सूर्यश्चन्द्रोद्वित्र्यायगः शुभः ।
कुजार्कौ त्रिषडायस्थो त्रिषट्खेतरगोगुरुः ॥ ७८ ॥
द्विसुतास्ताष्टरिष्फाय रिपुसंस्थो बुधः स्मृतः ।
सुखान्त्यारिविनाऽन्यत्र नौयाने शुभदः सितः ॥७९॥

टीका—नौका में माल भरने वा चलाने की लग्नका ग्रहबल ३।६।११ स्थान में सूर्य, २।३।१ स्थानों में चन्द्रमा, ३।६।११ स्थानों में मङ्गल और शनि, ३।६।१० इन स्थानोंकी छोड़ शेष स्थानोमें गुरु, २।५।७।८।१२।११।६ स्थानों मे बुध, ४।६।१२ स्थानों को छोड शेष स्थान में शुक्र शुभ होता है ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ नौकाया ग्रहसंस्थाविचार—

नाल्यां पापखगः सौम्याः शुक्काशेऽशुभकारकः ।
व्यत्ययात् मृत्युदाः क्रूराःपृष्ठे कूप च भीतिकृत् ॥ ८० ॥
अन्तेवाह्ये स्थितास्ते च ह्यलाभाय स्मृता बुधै. ।
एवं विचार्य दैवज्ञ नौयय नं समयं वदेत् ॥ ८१ ॥

टीका—लग्नकुंडली लिखकर उसमें जो २ ग्रह जिस २ स्थान में पड़े हों उनका वैसा फल जाने । नाली में पापग्रह शुभ, शुकण में शु ग्रह शुभ, यदि ये विपरीत हों तो अशुभ, क्रूर ग्रह पीठपर वा कूप पर होने से भयदायक, यदि यह ग्रह बाहर पावें तो लाभ दायक ज्योतिषियो को बताना चाहिये ॥ ८० ॥ ८१

दीपिकाचक्र—

दीपिकायां मुखे पंच राजसंमानलाभदाः ।
कण्ठे नवधनप्राप्तिर्मध्येऽष्टौ स्वामिमृत्युदः ।
दण्डे पंचभवेद्राज्यमग्निऋक्षाच्च दीपिकाम ॥ ८२ ॥

टीका—कृत्तिका नक्षत्र से दिनके नक्षत्र तक इस क्रमसे लिखे, मुख पर ५ लाभदायक और राजासे सन्मान दिलाने वाले कण्ठपर ९ धन देनवाले, मध्य में ८ स्वामी की मृत्युकरन वाले, दंडपर ५ राज्य दिलानेवाले नक्षत्र जान ८२

कूपचक्र—

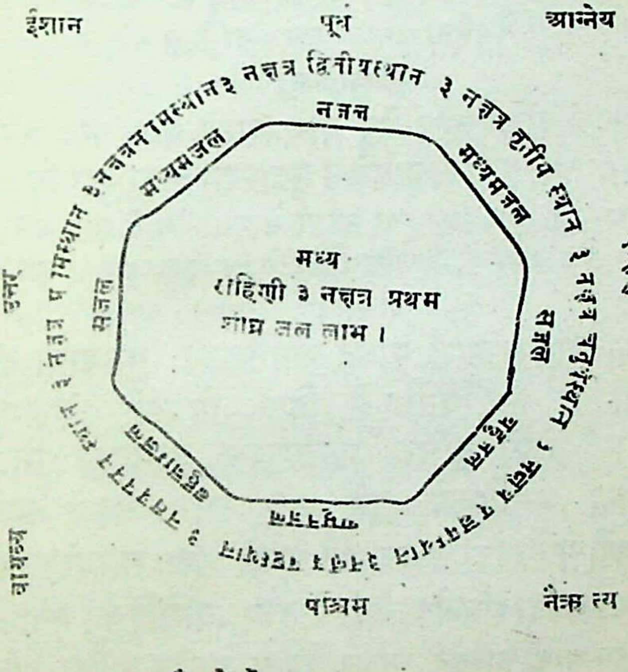
कूपवाप्योस्तु चक्रं वै विज्ञेयं विबुधैः शुभम् ।
धातृभात् दिनभंयावत् त्रित्रिऋक्षाणियोजयेत् ॥८३॥
मध्यपूर्वे तथाग्नेये याम्ये चैव तु नैर्ऋते ।
पश्चिमे चैव वायव्यां सौम्ये शूलिदिशि क्रमात् ॥८४॥

फल—

शीघ्रं जलं न जलं मध्यमजलमजलं बहुजलम् ।
अमृतजलं बहुक्षारं सजलं मध्यजलं क्रमाज्ज्ञेयम् ॥ ८५ ॥

मत्स्यकुलीरे मकरे बहुजलं तथैवचाथ वृषकुम्भयोश्च ।
अलौ च तौलौ च जलाऽल्पनामता शेषाश्च सर्वे जलदाप्रकीर्तिताः ॥

टीका–नवीन कूआँ वा बावली खुदाना हो तो रोहिणी नक्षत्र से वर्तमान दिनके नक्षत्रतक कि संख्या जोड़कर इस प्रकार से स्थापन करे । मध्यमें ३, पूर्वमे ३, आग्नेयमे ३, दक्षिणमें ३ नैऋत्यमे ३, पश्चिममे ३, वायव्यमे ३, उत्तरमें ईशान्य मे ३, उसका फल इस प्रकार से होता है । शीघ्रजल, अजल, मध्यमजल । अजल, बहुजल, अमृतजल, एवं खारापानी सजल, मध्यजल, मीन, कर्क और मकर राशिके चन्द्रमामें खुदानेसे बहुत जल निकले । वृष कुम्भ के चन्द्रमामें थोड़ा जल, अन्यराशियोंके चन्द्रमामें खोदनेसे जल नहीं निकले ॥८५ ८६ ॥



कुआँ खोदनेका नक्षत्र–

हस्तात तिरो वासवं वारुणां च चान्द्रं पित्रं त्रीणि चैवोत्तराणि ।
ब्राह्मं तोयं चापि नाक्षत्रमाहुः कूपारम्भे श्रेष्ठमाद्यामुनीन्द्राः ८७

टीका—हस्त, चित्रा स्वाती धनिष्ठा शतभिषा मृगशिरा मघा तीनो उत्तरा रोहिणी पूर्वाषाढ़ नक्षत्रमें मुनीश्वरों ने कुआँ बनवाने का मुहूर्त कहा है ॥८७॥

वाटिकारंभमुहूर्त—

गोसिंहालिगतेषु चान्तरगतेभानौ बुधादित्रये ।
चन्द्रार्केयशुभावुधैरभिहिनाऽऽरामप्रतिष्ठा क्रिया ॥
आश्लेषाभरणीद्वयं शतभिषक्त्यक्त्वा विशाखां कुहू ।
रिक्ता चैव तु अष्टमीं परिहरेत्षष्ठीमपि द्वादशीम् ॥८८॥

टीका—उत्तरायणमें वृष, सिंह वा वृश्चिक राशिगत सूर्य के होने पर, बुध गुरु, शुक्र, चन्द्र एवं शनिवार में ऽऽश्लेषा, भरणी, कृत्तिका, शतभिषा, विशाखा इन नक्षत्रों में अमावास्या, रिक्ता, अष्टमी, षष्ठी, और द्वादशी तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में बगीचा लगाना शुभ होता है ॥ ८८ ॥

मुद्रापातनमुहूर्त—

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु भेषु योगेप्रशस्ते शनिचन्द्रवर्ज्ये ।
वारे तथा पूर्ण जलाह्वयेच मुद्राप्रशस्ता शुभदा हि राज्ञाम् ८९

टीका—मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रों में शुभ योग में शनि और सोमवारको त्याग कर अन्य वारों में, पूर्णचन्द्र के होने पर शिक्का ढालना शुभ कहा है ८९

दीक्षाग्रहण विचार ।

माघ फाल्गुनिक मार्ग माधवे कार्तिकाश्व गुजमासि दीक्षयेत् ।
सादिती तु लघुरेवतीध्रुवे पितृ मित्रहरि मूलभानिले ॥
कृष्णवार तिथि मूचिरे ऽकुजेशुक्ल पक्षाथवा निजेतिथौ ।
केन्द्रकोण धनविक्रमे शुभे शत्रु लाभ सहजे खले ग्रहे ॥
शाक्त शैववैष्णवोद्धि स्वभावे मन्त्रो ग्राह्यः स्याच्चरेच स्थिरेच ।
मासेग्राह्यः सर्वदा संक्रमेवा देवी पीठे वा प्रयागेपि का श्याम् ॥९०॥

टीका—माघ, फाल्गुन, अगहन, वैशाख, कार्तिक आश्विन, मासमें पुनर्वसु लघुरेवती ध्रुव मघा अनुराधा श्रवण मूल स्वाती इन १५ नक्षत्रों में कृष्ण शुक्ल दोनों पक्षमें सम्पूर्ण तिथि मङ्गल के अतिरिक्त सब वारोंमें अथवा अपनी अपनी तिथियों में दुर्गा की नवमी शिवकी अष्टमी चतुर्दशी, विष्णु की एकादशी, द्वादशी इत्यादि में दीक्षा ग्रहण (गुरुमुख) हो श्रावणमासमें तथा किसीके मतसे आषाढ़

मास में भी दीक्षा ग्रहण करना लिखा है शाक्त द्विस्वभाव लग्नमें शैवचर लग्न में, वैष्णव स्थिर लग्नमें, दीक्षाग्रहण करे सूर्य, चन्द्र ग्रहणमें संक्रान्ति के पुण्य कालमें सिद्ध पीठपर, प्रयाग काशी आदि तीर्थों में गया यात्रा के समय गुरु की आज्ञा से शुभ मासादि शुभ मुहूर्त न प्राप्त होने पर भी दीक्षा ग्रहण करे ॥ ६० ॥

जातक प्रकरण—जन्मकाल में गंडात का शुभाशुभ फल—

अश्विनी पित्र्य मूलानां पूर्वार्द्धे बाध्यते पिता ।
पूषाहिशक्र पश्चार्द्धे जननीं बाध्यते शिशोः ॥ ६१ ॥
सर्वेषां गंडजातानां परित्यागो विधीयते ।
वर्जयेद्दर्शनं तस्य तत्र पाणमासिकं भवेत् ॥ ६२ ॥

टीका—अश्विनी, मघा मूल नक्षत्र के पूर्वार्द्ध में जन्म होने से पिता को अशुभ जाने और रेवती, श्लेषा एवं ज्येष्ठा के उत्तरार्द्ध में जन्म होने से माता को अशुभ जाने । गंडान्त में जन्म होने वाले बालक को त्याग देना उचित है अर्थात् छः महीने तक उसका मुख न देखे ॥ ६१ ॥ ९२ ॥

कृष्णचतुर्दशी का जन्म फल—

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतेः षड्विधंफलम् ।
चतुर्दश्याश्च षड्भागान् कुर्यादादौ शुभं स्मृतम् ॥ ६३ ॥
द्वितीये पितरं हन्ति तृतीये मातरं तथा ।
चतुर्थे मातुलं हन्ति पंचमे वंशनाशनम् ॥
षष्ठे च धनहानिः स्यादात्मनो वंशनाशनम् ॥ ६४ ॥

टीका—जो बालक कृष्णपक्ष की चौदस को जन्म ले तो चौदस की साठ घड़ी को छः भागों में दस घड़ी के भाग अनुसार बाँटकर इस प्रकार से फल देखे कि प्रथम भाग में जन्म लेने से बालक के लिये शुभ जाने । दूसरे भाग में जन्म लेने से पिता की मृत्यु हो । तृतीय भाग में जन्म लेने से माता को दुःख । चौथे भाग में जन्म लेनेसे मामा को दुःख । पाँचवें भाग में जन्म लेने से वंश का नाश और छठें भाग में जन्म लेने से वंश धन दोनों का नाश करने वाला बालक होता है ॥ ९३ ॥ ६४ ॥

अमावास्या के जन्म का फल—

सिनीवाल्यां प्रसूताश्च दासी भार्या पशुस्तथा ।

गजोऽश्वोमहिषाचैव शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥ ९५ ॥
कुहू प्रसूति रत्यथ सर्वदोषकरीस्मृता ।
यस्यप्रसूतिरेतेषां तस्य युर्धननाशनम् ॥ ९६ ॥
सर्वगंडसमस्तत्र दोषस्तु प्रबलोभवेत् ॥ ९७ ॥

टीका—चतुर्दशी युक्त अमावस्या तिथि में दासी, स्त्री, गौ, हथनी, घोड़ी और भैंस के प्रसूति होने से इन्द्र के समान मालिक होने पर भी निर्धन हो जाता है। केवल अमावस्या में प्रसूति होने में बहुत दोष होते हैं। जिसमें धन और आयु का नाश होता है। पूर्णगंडान्त में प्रसूति होने से बहुत दोष जानना चाहिये ॥ ९५ ॥ ९७ ॥

दिनक्षयादिक में जन्म का फल—

दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ ।
शूले गण्डेऽतिगंडे च परिघे यमघंटके ॥ ९८ ॥
कालदंडे मृत्युयोगे दग्धयोगे सदारुणम् ।
तस्मिन्गंडदिनेप्राप्ते प्रसूतिर्यदिजायते ॥ ९९ ॥
अतिदोपकरीप्रोक्ता तत्र पापयुतासती ॥१००॥

टीका—क्षयदिन, व्यतीपात, व्याघात, भद्रा, वैधृति, शूल, गंड, अतिगंड, परिघ योग का प्रथमार्द्ध, यमघंट, कालदंड, मृत्युयोग, दग्धयोग और दारुणयोग में जन्म होने से अति अशुभ जाने ॥ ९८ ॥ १०० ॥

ज्येष्ठा नक्षत्र के जन्म का फल—

ज्येष्ठादौ जनने माता द्वितीये जनने पिता ।
तृतीये जनने भ्राता स्वयं माता चतुर्थके ॥१०१॥
आत्मानं पंचमेहन्ति षष्ठे गोत्रक्षयोभवेत् ।
सप्तमे चोभयकुलं ज्येष्ठभ्रातरमष्टमे ॥
नवमे श्वसुरं चैव सर्वं हन्ति दशांशके ॥१०२॥

टीका—ज्येष्ठा नक्षत्र में सन्तान उत्पन्न होने से ६–६ घड़ी में ज्येष्ठा नक्षत्र की साठ घड़ियों को दस भागों में बाँट दे और उनका फल इस भाँति जाने। प्रथम भाग में बालक उत्पन्न हो तो नानी को अशुभ, दूसरे भाग में नाना को अशुभ, तीसरे भाग में मामा को अशुभ, चौथे में माता को अशुभ, पाँचवें में उत्पन्न

होने वाले बालकको अशुभ, छठेंमें कुटुम्ब को अशुभ, सातवें, में दोनों कुलों को अशुभ, आठवें में बड़े भाई को अशुभ, नवें में श्वसुर को अशुभ, और दशवें में बालक उत्पन्न हो तो सर्वस्व का नाश करनेवाला होता है ॥ १०१ ॥ १०२ ॥

मूल नक्षत्र के जन्म का फल—

मूल स्तंभं त्वक् च शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा।
वेदाश्च मुनयश्चैव दिशश्च वसवस्तथा ॥ १०३ ॥
नन्दाबाण रसारुद्रा मूलभेदाः प्रकीर्तिताः।
मूले मूलविनाशाय स्तंभे हानिर्धनक्षयः ॥ १०४ ॥
त्वचि भ्रातृविनाशाय शाखा मातुर्विनाशकृत्।
पत्रे सपरिवारः स्यात्पुष्पेषु नृपवल्लभः ॥ १०५ ॥
फलेषु लभतेराज्यं शाखायामल्पजीवितम् ॥ १०६ ॥

टीका—मूल नक्षत्र को मूल वृक्ष मानकर उसमें शुभाशुभ फल को देखे। मूल नक्षत्र का भ्रम या साठ घड़ी है, जिसमें पहली चार घड़ी को वृक्ष का मूल जाने। इसमे जन्म लेने से नाश होता है। पाँच घड़ी से ११ घड़ी तक वृक्ष का स्तभ, इसमें बालक का जन्म होने से हानि होती है और धन का भी नाश होता है। बारह घड़ी से ईकीस घड़ी तक मूल वृक्ष की त्वचा जानें. इसमें जन्म होने से भाई का नाश होता है। बाइस घड़ी से लेकर उन्तीस घड़ी तक शाखा जाने, इसमें जन्म लेने से माता का नाश होता है। तीस घड़ी से लेकर अड़तीस घड़ी तक पत्ते जाने, इसमें जन्म लेने से बालक के कुटुम्ब को अशुभ होता है। उन्तालिस से तेंतालीस घड़ी तक मूल वृक्ष के पुष्प जाने, इसमें जन्म लेने वाला बालक राजा को प्यारा लगता है। चौवालिस घड़ी से लेकर उन्चास घड़ी तक फल जानें, इसमें जन्म लेने वाला बालक राजा होता है। पचास से लेकर साठ घड़ी तक मूल वृक्ष की शिखा जाने, इसमें जन्म लेने से बालक अल्पायु होता है ॥ १०३ ॥ १०६ ॥

जन्मकाल में मूल नक्षत्र के वासस्थान जानने का लग्न—

वृषालिसिंहेषु घटे च मूलं दिविस्थितं युग्मतुलाङ्गनान्त्ये।
पातालगं मेष धनुः कुलीरनक्रेषु मर्त्येष्विति संस्मरन्ति ॥१०७॥

टीका—वृष, सिंह, कुम्भ, वृश्चिक लग्न में जन्म होने से मूल नक्षत्र का वास स्वर्ग में जाने, वह राज्य प्राप्त करता है। मिथुन, तुला, कन्या और मीन लग्नमें

मूल नक्षत्र का वास पाताल में जाने, वह धन प्राप्त करता है। मेष, धन, कर्क और मकर लग्न में मूल नक्षत्र का वास मृत्यु लोक में जाने, वह कुटुम्ब का नाश करता है ॥ १०७ ॥

आश्लेषा नक्षत्र का नराकारचक्र—

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांसयुगं च बाहु हृज्जानु गुह्यपद मित्यहिदेहभागः । बाणाद्रिनेत्रहुतभुक् श्रुतिनागरुद्र षण्नन्दपंचशिरसः क्रमशस्तु नाड्य ॥ १० ॥ राज्यं पितृत्तयो मातृनाशः कामक्रियारतिः पितृभक्तो बली स्वप्नस्त्यागी भोगी धनी क्रमात् ॥ १०९ ॥

टीका—श्लेषा नक्षत्र की साठ घड़ियों को नाशकारचक्र में स्थापन करो। पहिली छः घड़ियों को मस्तक जाने इसका फल राज्य की प्राप्ति जाने। सात घड़ी से तेरह घड़ी तक नराकार का मुख जाने, यह पिता का नाश करती है। चौदह घड़ी से पन्द्रह घड़ी तक ग्रीवा, यह परस्त्री में रत करती है। उन्तीस घड़ी से बाइस घड़ी तक दोनों कन्धे, यह पिता की भक्ति करती है। तेइस घड़ी से तीस घड़ी तक दोनों भुजा, यह सन्तान को बलवान करती है। इकतीस घड़ी से इकतालीस घड़ी तक हृदय, यह आत्मघात करती है। बयालीस से तैंतालीस घड़ी तक दोनों जानु, यह सन्तान को त्यागी बनाती है। अड़तालीस घड़ी से छप्पन घड़ी तक गुदा यह भोगी बनाती है। सत्तावन घड़ी से साठ घड़ी तक दोनों पाँव जाने, यह धनवान करती है ॥ १०८ ॥१०९॥

दत्तक पुत्रलेनेका मुहूर्त—

हस्तादि पञ्चवसुपुष्य च वस्त्र भेषु
सूर्ये च क्ष्माजगुरु भार्गव वासरेषु ।
रिक्ताविवर्जित तिथौत्वलिकुम्भलग्ने
सिंहे वृषे भवति दत्तपरिग्रहोऽयम् ॥११०॥

टीका—हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा धनिष्ठा पुष्य अश्विनी नक्षत्रोंमें और रवि मंगल गु? शुक्र वारोंमें, रिक्तातिथि को छोड़ अन्य तिथियों में वृश्चिक कुम्भ सिंह वृषलग्नोंमें दत्तक पुत्र (गोद) लेय ॥ ११० ॥

नक्षत्र प्रकरण समाप्तम्

अथ संस्कार प्रकरणम्--

श्रीगणेशौ रमाकान्तं वन्दे गौरीं हरं रविम् ।
सुसंस्कार प्रकाशोऽयंरच्यते विदुषां मुदे ॥
आद्यं रजः शुभं माघमार्गराधेषफाल्गुने ।
ज्येष्ठश्रावणयोः शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा ॥ १ ॥

टीका—माघ, अगहन, वैशाख, आश्विन, फाल्गुन, ज्येष्ठ, और श्रावण मास, शुक्ल पक्ष बुध, बृहस्पति और सोमवार तथा शुभग्रह स्वामी वाले लग्न व दिन में स्त्री का प्रथम रजोदर्शन शुभप्रद है ॥ १ ॥

प्रथम रजोदर्शन में शुभाशुभ नक्षत्र—

श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौ सिताम्बरे ।
मध्यं च मूलादितिभे पितृमिश्रे परेष्वसत् ॥ २ ॥

टीका—श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मृगशिरा अनुराधा, चित्रा रेवती, पुष्य, हस्त, अश्विनी, अभिजत् तीनों उत्तरा, रोहिणी और स्वाती नक्षत्र में तथा उज्वल वस्त्र के प्रथम रजोदर्शन श्रेष्ठ है । मूल, पुनर्वसु, मघा कृत्तिका और विसाखा नक्षत्र में मध्यम तथा शेष (भ ज्ये आर्द्रा श्ले तीनों पूर्वा) नक्षत्रों में अशुभ है ॥ २ ॥

रजोकाल में निषेध समय ।

भद्रा निद्रा सङ्क्रमे दर्शरिक्ता सन्ध्या षष्ठीद्वादशीवैधृतेषु ।
रोगेऽष्टम्यां चन्द्रसूर्योपरागे पाते चाद्यं नो रजोदर्शनं सत् ३

टीका-भद्रा में निद्रित अवस्था संक्रान्ति में अमावस्या को, रिक्ता तिथियों में सन्ध्या समय षष्ठी, द्वादशी वैधृति योग रोगी हालत अष्टमी तथा चन्द्र और सूर्य्य ग्रहण में और व्यतीपात योग में प्रथम रजोदर्शन अशुभ है ॥ ३ ॥

प्रथम रजस्वला होने पर स्नान का मुहूर्त—

हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः
शक्रान्वितैःशुभतिथौ शुभवासरे च ।
स्नायादथार्तववती मृगपौष्णवायु-
हस्ताश्विधातृभिररं लभते च गर्भम् ॥ ४ ॥

हस्त, स्वाती, अश्विनी, मृगशिरा, अनुराधा, धनिष्ठा, तीनों, उत्तरा, रोहणी और ज्येष्ठा नक्षत्र तथा शुभतिथि और शुभ वारों में रजस्वला स्त्री को स्नान करना चाहिये। मृगशिरा, रेवती, स्वाती, हस्त, अश्विनी और रोहिणी नक्षत्र में यदि रजस्वला स्त्री स्नान करे तो शीघ्र गर्भ धारण होता है ॥ ४ ॥

गर्भाधान में त्याज्य मुहूर्त—

गण्डान्तं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलांतकं
दास्रं पौष्णमघोपरागदिवसान् पातं तथा वैधृतिम्।
पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिवाद्ध्य स्वपत्नीगमे
भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभम् ॥ ५ ॥

टीका—जन्म तिथि जन्मनक्षत्र, जन्म लग्न, गण्डान्तक निधनतारा, मूल भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा और ग्रहणसे सात दिनों तक, व्यतीपात, वैधृती तथा माता पिताके श्राद्ध के दिन में और दिन में परिघार्धमें स्त्री गमन नहीं करना चाहिये। उत्पात से दूषित नक्षत्रों में तथा जन्म नक्षत्र और जन्म राशि से आठवें स्थान में पापग्रह हों तो भी स्त्री गमन नहीं करना चाहिये ॥ ५ ॥

भद्रा षष्ठी पर्वरिक्ताश्च सन्ध्या भौमार्कार्कीनाद्यरात्रिश्चतस्रः।
गर्भाधानं त्र्युत्तरेंद्वर्कमैत्रब्रह्मस्वातीविष्णुवस्वंबुपे सत् ॥ ६ ॥

टीका—भद्रा, षष्ठी, अमावस्या, चौथ, नौमी, चतुर्दशी सायंकाल, मङ्गल रवि, और शनिवार तथा रजोदर्शन से चार रात गर्भाधान में त्याग देना चाहिये तीनों उत्तरा, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्र में गर्भाधान शुभ कहा गया है ॥ ६ ॥

गर्भाधान में लग्न शुद्धि—

केंद्रत्रिकोणेषुशुभश्च पापै-
स्त्र्यायारिगैः पुम्ग्रहदृष्टलग्ने।
ओजांशगेऽब्जेपि च युग्मरात्रौ
चित्रादितीज्याश्विषु मध्यमं स्यात् ॥ ७ ॥

टीका—लग्न चतुर्थ, सप्तम, दशम, और नवम, पंचम स्थान में शुभग्रह हों, पापाग्रह तीसरे, छठे, एकादश स्थान में हों रवि, मङ्गल और गुरु लग्नको देखते हों चन्द्रमा विषम राशिके नवांश में हो, सम रात्रि हो तब गर्भाधान श्रेष्ठ है और चित्रा पुनर्वसु पुष्य तथा अश्विनी नक्षत्र में गर्भाधान मध्यम है ॥ ७ ॥

सीमंत (अठमासा) का मुहूर्त—

जीवार्कारदिने मृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितिव्रध्नभे
रिक्तामार्करसाष्टवर्ज्यतिथिभिर्मासाधिपे पीवरे ।
सीमन्तोऽष्टमषष्ठमासि शुभदैः केन्द्रत्रिकोणे खल-
र्लाभारित्रिषु वा ध्रुवत्यिसदहे लग्ने च पुंभांशके ॥ ८

टीका—गुरु रवि और मङ्गलवार, मृगशिरा पुष्य, मूल, श्रवण पुनर्वसु और हस्त नक्षत्र तथा चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, अमावास्या, द्वादशी षष्ठी और अष्टमी तिथियों को छोड़ अन्य तिथियों में और मासाधिप पुष्ट हो तब आठवें और छठें महीने में और शुभग्रह केन्द्र, त्रिकोण में हों पापग्रह तीसरे छठें-ग्यारहे हों तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती, शुभग्रहों के दिन और पुरुष ग्रह का लग्न अथवा नवमांस हो तो सीमन्त कर्म करना उत्तम है ॥ ८ ॥

महीनों के स्वामी और स्त्रियों का चन्द्रबल—

मासेश्वराः सितकुजेज्यरविन्दुसौरि
चन्द्रात्मजास्तनुपचन्द्रदिवाकराः स्युः ।
स्त्रीणां विधोर्बलमुशन्ति विवाहगर्भ
संस्कारयोरितरकर्मसु भर्तुरेव ॥ ९ ॥

टीका—गर्भाधान में प्रथम शुक्र. २ मङ्गल, ३ बृहस्पति, ४ रवि, ५ चन्द्र, ६ शनि, ७ बुध, ८ लग्न के ९ स्वामी १० चन्द्र और सूर्य दशों महीनेके स्वामी होते हैं । विवाह और गर्भ संस्कार में स्त्रियों वा चन्द्र बल अन्य कर्मों में भर्ता का चन्द्रबल होना चाहिये ॥ ९ ॥

पुंसवन (विष्णुपूजा) कर्म का मुहूर्त—

पूर्वोदितैः पुंसवनं विधेयं मासे तृतीये त्वथविष्णुपूजा ।
मासेऽष्टमे विष्णुविधातृजीवैर्लग्ने शुभे मृत्युगृहे च शुद्धे ॥ १०

टीका—सीमन्त में कथित मासादिकों में पुन्सवन कर्म करना चाहिए । तृतीय मास में श्रवण रोहिणी और पुष्य नक्षत्र और शुभ लग्न में अथवा शुभग्रहों की दृष्टि पर लग्न में और आठवें स्थान में कोई ग्रह न हो तो विष्णुपूजा करना उत्तम है ॥ १० ॥

जातकर्म नामकर्ममुहूर्त—

तज्जातकर्मादि शिशोर्विधेयं पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेऽह्नि
एकादशे द्वादशकेऽपि घस्रे मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्यात् ११

टीका—रिक्ता तिथियोंको छोड़ अन्य तिथियों में, मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रों में और ग्यारहवें तथा बारहवें दिन में जातकर्म नाम कर्म करना उत्तम है ॥ ११ ॥

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—

पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषु सूती
स्नानंसमित्रभखीज्यकुजेषु शस्तम् ।
नार्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूल
त्वाष्ट्रेज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्याम् ॥१२॥

टीका-रेवती तीनोंउत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, स्वाती अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में तथा रवि गुरु और मङ्गल वारों में प्रसूती स्त्रीको स्नान करना उत्तम है । आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी विशाखा कृत्तिका और मूल चित्रा नक्षत्रों में बुध, शनि और अष्टमी, षष्ठी, दशमी चतुर्थी नवमी और चतुर्दशी तिथियों में प्रसूती स्त्री को स्नान करना अशुभ है॥ १२ ॥

जातकर्म—

जातपुत्रे पिताकुर्यान्नान्दीश्राद्धं विधानतः ।
जातकर्म ततः कुर्यादन्यैरालम्भनात्पुरा ॥ १३ ॥

टीका—पुत्रके उत्पन्न होने पर पिता तत्काल विधिपूर्वक नान्दी मुख श्राद्ध करे, पीछे अन्य जाति से पुत्र का स्पर्श न हो, इसी समय में ही जातकर्म को करना चाहिये ॥ १३ ॥

नामकरण—

पुष्यार्कत्रयमैत्रभे तु मृगभे ज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरा-
दित्याख्येषु च नामकर्मशुभदं योगे प्रशस्ते तिथौ ।
अह्नि द्वादशके तथान्यदिवसे शस्ते तथैकादशे
गोसिंहालिघटे च अर्कबुधयोर्जीवे शशांकेऽपि च ॥१४॥

टीका—पुष्य हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मृगशिरा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा तीनों उत्तरा और पुनर्वसु नक्षत्र में एवं जन्म के दिन से ११ वें वा १२ वे वा (आचार्य भेद से १६-२०-२२ वा १०० वें दिन। सिंह, और वृश्चिक कुम्भ लग्न में तथा रवि, गुरु, बुध वा चन्द्रवार में, (रिक्तादि तिथि और दुष्टयोग को छोड़कर) शुभ दिन में नामकरण संस्कार को करै ॥ १४ ॥

मंचकारोहण ।

शशि तुरग धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा
शतभिषगनुराधा त्र्युत्तरा स्वाति हस्ताः ।
बुधगुरुभृगुवारे सौम्यलग्नेर्भकस्य
निगदित मिह पूर्वै र्मञ्चकारोहणं तु ॥ १५ ॥

टीका—मृगशिरा, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, पुष्य, चित्रा, शतभिषा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, स्वाती और हस्त नक्षत्र में, बुध. शुक्र और गुरुवार में, शुभ लग्नमें, बालक को पलंग पर शयन करावै ॥ १५ ॥

बालक का दोला (झूला) में चढ़ाने का मुहूर्त—

दोलारोहेऽर्कभात्पञ्चे शरपञ्चषु सप्तभैः ।
नैरुज्यं मरणं कार्श्यं व्याधिःसौख्यं क्रमाच्छिशोः ॥ १६ ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से पाच नक्षत्रों में बालक को झूला (पालना) में बैठावे तो बालक आरोग्य रहे इससे आगे के पांच नक्षत्रों में बैठाने से मृत्यु होय इसके, आगे पांच नक्षत्रों में बैठाने से कृशता फिर २ नक्षत्र मे बैठाने से व्याधि. फिर ७ नक्षत्र में बैठाने से सुख होता है ॥ १६ ।

आन्दोल शयनं पुन्सों स्याद्वादशे शुभवासरे ।
त्रयोदशे तु कन्याया न नक्षत्रविचारणा ॥ १७ ॥

टीका—जन्म होनेके पीछे पुत्रको १२ वें और कन्याको १३ वें दिन पालने में शयन करावें। इसमें नक्षत्र आदिके विचार की आवश्यकता नहीं है१७

दुग्धपान -

एकत्रिंशद्दिने चैव पयः शङ्खेन पाययेत् ।
अन्नप्राशन नक्षत्रं दिवसोदयराशिषु ॥ १८ ॥

टीका—जन्म होनेके उपरान्त ३१ वें दिन अन्नप्राशन के नक्षत्रों में जिस लग्नमें सूर्योदय हुआ हो उसी लग्नमें बालक को शंख से दूध पिलाना शुभदायक है ॥ १८ ॥

तांबूलभक्षण–

साद्धमासद्वयेदद्या ताम्बूलं प्रथमं शिशोः ।
कर्पूरादिक संमिश्रं विलासाय हितायच ॥ १६ ॥
मूलत्वाष्टकरतिष्यहरीन्द्रभेषु पौष्यो
तथा मृगशिराऽदिति संयुतेषु ।
अर्केन्दुजीवभृगुबोधनवासरेषु ताम्बूल
भक्षणविधि मुनिभिः प्रदिष्टः ॥ २० ॥

टीका—जन्म के ढाई मास पीछे । मूल, चित्रा, हस्त, पुष्य, श्रवण, ज्येष्ठ, रेवती, मृगशिरा और पुनर्वसु, नक्षत्र में । रवि, चन्द्र, गुरु, शुक्र वा बुधवार में । याकपूरादिसे युक्त करके तांबूल प्रथम बालकको शोभा और हितके लिये शुभ योग शुभ मुहूर्त में देवे ॥ १९ ॥ २० ॥

सूर्यावलोकन–

हस्तःपुष्य पुनर्वसुहरियुगं मैत्रत्रयं रोहिणी
रेवत्युत्तरफाल्गुनीमृगयुताषाढ़ोत्तरास्वातिभे ।
मासौ तुर्यतृतीयकौ शनिकुजौ त्यक्त्वा च रिक्तातिथिः
सिंहादित्रय कुम्भराशिसहितं निष्कासनं शस्यते ॥ २१ ॥

टीका—चौथे वा तीसरे मासमें । हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, रोहिणी, रेवती, उ० फा०, मृगशिरा, उ०षा० और स्वाती नक्षत्र में । सिंह, कन्या, तुलाराशि के चन्द्रमा में । शनि, मंगलवार और रिक्ता तिथिको छोड़कर बालक को प्रथम सूर्यनारायण का दर्शन करावे ॥ २१ ॥

अन्न प्राशनमुहूर्त–

षष्टेमास्यष्ट मेवादिति कर पवने रोहिणी पुष्यकर्णौ,
चित्रापूष.नुराधा वसुमृगवरुणा श्रोत्तरा सौम्यवारे ।
लग्ने मानालिमेषे यमगणपवनाश्वशविश्वोम्नितायाम्
तिथ्यां वालासनं सत्भवतिच विषयेपञ्चमान्मा सिनार्य्याः २२॥

टीका—बालक के छठें वा आठवें महीनेमें पुनर्वसु हस्त स्वाती रोहिणी पुष्य श्रवण चित्रारेवती अनुराधा धनिष्ठा मृगशिरा और तीनों उत्तरा में शुभ वारोंमें

१०।३।५।१२ १३ तिथियों में प्रथम अन्नप्राशन करावे और कन्यायों को पांच व आदि विमास में उक्त वार नक्षत्र तिथियों में अन्नप्राशन करावै॥ २२॥

प्रसूती स्त्रीका जलपूजा मुहूर्त—

कवीज्यास्तचैत्राधिमासे न पौषे
जलं पूजयेत्सूतिकामासपूर्तौ।
बुधेन्द्वीज्यवारे विरिक्ते तिथौ हि
श्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रेः॥ २३॥

बालक के भूमिपर बैठाने का मुहूर्त—

पृथ्वीं वराहमभि पूज्य कुजे विशुद्धेः—
रिक्ते तिथौ व्रजतिपञ्चमासि बालम्।
वध्वा शुभेऽह्निकटि सूत्रमथ ध्रवेन्द
ज्येष्ठर्नमैत्र लघुभैरुपवेशयेत्कौ॥२४॥

टीका—जन्म से पाँचवे महीनेमें, पृथ्वी और वाराह भगवान् की पूजा करके मंगल के बली रहनेपर रिक्ता रहित तिथियों में शुभ वारोंमें और तीनों उत्तरा रोहिणी मृगशिरा ज्येष्ठा अनुराधा और हस्त अश्विनी पुष्य अभजित्में बालक के कमरमें सूत्र बाँधकर पृथ्वी वाराह की पूजाकरके भूमिपर बैठावै॥२४॥

बालक की जीविका की परीक्षा—

तस्मिन् काले स्थापयेत् तत्पूरस्ताद्
वस्त्रं शस्त्रं पुस्तकं लेखनीं च।
स्वर्णं रौप्यं यच्चगृह्णाति बाल—
स्तै राजावै स्तत्स्यवृत्तिः प्रदिष्टा॥ २५॥

टीका—बालक को भूमिपर बैठाने के समय वस्त्र शस्त्र पुस्तक कलम सोना चाँदी अनेक प्रकार की चीजें धरे उसमें से बालक जिस वस्तु को पहले हाथसे धरे उसी वस्तु के रोजगार से उस बालक की जीविका जानना॥ २५॥

कर्ण वेध मुहूर्त—

अश्वे चित्रानुराधादिति मृगगुरुभे कर्णयुग्मान्त्य हस्ते
सौम्याहे जन्म वारान्नृप रवि दिवसे तर्क सप्ताष्टमासे

वेधः कर्णास्यशस्ते गुरुयुत भवने केन्द्र कोणेषु सौम्ये
चैत्रे पौषे च मासे च हरिसयने कर्ण वेधो विधेयः ॥२६॥

टीका—चैत्रमास पौषमास तथा हरिशयन को (जन्ममास रिक्ता तिथि समवर्ष जन्मतारा पहला दशवाँ उन्नीशवाँ नक्षत्र) छोड़कर जन्मसे छठें सातवें यद्वा आठवें महीने में जन्मसे बारहवें वा सोलवें दिन या विषम वर्ष (१-३-५-७ वाँ) में अश्विनी, चित्रा अनुराधा पुनर्वसु मृगशिरा पुष्य श्रवण धनिष्ठा रेवती हस्त इन नक्षत्रों में बालक के कानमें वेधकराना शुभ है ॥ २६ ॥

चौलकर्म-

मृगेन्द्र चित्रा दिग्मान्त्य चरभेषु शुभेदिने ।
द्वितीये विषमे वर्षे कृते चूडा शुभा स्मृता ॥ २७ ॥
रिक्ताष्टमी द्वादशीषु षष्ठ्ययां चैत्रेन शोभनम् ।
लग्नलग्नांशयोश्चैव संशुद्धमष्टमं गृहम् ॥ २८ ॥

टीका—मृगशिरा, ज्येष्ठा चित्रा क्षिप्रसंज्ञक (अश्विनी पुष्य हस्त अभि) रेवती चरसंज्ञक (पु० स्वा० श्र० ध० श०) इन नक्षत्रों में शुभवार में दूसरे और विषमवर्षों में रिक्ता तिथि अष्टमी द्वादशी छठ तिथि को छोड़कर लग्न तथा लग्नांशसे अष्टम स्थान ग्रहरहित रहनेपर चूड़ा करना शुभ होता है ॥ २७ २८ ॥

अक्षरारम्भमुहूर्त—

गणेश-विष्णु-वाग्रमा प्रपूज्य पञ्चमाब्द के,
तिथौ शिवार्क दिग्द्विषट् शरत्रिके रवावुदक् ।
लघुश्रवो निलान्त्यभादितीश तक्षमित्र भे,
चरोन सन्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ॥ २९ ॥

टीका —पांचवे वर्ष गणेश विष्णु सरस्वती (लक्ष्मी) का पूजन करके एकादशी द्वादशी दशमी द्वितीया षष्ठी पञ्चमी और तृतीया तिथिमें उत्तरायण सूर्य में, हस्त अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, श्रवण, स्वाती रेवती पुनर्वसु, आर्द्रा, चित्रा, और अनुराधा नक्षत्रों में सोम बुध बृहस्पति और शुक्र वारोंमें मेष कर्क तुला मकर इन चार लग्नों को छोड़कर शुभ स्वामी के लग्नोंमें बालकको अक्षर आरम्भ कराना चाहिये ॥ २९ ॥

विद्यारम्भ मुहूर्त-

मृगात कराच्छ्रुतेस्त्रये शिवमूल पूर्विकात्रये ।
गुरुद्वयेऽर्क जीववित सितेऽह्निषट शरत्रिके ॥

जीवार्क दिग् द्विके तिथौ शुभान्त्य मित्रमे परैः।
शुभैरधोतिरुत्तमा त्रिकोण केन्द्रगैः स्मृता ॥ ३० ॥

टीका—मृगशिरा आर्द्रा, पुनर्वसु हस्त चित्रा स्वाती श्रवण धनिष्ठा शतभिषा अश्विनी मूल तीनोंपूर्वा पुष्य श्लेषा नक्षत्रोंमें, रवि बुध गुरु और शुक्रवार में, ६।५।३।११।१२ १०।२ इन तिथियों में और शुभ ग्रह त्रिकोण केन्द्र में हों तो विद्यारंभ करना उत्तम होता है। ध्रुव अनुराधा रेवती में भी विद्यारंभ करना कुछ, आचार्य लिखे हैं ॥ ३० ॥

यज्ञोपवीतमुहूर्त—

भगभात् पञ्चधीष्ण्येषु मूलभाद्दश भेषु च।
विधीज्य मित्रसार्पेषु व्रतबन्धं शुभंमृगे ॥ ३१ ॥
रवीन्दुसेज्य शुक्रेषु पंचम्यां दशमीत्रये।
विधिगौरी स्कंधतिथौ शुभेलग्ने शुभांशके ॥ ३२ ॥
भरणीं कृत्तिकां ज्येष्ठां मघामार्द्राद्वि दैवभम्।
विहायचैतद् धीष्ण्यानि व्रतबन्धे शुभानि च ॥ ३३ ॥

टीका—पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल पूर्वाषाढ उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी रोहिणी, पुष्य और मृगशिरा इन नक्षत्रों में रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारोंमें ५।१०।११।१२।२।३।६ इन तिथियोंमें शुभ लग्न शुभ अंशक में गर्भसे वा जन्म से ब्राह्मण का ८ वें वर्ष या १६ वें वर्ष के भीतर। क्षत्रिय का ११ वें वर्ष या २२ वर्ष के भीतर। वैश्यका १२ वें वर्ष या २४ वर्ष के भीतर। व्रतबन्ध करना शुभ है। भरणी कृत्तिका ज्येष्ठा। मघा आर्द्रा, विशाखा नक्षत्र को छोड़ और सब नक्षत्र व्रतबन्ध में शुभ हैं। पुनर्वसु नक्षत्र ग्रहण है परन्तु किसी के मत से त्याग है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

विप्रंवसन्ते क्षितिपंनिदाघे वैश्यंघनान्ते व्रतिनं विदध्यात्।
मघादिशुक्रांतिमपञ्चमासा साधारणौ वा सकला द्विजानाम् ॥३४॥

टीका—वसन्त ऋतु में ब्राह्मणका, ग्रीष्ममें क्षत्रियका और शरदऋतु में वैश्योंका यज्ञोपवीत होना चाहिये, और साधारण रीति से माघ से ज्येष्ठ तक ५ मास भी ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्योंके लिये यज्ञोपवीत करने को कहे हैं ॥ ३४

गर्भाऽष्टमेऽष्टमेवाऽब्दे पंचमे सप्तमेपि वा ।
द्विजत्वं प्राप्नुयाद्विप्रो वर्षेत्वेकादशेनृपः ॥ ३५ ॥

टीका—ब्राह्मण के लिये गर्भ वा जन्म से ५।७।८ वें वर्ष यज्ञोपवीत कहा है, और क्षत्रियोंको ११ वें वर्ष यज्ञोपवीत करना चाहिये ॥ ३५ ॥

गुरुबल—

वर्णाधिपे बलोपेते उपनीतक्रिया हिताः ।
सर्वेषां च गुरौ सूर्ये चन्द्रे च बलशालिनि ॥ ३६ ॥

टीका—वर्णके स्वामी बलवान होने में यज्ञोपवीत श्रेष्ठ है, परन्तु सबको गुरुबल और सूर्यबल चन्द्रबल होना परमावश्यक है ॥ ३६ ॥

गलग्रहतिथि—

त्रयोदश्यादि चत्वारि सप्तम्यादि तिथित्रयम् ।
चतुर्थी च तथा प्रोक्ता अष्टावेव गलग्रहाः ॥ ३७ ॥

टीका—तेरस से प्रतिपदा तक ४ तिथि और सप्तमी, अष्टमी, नौमी एवं चौथ यह आठ तिथि गलग्रह हैं, सो इनको त्यागना चाहिये ॥ ३७ ॥

शूद्रादिकों का संस्कार ।

मूलार्द्राश्रवणद्विदैववसुभे पुष्ये तथा चाश्विभे
रेवत्यां मृगरोहिणे दितिकरे मैत्रे तथा वारुणे ।
चित्रास्वातिमथोत्तरा भृगुसुते भौमे तथा चन्द्रजे
शूद्राणां तु बुधैः शुभं हि कथितं संस्कारकर्मोत्तमम् ॥३८॥

टीका—मूल, आर्द्रा, श्रवण, विशाखा, धनिष्ठा, पुष्य, अश्विनी, रेवती, मृगशिरा, रोहिणी, पुनर्वसु, हस्त, अनुराधा, शतभिषा, चित्रा, स्वाती, तीनों उत्तरा शुक्र, भौम और बुधवार, शूद्रादि वर्णसंकर जातियोंके संस्कार में शुभ हैं ॥३८॥

संस्कार-प्रकरणम् समाप्तम् ।

विवाह प्रकरणम् ।

सिन्दूर भूषितांगौरीं शंकरेणह्यलङ्कृताम् ।
मैनाक पत्न्या नितरां मण्डितां पार्वतीं भजे ॥
मातृप्रसाद पाण्डेयः श्रौत स्मार्ती महीसुरः ।
उपयाम प्रकाशोऽयं तनुते विदुषांमुदे ॥

देवज्ञपूजनम्–

देवज्ञं पूजयेदादौ फलताम्बूलपूर्वकैः ।
निवेदयेत्सुमनसा स्वकन्योद्वाहनादिकम् ॥ १ ॥

टीका–पहिले ज्योतिषी को फल और ताम्बूल से पूजा करै । पीछे पिता प्रसन्न मन होकर कन्या के विवाह का प्रश्न करै (मुहूर्त दिखावै) ॥ १ ॥

विवाह शोधनम्–

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।
गणमैत्रं भकूटञ्च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥ २ ॥

टीका—वर्ण, वश्य, तारा योनि,ग्रह मैत्री, गण मैत्री, भकूट और नाडी, इनके उत्तरोत्तर अधिक गुण हैं । जैसे वर्ण का १ वश्यके २ इत्यादि ॥ २ ॥

वर्णः–

मीनालिकर्कटाविप्राः क्षत्रीमेषोहरिर्धनुः ।
शूद्र युग्मं तुला कुम्भौ वैश्याः कन्या वृषो मृगः ॥ ३ ॥

टीका—मीन,वृश्चिक और कर्कराशि का ब्राह्मण वर्ण, मेष,सिंह और धन राशि का क्षत्रिय वर्ण, मिथुन, तुला और कुम्भ राशिका शद्र वर्ण एवं कन्या,वृष और मकर राशि का वैश्य वर्ण है ॥ ३ ॥

वर्णविचारः—

नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणीञ्च विशेषतः ।
म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणा सदृशो यदि ॥ ४ ॥

टीका—उत्तम वर्ण की कन्यासे हीन वर्णके वरका विवाह न करै और ब्राह्मण की कन्या से तो अवश्य हीन वर्णके वरका विवाह न हो,कारण की हीन

वर्णके होने से ब्रह्मा के सदृशशर्मी वर की मृत्यु हो जाती है परन्तु अधिक गुण बननेपर दी घी युत्ररसे वेहा होनेसे वेत्र पूजन से शुभ होता है ॥ ४ ॥

विप्रवर्णा तु या नारी शूद्रवर्णस्तु यः पतिः ।
ध्रुवं भवति वैधव्यं शुक्रस्य दुहिता यदि ॥ ५ ॥

टीका—ब्राह्मण की पुत्री के साथ शूद्र वर्ण के वर का विवाह होने से शुक्राचार्य की कन्या होने पर भी विधवा हो जायगी ॥ ५ ॥

वश्यः—

सिंहं विना वशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदः ।
भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृताः ॥ ६ ॥
मकरस्य पुरोभागे मेष सिंहो धनुर्वृषः ।
चतुष्पदा कीटसंज्ञाः कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ॥ ७ ॥
तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्ध धनुषस्तथा ।
द्विपदाख्याः पश्चिमार्द्धं मकरस्य तथा पुनः ॥ ८ ॥
कुम्भमीनौ जलचरौ राशयः परिकीर्त्तिताः ।
वश्यप्रीतौ विशेषेण जायते च गुणाद्वयम् ॥ ९ ॥

टीका—केवल सिंह को छोड़कर द्विपद एवं चतुष्पद सभी मनुष्य के वशीभूत हैं । जलचर भक्ष्य हैं, बिच्छी और सर्प भयदायक हैं, मकर का पूर्व भाग, मेष, सिंह, धन और वृश्चिक चतुष्पद हैं, कर्क की कीट संज्ञा है, कन्या, तुला, मिथुन और धन के पूर्वभाग को द्विपद कहते हैं, मकर का उत्तरार्द्ध कुम्भ एवं मीन राशि को जलचर कहते है, वैश्य और प्रीति को अवश्य देखना चाहिये कारण इसमें दो गुण हैं ॥ ६ ॥ ९ ॥

ताराकूट विचार—

कन्यर्क्षाद् वरभंयावत् कन्याभंवरभादपि ।
गणायेन्नव हृच्छेशेत्रीष्वदिभमसत् सप्तम् ॥१०॥

टीका—कन्या के जन्म नक्षत्र से नर के जन्म नक्षत्र तक और नरके जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिने । नव का भाग देने से ३,५।७ शेष बचें तो अशुभ जानना ॥ १० ॥

योनि ज्ञानम्—

अश्वोगजच्छागसर्पाः सर्पस्वानविडालकाः।
मेषो विडालकश्चैव मूषको मूषकश्च गौः॥
महिषी च ततो व्याघ्रो महिषो व्याघ्रकं क्रमात्।
मृगोसृगस्तथाश्वा च कपिर्नकुल एव च॥ १२॥
नकुलो वानरः सिंहस्तुरगो मृगराट् च गौः।
गजानेन क्रमेणैव अश्विन्यादिभयोनयः॥ १३॥

टीका—अश्विनी की अश्व भरणीकी गज कृत्तिका की मेढ़ा रोहिणीकी सर्प मृगिशिराकी सर्प, आर्द्रा की श्वान, पुनर्वसु का बिलार, पुष्य की मेढ़ा, श्लेषाकी बिलार, मघा की चूहा, पू० फा० की चूहा, उ० फा० की गौ, हस्त की भैंस चित्रा की व्याघ्र. स्वाती की भैंसा, विसाखाका व्याघ्र, अनुराधाकी हरिण, ज्येष्ठाकी मृग, मूल की श्वान, पू० षा० का वानर, उ० षा० की नेउला, अभिजित् की नेउला, श्रवण की वानर, धनिष्ठा की सिंह, शतभिषाकी अश्व. पू० भा० की सिंह उ० भा० की गौ और रेवती की हाथी जाने॥११॥१२॥१३॥

योनिवैरम्—

गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वैणं च।
बभ्रूरगं वैरं वानर मेषयोश्च सुमहत्तद्वद्विडालोन्दुरम्॥
लोकानां व्यवहारतोऽन्यदितिरज्ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं।
दंपत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदा वर्ज्य शुभस्यार्थिभिः॥१४॥

टीका— जैसे गौ व्याघ्र, गज सिंह, घोड़ा भैंस, नेउला सर्प, बन्दर मेढ़ा और बिल्ली चूहे का परस्पर वैर है। इसी रीति से यत्न के साथ स्त्री पुरुष का एवं स्वामी सेवक का वैर शुभकी इच्छा करने वाले मनुष्यों को त्यागना चाहिये॥१४॥

शत्रुमित्रता—

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणिशेषारवेः।
तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः॥
जीवेन्दुष्णकराः कुजस्य सुहृदौ ज्ञोरिः सितार्कीसमौ।
मित्रे सूर्यसितौ बुधश्च हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे॥१५॥

सूरेःसौम्यसितावरी रविसितौ मध्यौ परे त्वन्यथा ।
सौम्यार्कीसुहृदौ समः कुजगुरु शुक्रस्य शेषावरी ॥
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समःसुरगुरुः सौरस्यचान्येऽरयो ।
येप्रोक्ताः सुहृदस्त्रि कोणभवनात्तेऽमीमयाकीर्तिताः ॥१६॥

टीका—सूर्यके शनि, शुक्र, शत्रु, बुध सम, चन्द्र गुरु और मङ्गल मित्र हैं। चन्द्रमा के शत्रु कोई नहीं, मङ्गल गुरु, शुक्र, शनि, सम, सूर्य और बुध मित्र हैं। मङ्गल के बुध शत्रु, शुक्र, शनि सम, सूर्य, चन्द्र और, गुरु मित्र हैं। बुध के चन्द्र, शत्रु मङ्गल, गुरु, शनि सम, सूर्य, शुक्र मित्र हैं। गुरु के बुध, शुक्र शत्रु, शनि सम, सूर्य, चन्द्र, मंगल मित्र हैं। शुक्र के सूर्य, चन्द्र शत्रु, मंगल गुरु सम, बुध शनि सम, मित्र हैं। शनि के सूर्य, चन्द्र मंगल शत्रु गुरु सम, बुध शुक्र मित्र हैं ॥ १५ ॥ १६ ॥

गणं ।

अनुराधामृगोश्विस्तु श्रवणादितिपुष्यके ।
स्वातिहस्ते रेवती च नवदेवगणाः स्मृताः ॥ १७ ॥

टीका—अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण और रेवती को देवगण जाने ॥ १७ ॥

पूर्वात्रयं रोहिणी च उत्तरात्रयमेव च ।
आर्द्रा तु हरणी चैव नैव ते मानुषागणः ॥ १८ ॥

टीका— तीनों पूर्वा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, आर्दा, भरणी इनको मनुष्य-गण जाने ॥ १८ ॥

आश्लेषा शतभिषा मूल विशाखा कृत्तिका मघा ।
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च नवै ते राक्षसागणाः ॥ १९

टीका—श्लेषा, शतभिषा, मूल, विशाखा, कृत्तिका, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा और धनिष्ठा को राक्षसगण जाने ॥ १९ ॥

---

१ पूर्वोत्तरार्द्रायमकामनुष्या देवा करान्त्याश्विमृगादि तीज्याः ।
मैत्र श्रुतिस्वाति युताश्च शेषरक्षांसि मैत्रीस्त्वगयो प्रशस्ताः ॥
देवा सुराणां कलहो नितान्तं योगेमृतिर्मानव राक्षसानाम् ।
देवामनुष्येषु समा गुणानां ह्रासेपुरुष्या सकलेपुमैत्री ॥

स्वगणे परमाप्रीति र्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।
मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहो देवराक्षसोः ॥ २० ॥

टीका—स्त्री पुरुष का एक गण हो तो आपस में बड़ी प्रीति रहती है। देव और मनुष्यगण हो तो मध्यम प्रीति जाने। मनुष्य वा राक्षस गण हो तो मृत्यु होती है। देव और राक्षस गण होने से परस्पर में क्लेश रहता है ॥ २० ॥

भकूट का फल—

षट्काष्टकेऽपमृत्युः पंचमनवेमऽनपत्यता ज्ञेया ।
द्विर्द्वादशे निर्द्धनता शेषेषु मध्यमता शुभा ॥ २१ ॥

टीका—वर कन्या को षडाष्टक मृत्युकारक, नवम पञ्चम सन्तान नाशक, द्विर्द्वादश दरिद्रकारक, इनको छोड़ और शेष राशि में शुभ जाने ॥ २१ ॥

भकूट—नवपञ्चम—

मीनालिभ्यां युते कीटे कुम्भे मिथुनसंयुते ।
मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्य्यान्नवपञ्चकम् ॥ २२ ॥

टीका—मीन से नवम वृश्चिक एवं वृश्चिक से पञ्चम मीन तथा कर्क से नवम मीन और मीन से पञ्चम कर्क राशि होती है तो इसको नवम पञ्चम कहते हैं। इसी प्रकार कुम्भ और मिथुन मकर और कन्या का नवम पञ्चम त्यागना चाहिये। कारण कि यह संतान नाशक है २२ ॥

मृत्यु षडाष्टक—

मेषकन्यकरायोरेव तुलामीनकयोस्तथा ।
युग्माल्योस्तुबुधैर्ज्ञेयो मृत्युर्वैनक्रसिंहयोः ॥
कुम्भकर्कटयोश्चैव वृषकोदंडयोस्थता ॥ २३ ॥

टीका—मेष और कन्या राशिका परस्पर ६—८ का अन्तर आता है। इसी प्रकार तुला मीन, मिथुन वृश्चिक मकर, सिंह, कुम्भ, कर्क, धन, वृष, इन दो दो राशियों के षडाष्टक होते हैं। यह मृत्युकारक होने से विवाह में त्याज्य है ॥२२॥

प्रीति—षडाष्टक—

सिंहो मीनयुतश्चैव तुला वृष युतस्तथा ।
धनुः कर्कयुतश्चैव कुम्भकन्यकयोस्तथा ॥
नक्रस्य मिथुनेप्रीति मेषवृश्चिकयोस्तथा ॥ २४ ॥

टीका—सिंह, मीन, तुला, वृष, धन, कर्क, कुम्भ, कन्या, मकर, मिथुन, मेष, वृश्चिक इन दोनों राशियों के षडाष्टक कहाते हैं। इस कारण यह विवाह में शुभ माने गये हैं ॥ २४ ॥

द्विर्द्वादश-

मीनमेषौ वृषमिथुनौ कर्कहरी तूलकन्यके।
अलीधनुषी अकरकुम्भावेतौद्विर्दादशौराशी ॥ २५ ॥

टीका—मीन, मेष, वृष मिथुन, कर्क सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर ओरे कुम्भ इन दो दो राशियों के द्विर्द्वादश आनेसे शुभ जाने। इनके सिवाय मेष वृष, मिथुन, कर्क आदि राशियों के द्विर्द्वादश आने से मृत्युकारक जाने। इसलिये उसको त्याग देना चाहिये ॥ २५ ॥

भकूट परिहार—

भासे दुष्टःभकूट के परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो—
थोराशीशाद सौहृदोऽपिगदितो नाड्यर्क्षशुद्धिर्यदि
अन्यर्क्षेशपयोर्बलित्वे सखिते नाड्यर्क्षशुद्धौतथा।
तारा शुद्धि वशेन राशि वशताभावो निरुक्तो बुधैः ॥२६॥

स्त्री पुरुष के राशि के एक स्वामी हो, अथवा राशि के स्वामी में मित्रता हो और यदि नाडी नक्षत्रों की शुद्धि हो तो दुष्ट भकूट में विवाह शुभ होता है राशिनाथ में विरुद्धता हो परन्तु अंशनार्थ एक हो वा अंशनाथों में मैत्री हो तो विवाह शुभ होता है। वर कन्या की परस्पर तारा और नाडी नक्षत्र शुद्ध होने पर पण्डितों ने विवाह होना कहा है। भरणी हस्त से भकूट ग्रह मैत्री दोनों नहीं बनती है परन्तु भरणी के प्रथमचरण का स्वामी सूर्य हस्त के प्रथचण का मंगल है ग्रह मैत्री दोनों नहीं बनती है परन्तु अंशपति के मैत्री से बन रहा है २६

मैत्रा राशिरस्वामिनोरंशनाथ,
हंदस्यादिस्याद् गणानांनदोषः।

१ जगन्मोहने वसिष्ठः-राशिनाथे विरुद्धेऽपि सत्रलात्रंशकाधिपौ। तन्मैत्रेऽपिचकर्तव्यं दम्पत्योसुखमिच्छता। राजमार्तण्डे मैत्री चेत्रपयोर्द्वयोरपितयोरेकाधिपन्येऽपिचेन् तारा मित्र सुमित्र जन्म शुभदा क्षेमाच संपत् करी षष्टाष्टे नवपञ्चमे व्यधने योगेपु पुं योषितो, प्रीत्यायु सुतवृद्ध चिन्तजनकं धार्यो विवाहस्तथा।

खेटारित्वं नाशयेत् सद्भकूटम्।
खेटप्रीतिश्चापिदुष्टं भकूटम् ॥ २७ ॥

टीका—स्त्री पुरुष की राशि के स्वामी की तथा नवांश के स्वामी की मित्रता हो तो गणों का दोष नहीं होता है सद्भकूट ग्रह शत्रुता को नाश करता है, और ग्रहों की मित्रता दुष्ट भकूट दोष का संहार करता है ॥ २७ ॥

आद्यनाड़ी।

पूर्वाभाद्रपदा मूलं ज्येष्ठा हस्तः पुनर्वसुः।
अश्विन्यार्द्रा शतभिषक् चोत्तरात्वेकनाडिकाः ॥ २८ ॥

टीका—पू० भा०, मूल, ज्येष्ठा, हस्त, पुनर्वसु, अश्विनी, आर्द्रा, शतभिषा और उत्तरा की आद्यनाड़ी जाने ॥ २८ ॥

मध्यनाड़ी।

पूर्वाफाल्गुनिका चित्रा धनिष्ठा भरणी मृगः।
पूर्वाषाढ़ानुराधा च पुष्योहिर्बुध्न्यमेव च ॥ २९ ॥

टीका—पू० फा० चित्रा, धनिष्ठा, भरणीमृगशिरा, पूर्वाषाढ़ा, अनुराधा, पुष्य और उत्तराभाद्रपद नक्षत्र को मध्यनाड़ी जाने ॥ २९ ॥

अन्त्यनाड़ी।

कृत्तिका रोहिणी स्वाती मघाश्लेषा च रेवती।
श्रवणश्चोत्तराषाढा विशाखात्वन्त्यनाडिकाः ॥ ३० ॥

टीका—कृत्तिका, रोहिणी, स्वाती, मघा, श्लेषा, रेवती, श्रवण, उत्तराषाढ़ा और विशाखा नक्षत्र को अन्त्यनाड़ी जाने ॥ ३० ॥

नाड़ी फल—

अग्रनाडी व्यधेद्भर्ता मध्यनाड़ी व्यधेद्द्वयम्।
अन्त्यनाड़ी व्यधेद्कन्या म्रियते नात्र संशयः ॥ ३१ ॥

टीका—दोनों की आद्या नाड़ी होने से भर्ता को, मध्य नाड़ी होने से दोनों को और अन्त्य नाड़ी होने से कन्या को मृत्युदायक होती है ॥ ३१ ॥

मध्य नाड़ी—

जठरे निर्धनत्वं च गर्भे मरणमेव च।
पृष्ठ दौर्भाग्यमाप्नोति तस्मात्तां परिवर्जयेत् ॥ ३२ ॥

टीका—दोनों की मध्य नाड़ी निर्धनता का कारण और गर्भ में सन्तान का नाश करती और अन्त्य नाड़ी दुर्भगकारिणी जाने ॥ ३२ ॥

अन्यमत से—

निधनं मध्यनाड्यां तु दंपत्यो र्नैवपार्श्वयोः ।
करग्रहे पृष्ठनाड्यौ न निंद्यो इति तद्वचः ॥ ३३ ॥

टीका—दोनों की मध्यनाड़ी और पार्श्वनाड़ी मृत्युपद होती है। परन्तु विवाह में निन्दित नहीं, अन्यमत क्षत्रियादिकों को कही है ॥ ३३ ॥

नक्षत्र मेलन—

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम् ।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दंपत्योर्निधनप्रदम्॥ ३४ ॥

टीका—पुरुष का जन्मनक्षत्र हो तो स्त्री के जन्मनक्षत्र से मेलन करना और पुरुष का नाम नक्षत्र हो तो स्त्री के नाम नक्षत्र से मेलन करने से शुभ होता है। इसके विपरीत होने से दम्पति को मृत्युकारक होता है ॥ ३४ ॥

असत्कूट।

पुरुष के नक्षत्र से स्त्री का नक्षत्र समीप होने से अशुभ, पुरुष के नक्षत्र से स्त्री का नक्षत्र दूर हो तो शुभ और दोनों के एक नक्षत्र एवं स्वामी होने से शुभ जाने। इसे असत्कूट कहते हैं।

वर्णमेलन—

ग्रहमैत्री ब्राह्मणानां क्षत्रियाणां गणास्तथा ।
वैश्यानां राशिकूटं हि शूद्राणां यौनिरुत्तमा ॥ ३५ ॥

टीका—ब्राह्मणको ग्रहमैत्री, क्षत्री को गणविचार, वैश्यको राशिकूट और शूद्र को योनिविचार करना चाहिये ॥ ३६ ॥

गुणमेलनप्रकार—

टीका—स्त्री पुरुष का एक वर्ण हो तो १ गुण, पुरुष के उच्च वर्ण होने से भी १ गुण, इसके विपरीत हो तो० गुण जाने।

वर्णगुणचक्र—

घर के वर्ण ।

		ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
वधू के वर्ण	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	१	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

वैश्य के गुण—

वैरभक्ष्येगुणाभावो द्वयोः साम्ये गुणद्वयम् ।
वश्यवैरे गुणश्चैको वश्यभक्ष्ये गुणार्द्धकम् ॥ ३६ ॥

टीका -शत्रु भक्ष्य होने से ० गुण, दोनों की समान जाति होने से २ गुण वश्य शत्रु के होने से १ गुण और वश्य भक्ष्य होने से आधा गुण होता है ॥३६

तारा के गुण—

एकतो लभते तारा शुभाचैवाशुभाऽन्यतः ।
तदा सार्धोगुणश्चैक ताराशुद्धो मिथस्त्रयः ॥
उभयोर्नशुभातारा स्तदा शून्यंसमादिशेत् ॥ ३७ ॥

टीका—स्त्री और पुरुष दोनों में किसी को शुभ और किसी को अशुभ तारा हो तो १॥ गुण, दोनों की एक तारा वा शुभ तारा होने से ३ गुण और दोनों की अशुभ तारा के होने से ० गुण जाने ॥ ३७ ॥

योनिगुण—

महावैरे च शून्यंस्यात् स्वस्वभावे यथाक्रमम् ।
मैत्रे चैवातिमैत्रे च खेंदुद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥ ३८ ॥

टीका—स्त्री और पुरुष दोनों की योनियों में महावैर होने से ० गुण, दोनों में परस्पर शत्रुता होने से १ गुण, दोनों का एक स्वभाव होने से २ गुण, दोनों की सामान्य मित्रता होने से ३ गुण, दोनों की परममित्रता होने से ४ गुण, और दोनों की एक जाति होने पर भी ४ गुण जाने ॥ ३८ ॥

तत्रैकाधिपतित्वे च मित्रत्वे गुणपंचकम् ।
चत्वारः सममित्रत्वे द्वयोःसाम्ये त्रयोगुणाः ॥ ३९ ॥

मित्रवैरे गुणश्चैको समवैरे गुणार्द्धकम् ।
परस्परं खेटवैरे गुणशून्यं विनिर्दिशेत् ॥ ४० ॥

टीका–दोनों के राशिस्वामी एकही हों वा परस्पर मित्र हों तो ५ गुण, दोनों में सम मित्रता होने से ४ गुण, दोनों समान होने से ३ गुण, दोनों में मित्रता और शत्रुता होने से १ गुण, दोनों में सम शत्रुता होने से आधा गुण और दोनों में परस्पर शत्रुता होने से शून्य गुण जाने ॥ ३९ ॥ ४० ॥

गणों के गुण ।

पुरुष और स्त्री के एक गण होने से ६ गुण, पुरुष का देव और कन्या का मनुष्य गण हो तो भी ६ गुण, कन्या का मनुष्य तथा वर का राक्षस गण हो तो शून्य गुण, कन्या का देव तथा वर का राक्षस गण होने से १ गुण कन्या का देव तथा वर का मनुष्य गण होने से ५ गुण जाने॥

भकूट के गुण

राशि एक ही और नक्षत्र भिन्न हों वा एकनक्षत्र होकर चरण भिन्न हों तो ७ गुण जाने। दोनों सम हो तो भी ७ गुण जाने। तृतीय एकादश हो तो भी ७ गुण। चौथे दशवें होने से ७ गुण। भिन्न राशि एक नक्षत्र हो तो ५ गुण। प्रीतिषडाष्टक, द्विर्द्वादश, नवम पञ्चम इनमें परस्पर योनि मैत्री तथा वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र दूर हो तो भकूटके ४ गुण जाने। दोनों का परस्पर १ नक्षत्र और एक ही चरण होने से ० गुण जाने।

वर्गज्ञान—

अवर्गो गरुडो ज्ञेयो विडालस्यात्कवर्गकः ।
चवर्गसिंहनामास्यात् टवर्गः कुक्कुटः स्मृतः ॥ ४१ ॥
सर्पाख्यः स्यात्तवर्गोपि पवर्गो मूषकः स्मृतः ।
यवर्गो मृगनामास्या त्तथा मेषः शवर्गकः ॥ ४२ ॥

टीका—अवर्ग (अ इ उ ए) को गरुड़, कवर्ग (क ख ग घ ङ) को विडाल, चवर्ग (च छ ज झ ञ) को सिंह टवर्ग (ट ठ ड ढ ण) को कुक्कुट, तवर्ग (त थ द ध न) को सर्प, पवर्ग (प फ ब भ म) को मूसक, यवर्ग (य र ल व) को हरिण और शवर्ग (श ष स ह) मेष, [बकरा जाने]॥४१-४२॥

वर्गकी शत्रु मित्रता—

स्ववर्गात्पंचमे शत्रुश्चतुर्थोमित्र संज्ञकः ।
उदासीनस्तृतीयश्च वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥ ४३ ॥

टीका—अपने वर्ग से पंचम वर्ग को शत्रु जाने, चौथे को मित्र और तीसरे वर्गको उदासीन जाने ॥ ४३ ॥

दुष्टकूटादि—

षट्काष्टके गोमिथुनं प्रदद्यात्कास्यं सरूप्यं नवपंचमे च।
नाड्यांसुधेन्वन्नसुवर्णवस्त्रं द्विर्द्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च ॥४४

टीका—बहुत संकट प्राप्त होने पर षडाष्टक में गोदान करै एवं नवम पंचम में कांसे का पात्र और चाँदी दान करै, एकनाडी में धेनु, अन्न, सुवर्ण और वस्त्र दान करे, द्विद्वादश में ब्राह्मण को भोजन करावै। ऐसे करने से इनके दोष दूर हो जाते हैं ॥ ४४ ॥

मिथुनं कुम्भ मृगालि वृषाजगे मिथुन गेऽपिरवौ त्रिलवे शुचेः।
अलिमृगां जगते करपीडनं भवति कार्तिक पौष मधुस्वपि ॥४५

टीका—मिथुन कुम्भ मकर, वृश्चिक वृष मेष इन राशिपर सूर्य हो तो विवाह करना उत्तम है, मिथुन के सूर्य में दश अंश तक असाढ़ में विवाह शुभ है, आगे जबतक मिथुन के सूर्य हरिशयन के पूर्व रहें तबतक शुभ ही है, सूर्य वृश्चिक के हों तो कार्तिक, 'पूर्व' में मकर के सूर्य में पूसमें मेष के सूर्य में चैत्र में (कुम्भ के सूर्य में चैत्र में) भी विवाह शुभ है ॥ ४५ ॥

वर वरण मुहूर्त—

धरणीदेवोऽथवा कन्यकास दरः शुभदिने गीतवाद्यादिभि संयुतः
वरवृत्तिं वस्त्रयज्ञोपवीतादीना ध्रुवयुतैर्वाह्नि पूर्वात्रैराचरेत् ॥४६॥

टीका—पुरोहित अथवा कन्या का सहोदर भाई शुभ दिन में गीत वाद्य से युत होकर शुभ दिनमें कृत्तिका तीनों पूर्वा तीनों उत्तरा रोहिणी इन नक्षत्रों में वर वृत्ति वरवण (फलदान) करै शंकरजी के विवाह में गर्गजी लग्नपत्री तिलक लेके गये, कैकेय राजा गर्गजी के हाथ तिलक और लग्न पत्री राजा दशरथ के पास भेजा। मुहूर्त गणपति में मृ० म० ह० स्वा० रे० श्र० ध० में वरवृत्ति होना लिखा है ॥ ४६ ॥

१ ददुः शिवाय तत्पत्रं तिलकं संविवाय च। शिव पु० रुद्रसं० अ० ३३ श्लोक०६।
२ सत्योपाख्यान में लिखा है।
३ विवाहोदित भेपूर्वा धनिष्ठा कृत्तिका श्रवे। कुमारीवरयोः कार्यं वरणं चशुभेऽहति॥

विवाहनक्षत्र ।

मूलमैत्रकरस्वाती मघापौष्णाभ्रुवेन्दवः ।
एतैर्निर्दोषभैः स्त्रीणांविवाहः शुभदः स्मृतः ॥ ४७ ॥

टीका–मूल, अनुराधा, हस्त, स्वाती, मघा, रेवती, रोहिणी, तीनों उत्तरा और मृगशिरा यदि ये नक्षत्र निर्दोष हों तो इनमें विवाह करना शुभदायक होता है ॥४७

इक्कीसमहादोष ।

पंचांगशुद्धिरहितो दोषस्त्वाद्यः प्रकीर्तितः ।
उदयास्तशुद्धिरहितो द्वितीयः सूर्यसंक्रमः ॥ ४८ ॥
तृतीये पापषड्वर्गो भृगुः षष्ठं कुजाष्टमः ।
गण्डान्तं कर्त्तरी रिःफषडष्टेन्दुश्च संग्रहः ॥ ४९ ॥
दंपत्योरष्टमंलग्नं राशौ विषघटी तथा ।
दुर्मुहूर्तो वारदोषः खार्जुरीक समांघ्रि च ॥ ५० ॥
ग्रहणोत्पातभं क्रूरं विद्धर्क्षं क्रूरसंयुते ।
कुनवांशो महापातो वैधृतिश्चैकविंशतिः ॥ ५१ ॥

टीका–[१] पंचांग शुद्धिरहित [२ उदयास्त शुद्धि रहित [३] संक्रान्ति [४] पापग्रह [५] विवाह की लग्न में छठें शुक्र, [६] आठवें मङ्गल, [७] गण्डान्त, [८] कर्त्तरी [९] चन्द्रका १२।६।८ वें स्थान में होना [१०] स्त्री पुरुष की आठवींलग्न ११] लग्न में चन्द्र और पापग्रह [१२] विषघटी [१३] दुष्टमुहूर्त, [१४] वारदोष, [१५] लत्ता दोष, [१६] ग्रहणनक्षत्र [१७] उत्पातनक्षत्र, १८] पापग्रहों का वेध [१९ पापग्रहयुक्त [२०] पापग्रहांश और [२१] महापात एव [वैधृतियोग] इन दोषों को विवाहमें त्यागना चाहिये ॥ ४८ ॥ ५१ ॥

कर्तरीदोषलक्षण ।

लग्नाच्चन्द्राद्व्ययपद्विस्थौ पापखेटौ यदा तदा ।
कर्त्तरी वर्जनीया सा विवाहोपनयादिषु ॥ ५२ ॥

दोषभंगः ।

नहिकर्त्तरिजोदोषः सौम्ययोर्यदिजायते ।
शुभग्रहयुतं लग्नं क्रूरयोर्नास्ति कर्त्तरी ॥ ५३ ॥

टीका—लग्न वा चन्द्र से बारहवें और दूसरे स्थान में पापग्रहों के होने से कर्तरी दोष होता है, इसमें विवाह और यज्ञोपवीत वर्जित है। जो उपरोक्त स्थानों में सौम्य ग्रह हों वा शुभग्रह युक्त लग्न हो तो क्रूर ग्रहों की भी कर्तरी नहीं होती है ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

मंगला मंगली विचार—

लग्नेऽव्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमेकुजे ।
पत्नी हन्ति स्वभर्तारं भर्ता भार्यां विनाशयेत् ॥५४॥

परिहारः-

जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वाहिबुकेऽथवा ।
अष्टमेद्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥५५॥

अष्टमलग्न-

वरवध्वोर्वटोश्चापि जन्मराशेश्च लग्नतः ।
त्याज्यमष्टमलग्नंस्याद्विवाहव्रतबन्धयोः ॥५६॥

टीका—वर वधू और बटु इनकी जन्मराशिसे वा जन्मलग्न से आठवीं लग्न विवाह और यज्ञोपवीत में वर्जित है ॥ ५६ ॥

दुष्टमुहूर्त—

तिथ्यंशो दिनमानस्य रात्रिमानस्य चैव हि ।
मुहूर्त्तः कथितस्तेषु दुर्मुहूर्त्तः शुभं त्यजेत् ॥५७॥

टीका—दिनका और रातका १५ वां भाग दुष्ट मुहूर्त होता है उस दुष्ट मुहूर्त को त्यागना चाहिये ॥ ५७ ॥

यामार्द्धादिककथन-

सूर्याद्यामदलांदिववनिगमाद्यश्वीषुनागत्रिषट्
संख्याकं कुलिकं दिवेन्द्ररविदिङ् नागतुवेदद्विकम् ।
व्येकंतन्निशि षोडशांशमपरे तिथ्यंशमुन्फन्ति तं
कालंकंटकमैनिघंटमपरेज्यज्ञास्फुजिद्भ्वः क्रमात् ॥५८॥

टीका—दिनमें रविवार से अर्द्ध याम के अंक हैं, सो प्रवृत्ति और निवृत्ति के अंक भी नीचे लिखे चक्र में क्रमानुसार देखकर शुभ कर्म त्यागना चाहिये, दिन में ही दिन के १६ वें भाग के कुलिक होता है। उसे चक्र में देख शुभ

कर्म में त्यागना चाहिये, किसी आचार्य के मत से रात का १६ वां भाग कुलिक नहीं वरन १५ वां है, उसे त्यागना, बुधवार से काल दोष, गुरुवार से कंटक योग, और शुक्रवार से यमघंटक योग, क्रम से चक्र में देख शुभ कर्म में त्यागे, १ दिन में ८ अर्द्धयाम और कुलिकादि १६ परत्व से जाने। परन्तु जो वारं परत्व से त्याग है सो चक्र में देखे ॥ ५८ ॥

वार	यामार्द्ध घटी			कुलिक	काल	कंटक	यमघंट
नाम	संख्या	प्रवृत्ति	निवृत्ति	घ० २	घ० २	घ० २	घ० २
सूय	४	१२	१६	१४	८	६	१०
चन्द्र	७	२४	२८	१२	६	४	८
मङ्गल	२	४	८	१०	४	२	६
बुध	५	१६	२०	८	२	१४	४
गुरु	८	२८	३२	६	१४	१०	२
शुक्र	३	८	११	४	१२	१०	१४
शनि	६	२०	२४	२	१०	१८	१२

लत्तादोष—

भौमात् त्र्याऽऽकृतिषङ्जिनाऽष्टनखहन्त्यऽग्रतोलत्तया ।
खेटोऽर्कोऽर्कमितं शशीमुनिमितं पुर्णोनसन्मालवे ॥५६॥

टीका--मंगल से तीसरे नक्षत्र में लत्ता दोष होता है, बुध से २२ वें नक्षत्र में लत्ता दोष, गुरु से छठें नक्षत्र में शुक्र से २४ वें नक्षत्रों में, शनि से ८ वें नक्षत्र में, राहु से २० से नक्षत्र में सूर्य से १२ वें नक्षत्रों में और पूर्ण चन्द्र से ७ वें में लत्ता दोष होता है, यह दोष केवल मालवे में अशुभ और सब देशों में शुभ होता है ॥ ५६ ॥

पञ्चशलाका ।

रेखाचोर्ध्वाः पंचतिर्यक् च पंच द्वे द्वे रेखे कोणयोरत्रचक्रे ।
नाड्योन्यस्ताच्छंभुकोणाद्द्वितीयेरेखायांभान्यग्निभात्साभिजिद्भिः

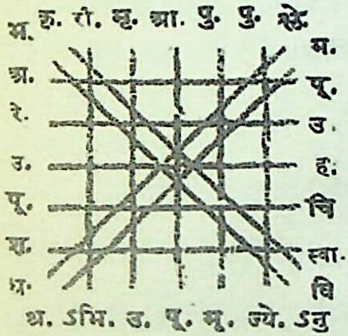
टीका--५ रेखा खड़ी एवं ५ रेखा आड़ी खींचे और कोणों में दो दो तिरछी रेखा खैंचने से पंचशलाका चक्र होता है। उसकी ईशान कोण की दूसरी रेखा से कृत्तिका आदि लेकर २८ नक्षत्र लिखे। ॥ ६० ॥

वेधविचार ।

एकरेखास्थितिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ।
विवाहे तत्र मासांते न जीवति कदाचन ॥६१॥

अश्विनी पूर्वफल्गुन्यां भरणीं च नुराधया ।
अभिजिच्चापिरोहिण्यां कृत्तिका च विशाखया ॥ ६२ ॥
मृगश्चोत्तरापाढेन पूर्वापाढस्तथाऽऽर्द्रया ।
पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया ॥ ६३ ॥
धनिष्ठया तथाऽश्लेषा मघाऽपि श्रवणेन च ।
रेवत्युत्तरफाल्गुन्यां हस्तेनोत्तरभाद्रपात् ॥ ६४ ॥
स्वात्याशातभिषाविद्धा मित्रयापूर्वभाद्रपात् ।
विद्धान्येतानि वर्ज्यानि विवाहे भानि कोविदैः ॥ ६५ ॥

टीका—एक रेखा में सूर्यादि ग्रह स्थित हों और उसी रेखा पर लग्न का नक्षत्र पड़े तो वेध होता है । इस वेध में विवाह होने से १ मास में मृत्यु होती है, अश्विनी और पूर्वाफाल्गुनी परस्पर सन्मुख पड़ें, और भी उसी प्रकार लग्नके नक्षत्र सन्मुख पड़नेसे वेध होता है । इस वेध को चक्र में स्पष्ट देखो । जैसे—भरणी और अनुराधा का वेध, कृत्तिका विशाखा का, मृगशिरा उत्तराषाढ़ा का, पूर्वाषाढ़ा आर्द्राका, पुनर्वसु मूलका, पुष्य ज्येष्ठा का. धनिष्ठा श्लेषा का, मघा श्रवण का, रेवती उत्तराफाल्गुनी का, हस्त उत्तराभाद्रपद का वेध है । वेधित नक्षत्र ज्योतिषियों ने विवाहादि शुभकर्मों में वर्जित किये हैं ॥६१॥६५॥



वेधफल—

रविवेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुलक्षयः ।
बुधवेधे भवेद्वंध्या प्रव्रज्या गुरुवेधतः ॥ ६६ ॥
अपुत्रा शुक्रवेधे च सौरे चान्द्रे च दुःखिता ।
परपुरुषरता राहोः केतोः स्वच्छंदचारिणी ॥ ६७ ॥

टीका—सूर्य के वेध में विवाह होने से विधवा, मंगल के वेध में कुलक्षय, बुध के वेध में वंध्या, गुरु के वेध में कुलटा, शुक्र के वेध में अपुत्रा, शनि और चन्द्र के वेध में दुःखी, राहु के वेध में व्यभिचारिणी और केतु के वेध में विवाह होने से स्वच्छन्द विचरने वाली होती हैं ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

सप्तशलाका ।

समसप्तविनिपात्यरेखकास्तिर्यगूर्ध्वमथकृत्तिकादिकम् ।
लेखयेदभिजितासमन्वितं चैकरेखकमनेनविध्यते ॥ ६८ ॥

टीका—सप्तशलाकाके चक्रमें ७ सीधी रेखा लिखें और उसपर ७ ही आड़ी रेखा



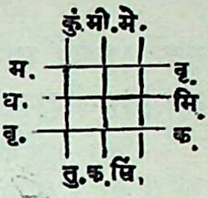
लिखें । फिर कृत्तिका से अभिजित् सहित सब नक्षत्रों को उन पर लिखें । चक्र के १ रेखा के नक्षत्रमें ग्रह हो तो उसी रेखाके दूसरे नक्षत्र पर वेध होता है । जैसे—१ ग्रह रोहिणी नक्षत्र पर है तो उसी रेखा में दूसरा नक्षत्र अभिजित् है, उसे ही वेध जाने । वह वेध शुभग्रह का होने से शुभ फल, अशुभग्रह का होने से अशुभ फल देता है। परन्तु वेधित शुभ कर्मों में त्याज्य है ॥ ६८ ॥

वेधितनक्षत्र ।

श्रुत्याग्निभेऽभिजिद्ब्राह्मे वैश्वेन्द्वेजलेशिवे ।
मूलादित्य च पुष्येन्द्रे चित्राश्लेषा मघांतके ॥ ६९ ॥
दस्रभाग्येऽर्यमान्तके च हस्ताहिर्बुध्न्यभे तथा ।
चित्राजचरणे स्वातीवारुणे च परस्परम् ॥ ७० ॥
द्विदैवेवासवे तद्वद्वेधसप्तशलाकजः ।
त्याज्यापापोद्भवोयत्नाद्, व्रतबंधादिकर्मसु ॥ ७१ ॥

टीका—वेध जानने का क्रम ऐसा है, श्रवण, कृत्तिका इन दोनों का परस्पर में वेध होता है । इसी भाँति अभिजित् रोहिणी. उत्तराषाढ़ा मृगशिरा, पूर्वाषाढ़ा आर्द्रा, मूल पुनर्वसु, ज्येष्ठा पुष्य अनुराधा श्लेषा. मघा भरणी, अश्विनी पू० फा० उ० फा० रेवती हस्त उत्तराभाद्रपद, चित्रा पूर्वाभाद्रपद स्वाति शतभिषा और विशाखा धनिष्ठा ऐसा दो दो नक्षत्रों का वेध जानना । यह मौंजी विवाहादि कर्म में त्याज्य करना ॥ ७० ॥ ७१ ॥

क्रान्तिसाम्य ।



युग्मेधनुः कर्किरलौ च युक्के कन्या च मीने वृषनक्रयुक्ते । मेषे च सिंहे च घटे तुलायां कान्तेश्चसाम्यं शशिसूर्ययोगे ॥ ७२ ॥

टीका-मिथुन और धन इन दो राशियों पर चन्द्र सूर्य हो तो उनकी क्रान्ति [गति] का साम्य होता है । इसी रीति कर्क वृश्चिक, कन्या मीन, वृष मकर, मेष सिंह और कुम्भ तुला इन दो दो लग्न में से किसी एक लग्न पर सूर्य और सामने दूसरे लग्न पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य जानना । इसका शुभ कार्य में त्याग करना ॥ ७२ ॥ क्रांतिसाम्य चक्रम्-

ऊर्ध्वरेखात्रयं चैव तिर्यङ् रेखात्रयं तथा ।
क्रांन्तिसाम्यं बुधैर्ज्ञेयं मध्ये मीनं तु योजयेत् ॥ ७३ ॥

टीका-तीन रेखा आड़ी और तीन रेखा खड़ी लिखना और मध्यकी रेखा पर मीन लग्नसे न्यास करना, इस प्रकार १२ राशियों से सूर्य और चन्द्रमा का क्रांतिसाम्य देखना ॥ ७३ ॥ जामित्र दोष-

लग्नेन्द्वोर्वास्तगःपापस्तत्तुल्यांशे यदि स्थितः ।
तदा जामित्रदोषः स्यान्नहिन्यूनाधिकांशके ॥ ७४ ॥
क्रूरो वा यदि वा सौम्यो लग्नाच्चन्द्राच्च खेचरः ।
एकोपि यदि जामित्रे समांशे च तदा भवेत् ॥ ७ ॥
जामित्रं न प्रशंसन्ति गर्गकश्यपदेवलाः ।
आयषष्ठतृतीयेषु धनधान्यप्रदो रविः ॥ ७६ ॥

टीका—लग्न से वा चन्द्र से जो सप्तम स्थान की राशि व नवमांश उसके समान ही किसी पापग्रह की राशि वा नवमांश हो तो जामित्र दोष होता है । अंश अधिक अथवा कम हो तो जामित्र दोष नहीं, अथवा क्रूरग्रह वा शुभग्रह लग्न से वा चन्द्रमा से एक भी यदि समांश में जामित्र करता हो तो जामित्र दोष होता है । ऐसा दुष्ट जामित्र दोष हो तो विवाह न करना । ऐसा गर्ग, कश्यप और देवल आचार्य कहते हैं । और सूर्य जो ११।६।३ स्थान में हो तो धन धान्य शुभप्रद जानें ॥ ७६ ॥

बाणदोषकथन—

लग्नेनाढ्या यातातिथ्योऽङ्कतष्टाः शेषेनागद्व्यब्धि तर्केन्दु संख्ये ॥
रोगोवह्नीराजचौरो च मृत्युर्बाणश्चायं दाक्षिणात्य प्रसिद्धः ॥७७॥

टीका—शुक्लपक्ष की प्रतिपदासे बीती हुई सब तिथियों की संख्या को लग्न की संख्या में जोड़े तब नवेंका भाग देवे यदि ८ बचे तो रोगबाण. २ बचे तो अग्निबाण, ४ बचे तो राजबाण ६ बचे तो चौबाण, और १ बचे तो मृत्युबाण जानना यह दक्षिणात्यों (महाराष्ट्रों) में प्रसिद्ध है ॥ ७७ ॥

रस गुण शशि नागा ऽध्याढ्य संक्रान्ति यातां
शक मितिरथ नष्टाङ्कैर्यदा पञ्चशेषाः ।
रुगनलनृप चौरा मृत्युसंज्ञश्चबाणो
नवहतशरशेषेशेषकैक्येसशल्यः ॥ ७८ ॥

टीका—सूर्य की संक्रान्ति से जितने अंश बीते हों उनको ६।३।१।८।४ में जोड़ना फिर सब अंकोंमें ९ का भाग देना शेष ५ बचे तो क्रमसे रोग अग्नि राज चोर और मृत्युबाण जानना ५ पाँचों स्थान के शेष को एक जगह जोड़ना उसमें ९ का भाग देना यदि ५ शेष बचै तो सशल्यबाण जानना ॥ ७८ ॥

रात्रौ चौर रुजो दिवा नरपतिर्वह्निः सदा सन्ध्ययो ॥
मृत्युश्चाथशनौनृपो विदिमृतिर्भौमेऽग्नि चौरोरवौ,
रोगोऽथव्रतगेह गोपनृपसे वाया न पाणिग्रहे,
वर्ज्याश्चक्रमतो वुधैरुगनलक्ष्मापाल चौरामृतिः ॥

रात्रिमें चोर और, रोगबाण दिनमें राजबाण सर्वदा अग्निबाण दोनों संध्याओं में मृत्युबाणत्यागना शनिश्चर, में राजबाण, बुध में मृत्युबाण अग्निबाण, चौरबाण, भौमवार में, रोगबाण रविवार में यज्ञोपवीत में रोगबाण घरके छाने बनानेमें अग्नि बाण, राजसेवा में राजबाण यात्रा में चौर और विवाह में मृत्युबाण दूषित है ।

एके नेत्रे वेद संख्ये रसे रागे गतांशके,
मृत्युर्वन्हिर्नृपश्चौरो रोगो बाणाः क्रमेण च ॥ १ ॥
तत् तदंशे रत्न युक्ते तत् बाणाः प्रकीर्तिताः ।
तेषामध्ये सशल्यस्तुधनञ्जय प्रकीर्तिताः ॥ २ ॥
नभवन्तिह्यमी बाणाः शेषां शेषु महीसुरः ।
त्रिपदनलसरागे नन्द सूर्येन्द भूप, धृतिकृति गुण दस्रे पञ्च विश्वे भसंख्ये ॥
रुगनलनृप चौरा मृत्युसंज्ञश्च बाणाः ॥ न भवति महिदेवा पूज्य मातृ प्रसादः ॥
॥ वदतीति शेषः ॥

चापदोष –

कर्कलग्नेथवामेषे घटांशेपे यदि दीयते ।
तुलायां मकरे चन्द्रे वै जायते ध्रुवम् ॥ ७९ ॥

टीका—कर्क अथवा मेष लग्न में कुम्भ का नवमांश, मकर अथवा तुला का चन्द्रमा ऐसे योगों का दोष वैधव्य होता है ॥ ७९ ॥

तिथि के अनुसार वर्जित लग्न—

प्रतिपदि तुलामकरौ सिंहमकरौ तृतीयायाम् ।
कन्यामिथुने च पञ्चम्या सप्तम्यां चैव धनुःकर्कौ ॥ ८० ॥
नवम्यां कर्कसिंहौ एकादश्यां तु धनुर्मीनौ ।
त्रयोदश्यां वृषमीनौ शून्यलग्नानि तिथियोगात् ॥ ८१ ॥

टीका-प्रतिपदा को तुला और मकर, तृतीया को सिंह मकर, पंचमीको कन्या मिथुन, सप्तमी को धन कर्क, नवमी को, कर्क सिंह, एकादशी को धन मीन, त्रयोदशी को वृष मीन इन तिथियों से शून्य लग्न वर्जित हैं ॥ ८० ॥ ८१ ॥

दोषनिवारण—

द्यूनंविनाकेन्द्रगतोमरेज्यस्त्रिकोणगो वापि हि लक्षमेकम् ।
निहन्ति दोषत्रिशतं भृगुश्च शतंबुधो वापि हि दृश्यमूर्त्तिः॥ ८२॥

टीका—गुरु १।४।१।१०। ५ वे स्थानों में हो तो एक लक्ष दोषों को नाश करते हैं, तीन सौ को शुक्र और १ सौ दोषों को बुधनाश करते ॥ ८२॥

लग्न से शुभाशुभ ग्रहों का विचार—

लग्नेचन्द्रखला रिपौशशिसितौ सर्वेद्यु ने खेबुधो
ऽब्जोऽन्त्येगुःसुखगोऽष्टमा कुजशुभा शुक्रस्तृतीयः शुचे ।
लाभेसर्वखगाःशुभा अखिलगास्त्र्यष्टारिगाःस्युःखला
चन्द्रस्यम्बुधनेश्रियं ऽशुभदृगेट्स्यान्मृत्यवेष्टारिगः ॥ ८३ ॥

टीका—लग्न में चन्द्रमा और पापग्रह, षष्ठ स्थान में शुक्र और चन्द्र, संपूर्ण ग्रह सप्तम स्थान में दशम स्थान में बुध, द्वादश, में चन्द्र, चतुर्थ स्थान में राहु, अष्टम स्थान में मंगल, वा शुभग्रह, तृतीय स्थान में शुक, ऐसे लग्न के ग्रह हों तो अनिष्ट शोक कारक अशुभ स्थानी ग्रह जानिये। लग्न के एकादश स्थान में संपूर्ण ग्रह शुभ होवे हैं। तृतीय, अष्टम तथा षष्ठ स्थान में सम्पूर्ण पाप ग्रह शुभ होते हैं । २।३।४ स्थान में चन्द्रमा हो तो शुभ, लक्ष्मी कारक जाने और

लग्न का स्वामी अथवा अंश का स्वामी वा द्रेष्काण का स्वामी ये षष्ठ वा अष्टम स्थान में हों तो मृत्युदायक होते हैं ॥ ८३ ॥

पञ्चभिरिष्टैरिष्टंपुष्टमनिष्टैरनिष्टमादेश्यम् ।
स्थानादिफलसिद्धिश्चतुर्भिरपिकथ्यतेयवनैः ॥ ८४ ॥

टीका—लग्न में पाँच ग्रह शुभस्थानी हों तो पुष्टि कारक होते हैं और अशुभ हों तो अनिष्टकारक होते हैं, और यवनादि आचार्य के मत से चार ग्रह भी इष्टकारक होते हैं ॥ ८४ ॥

षड्वर्गशुद्धि जानने का क्रम—

गृहं होरा च द्रेष्काणो नवांशो द्वादशांशकः
त्रिंशांशश्चेति षड्वर्गस्ते सौम्यग्रहजाः शुभाः ॥ ८५ ॥

टीका—लग्न १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवमांश ४ द्वादशांश ५ त्रिंशांश ६, ये छः षड्वर्ग होते हैं । इनमें शुभग्रहों के वर्ग शुभ होते हैं ॥ ८५ ॥

त्रिंशांशादिकथनम्—

त्रिंशद्भागात्मकंलग्नं होरा तस्यार्द्धमुच्यते ।
लग्नात् त्रिभागोद्रेष्काणो नवांशोनवमांशकः ॥
द्वादशांशोद्वादशांश स्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः ॥ ८६ ॥

टीका-लग्न के अंश ३० होते हैं । तिसका अर्द्ध १५ अंश होरा कहलाता है । लग्न ही का तीसरा भाग १० अंश, ऐसे ३ द्रेष्काण होते हैं । नवमभाग, नवमांश और बारहवाँ भाग, द्वादशांश, और तीसवाँ भाग, त्रिंशांश इस रीति से एक लग्न के ३० अंश होते हैं और उन्हीं तीस अंशके छः वर्ग होते हैं ॥ ८६ ॥

गृहज्ञान--

यस्य ग्रहस्य यो राशिस्तस्य तद्गृहमुच्यते ॥ ८७ ॥

टीका—जिस ग्रह की जो राशि हो उस ग्रह का वही गृह कहा जाता है ।

ग्रह	भौम	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन

सूर्येन्द्वोर्विषमेलग्ने होरा चन्द्रार्कयोः समे ॥ ८८ ॥

होराकथन—

टीका-विषमलग्न में १५ अंश तक सूर्य का होरा, तदनंतर चन्द्रमा का होरा होता है । सम लग्नमें १५ अंतक चन्द्रमाका होरा, बाद में १५ अंश तक सूर्यका होता है । होरा चन्द्रमा का शुभ और सूर्य का अशुभ होता है ॥ ८८ ॥

द्रेष्काणकथन—

द्रेष्काण आद्यो लग्नस्य द्वितीयः पञ्चमस्य च ।
द्रेष्काणश्च तृतीयस्तु लग्नान्नवमराशिपः ॥ ८९ ॥

टीका—लग्नके ३० अंशोंमें १० अंश तक प्रथम द्रेष्काण, २० अंश तक द्वितीय, एवं ३० अंश तक ३ द्रेष्काण होता है । प्रथम द्रेष्काण का स्वामी लग्न का स्वामी होता है । द्वितीय द्रेष्काण का लग्न से पञ्चम स्थान का स्वामी होता है । और तृतीय द्रेष्काण का लग्नसे नवम स्थान का स्वामी होता है । शनि, मंगल और सूर्य का द्रेष्काण अशुभ होता है ॥ ८९ ॥

लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१अं१०	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु
२अ२०	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र
३अं३०	गुरु	शनि	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	रवि	बुध	शुक्र	मंगल

लग्नका नवमांश—

मेषसिंहधनुर्लग्ने नवांशा मेषतः स्मृताः ।
वृषकन्यामृगेलग्ने मकरान्नवमांशकाः ॥
कर्कालिमीनलग्नेषु नवांशा कर्कतः स्मृताः ।
नृयुग्मतौलिकुंभेषु तौलितः स्युर्नवांशकाः ॥ ९० ॥

टीका—मेष, सिंह और धन लग्नमें मेष से नवमांश आरम्भ होता है । वृष कन्या और मकर में मकरसे ही नवमांश आरम्भ होता है, एवं मिथुन, तुला, कुम्भमें, तुला से । कर्क वृश्चिक और मीन इन लग्नोंमें नवमांश कर्क राशिसे प्रारम्भ होता है । नवमांश सूर्य, मंगल और शनिका अशुभ होता है ॥ ९० ॥

		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
३	२०	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र
६	४०	शुक्र	शनि	मंगल	रवि	शुक्र	शनि	मंगल	रवि	शुक्र	शनि	मंगल	रवि
१०	०	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध
११	२०	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र
१६	४०	रवि	शुक्र	शनि	मंगल	रवि	शुक्र	शनि	मंगल	रवि	शुक्र	शनि	मंगल
२०	०	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु
२३	२०	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि
२६	४०	मंगल	रवि	शुक्र	शनि	मंगल	रवि	शुक्र	शनि	मंगल	रवि	शुक्र	शनि
३०	०	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु

द्वादशांश कथन—

लग्नस्य द्वादशांशास्तु स्वराशे रेवकीर्तिताः ॥ ६१ ॥

टीका—लग्न के अंशों में १२ का भाग देने से जो लब्ध हो वही द्वादशांश होता है। तिनका क्रम लग्न के अंशों में १२ का भाग देने पर जो कुछ लब्धि मिली हो उतने संख्या के तुल्य लग्न से जो राशि (मेषादि) हो उसी का स्वामी द्वादशांश का पति होता है। उसमें मंगल शनि, रवि इनके अंश अशुभ होते हैं॥६१॥

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
२ ३०	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु
५ ०	शुक्र	बुध	चन्द्र	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	गुरु	गुरु	मंगल
७ ३०	बुध	चन्द्र	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र
१० ०	चन्द्र	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध
१२ ३०	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र
१५ ०	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	रवि
१७ ३०	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	रवि	बुध
२० ०	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	रवि	बुध	शुक्र
२२ ३०	गुरु	शनि	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	रवि	बुध	शुक्र	मंगल
२५ ०	शनि	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु
२७ ३०	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि
३० ०	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	रवि		शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि

विषमत्रिंशांश।

कुजार्किगुरुविच्छुक्रास्त्रिंशांशपतयः क्रमात्।
पञ्चपञ्चाष्टशैलेषु भागानां विषमे गृहे ॥ ६२ ॥

टीका--विषम लग्न में क्रम से त्रिंशांश पति होते हैं। प्रथम ५ अंश पर्यत भौम का फिर ५ अंश तक शनि का, ८ अंश तक गुरुका, फिर ७ अंश तक बुध का,

एवं ५ अंश,पर्यन्त शुक्र का इस प्रकार जानना चाहिये। इसमें मंगल और शनि का त्रिंशान्श अशुभ होता है ॥ ९२ ॥

समत्रिंशांश।

शुक्रज्ञेज्यार्किभूपुत्रास्त्रिंशांशपतयः समे।
पञ्चांगेष्वेषुपञ्चानां भागानां कथिता बुधैः ॥ ९३ ॥

टीका—सम लग्न में प्रथम ५ अंश पर्यन्त शुक्र, तिसके पीछे ७ अंश बुध, तिसके पीछे ८ अंश गुरु, तिसके पीछे ५ अंश शनि तिसके पीछे ५ अंश मंगल इस प्रकार त्रिंशांशपति होते हैं। इसमें मङ्गल और शनि का अशुभ है ॥९३॥

षड्वर्ग जानने का क्रम—

कार्तिक शुक्ल ९ मङ्गलवार मकर लग्न अन्श १४ घटिका ११ पल ५१, स्वामी शनि सा गृहेश है,अतः षड्वर्ग में गृहेश शनि अशुभ है,शेष५ वर्ग शुभ हैं।

गृहेश	होरा	द्रेष्काण	नवमांश	द्वादशांश	त्रिशांश
शनि	चन्द्र	शुक्र	शुक्र	बुध	गुरु

षड्वर्ग पञ्चवर्ग च चतुर्वर्गमथापि वा।
कश्चित् त्रिवर्गसंप्रोक्तं द्व्यैकवर्गं तनु त्यजेत् ॥ ९४ ॥

टीका—६ अथवा ५ किंवा ४ वर्ग लग्न के हों तो लग्न बलिष्ट होती है। किसी २ के मतसे ३ वर्ग शुभ होते हैं और दो एक हो तो लग्न वर्जित है॥९४॥

लग्नांश फल।

लग्ने चतुर्दशोभागो वृषस्य मकरस्य च।
कन्याकर्कटमीनानामष्टमेद्वादशेलिनः ॥ ९५ ॥

टीका—वृष,मकर के १४ अंश कन्या,कर्क,मीन के ८ अंश और वृश्चिक के १२ अंश ये शुभ फल देते हैं ॥ ९५ ॥

कुंभस्यांशे च षड्विंशे चतुर्विंशे च तौलिनः।
नृयुक्कार्मुकयोर्लग्नं शुभं सप्तदशांशके ॥ ९६ ॥

टीका—कुम्भ के २६ अंश,तुला के २४ अंश मिथुनके ७ और धनुके १८ अंश शुभ हैं ॥ ९६ ॥

एकविंशतिमे भागे मेषस्याष्टदशे हरेः ।
संपूर्णफलदं चादौ मध्ये मध्यफलप्रदम् ॥ ९७ ॥

टीका—मेष के २१ अंश, सिंहके १८ ऐसे लग्नों के आदि में संपूर्ण और मध्य फल अंश के अनुसार होवे हैं ॥ १७ ॥

वर्गोत्तमलग्नलक्षण—

अन्ते तुच्छफलं लग्ने यदि वर्गोत्तमं न चेत् ।
लग्नस्य स्वनवांशो यः स वर्गोत्तम उच्यते ॥ ९८ ॥

टीका—लग्नके अन्त भागमें वर्गोत्तम न हो तो लग्न अनिष्ट फल देता है। लग्न अपने नवांशमें हो तो वर्गोत्तम होता है ॥ ९८ ॥

गोधूलि लग्न का कथन—

गोधूलं पदजादिके शुभकरं पंचांगशुद्धौ रवे-
रर्धास्तात्परपूर्वतोर्द्धघटिकं तत्रेन्दुमष्टारिगम् ॥
सोग्रांगं कुजमष्टमं गुरुयमाहःपातमर्कक्षमं
जह्याद्धिप्रमुखेतिसंकटइदं संद्यौवनाद्ये क्वचित् ॥ ९९ ॥

टीका—शूद्रादिकोंको पंचांगशुद्धि देख कर सूर्य के अर्द्धास्त समय प्रथम व पश्चात् १५-१५ पल गोधूलि लग्न शुभ, और गोधूलि लग्नसे षष्ठ, अष्टम स्थानी चन्द्रमा और पापग्रह, भौम अष्टम स्थानी और गुरु शनि के वार, क्रांति दिन इत्यादिक दुष्टयोग वर्जित करके शुभ, किसी के मत में विवादिक के अति संकट में अथवा कन्या पुष्पवती हो तो गोरज शुभ होता है ॥ ९९ ॥

संकार-प्रकरणम् समाप्तम् ।

वधूप्रवेश—

विवाहमारभ्यवधूप्रवेशो युग्मेथवाषोडशवासरान्तात् ।
तदूर्ध्वमध्येयुजिपञ्चमान्तादतः परस्तान्नियमो न चास्ति ॥१॥

टीका—विवाहसे सम दिन १६ दिवस पर्यन्त वधूप्रवेश कहा है । आगे पाँच वर्ष पर्यन्त विषम वर्ष मासादिक कहे हैं उसके उपरान्त स्वेच्छानुसार ॥ १ ॥

उक्तमासादि—

मार्गफाल्गुनवैशाखे शुक्लपक्षे शुभेदिने ।
गुर्वाद्यस्तविशुद्धौ स्यान्नित्यं पत्निद्विरागमः ॥ २ ॥

टीका—अगहन, फाल्गुन, वैशाख शुक्लपक्ष में, शुभ दिवस में, गुरु और शुक्र का अस्तादिक वर्जित कर द्विरागमन उत्तम होता है ॥ २ ॥

नाहरांशु च त्र्युत्तरादितिगुरुब्राह्मानुराधाश्विनी ।
शाक्रो भास्करवायुविष्णुवरुणत्वाष्ट्रे प्रशस्तेतिथौ ।
कुंभाजालिगतेरवौ शुभकरे प्राप्तोदये भार्गवे ।
जीवज्ञास्फुजितां दिने नववधूवेश्मप्रवेशः शुभः ॥ ३ ॥

टीका-मृगशिरा, तीनों उत्तरा, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, अनुराधा, अश्विनी, ज्येष्ठा, हस्त, स्वाती, श्रवण, शततारका, चित्रा ये नक्षत्र और कुंभ मेष, वृश्चिक इन राशियों के सूर्य, शुक्रादिका उदय और गुरु, बुध, चन्द्र ये वार, ऐसे शुभ दिवस में वधूप्रवेश करावै ॥ ३ ॥

ज्येष्ठे पति ज्येष्ठ यथाधिकेपतिं, हन्त्यादिमे भर्तृगृहे वधू शुचौ ।
श्वश्रूं सहस्ये श्वशुर क्षयेतनुं तातं मधौ तातगृहे विवाहतः॥४॥

टीका—विवाह के बाद प्रथम ज्येष्ठ के महीने में वधू अपने पतिके गृहमें रहै तो पतिके ज्येष्ठ भाई को मारे, अर्थात् पतिके ज्येष्ठ भाई की मृत्यु होय अधि, मास में पतिको, आषाढ़ में सासुको पौषमें श्वशुर को क्षय मास में अपने शरीर को, और चैत्र में पिता के घर रहै तो पिता को मारे (अनिष्ट पहुँचावे) ॥ ४ ॥

वधूप्रवेश समाप्तम् ।

द्विरागमनमूहूर्त-

चरेदथो जहायने घटातिमेषगेरवौ,
रवीज्य शुद्धियोगतः शुभग्रहस्यवासरे।
नृयुग्म मीनकन्यका तुला वृषे विलग्नके,
द्विरागमं लघुध्रुवे चरेऽस्रये मृदूडुनि॥ १॥

टीका—विवाह से विषम वर्षों में कुम्भ वृश्चिक मेष राशि के सूर्य में, गुरु शुक्र के शुद्धि रहनेपर, शुभ ग्रह के वारों (चं० बु० बृ० शु०) में मिथुन मीन कन्या तुला बृष लग्नमें लघु (हस्त० अश्वि० पुष्य० अभि०) ध्रुव (तीनों उत्तरा रोहिणी) चर :(स्वा० पु० श्र० ध० श०) मूल तथा मृदु (मृ० रे० चि० अनु०) नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ होता है॥ १॥

शुक्र विचार-

दैत्येज्ये ह्यभिमुखदक्षिणे यदि स्याद्
गच्छेयुर्न शिशुर्न गर्भिणी नवोढा।
बालश्चेद् व्रजत्ति विपद्यते नवोढा
चेद्वन्ध्या भवति चगर्भिणी त्वगर्भा॥ २॥

टीका—बालक गर्भिणी स्त्री और नवोढ़ा स्त्री जो दूबारा पति के घर सन्मुख या दक्षिण शुक्र के रहने पर यात्रा करे बल यात्रा करेतो मरे, गर्भिणी स्त्री यात्रा करे तो उसका गर्भ नष्ट होय, और पतिके घर नई दुलहिन दूसरी बार यात्रा करै तो बाँझ होय॥ २॥

नगर प्रवेशविषयाद्रुपद्रवे,करपीडने विबुधतीर्थ यात्रयोः।
नृपपीडने नववधू प्रवेशने प्रतिभार्गवोभवति दोंपकृद्दहि॥ ३॥

नगर में प्रवेश करने के समय उपद्रव में विवाह में देव दर्शन, तीर्थ यात्रा में राज्य से पीडित होने पर, वधू प्रवेश में स्त्री को अपने पति के घर जाने में सन्मुख शुक्र का दोष नहीं होता है॥ २॥

पित्रेगृहे चेत् कुज पुष्पसम्भवः स्त्रीणांनदोषः प्रतिशुसम्भवः।
भृग्वङ्गिरोवत्सवसिष्ठकश्यपाऽत्रीणाभरद्वाजमुनेः कुले तथा॥४॥

टीका—यदि वधूको पिताके घर स्तन उठाजाय, और रजोदर्शन हो जाय तो सन्मुख दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता है। और भृगु, अंगिरा, वत्स, वसिष्ठ, कश्यप अत्रि भरद्वाज इन गोत्रवालों को भी सन्मुख दक्षिण शुक्रका दोष नहीं होता है॥ ४॥

शुक्रान्ध—

रेवत्यादिमृगान्त्ये च यावत्तिष्ठतिचन्द्रमा।
जावच्छुक्रोभवेदन्धः सन्मुखे दक्षिणेशुभः॥ ५॥

टीका—अर्थ सरल है॥ ५॥

द्विरागमनमुहूर्त समाप्तम्

द्व्यङ्ग विचार--

याते द्विरागमे पत्न्या पुनः पति गृहेगमः।
पितृगेहे स्थितायाश्च सहलङ्ग इहकीर्तितः॥ १॥

टीका—द्विरागमन हो जाने पर पति के गृह में रह कर पिता के घर जाय और तिबारा पति के घर में जाने को द्व्यङ्ग कहते हैं॥ १॥

यद्रांसिजोऽर्कः खलु तद्दिशायां
राहुः सदातिष्ठति मासि मासि।
वधू प्रवेशाच्चतथा तृतीये
ग्राह्यः सदामासिक राहुरेव।
अग्रतो राहुर्वैधव्यं दक्षिणे सुतहा भवेत्॥ २॥
वामपृष्ठे शुभोनित्यं तृतीयगमने स्त्रियः॥ २॥

टीका—जिस राशिमें सूर्य रहते हैं उस राशि की दिशा 'मेषेच सिंह' के अनुसार राहु रहता है वधू प्रवेश से तीसरी यात्रा में मासिक राहु का विचार होता है। राहु आगे सन्मुख रहे तो विधवा करता है और दक्षिण (दहिने) रहे तो पुत्र की हानि करता है स्त्री की तीसरी यात्रा में वाम पृष्ठ शुभ है॥ २॥

आदित्य मृगहस्तेज्य पौष्णमित्राश्विनीषुच ।
गोविन्द वसुमूलेषुध्रः सम्पत्प्रदायकः ॥ ३ ॥
धनुः कर्कटमीनेऽर्के सिंहे कन्या तुला स्थिते ।
भौमार्कि वर्जिते वारे शुभदादयङ्गकर्मणि ॥ ४ ॥

टीका—पुनर्वसु मृगशिरा हस्त पुष्य रेवती अनुराधा अश्विनी श्रवण धनिष्ठा मूल नक्षत्रों में धन मीन तथा कर्क सिंह कन्या तुलाके सूर्य के छोड़ अन्य राशि (वृश्चिक म० कुं० मे० वृ० मि०) के सूर्य में मंगल शनि के अतिरिक्त वारोंमें तिवारा स्त्री पति के गृह जाय ॥ ३ ॥ ४ ॥

(मेष के सूर्य में पूर्व दक्षिण, वृष मकर के सूर्य में दक्षिण पश्चिम, मीन कुम्भ के सूर्य में पश्चिम उत्तर, और वृश्चिक के सूर्य में उत्तर पूर्व दोड जाना निषेध है)

प्रथम भोजन बनाने का मुहूर्त—

पुषतारा शाक्रकृशानुपौष्णो श्रुतित्रये ब्रह्मद्विदेवचान्द्रे ।
शुभे तिथौ ध्यार रवौ प्रकुर्यात् सीमंतिनी नूतनपाककर्म ॥५

टीका—पुष्य तीनों उत्तरा, ज्ये० कृ० रे० श्र० ध० श० रो० वि० मृ० इन तेरह नक्षत्रों में शुभ तिथियों में मंगल सूर्य से भिन्न वारों में स्त्री प्रथम अपने पति के गृह भोजन (खिचरी) बनावै ॥ ५ ॥

स्त्री पुरुष समागम मुहूर्त—

मृगोत्तरा तिष्य द्विदेवमैत्रे समीर चित्रारविभेव ब्राह्मे ।
शुभेतिथावर्क विहीनवारे समागमः स्याच्छुभदोनृनार्य्योः ॥६

टीका—मृ० तीनों उत्तरा, पुष्य, वि० अनु० स्वा० चि० ह० रोहिणी नक्षत्रों में शुभ तिथियों में रविवार के छोड़ वारोंमें स्त्री पुरुष का समागम होना शुभ है ॥ ६ ॥

नूतनपल्लवधारणा का मुहूर्त-

हस्तादिपंचमृगपुष्पभद्रस्रभेषु विष्णुद्वयेबुधदिनेगुरुशक्रवारे ।
स्त्रीणांशुभंप्रथमपल्लवधारणंस्यात्पाणिग्रहोक्तसमयेखलुपीतवस्त्रैः ७

टीका-हस्त से पांच और मृगशिरा, पुनर्वसु, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा ये नक्षत्र और बुध गुरु शुक्र ये वार और जो विवाह काल में कथित है, ऐसे दिवस में नूतन पीत वस्त्र करके स्त्रियों को प्रथम पल्लव धारण करावै ॥ ७ ॥

गंधर्वविवाह मुहूर्त्त-

शूद्रान्त्येषु पुनर्भवापरिणयप्रोक्तो विवाहोक्तभै
र्नालोक्यं तिथिमासवेधभृगुजे ज्यास्तादि तत्र क्रमात्।
त्रिर्त्र्यूत्तेषु मृतिर्धनं मृतिमृती पुत्रोमृती दुर्भगं
श्रीरौन्नत्यमथो धृतीशक्रततत्वर्क्षेत्ययः साभिजित् ॥ ८ ॥

टीका-शूद्र आदि, रजक आदि और अन्य जाति जिनकी स्त्रियोंका पुनर्बिवाह हो जाता है, उनके सगाई का मुहूर्त विवाहोक्त नक्षत्र में देखें। मास, तिथि, वार, गुरु, शुक्र इनके उदय अस्त का कुछ विचार नहीं। वहाँ केवल सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र पर्यन्त गिनै, क्रमसे प्रथम ३ मरण, द्वितीय ३ धन, तृतीय ३ मरण, चतुर्थ ३ मरण पंचम ३ पुत्र मरण, षष्ठ ३ दुर्भाग्य, सप्तम ३ श्रीः अष्टम ३ औन्नत्य, एवं सूर्य नक्षत्र में चौथे, ग्यारहवें अठारहवें, पच्चीसवें इन चारों स्थानों के नक्षत्र शुभ और शेष नक्षत्र अशुभ होते हैं ॥ ८ ॥

दूसरे मत के अनुसार—

इन्द्रादितिशिवाऽश्लेषा आग्नेयं वारुणं तथा।
अश्विनीवसुदैवत्यं पट्टकाले शुभं स्मृतम् ॥ ९ ॥

टीका-ज्येष्ठा, पुनर्वसु, आर्द्रा, आश्लेषा, कृत्तिका, शततारकाका, अश्विनी धनिष्ठा, ये नक्षत्र सगाई अर्थात् पुनर्विवाह (धरेजा करने) में शुभ होते हैं ॥९॥

इति विवाह प्रकरणम्—

यात्राप्रकरण--

श्री गणेशं हनुमन्तं वन्दे गौरी हरं हरिम् ।
मया यात्रा प्रकाशोऽयं रच्यते विदुषां मुदे ॥ १ ॥

यात्रामास—

धनुर्मेष सिंहेषु यात्रा प्रशस्ता शनिज्ञोशनो राशिगे चैव मध्या ।
रवौकर्क मीनालि संख्येऽतिदीर्घा जनुपञ्चसप्तत्रितारा[1]श्चनेष्टाः ॥२॥

टीका—धन मेष सिंह राशि के सूर्य में यात्रा शुभ होती है, तथा शनि बुध शुक्र की राशि १०।११।३।६।२ ७। (वृष मिथुन कन्या तुला मकर कुम्भ के सूर्य) में मध्यम और कर्क मीन वृश्चिक राशि के सूर्यमें अति दीर्घ यात्रा होती है अर्थात् जाने वाला शीघ्र नहीं लौटता है ॥ २ ॥

यात्रा को त्याग तिथि उत्तम नक्षत्र-

न षष्ठो न च द्वादशी नाष्टमी नोसिताद्या तिथिः पूर्णिमामानरिक्ता
हयादित्य मित्रेन्दु जीवान्त्य हस्त श्रवोवासते रवेयात्राप्रशस्ताः॥३॥

टीका—षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, पूर्णिमा अमावस्या और रिक्ता तिथि को छोड़ शेष २।३।५।७।१०।११।१३। कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों और अश्वि० पुन०, अनु० मृग०, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण धनिष्ठा इन नक्षत्रों में यात्रा शुभ होती है ॥ ३ ॥

दास्रभे दिननाथर्क्षे सुरेश गुरु भे तथा ।
मैत्रे सर्व दिशायां हि कुर्याद् यात्रा विचक्षणः ॥ ४ ॥

टीका—अश्विनी हस्त पुष्य, अनुराधा इन चार नक्षत्रों में मनुष्य चारों दिशा में यात्रा करे तो शुभ है ॥ ४ ॥

यात्रा के मध्य नक्षत्र-

उत्तरा त्रय लोकेशोमूलभंच जलेश्वरः ।
पूर्वा त्रयो महीपूज्याः प्रयाणो मध्यमाः स्मृताः ॥ ५ ॥

टीका—तीनों उत्तरा रोहिणी मूल शतभिषा और तीनों पूर्वा के नव नक्षत्र यात्रा में मध्यम हैं ॥ ५ ।

---

१ हस्तेन्दु मैत्र श्रवणाश्वितिष्याः पौष्णश्च विष्टा च पुनर्वसुश्च। प्रोक्तानि भिष्णानि नव प्रयाणेत्र कृत्वा त्रिपञ्चादिचिसप्ततारा:

यात्रायां वर्ज्यनक्षत्राणि।

महेशार्द्रमघाज्येष्ठा भरणी चैव कृत्तिका।
सार्पस्वातीविशाखा च चित्रा गमन वर्जिताः ॥ ६ ॥
कृत्तिका एकविंशत्या भरण्या सप्तनाडिकाः।
एकादशमघायाश्च त्रिपूर्वाणां च षोडश ॥ ७ ॥
विशाखासार्पचित्रासु स्वाती ऐंद्रं चतुर्दश।
आद्यास्तु घटिकास्त्याज्याः शेषांशे गमनं शुभम् ॥ ८ ॥

टीका—नीचे लिखे आर्द्रा, ज्येष्ठा, भ०, कृत्तिका चित्रा, श्लेषा, मघा, विशाखा, स्वाती नक्षत्रों में यात्रा न करै, परन्तु आवश्यकता वश कृत्तिका की २१ घड़ी तीनों पूर्वा की १६ घड़ी, मघाकी ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी, अश्लेषा, विशाखा, चित्रा, स्वाती, और ज्येष्ठा के आदि की १४ घड़ी त्याग कर यात्रा करै ॥ ६ ॥ ८ ॥

पूर्वादिगमने दिक्शूलविचारः।

मूल श्रवण शाक्रेषु प्रतिपन्नवमीषु च।
शनौ सोमे बुधे चैव पूर्वस्यां गमनं त्यजेत् ॥ ६ ॥

टीका—मूल, श्रवण, ज्येष्ठा नक्षत्र में, प्रतिपदा और नौमी तिथि में एवं शनि, सोम, बुधवार को पूर्व दिशा में न जाय ॥ ९ ॥

दक्षिणे।

पूर्वाभाद्रपदाऽश्विन्यौ पञ्चमी च त्रयोदशीम्।
गुरुं धनिष्ठाऽऽर्द्राश्चैव याम्ये सप्त विवर्जयेत् ॥ १० ॥

टीका—पूर्वाभाद्रपदा, अश्विनी, धनिष्ठा और आर्द्रा नक्षत्र में, पंचमी। और त्रयोदशी में, एवं गुरुवार के दिन दक्षिण दिशाको न जाय ॥ १० ॥

पश्चिमे।

रोहिण्यां च तथा पुष्ये षष्ठी चैव चतुर्दशी।
भौमार्कगुरुवारेषु न गच्छेत्पश्चिमांदिशम् ॥ ११ ॥

टीका—रोहिणी और पुष्य में, षष्ठी और चतुर्दशी में, मंगल, रवि और गुरुवार में, पश्चिम को न जाय ॥ ११ ॥

उत्तरे।

करेचोत्तरफाल्गुन्यां द्वितीयां दशमी तथा।
बुधे रवौ भौमवारे न गच्छेदुत्तरांदिशम् ॥ १२ ॥

टीका—हस्त और उत्तराफाल्गुनी, द्वितीया और दशमी तिथि बुध, रवि और भौमवार को उत्तर दिशा में न जाय ॥ १२ ॥

दिक्शूलविचारः।

ऐशान्यां ज्ञे शनौ शूल आग्नेय्यां गुरुसोमयोः।
वायव्यां भूमिपुत्रे तु नैऋत्यां शुक्रसूर्ययोः ॥ १३ ॥

टीका—बुध और शनिको ईशान्यको यात्रा, गुरु और सोमवार को आग्नेय की, मंगल को वायव्य की, शुक्र और रविवार को नैऋत्य की यात्रा वर्जित है ॥ १३ ॥ शूलदोषपरिहारः।

सूर्यवारेघृतंपीत्वा गच्छेत्सोमेपयस्तथा।
गुडमंगारवारे तु बुधवारेतिलानपि ॥
गुरुवारेदधिर्ज्ञेयं शुक्रवारेयवानपि।
मांषान्भुक्त्वाशनेर्वारे शूलदोषोपशान्तये ॥ १४ ॥

टीका—रविवार को घी, सोमवार को दूध, मंगल को गुड़, बुधको तिल, गुरुको दही, शुक्र को जौ और शनिवार को उड़द खाकर यात्रा करने से शूल दोष नहीं लगता है ॥ १४ ॥ सन्मुखचन्द्र विचारः।

करणभगतदोषं वारसंक्रान्तिदोषं।
कुतिथि कुलिकदोषं वारयामार्द्धदोषम् ॥
कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं।
हरतिसकलदोषं चन्द्रमाः संमुखस्थः ॥ १५ ॥

टीका—करण, नक्षत्र, वार, संक्रान्ति कुतिथि, कुलिक, वार यामार्द्ध, मंगल शनि, रवि, राहु, केतु इत्यादि दोषों को सन्मुख चन्द्र दूर करता है ॥ १५ ॥

नोट—मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।
तुला सु कुम्भे मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशीचोत्तरस्याम ॥ १ ॥
संमुखेचार्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठे च प्राणनाशाय वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥ २ ॥

कालवेला विचारः—

पूर्वाह्णे चोत्तरांगच्छेत्प्राच्यां मध्याह्नके तथा ।
दक्षिणेऽपराह्णे तु पश्चिमेऽर्धरात्रके ॥ १६ ॥

टीका—दिनके प्रथम प्रहर में उत्तर को, दूसरे प्रहर में तथा मध्यान्ह में पूर्व को, तीसरे प्रहर में दक्षिण को और अर्द्धरात्रि में पश्चिम को गमन करै ॥१६॥

योगिनीवासः—

प्रतिपन्नवमीपूर्वे द्वितीयादिशिचोत्तरे ।
तृतीयैकदशीवन्हौ चतुर्द्वादशिनैर्ऋते ॥ १७ ॥
पञ्चत्रयोदशीयाम्ये षष्ठीभूतं च पश्चिमे ।
सप्तमीपूर्ववायव्ये अमावास्याष्टमीशिवे ॥ १८ ॥

टीका—१।९ को पूर्व में, २ । १० को उत्तरमें, ३ । ११ को आग्नेय में, ४ । १२ को नैऋत्यमें, ५ । १३ को दक्षिण में, ६ । १४ को पश्चिम में, ७ । १५ को वायव्य में, ३० । ८ को ईशान्य में योगिनी का वास होता है ॥ १७ ॥ १८ ॥

फलम्—

पृष्ठे च शिवदाप्रोक्ता वामे चैव विशेषतः ।
योगिनी सा भवेन्नित्यं प्रयाणे शुभदा नृणाम् ॥ १९ ॥

टीका—यात्रामें पीछे की और वाम भाग की योगिनीःशुभ फल देती है॥४८

वारपरत्वेन कालराहु विचारः—

अर्कोत्तरे वायुदिशां च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैर्ऋते च ।
याम्येगुरौ वन्हि दिशां चशुक्रे मन्दे च पूर्वे प्रवदन्तिकालम् ॥२०

टीका—रविवार को उत्तर में सोम को वायव्य में मंगल को पश्चिम में, बुध को नैऋत्य में गुरु को दक्षिण में शुक्र को आग्नेय में, और शनि को पूर्व में काल राहु का वास होता है ॥ २० ॥

फलम—

रविदिनगुरुपूर्वे सोमशुक्रे च याम्ये ।
वरुणदिशि तु भौमे चोत्तरे सौरिसंस्थे ॥
प्रतिदिनमितिमत्वा कालराहुर्दिशानां ।
सकलगमनकार्ये वामपृष्ठे च सिद्धिः ॥ २१ ॥

क्षुधितराहुः—

इन्द्रेवायौयमेरुद्रतोयेऽग्नौशाशिरक्षसोः
यामार्द्धक्षुधितोराहुर्भ्र मत्येवदिगष्टके ॥ २२ ॥
न तिथि र्नच नक्षत्रं न योगो न च चन्द्रमाः ।
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणि यात्रायां दक्षिणे रवौ ॥ २३ ॥

टीका—रवि और गुरुवार में यात्रा करने से कालराहु पिछाड़ी को रहता है एवं सब कार्मोंको सिद्ध करता है। इसी प्रकार सोम, शुक्र में दक्षिणको, भौमवार को पश्चिम को और शनिवार में उत्तर को यात्रा करने से सब कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है ॥ २१ ॥

प्रथम यामार्द्ध में क्षुधित राहुको पूर्व में, २ यामार्द्ध में क्षुधित राहुको वायव्यमें ३ यामार्द्धमें क्षुधित राहुको दक्षिण में ४ में क्षुधित राहुको ईशान्य में, ५ में क्षुधित राहुको पश्चिम में ६ में क्षुधित राहु को आग्नेयमें, ७ में क्षुधित राहु को उत्तर में ८ यामार्द्ध में क्षुधित राहुको नैर्ऋत्यमें जाने । इस प्रकार आठों दिशाओं में भ्रमण करता है । परन्तु दक्षिण भाग में स्थित सूर्य का विचार कर यात्रा करै तो तिथि नक्षत्रादिक का दोष नहीं होता और समस्त कार्य सिद्ध होते हैं ॥ २२ ॥ २३ ॥

कालज्ञानम्—

कालः पलं पातक लोहपात वडवानलाः खड्ग कवच कान्तिकाः ।
नखाश्चतुर्विंशति पट्ट तथा दिग्रुद्राधृतिर्वेदगुणाः क्रमेण ॥
तिथ्यायुतं वै वसुभाजितं च शेषश्च कालो मुनयो वदन्ति ॥२४॥

फलम्—

कालं पृष्ठे पल संमुखेन पातं च लोहं वडवां च पृष्ठे ।
खड्गं च चाग्रे कवचं चवामेकान्तिश्चयोज्या दिशि दक्षिणस्याम् २५

टीका—कालोंके नाम, १काल[20] २पल[24] ३पातक[6] ४ लोहपात[10] ५ वडवानल[11] ६ ख[18]ड्ग ७ कवच ८ कान्ति[30] इन आठ कालों के ऊपर जो अङ्क लिखे हैं, उनमें गमन कालकी जो तिथि है उसको एक २ अंकमें मिलावे, आठका भाग दे, शेष अंक जो रहे उस दिशाको काल जाने । इस प्रकार पूर्वादि आठो दिशाओं के क्रम से काल मुनियों ने कहा है ॥ २४ ॥

पृष्ठभाग में काल, सन्मुख पल, पातक लोहपात और वड़वानल पिछाड़ी, आगे खड्ग बाईं ओर कवच एवं दक्षिण ओर कान्ति रहनेसे शुभ फल देते हैं २५

पन्थाराहुचक्रम् ।

स्युर्धर्मेदस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थे ।
याम्याजांघ्रीन्द्रकर्णादितिपितृयवनोडून्यथोभानिकामे ॥
वान्ह्यार्द्राबुध्न्यचित्रा निर्ऋतिविधिभगाऽऽख्यानिमोक्षोऽथ ।
रोहिण्यर्यमणाब्जेन्दु विश्वान्तिमभदिनकरर्क्षाणि पन्थादिराहौ२६

टीका—२८ नक्षत्रों में से धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष इन ४ मार्गों में सात २ नक्षत्रों को बाँट दे। इस चक्र में स्पष्ट देखो इन चारों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) मार्गों में से किसी एक में सूर्य तथा शेष तीनों में से किसी एक में चन्द्रमा हो तो उसका पृथक् २ फल कहते हैं ॥ २६ ॥

धर्म	अश्विनी	पुष्य	आश्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शतभिषा
अर्थ	भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पू. भा.
काम	कृत्तिका	आर्द्रा	पूर्वा फा०	चित्रा	मूल	अभिजि०	उ. भा.
मोक्ष	रोहिणी	मृगशिरा	उ. फा.	हस्त	पूर्वाषा०	उत्त. षा.	रेवती

धर्ममार्गगत सूर्य अर्थ अर्थगत चन्द्रफलम् ।

धर्म मार्गे गते सूर्ये अर्थान्शे चन्द्रमा यदि ।
तदा शत्रुभयं तस्य ज्ञेयं तू विबुधैः शुभम् ॥ २७ ॥

टीका—धर्ममार्गी नक्षत्र में सूर्य और अर्थ मार्गी नक्षत्र में चन्द्रमा के होने पर यात्रा करने से मार्ग में शत्रु भय होता है ॥ २७ ॥

धर्ममार्ग गत सूर्य चन्द्रफलम् ।

धर्ममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
संहारश्च भवेत्तत्र भंगो हानिः प्रजायते ॥ २८ ॥

टीका—धर्म मार्गी नक्षत्रों में सूर्य और चन्द्रमा दोनों ही हों तो संहार, भंग और हानि होती है ॥ २८ ॥

धर्मगत सूर्य कामगत चन्द्र फलम् ।

धर्ममार्गे गते सूर्ये कामांशे चन्द्रमा यदि ।
विग्रहो दारुणं चैव चौराकुलसमुद्भवम् ॥ २९ ॥

टीका—धर्म मार्गी नक्षत्रों में सूर्य और काममार्गी नक्षत्रों में चंद्रमा के होने से घोर विग्रह और चोर भय होता है ॥ २९ ॥

धर्मगत सूर्य मोक्षगत चन्द्र फलम् ।

धर्ममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षगते यदि ।
गृहलाभो भवेत्तस्य विज्ञेयो नात्र संशयः ॥ ३० ॥

टीका—धर्म मार्गी नक्षत्रों में सूर्य और मोक्षमार्गी नक्षत्रों में चन्द्र के होने से गृहलाभ और मार्ग में सुख मिलता है ॥ ३० ॥

अर्थमार्गगत सूर्य धर्मगत चन्द्र फलम् ।

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।
गजलाभो भवेत्तस्य तत्र श्रीः सर्वतो सुखी ॥ ३१ ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चन्द्रमा के होने से गज लाभ, लक्ष्मी प्राप्ति और सदा शुभ प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥

अर्थमार्ग गत सूर्य चन्द्र फलम् ।

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
प्रथमं जायते कार्यं तत्र भंगो भविष्यति ॥ ३२ ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और चन्द्रमा के होने से प्रथम कार्य सिद्ध होकर पीछे भंग हो जाता है ॥ ३२ ॥

अर्थगत सूर्य कामगत चन्द्र फलम् ।

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे कामांश संस्थिते ।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य जानीयान्नात्रसंशयः ॥ ३३ ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और काममार्गी चन्द्रमा के होने से सब कामों में सिद्धि प्राप्त होती है ॥ ३३ ॥

अर्थगत सूर्य मोक्षगत चन्द्रफलम् ।

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षस्थिते यदि ।
भूमिलाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्तः सुखी भवेत् ॥ ३४ ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चन्द्रमा के होने से भूमि लाभ होता है, एवं मनुष्य आनन्दित और सुखी रहता है ॥ ३४ ॥

काममार्गगत सूर्य धर्मगत चन्द्रफलम् ।

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मे च संस्थिते ।
गजाश्वाश्च विलभ्यन्ते राजसंमान संभवात् ॥ ३५ ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चन्द्र के होने पर हाथी घोड़ा एवं पृथ्वी का लाभ हो और राजा से सन्मान पावे ॥ ३५ ॥

कामगत सूर्य धर्मगत चन्द्र फलम्—

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मे च संस्थिते ।
सकले जायते तस्य विघ्नभंगं विनिर्दिशेत् ॥ ३६ ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चन्द्रमा के होने पर सम्पूर्ण विघ्न नष्ट हो जाते हैं ॥ ३६ ॥

कामगत सूर्य चन्द्र फलम्—

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
विग्रहं दारुणं चैव कार्यनाशं विनिर्दिशेत् ॥ ३७ ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और चन्द्रमा हो तो घोर विग्रह और कार्य नष्ट हो जाता है ॥ ३७ ॥

कामगत सूर्य मोक्षगत चन्द्र फलम्—

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षगतेपिवा ।
राज्ञोलाभो भवेत्तस्य स्वर्णलाभं विनिर्दिशेत ॥ ३८ ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चन्द्र के होने पर राजा से सुवर्ण की प्राप्ति होती है ॥ ३८ ॥

मोक्षमार्गगत सूर्य धर्मगत चन्द्र फलम्—

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।
हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यं प्रसिद्ध्यति ॥ ३९ ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चन्द्रमा हो तो सुवर्ण लाभ और सर्वसिद्धियाँ प्राप्त होती हैं ॥ ३९ ॥

मोक्षगत सूर्य अर्थगत चन्द्रफलम् ।

मोक्षमार्गे गते सूर्ये अर्थांशे चन्द्रमा यदि ।
विफलं तस्य कार्यं च चौर राज रिपोर्भयम् ॥ ४० ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चन्द्रमा हो तो राजा चौर एवं शत्रुसे भय हो ॥ ४० ॥

मोक्षगत सूर्य कामगत चन्द्र फलम्—

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे कामस्थिते यदि ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति कार्यं च जयमेव हि ॥ ४१ ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और काममार्गी चन्द्रमा हो तो सर्वकार्य की सिद्धि और जय प्राप्त हो ॥ ४१ ॥

मोक्षगत सूर्य चन्द्र फलम् ।

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
विग्रहं दारुणं चैव विघ्नं तस्य भविष्यति ॥ ४२ ॥

टीका-मोक्षमार्गी सूर्य और चन्द्रमा हो तो दारुण विग्रह और विघ्न प्राप्त हो ४२

पन्थाराहु विचारः—

यात्रा युद्धे विवाहे च प्रवेशे नगरादिषु ।
व्यापारेषु च सर्वेषु पन्थाराहुः प्रशस्यते ॥ ४३ ॥

टीका—यात्रा में, युद्ध में, विवाह में, नगरादिक के प्रवेश में और सब प्रकार के व्यापारों में राहु मार्ग में शुभदायक होता है ॥ ४३ ॥

गर्गादिमतेन विचारः—

ऊषः प्रशंसते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः ।
अङ्गिरा मनउत्साहं विप्रवाक्यं जनार्दन ॥ ४४ ॥

टीका—गर्गमुनि के मत से रातकी पिछली ५ घड़ी उषाकाल में यात्रा शुभ, बृहस्पतिजी के मत से शुभ शकुन में यात्रा शुभ, अङ्गिरा ऋषि के मत से मन के उत्साह में यात्रा शुभ और जनार्दन के मत से ब्राह्मण के कथनानुसार यात्रा शुभ है ॥ ४४ ॥

शुभाशुभ वाहनानि—

आत्मनो जन्मनक्षत्राद्दिननक्षत्रमेव च ।
एकीकृत्य हरेद्भागं नन्दशेषे च वाहनम् ॥ ४५ ॥
रासभाऽश्वो गजो मेषो जंबुकः सिंहसंज्ञकः ।
काकश्चैव मयूरश्च हंस इत्येव वाहनम् ॥ ४६ ॥

—फलम्—

रासभे अर्थनाशश्च धनलाभश्च घोटके ।
लक्ष्मी प्राप्तिर्गजाख्ये हि मेषे च मरणं ध्रुवम् ॥ ४७ ॥
जंबुके स्वल्पलाभश्च सर्वसिद्धिश्च सिंहके ।
काके च निष्फलं कार्यं मयूरे च सुखावहम् ॥
हंसे तु सर्वसिद्धिःस्या द्वाहनानां फलं स्मृतम् ॥ ४८ ॥

टीका—अपने जन्मनक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनै, फिर नौका भाग देने से जो शेष बचैं उन्हें वाहन जाने, १ बचे तो गर्दभ वाहन होता है, यह अर्थनाश करता है। २ बचने से घोड़ा, यह धन देता है। ३ बचै तो हाथी, यह लक्ष्मी देता है। ४ बचे तो मेढा, मृत्यु देता है। ५ बचे जम्बुक, यह थोड़ा लाभ करता है। ६ बचै तो सिंह, यह सब कामों को सिद्ध करता है। ७ बचै तो काक, यह निष्फल जानो। ८ बचै तो मोर, यह सुख देता है। ९ बचै तो हंस, यह सिद्धि देता है॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

अङ्कमुहूर्तविचारः।

तिथयः पञ्चगुणिताः सप्तभिर्भाजिताश्च ताः ॥
वाराः स्युर्वह्निगुणिता वसुभिश्चैव भाजिताः ॥
चतुर्गुण्यानिभान्यऽङ्क भाजितानि यथाक्रमम् ॥ ४९ ॥

टीका—जिस तिथि में यात्रा करनी हो उसे १५ से गुणाकर के सात का भाग दे और वारको तीन से गुणकरके ८ का भागदे। इसी प्रकार नक्षत्रको४ से गुण करके ६ का भागदे, जो शेष बचै उसका फल इस प्रकार होता है ॥४९॥

फलम्—

पीडास्यात्प्रथमेशून्ये मध्यशून्ये महद्भयम्।
अन्त्यशून्ये तु मरणं त्र्यंके च विजयी भवेत् ॥ ५० ॥

टीका—तिथिको भाग देने पर शून्य शेष बचे तो पीड़ा, वारके भाग में शून्य बचने से बहुत भय और नक्षत्र को भाग देने से शून्य बचे तो मृत्यु होती है। इसके अतिरिक्त यदि तीनों स्थानों में अङ्क बचे तो विजय प्राप्त हो ॥५०

यात्रायां शुभाशुभविचारः।

अर्के क्लेशमनर्थकं च गमने सोमे च बन्धुप्रियं।
चाङ्गारेऽनलतस्करज्वर भयं प्राप्नोति चार्थंबुधः ॥५१॥
क्षेमारोग्यसुखं करोति च गुरौ लाभश्च शुक्रे शुभो।
मन्दे बन्धन हानि रोगमरणान्युक्तानि गर्गादिभिः ॥५२॥

टीका—रविवारको जाने से मार्ग में क्लेश और अर्थ की हानि, सोमवार को जाने से बन्धु एवं प्रिय दर्शन, मंगल में अग्नि से चोर से एवं ज्वर से भय, बुधवार में द्रव्य और सुख प्राप्ति, गुरुवार में आरोग्य सुख। शुक्रवार में लाभ

और शुभफल की प्राप्ति एवं शनिवार में यात्रा करने से बंधन, रोग और मृत्यु की प्राप्ति होती है ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

होराकथनं तत्फलञ्चाह ।

वारात्षष्ठस्य षष्ठस्य होरा सार्द्धद्विनाडिका ।
अर्कशुक्रौ बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवो धरासुतः ॥ ५३ ॥
गुरुर्विवाहे गमने च शुक्रो बोधेसौम्यः सर्वकार्येषु चन्द्रः ;
कुजे च युद्धं रवि राजसेवामन्दे च वित्तंत्विति होरयोगः ५४
यस्य ग्रहस्य वारेपि कर्म किंचित्प्रकीर्तितम् ।
तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वं कर्म विधीयते ॥ ५५ ॥

टीका—प्रथम होरा २॥ घड़ी उसी वारका होता है। द्वितीय होरा उससे छठें वारका होता है। इसी प्रकार से हरेक ढाई २ घड़ीमें क्रमसे छठें २ ग्रहका होरा होता है। उसका क्रम इस प्रकार से है। प्रथम रविवार को २॥ घड़ी रवि का ही होरा, फिर शुक्र का होरा २॥ घड़ी, फिर २॥ घड़ी शुक्र से छठाँ बुधका, फिर २॥ घड़ी बुध से छठे चन्द्रका इसी क्रम से प्रत्येक का जानना चाहिये। अब किस ग्रह के होरा का क्या फल होगा सो कहते हैं—गुरुका होरा विवाह में, शुक्र का यात्रा में, ज्ञान प्राप्ति में बुधका, सम्पूर्ण कार्यों में चन्द्रमा का, युद्ध में मंगल का राज सेवा में सूर्य का, धन संग्रह में शनि का होरा श्रेष्ठ है। जिस ग्रह के वार में जो काम कहा है वह काम उस ग्रह के होरा में भी करना शुभ होता है ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

अथ होराफलं तत्रादौ सूर्यहोराफलम्—

सूर्यस्यहोरे रजकी सुवस्त्रं कुमारिका विप्रचतुष्टयं च ।
काकत्रयं द्वौ नकुलौ तथैव चाष स्तथैकोवृषभश्च गौश्च ५६

टीका—रवि के होरा में गमन करने से जो शकुन होते हैं, उसको कहते हैं। धोबिन वस्त्र लिये, कुमारी, ४ ब्राह्मण, ३ काक, २ नेउला, २ चाष, १ बैल और १ गाय शकुन में मिलते हैं ॥ ५६ ॥

चन्द्रहोराफलम्—

चन्द्रस्यहोरे द्विजयुग्म काक भेरी मृदङ्गा नकुलाः खरोष्ट्रौ ।
हयश्चगो मेष शुनस्तथैव पुष्पाणि नारीद्वय मेव मार्गे ॥५७॥

टीका—चन्द्रके होरा में गमन करने से मार्ग में दो ब्राह्मण, काक, नगाड़े,

मृदंग, नेउला, गधा, ऊँट, घोड़ा, गाय, मेढा, कुत्ता, पुष्प और दो स्त्रियां मिलती हैं ॥ ५७ ॥

भौमहोराफलम्

मार्जारयुद्धं कलहःकुटुम्बे रजस्वलास्त्री भवनस्यदाहः ।
नपुंसकः श्वत्रितयं चरण्डा नग्नो च अग्नी धरणीसुतस्य ५८

टीका—मङ्गल के होरा में यात्रा करने से बिल्लियोंकी लड़ाई, स्त्री पुरुषोंका कलह, रजस्वला स्त्री, जलता हुआ घर, नपुंसक, ३ कुत्ते, नग्न ब्राह्मण, मार्ग में मिलते हैं ॥ ५८ ॥

बुधहोराफलम्—

बुधस्यहोरे शकुनश्च सर्वः स्त्रीपुत्रयुक्ता कलशास्तुपूर्णाः ।
सुचातकश्चापगजोकुमारः पुष्पाणि नारी खलु दर्पणश्च ॥५९॥

टीका—बुधके होरामें यात्रा करने से पुत्रवती स्त्री, जल भरा हुआ कलश, चातक पक्षी वा चाप, हाथी, पुष्प, स्त्री और दर्पण मार्ग में मिलते हैं ॥५९

गुरुहोराफलम् ।

सुरेज्य होरा गणिका च धेनुः स्त्रीबालयुक्ता सजलोघटश्च ।
ऊर्णा च काको नकुलो बकश्च हंसश्च राजा बहवस्तु वैश्याः ॥६०॥

टीका—गुरु के होरामें ब्राह्मण, गणिका, गाय, पुत्रलिये, स्त्री, जलपूर्ण घट, ऊनी वस्त्र, नेउला, बगुला, हंस, राजा, बहुतवैश्य मिलते हैं ॥ ६० ॥

शुक्रहोराफलम्—

शुक्रस्यहोरे गणिका द्विजेन्द्रः काकास्त्रिपञ्चांऽथनपुंसकोवा ।
मद्यं हि मांसं गणका च धेनुर्धान्यं च शूद्रत्रितयं च वैश्यः ॥६१॥

टीका—शुक्र के होरा में वेश्या, ब्राह्मण, ३ वा ५ काक, वा नपुंसक, मद्य, मांस, ज्योतिषी, गौ, धान्य तीन शूद्र तथा वैश्य मिलते हैं ॥ ६१ ॥

शनिहोराफलम्—

पतंगसूनोर्यवनश्च नग्नो रजस्वलास्त्री मृतकस्तथैव ।
पिशाच गृध्रो विधवा च वह्निनर्नपुंसकश्चाथ युवा प्रचण्डः॥६२॥

टीका-शनिके होरामें नंगा, यवन, रजस्वलास्त्री, प्रेत, पिशाच, गिद्ध पक्षी विधवा, स्त्री, अग्नि, नपुंसक और प्रचंडयुवापुरुष यात्रा करने पर मार्गमें मिलते हैं ॥ ६२ ॥

मनुवचनम्—

गमने प्रति राजस्तु सन्मुखो दर्शने न च ।
प्रशस्ताश्चैवसंभाषेत्सर्वानेतांश्च कीर्तयेत् ॥ ६३ ॥

टीका—हे राजन्! यात्रा के समय पूर्वोक्त शकुनों का कीर्तन, श्रवण व दर्शन न हो तो मनमें स्मरण करके यात्रा करने से भी शुभ फल होता है ॥६३॥

घातचन्द्रनिर्णय—

प्रयाण काले युद्धे च, कृष्यौवाणिज्य संग्रहे ।
विवादेचगृहारम्भे वर्जिता घात चन्द्रमा ॥ ६४ ॥

टीका-यात्रा, युद्ध, कृषी, व्यापार, अन्नादि के संग्रह में विवाद और गृहारम्भ में घात चन्द्रमा वर्जित है ॥ ६४ ॥

घातप्रकरणम्—

घाततिथिं घातवारं घातनक्षत्र मेव च ।
यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञो ह्यन्यकर्मसु शोभनम् ॥ ६५ ॥

टीका—घाततिथि, घातवार और घात नक्षत्र, यात्रा में वर्जित है। अन्य कार्यों में शुभ जाने ॥ ६५ ॥

मेषे रविर्मघा प्रोक्ता षष्ठी प्रथमचन्द्रमाः ।
वृषभे पंचमो हस्तश्चतुर्थी शनिरेव च ॥ ६६ ॥
मिथुने नवमः स्वाती अष्टमी चन्द्रवासरः ।
कर्केद्विरनुराधा च बुधे पष्ठी प्रकीर्तिताः ॥ ६७ ॥
सिंहे पष्ठश्चन्द्रमाश्च दशमी शनि मूलके ।
कन्यायां दशमश्चन्द्रः श्रवणः शनिरष्टमी ॥ ६८ ॥
तुलेगुरुर्द्वादशीस्याच्छतं तृतीयचन्द्रमाः ।
वृश्चिके रेवती सप्त दशमी भार्गवस्तथा ॥ ६९ ॥
धने चतुर्थो भरणी द्वितीया भार्गवस्तथा ।
मकरेऽष्टमे रोहिणी द्वादशी भौमवासरः ॥ ७० ॥
कुंभे एकादशश्चार्द्रा चतुर्थी गुरुवासरः ।
मीने च द्वादशः सार्पं द्वितीया भार्गवस्तथा ॥ ७१ ॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
चन्द्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु		शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वा.	अनु	मूल	श्रवण	शत	रेवती	भरणी	रोहि.	आर्द्रा	आश्ले
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

टीका—मेषादि १२ राशिवालों को घातचन्द्रादि चतुष्टय वर्जित कर शुभ नक्षत्र आदि देख कर यात्रा करना चाहिये ॥ ६ ॥ ११ ॥

कालचन्द्रः—

मेषेवेदा वृषेऽष्टौ च मिथुने च तृतीयकः।
दशकर्के रविः सिंहे कन्याश्नङ्कः प्रकीर्तितः ॥ ७२ ॥
षट्तुले वृश्चिकेखेंदु धनेरुद्राः प्रकीर्तिताः।
मकरे ऋषयः प्रोक्ता कुम्भेवाणा उदाहृताः।
मीनेत्वब्धिः कालचन्द्रः शौनकश्चेदमब्रवीत् ॥ ७३ ॥

टीका—मेषको ४ वृषको ८ मिथुन को ३ कर्कको १० सिंहको १२ कन्या को ९ तुला को ६ वृश्चिक को १० धन को ११ मकर को ७ कुभंको ५ और मीन राशि को ४ चन्द्रमा कालचन्द्र होता है। यह कालचन्द्र शौनक ऋषिप्रोक्त सब कामों में वर्जित है ॥ १२-१३ ॥

तिथिपरत्वे वर्जित लग्नम्—

नन्दायामलिहर्योस्तु तुलामकरयोस्तथा।
भद्रायां मीन धनुषोः कालस्तिष्ठति सर्वदा ॥ ७४ ॥
जयायां स्त्रीमिथुनयो रिक्तायां मेषकर्कयोः।
पूर्णायां कुंभवृषयो र्मनुष्यं मरणं ध्रुवम् ॥ ७५ ॥

टीका—नन्दातिथि को वृश्चिक, सिंह, तुला एवं मकर। भद्रा तिथि को मीन एवं धन। जया को कन्या एवं मिथुन। रिक्ता को मेष एवं कर्क। पूर्णातिथि को कुम्भ एवं वृष लग्न यात्रा में वर्जित है ॥ १४ ॥ १५ ॥

महदाडलमुहूर्त्तः।

सूर्यभाद्र गणयेच्चान्द्रं सप्तभि र्भागमाहरेत्।
त्रिषट्कं भ्रमणं चैव द्विःसप्त महदाडलम् ॥ ७६ ॥

प्रथमं पञ्च चत्वारि आडलो नास्ति निश्चितम् ।
आडले ताडनं प्रोक्तं भ्रमणो कार्यनाशनम् ॥ ७७ ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनै, ७ का भाग देने पर ३ और ६ शेष बचे तो भ्रमण, २।७ बचै तो महत्--आडल योग होता है । वह ताड़ना करता है १।४।५ बचे तो आडल नहीं होता । यह यात्रा में कहा गया है ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

हैंवरमुहूर्त्तः—

सूर्यभाद् गणयेच्चान्द्रं पक्षादितिथि वार युक् ।
नवभिस्तु हरेद्भागं सप्तशेषे तु हैंवरम् ॥ ७८ ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिन कर पक्ष, तिथि, वार मिलाय, ९ का भाग देने पर ७ बचै तो हैंवर योग होता है, यह यात्रा में शुभ है ॥ ७८ ॥

घवाडमुहूर्त्तः ।

सूर्यभाद् गणयेच्चान्द्रं त्रिगुणं तिथिमिश्रितम् ।
नवभिस्तु हरेद्भागं त्रीणिशेषं घवाड़कम् ॥ ७९ ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिन कर तिगुन करै, फिर उसमें शुक्ल प्रतिपदादि तिथियों को मिलावे, ९ का भाग दे, तीन शेष बचै तो घवाड़ मुहूर्त जाने ॥ ७९ ॥

वारपरत्वेन स्वरविचारः—

गुरौ शनौ रवौ भौमे शुभो वै दक्षिणः स्वरः ।
अन्यवारेषु वामस्तु स्वरश्चैव शुभः स्मृतः ॥ ८० ॥
निर्गमे वामतः श्रेष्ठः प्रवेशे दक्षिणः शुभः ।
यः स्वरः सच नासाग्रे योगिनां मतमीदृशम् ॥ ८१ ॥

टीका—गुरु, शनि, रवि और भौमवार में दक्षिण स्वर चलने पर प्रवेश करने में शुभ । सोम, बुध और शुक्रवार में वाम स्वर के चलने पर यात्रा करना श्रेष्ठ है, ऐसा स्वर के ज्ञाता कहते हैं ॥ ८० ॥ ८१ ॥

वारपरत्वेन छायाविचारः—

अष्टौपादाबुधेस्यु र्नवधरणिसुते सप्तजीवे पदानि ।
ज्ञेयं चैकादशार्के शनिशशिभृगुषु प्रोक्तमर्थे चतुष्कम् ॥

तस्मिन्काले मुहूर्ते सकलगुणयुते कार्यसिद्धिः शुभोक्ता ।
नास्मिन् पञ्चाङ्गशुद्धिर्न खलु शशिबलं भाषिते गर्गमुख्यैः ॥ ८२

टीका—८ पैर अपनी छाया देख कर बुधवार को यात्रा करे, ९ पैर छाया देख सोमवार को यात्रा करै, ७ पैर छाया में गुरु को, ११ पैर छाया में रवि को, ४ पैर छाया में शनि सोम और शुक्रवार को यात्रा करे, तो यह सर्व गुणयुक्त सिद्धि मुहूर्त होता है। इसमें चन्द्रके देखने की आवश्यकता नहीं है। यह गर्गाचार्य का वचन है ॥ ८२ ॥

छाया पाद वार							
वार	सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
पाद	११	४	९	८	७	४	४
छाया							

यात्रालग्नविचारः—

चरलग्ने प्रयातव्यं द्विःस्वभावे तथा नरैः ।
लग्नेस्थिरे न गन्तव्यं यात्रायां क्षेममीप्सुभिः ॥ ८३ ॥

टीका—चारो लग्नमें और द्विःस्वभाव लग्नमें शुभ की अभिलाषा करने वाले यात्रा करें, शेष लग्नमें यात्रा न करें ॥ ८३ ॥

द्वादशस्थानानुसारेण यात्रालग्ने ग्रहबलम्—

तनुःस्थानम्—

जन्मस्थंचाष्टमं त्याज्यं लग्नं द्वादशमेव च ।
ग्रहाणां च बलं वीक्ष्य गच्छेद्दिग्विजयं नृपः ॥ ८४ ॥

टीका—लग्न में अष्टम एवं द्वादश स्थान में पापग्रह को छोड़, ग्रह बल देख यात्रा करने से विजय प्राप्त होती है ॥ ८४ ॥

स्थाने यदा स्युर्गुरुसौम्यशुक्राः सिध्यन्तिकार्याणि च पंचमेऽह्नि ।
राज्ञःपदं वा सुखदेशलाभं मासस्यमध्ये ग्रहभावयुक्तम् ॥ ८५ ॥

टीका—लग्नमें गुरु, बुध वा शुक्र हों तो यात्रा करने पर ५ दिन में वा १ मास में राज्यपद व देश लाभ हो ॥ ८५ ॥

धनस्थानम्—

जीवो बुधो वा भृगुनंदनो वा स्थानेद्वितीये गमनस्यकाले ।
सुवस्त्रलाभं चतुरङ्गलाभं मासस्य मध्ये च चतुर्दशेऽह्नि ॥८६॥

टीका—दूसरे स्थान में गुरु, बुध वा शुक्र हो तो यात्रा करने पर १४ दिनमें वा १ मास में वस्त्र और घोड़ा मिलें ॥ ८६ ॥

यदा धनस्था रविराहुभौमाः सौरिश्च केतु स्त्रिभिरेवमासैः ।
वित्तस्यनाशं च ददातिमृत्युं सत्यंहि वाक्यं मुनयोवदन्ति ॥८७॥

टीका—दूसरे स्थान में रवि, राहु, मंगल, शनि वा केतु हों तो यात्रा करनेसे ३ महीने में धन हीन हो कर मृत्यु होती है। यह मुनियों का सत्य वचन जाने ८७

तृतीयस्थानम्—

स्थानेतृतीये गुरुभार्गवौ च सोमस्यसूनुश्च निशापतिश्च ।
करोतिकार्यं सफलं च सर्वं पक्षद्वयेनापि दिनत्रयेण ॥८८॥

टीका--तीसरे स्थान में गुरु शुक्र चन्द्र वा बुध हो तो यात्रा करने से ३ दिन में वा १ मास में कार्य सिद्ध हो ॥ ८८ ॥

चतुर्थस्थानम्—

क्रूराश्चतुर्थे गमने यदा तु नस्युश्च शेषाः शुभदा हि कार्ये ।
तत्रापि देवन भवेच्चसिद्धि र्मासत्रयेणापि दशाहमध्ये ॥८९॥

टीका--यात्रा के लग्न से क्रूरग्रह चौथे स्थान में हों तो शेष शुभग्रह सम्पूर्ण कार्यों का नाश करते हैं तथापि दैवयोग से इनमें यात्रा करने पर १० दिन के उपरान्त वा ३ मास में कार्य सिद्ध होता है ॥ ८९ ॥

पंचमस्थानम्--

गुरुर्भृगुश्चन्द्रबुधौ यदा स्याच्छुभे च लग्ने तु सुते च युक्ताः ।
कुर्वन्तिकार्यस्य च सिद्धिमिष्टां मासद्वयेनापिवदन्तिसत्यम् ॥९०॥

टीका—गुरु, शुक्र, चन्द्र वा बुध पंचम स्थानमें हों तो यात्रा करने से दो मास में कार्य सिद्ध होता है ॥ ९० ॥

रिपुस्थानम्—

जीवश्च शुक्रश्च बुधश्च षष्ठे करोतियात्रां सफला विलग्नात् ।
पक्षद्वयेनापि वदन्तिमत्यं सौम्यर्क्षसंस्थं सबलश्च चन्द्रः ९१॥

टीका—गुरु, शुक्र वा बुध छठें स्थान में हों तो यात्रा करना सफल जाने और मृगशिरा नक्षत्र का चन्द्रमा उस स्थान में हो तो सम्पूर्ण कार्य १ मास में सिद्धि होंगे ऐसा जाने ॥ ९१ ॥ सप्तमस्थानम्—

चेत्सप्तमस्थागुरुसोमसौम्याः कुर्वन्तियात्रा विजयंनृपाणाम् ।
सर्वेनृपास्तस्यभवन्तिवश्या मासद्वयेनापि च पंचभिर्दिनैः ॥९२॥

टीका—सातवें स्थान में गुरु, सोम वा बुध हो तो यात्रा करने से राजा को विजय प्राप्ति हो और सब राजा ५ दिन वा दो मास में उसके अधीन हो जायँ ॥ ९२ ॥

अष्टमस्थानम्—

क्रूराश्च सर्वे यदि लग्नकाले मृत्युस्थिता मृत्युकराभवन्ति ।
सौम्यो गुरुर्वा भृगुनंदनो वा दीर्घायुषं मृत्युकरश्च चन्द्रः ॥९३॥

टीका—क्रूरग्रह आठवें स्थान में हों तो यत्रा में मृत्युकारक जाने, सौम्यग्रह आठवें स्थान में हो तो यात्रा में आयु की वृद्धि जानो, चन्द्रमा आठवें होने से यात्रा करने पर मृत्यु जाने ॥ ९३ ॥

नवमस्थानम्—

धर्मस्थिता यदि भवन्तिहि पापखेटाःप्रयाणकाले च तथैव चन्द्रमाः ।
तदाजयं वै सबले च चन्द्रे मासत्रयेणापि दिनैश्चतुर्भिः ॥९४॥

टीका—नवमस्थान में पापग्रह वा बलवान चन्द्र के होने पर यात्रा करने से तीन महीने वा चार दिन में कार्य सिद्ध होता है ॥ ९४ ॥

धर्मस्थितौ वा यदि जीवशुक्रौ सोमस्यसूनुर्यदि लग्नकाले ।
लग्नेचरे वा यदि वा स्थिरे वा कार्यस्यसिद्धिश्च भवेच्चलाभः ॥९५॥

टीका—धर्मस्थान में गुरु, शुक्र, सोम वा बुध, चर वा स्थिरलग्न में हो तो यात्रा करने पर कार्य सिद्ध और लाभ होता है ॥ ९५ ॥

दशमस्थानम्—

कर्मस्थिताः पापखगास्तु सौम्याः कुर्वन्तिकार्यं शनिवर्जिताश्च ।
लग्नेचरे वा यदि वा स्थिरे वा मासत्रयेणापि च चैकमासात् ॥९६॥

टीका—दशम स्थान में शनिको छोड़ शेष पापग्रह वा शुभ ग्रह चर वा स्थिर लग्न में हों तो यात्रा करने से ३ मास में १ मासमें कार्य सिद्ध होता है ॥९६॥

लाभस्थानम्—

लाभस्थितौ गुरुबुधौ भृगुनन्दनो वा क्रूराश्च सर्वे शशिनैवयुक्ताः।
सद्यः फलाप्तिश्च भवेत्प्रयातुः पक्षैकमध्ये दिवसत्रये वा ॥ ९७ ॥

टीका—ग्यारहवें स्थानमें सूर्यादि पापग्रह चन्द्रमाके साथ वा गुरु आदि शुभ ग्रह हों तो यात्रा करने से १ पक्ष में वा तीन दिन में कार्य सिद्ध जाने ॥ ९७ ॥

द्वादशस्थानम्—

सर्वेशुभा द्वादशसंस्थिताश्च यात्रा भवेत्तत्र विचित्रलाभः।
पापाश्च सर्वे व्ययदा भवन्ति यात्रा फलंगर्गमुनिप्रणीतम् ॥ ९८ ॥

टीका—द्वादश स्थान में सब शुभ ग्रह हों तो यात्रा करने से विचित्र लाभ हो और यदि पापग्रह हों तो व्ययकारक जानें। इस भाँति से यात्रा का फल गर्गमुनि ने कहा है ॥ ९८ ॥

वर्णपरत्वेन प्रस्थानवस्तूनि—

यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधुं च स्थापयेत्फलम्।
विप्रादिक्रमतः सर्वं स्वर्णधान्याऽम्बरादिकम् ॥ ९९ ॥

टीका—ब्राह्मण को यज्ञोपवीत, क्षत्रियको शस्त्र, वैश्य को मधु और शूद्र को फल का प्रस्थान रखना चाहिये और सोना वस्त्र एवं धान्य सब कोई साथ में रक्खें ॥ ९९ ॥

प्रस्थानदिनप्रमाणम्—

राजादशाहं पञ्चाऽहमन्योन्यप्रस्थितोवसेत्।
अङ्गप्रस्थानसम्पूर्णा वस्तुप्रस्थानकेऽर्द्धकम् ॥ १०० ॥

टीका—राजा को प्रस्थान धरने पर दस दिन, औरों को ५ दिन तक मुहूर्त उपयोगी होता है, उपरान्त वह मुहूर्त बिगड़ जाता है। मकान से बाहर जाकर रहे वह पूर्ण प्रस्थान है। वस्तु प्रस्थान में मुहूर्त का आधा फल जानें ॥ १०० ॥

प्रस्थानस्थानम्—

गेहाद्गेहान्तरं गर्गः सीम्नः सीमान्तरं भृगुः।
बाणक्षेपं भरद्वाजो वसिष्ठो नगराद्बहिः।
प्रस्थानेपि कृते नेयाद् महादोषान्विते दिने ॥ १०१ ॥

टीका—गर्ग के मतसे दूसरे घर में, भृगु के मत से सीमा के बाहर, भरद्वाज के मत से जितनी दूर बाण धनुष चढ़ाकर छोड़ने से जाता हो उतनी दूर पर और

वशिष्ठ के मत से नगर के बाहर प्रस्थान करै, तिस पर भी महादोष युक्त दिन में यात्रा न करै ॥ १०१ ॥

प्रस्थानकाले वर्जितकर्म—

क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडद्यूताश्रुदुग्धासव।
क्षीराभ्यंगमयासिताम्बरवमिस्तैलंकटूज्झेद्गमे ॥
क्षीरक्षौररती: क्रमात् त्रिशरसप्ताहं परं तद्दिने।
रोगंस्त्र्यार्तवकं सितान्यतिलकं प्रस्थानकेपीतिच ॥१०२॥

टीका—क्रोध, क्षौर और स्त्री प्रसंग, परिश्रम, मांस, गुड, द्यूत, रोदन, दूध, मद्य, क्षीर, उबटन, आँवला, नीलवस्त्र, वमन, तेल और कटुपदार्थ, प्रस्थान के दिन वर्जित हैं। परन्तु प्रस्थान के ३ दिन पहले से दूध, ६ दिन पहले से क्षौर और ७ दिन पहले से स्त्री प्रसंग न करे, शेष वस्तु केवल प्रस्थान के दिन वर्जित हैं और लाल,काला, तिलक लगाना एवं स्त्री के ऋतु तथा रोग सम्बन्धी चिन्ता भी प्रस्थान के दिन वर्जित हैं ॥ १०२ ॥

दुष्टशकुनम्—

औषध्या च नियुक्तो हि धान्यंकृष्णां तु यद्भवेत्।
कार्पासश्च तृणां शुष्कं शुष्कंगोमयमेव च ॥ १०३ ॥

टीका—औषधि लिये मनुष्य, काला धान्य, कपास, सूखे तृण और सूखा हुआ गोबर, प्रस्थान के समय यदि सामने से आवे तो अशुभ जाने ॥१०३ ॥

इंधनं च तथांगारं गुडसर्पि स्तथाऽशुभम्।
अभ्यक्तो मलिनो मन्द स्तथानग्नश्चमानवः ॥ १०४ ॥

टीका—ईन्धन, जलती हुई आग, गुड, घीं, शरीर में तेल लगाये, मलीन, मंद और नंगा मनुष्य, प्रस्थान के समय संमुख आने से अशुभ जाने ॥१०४॥

मुक्तकेशो रुजार्तश्च काषायाम्बरधारिणः।
उन्मत्तः कन्थितोऽसत्यो दीनोवाथ नुपुंसकः ॥ १०५ ॥

टीका—बिखरे बालोंवाला मनुष्य, रोगी, गेरुआ वस्त्र पहने, उन्मत्त, कथरी लिये, पापी, दरिद्र नपुन्सक प्रस्थान के समय सामने आने से अशुभ जाने ॥ १०५ ॥

आयःपङ्कस्तथा चर्म केशवन्धनमेव च।
तथानिःशारवस्तूनि पिरायाकादि तथैव च ॥ १०६ ॥

टीका—लोहखंड, कीचड़, चर्म, केश बाँधता हुआ मनुष्य, निःसार पदार्थ और पिण्याक के सामने आने से प्रस्थान के समय अशुभ जाने ॥ १०६ ॥

चाण्डालस्य शवश्चैव राजबन्धनपालकाः ।
वधकाः पापकर्माणो गर्भिणीस्त्री तथैव च ॥ १०७ ॥

टीका—चांडालका मुर्दा, राजबन्धन का पालक, वध करनेवाला पापी और गर्भवती स्त्रीको भी प्रस्थान के समय सन्मुख आनेसे अशुभ जाने ॥१०७॥

तुषभस्मकपालास्थिभिन्नभाण्डानि यानि च ।
रिक्तानि चैव भाण्डानि मृतसारङ्ग एव च ॥
एवमादीनि चान्यानि ह्यप्रशस्तानि दर्शने ॥ १०८ ॥

टीका—भूसी, भस्म, खोपड़ी, टूटे फूटे एवं खाली वर्तन, मरा हुआ सारंग पक्षी, आदिका प्रस्थान के समय सन्मुख आना अशुभ है ॥ १०८ ॥

क्वयासिदिहआगच्छ किंते तत्र गतस्य तु ।
अन्यशब्दाश्चयेऽनिष्टा स्तेविपत्तिकरा अपि ॥ १०९ ॥

टीका—कहाँ जाते हो, ठहरो, आओ, वहाँ जाने से क्या होगा, ऐसे अनिष्ट शब्द विपत्तिकारक जाने ॥ १०९ ॥

ध्वजादौ वायसांऽऽस्थानं कव्यदानविगर्हितम् ।
स्खलनं वाहनानां च वस्त्रसङ्गस्तथैव च ॥ ११० ॥

टीका—ध्वजा पर काकका बैठना, अग्निदान, वाहनों का गिरना और वस्त्र का किसी पदार्थ में उलझना, आदि को यात्रा और प्रस्थान के समय अशुभ जाने ॥ ११० ॥ दुःशकुनपरिहारः—

दृष्टे निमित्ते प्रथमे अमङ्गल्यविनाशनम् ।
केशवं पूजयेद्विद्वान् स्तवेनमधुसूदनम् ॥ १११ ॥

टीका—यात्रा समय उपरोक्त अपशकुनों में जो पहले अमंगल दृष्टि आवे तो नाश कारक जाने । इसके दोष को दूर करने के लिये विष्णु पूजा और विद्वान् से विष्णु सहस्र नाम का पाठ करावे ॥ १११ ॥

द्वितीये च ततो दृष्टे प्रतीपः प्रविशद्गृहम् ।
अथेष्टानिप्रवक्ष्यामि मंगलानि तथानघ ॥ ११२ ॥

टीका—जो दूसरी बार भी अपशकुन दृष्टि में आवै तो घर को लौट जाय अर्थात् यात्रा बन्द कर दे । अब मङ्गलकारक शकुनों को कहते हैं ॥ ११२ ॥

यात्रासमये शुभाशुभशकुनविचारः—

प्रशस्तोवाद्यशब्दश्च भिन्नभेर्यशुभावहः ।
पुरतो च इहागच्छ गच्छपश्चाद्विपर्ययः ॥ ११३ ॥

टीका—यात्रा समय में बाजों का शब्द शुभ, परन्तु टूटे बाजोंका शब्द अशुभ है । सम्मुख से कोई आवो ऐसा कहता शुभ और पिछाड़ी कहे तो अशुभ जाने । जाओ ऐसा पीछे यदि कहे तो शुभ और आगे से कहने पर अशुभ जाने ॥ ११३ ॥

श्वेतपुष्टाः सुमनसः पूर्णकुम्भस्तथैव च ।
जलजाःपक्षिणश्चैव मांसं मत्स्यश्चपार्थिव ॥ ११४ ॥

टीका—यात्रा के समय सफेद पुष्ट, फूल, जल पूर्ण कुम्भ जलका पत्नी और मछली के मांस को शुभ जाने ॥ ११४ ॥

गावस्तुरङ्गमो नागो वृद्धएकः पशुस्त्वजा ।
त्रिदशाः सुहृदाविप्रा ज्वलितश्च हुताशनः ॥ ११५ ॥

टीका—गौ, घोड़ा, हाथी, वृद्ध, एक पशु, बकरी, देवमूर्ति, मित्र, ब्राह्मण, जलती अग्नि ॥ ११५ ॥

गणिकां च महाभाग दूर्वाश्चार्द्राश्च गोमयम् ।
रुक्मं रौप्यं च ताम्रं च सर्वरत्नानिचाप्यथ ॥ ११६ ॥

टीका—गणिका, हरी दूब, गोबर, सोना, चाँदी, रूपा, तांबा सब प्रकार के रत्न यात्रा के समय सामने आने से शुभ जाने ॥ ११६ ॥

औषधानि च सर्वज्ञो यवाः सर्वार्थकास्तथा ।
खड्ग पात्र पताका च मृत्तिकायुधपीठकम् ॥ ११७ ॥

टीका—औषधि, सर्वज्ञ पुरुष, यव, सफेद सरसों, खड्ग, पताका, मृत्तिका, आयुध, आसन, यात्रा समय शुभ जाने ॥ ११७ ॥

राजलिङ्गानि सर्वाणि शवंरुदितवर्जितम् ।
घृतंदधिपयश्चैव फलानि विविधानि च ॥ ११८ ॥

टीका—सब भाँतिके राज चिन्ह, रोदन रहित मृतक, घी, दही, दूध, और अनेक प्रकार के फलों को यात्रा समय शुभ जाने ॥ ११८ ॥

स्वातिवृद्धिनिनादश्च नन्द्यावर्तश्च कौस्तुभः।
वादित्राणां शुभःशब्दो गम्भीरः सुमनोहरः ॥ ११९ ॥

टीका—अपने लिये आशीर्वाद का शब्द, कौस्तुभ मणिके साथ नद्यावर्त मणिका बजाना तथा उत्तम मनोहर शब्द विघ्ननासक यात्रा में जाने ॥ ११९ ॥

गांधारषड्जऋषभा ये गीताः सुस्वराःस्वरा ।
वायुः निःशर्वरोऽनुष्णाः सर्वविघ्नविनाशकृत ॥ १२० ॥

टीका-गांधार, षड्ज, ऋषभ इन रागों में सुन्दर स्वरसे गाते हुये गीत और मधु शीतल पवन यात्रा में विघ्ननाशक जाने ॥ १२० ॥

प्रतिलोम स्तथानीचो विज्ञेया भयकृद्द्विजः ।
अनुकूलो मृदुः स्निग्धः सुखस्पर्शः सुखावहः ॥ १२१ ॥

टीका—वर्णशङ्कर, नीच और भयानक पक्षी को भयदायक जाने। अपने अनुकूल पक्षी, मृदु, स्निग्ध और सुखस्पर्श पदार्थ को सुखद जाने ॥ १२१ ॥

शस्तान्येतानिधर्मज्ञ यत्रस्यान्मनसः प्रियम् ।
मनसस्तुष्टिरेवात्र परमं जयलक्षणम् ॥ १२२ ॥

टीका-हे धर्मज्ञ ! उपरोक्त शकुनों को शुभ जाने। अपनी प्रिय वस्तु का दर्शन श्रेष्ठ और मनको प्रसन्न करने वाली वस्तु का दर्शन जय दायक जाने ॥ १२२ ॥

चित्तोत्सवत्त्वं मनसःप्रहर्ष शुभस्यल भो विजयप्रवादः ।
माङ्गल्यलब्धिःश्रवणं च राज्ञां ज्ञेयानि नित्यप्रविजयावहानि॥१२३

टीका-यात्रा समय में मनमें हर्ष, शुभ वस्तु का लाभ, विजयवाद और मङ्गल प्राप्तिका श्रवण शुभ जाने ॥ १२३ ॥

क्षेमङ्करा नीलकण्ठाः श्वोलूकखरजम्बुकाः ।
प्रस्थाने वामतः श्रेष्ठा प्रवेशे दक्षिणाः शुभाः ॥ १२४ ॥

टीका—मोर, कुत्ता, उलूक पक्षी, गधा, जंबुक प्रस्थान के समय बाँये हो तो यात्रा में शुभ और प्रवेशके समय दक्षिण भागमें शुभ जाने ॥ १२४ ॥

गोरक्षमतेन तिथिचक्रं तत्फलश्चाह ।

मासेशुक्लादिके पौषे तिथिः प्रतिपदादितः ।
द्वितीयाद्यास्तु माघेम्यु स्तृतीयाद्यास्तु फाल्गुने ॥१२५॥
एवं चान्येषु मासेषु तिथ्योद्वादशसंज्ञिकाः ।
लेख्याश्चक्रे त्रयोदश्याः संविहाय तिथित्रयम् ॥१२६॥
तृतीयादित्रयो तत्र त्रयोदश्यादिके फलम् ।
याने प्राच्यादिकाष्ठासु वक्ष्ये द्वादशघाक्रमात् ॥१२७॥
सौख्यं शून्यं धनार्तिश्च लाभो लाभो भयं धनम् ।
कष्टं सौख्यं कलिर्मृत्युः शून्यं प्राच्यां फलं क्रमात् ॥१२८॥
क्लेशो नैःस्वं व्यथा सौख्यं द्रव्याप्तिर्लाभपीडनम् ।
सौख्यं लाभः कष्टसिद्धिर्लाभः सौख्यं तु दक्षिणे ॥१२९॥
भयं नैःस्वं प्रियाप्तिश्च भय द्रव्यमृतिर्धनम् ।
क्लेशाल्लाभोर्थसिद्धिः स्याल्लाभोमृत्युश्चपश्चिमे ॥१३०॥
धनं मिश्रधनं लाभः सौख्यं लाभः सुखासुखम् ।
कष्टं द्रव्यं च शून्यत्वं कष्टमुत्तरदिक् फलम् ॥१३१॥

पौ	मा	फा	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भय	अर्थलाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	नैःस्व	नैःस्व	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्ले	दुःख	प्रिया०	अर्थलाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	भय	वित्तलाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	धन	द्रव्य प्रा	धनप्राप्ति	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	अर्थलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	धनक्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	कार्य सि०	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	कलि	कष्ट	अर्थ सि०	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	द्रव्यलाभ	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

यात्रा में छायाबल—

शनौ सप्तपादाः कवौषोडशस्यू रवौ भौमके रुद्रसंख्या विधेया।
निशीशे बुधेषष्टीश संख्या विधेया गुरावग्निभू संख्य छायाविधेया॥
न लत्ता न पातं व्यतीपात घातं न भद्रा न संक्रान्ति शूलं तथा च।
नरोयाति संशोध्य छायां यदाहि तदाकार्य सिद्धिस्त्ववश्यंभवेच्च १३३
स्वच्छाया त्रिगुणा विश्व युक्ता भाज्याष्टभिः यदाफलम्।
लोभोऽनर्थ हानि ३ रुक् वृद्धि ५ भयं ६ सिद्धि ७ मृ तिः क्रमात्॥१३४॥

टीका—शनिवार को ७ पांव की छाया, शुक्रवार को १६ पांवकी छाया रवि और मंगलवार को ११ पाँव की, छाया, सोमवार को ८ पांवकी छाया बुधवार को ११ पांव की छाया, और बृहस्पतिको १३ पांवकी छायाका विधान है। छायाके बलमें यात्रा जो करते हैं, उनको लत्ता, पात, व्यतीपात, भद्रा, घात, संक्रान्ति, दिशाशूल इन एक का भी दुष्ट फल नहीं होता है, यदि मनुष्य छायाको शोधकर यात्रा करें तो अवश्य कार्य सिद्धि होती है। अपनी छाया को तिगुना करके उसमें १३ को जोड़ना फिर ८ का भाग देना शेष १ बचे तो लाभ, २ शेपसे लक्ष्मी प्राप्ति, ३ बचने से हानि, ४ बचने से रोग, ५ बचने से वृद्धि, ६ बचने से भय, ७ बचने से सिद्धि और ८ बचने से मृत्यु होती है। (शेष ३-४-६-८ में न यात्रा करे, और शेप १-२-५-७ में यात्रा करें)॥ १३३॥ १३४॥

'का. पा. ये' जय शर्म लाभ 'कु. गि. रौ' मित्राणि सर्व शुभम्।
'गो. रा ये.' प्रियभुग्जनानि 'ल. प. रे' लाभारिनाशादिकम्।
'र. ध्यांगे' कलहः श्रियश्च 'व.ल.गे.' स्थानामि मित्रागमौ।
'रा रो.रां' विपदः परांग' कलहः श्वालेय' शोकावहः॥१३५॥

टीका—दो प्रकार के धान्यो की दो राशि बनावे, वही दोनों राशियों में से एक एक चुटकी धान्य निकालकर तीसरी राशि बनावे, उसमें से तीन तीन दानें जुदा करता जाय, जो तीन राशियों में से एक एक बचे तो, जय और लाभ होय। १ का कहिये, १ पा कहिये १ ये कहिये। ऐसा तीन तीन राशियों से पृथक् पृथक् एक बचै उसका फल जय और लाभ हो, (२) कु क १, ग-क-२ रौ क-२ मित्रादि सर्व सिद्धि।

(३) गौ क ३, रा क २, ये १, प्रिय भाग न प्राप्ति ।
(४ लक ३, प क १ रे क २ लाभ शत्रु नाश ।
(५) र क २ प क १ ग क ३, कलह ।
(६) ब क ३ लक ३, गेक ३, लक्ष्मी और मित्र लाभ ।
(७) रो क ३ रोक ३ रां क २ विवाद ।
(८) स क १ रा क २ ग ३ कलह ।
(९) रवा क १ लेक ३ य १ विशेष शोक ॥ १३५ ॥

जय सर्व लाभाः—

संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९
प्र० राशि	१	१	३	३	२	३	२	१	१
द्वि० राशि	१	३	२	१	१	३	२	२	३
तृ० राशि	१	२	१	२	३	३	२	३	१

अथ वास्तुप्रकरणम्

वन्दे गङ्गाधरं श्रीशं गौरीं गौरीसुतं रविम् ।
वास्तु प्रकाशः सुगमः रच्यते विदुषां मुदे ॥

ग्रामादेरनुकूलत्वादि विचार—

ग्रामादेरनुकूलत्वं देशो भूतग्रहस्य च ।
मासधिष्ण्यादिशुद्धिं च वीक्ष्याऽऽयव्ययभांशकान् ॥ १ ॥

टीका—ग्रामादि की, देश की, पंच महाभूतों की, ग्रहों की, अनुकूलता देखकर मास व नक्षत्र आदि की, शुद्धि तथा आय, वार, अंशकादि की गणना के विचार से अनुकूलता देखकर उस स्थान में गृह निर्माण करना चाहिये ॥ १ ॥

हवलम्—

गुरुशुक्रार्कचन्द्रेषु स्वोच्चादि बलशालिषु ।
गुर्वर्केन्दुबलंलब्ध्वा गृहारम्भः प्रशस्यते ॥ २ ॥

टीका—गुरु, शुक्र, सूर्य, चन्द्र इनको अपने उच्चादिक स्थानों में युक्त देखकर और सूर्य चन्द्र गुरु इनका बल पाकर गृहका आरम्भ करना चाहिये ॥ २ ॥

राशि निर्णयः—

अश्विनी मघ मूला दौ त्रित्रिभैराशिरिष्यते ।
शेष भ द्वितयैर्गेहे विशेषोऽयं प्रकाशितः ॥

टीका—अश्विनी मघा मूल इन नक्षत्रों से तीन तीन नक्षत्रों की एक राशि और दो दो नक्षत्रों की शेष राशि होती हैं ।

गणना नियम—

मैत्री विवाह वद् ज्ञात्वा विपरीता तु नाडिका ।
गृहं तत् स्वामिनो मैं क्यं मृत्युदं तं विवर्जयेत् ॥ ३ ॥

टीका—गृहेश से और जिस नक्षत्र का पिंड बनावे उससे जिस प्रकार से स्त्री पुरुष के नक्षत्र विवाह में गणना का विचार होता है उस प्रकार गणना गिनना, परन्तु नाडी का विचार विपरीत करना, विवाह में स्त्री पुरुष की अलग नाड़ी रहना उत्तम है, इसमें गृहेश और पिण्ड नक्षत्र की एक नाड़ी होना श्रेष्ठ है ॥ ३ ॥

दशाविचार—

गज पञ्चरसा युग सप्तमही गुण नेत्र सुरेश दिशादि क्रमात् ।
पुरदिग् गृह वल्लभ नाम युता नवभाग हता भवनस्य ॥ ४ ॥
नागेष्वर्तु श्रुति सप्तमहीं वह्नि कराः क्रमात् ।
अवर्गा दि स्वराङ्कावे गदिताधरणी सुरैः ॥ ५ ॥
रवि चन्द्र महीसुत राहु सुरेश्वर पूज्य दिश्वरा[१] सुताःशशिजः ।
ध्वज दैत्य गुरू च दशा शुभदा कवि सोम सुरेज्य निशेशसुताः ६

टीका—पूर्वादि दिशाका क्रमसे ८।५।६।४।७।१।३।२ अंक हैं । और अकारादि आठो वर्गों के भी क्रमसे ८।५।६।४।७।१।३।२ अंक है गाँव के नाम जिस वर्ग में हो उसका अंक गृह बनाने वाले के नाम के आदि अक्षर के वर्ग की संख्या को तथा जिस दिशामें गृह बनाना हो उस दिशाके अंकको एकत्र जोड़े,

१ राशिकूटे खेट मैत्र्यामेकोऽपि शुभदो यदा ।
तदाद्वयोः शुभज्ञेयं यदि नाडी पृथक्नहि ॥
गृहर्क्ष गृहनाथर्क्षमेकनाड़ी यदाभवेत् ।
शुद्धंभकूट यदिचेत् वर्णादीन् न विचारेन् ॥

फिर उसमें ९ का भाग देनेसे एक आदि शेष से क्रम से सूर्य चन्द्र मंगल राहु बृहस्पति शनि बुध केतु और शुक्र की दशा होती है शुक्र चन्द्र गुरु और बुध की दशा शुभ फल देती है ॥ ४ ॥ ६ ॥

अनुकूलग्रामः—

स्वनामराशेर्यद्राशिर्द्विशराऽङ्केशदिङ्मितः ।
संग्रामे. शुभदः प्रोक्तस्त्वशुभः स्यात्ततोऽन्यथा ॥ ७ ॥

टीका—अपने राशि से जिस ग्राम की राशि २।५।९।११।१० संख्या हो वह ग्राम शुभ, अन्यथा हो तो अशुभ होता है ॥ ७ ॥

एकभे तसमे व्योम गृहहानिस्त्रिषष्ठगे ।
तूर्याष्टद्वादशेरोगः शेषःस्थाने भवेत्सुखम् ॥ ८ ॥

टीका—एक राशि अथवा सप्तम राशि हो तो शून्य, तीसरी अथवा छठवीं हो तो गृहकी हानि, चौथी आठवाँ हो तो रोगकारक और शेष स्थान शुभ होते हैं ॥ ८ ॥

वर्गशुद्धिः—

अकचटतपयशवर्गा अष्टौते क्रमतः स्मृताः ।
एकोनपंचाशद्वर्णाः स्वरशास्त्रविशारदैः ॥
अवर्गो षोडशज्ञेयाः स्वराः कादिषु पंचसु ।
पंचपंचैववर्णाःस्यु र्यशौतु चतुरक्षरौ ॥ ९ ॥

टीका—अवर्गादि शवर्ग पर्यंत ४९ अक्षर हैं, तिनमें अवर्ग के स्वर १६ और कवर्ग से पवर्ग पर्यन्त प्रत्येक के ५ पाँच, तिनके अक्षर २५ तथा य और श इन दोनों वर्गों के अक्षर चार २ होते हैं । यह स्वर शास्त्र के ज्ञान कहते हैं ॥९॥

वर्गाणां स्वामी—

तार्क्ष्यमार्जारसिंहश्वसर्पाखुगजशूकराः ।
वर्गेशाः क्रमशोज्ञेयाः स्ववर्गात्पंचमोरिपुः ॥ १० ॥

टीका—अवर्ग का स्वामी गरुड़ १. कवर्ग का मार्जार २, चवर्ग का सिंह ३, टवर्ग का श्वान ४, तवर्ग का सर्प ५, पवर्ग का मूषक ६, यवर्ग का गज ७, शवर्ग का शूकर ८ इस क्रम से वर्गों के स्वामी होते हैं । जिस वर्ग का अक्षर अपने नाम का हो उससे पाँचवें वर्गका स्वामी उसका रिपु, चौथा मित्र एवं तृतीय उदासीन होता है ॥ १० ॥

काकिणी शुद्धिः—

स्ववर्गं द्विगुणांकृत्वा परवर्गेण योजयेत् ।
अष्टभिश्च हरेद्भागं योधिकः स ऋणीभवेत् ॥ ११ ॥

टीका—अपने नामके वर्ग को द्विगुणित कर उसमें ग्रामादिक का वर्ग मिलावै आठका भाग दे, फिर ग्रामादिक का वर्ग द्विगुणित कर अपने नामका वर्ग उसमें मिलावै, पूर्ववत् आठका भाग दे, इन दोनों में से जिसका शेष अधिक बचै सो उसका अर्थात् न्यून वाले का ऋणी होता है ॥ ११ ॥

अन्यमतेन पृथ्वीसाधनप्रकारः—

कुण्डार्थपृथ्वी परिशोधहेतवे प्रष्टुर्मुखाद्यः प्रथमं स्फुटीभवेत् ।
वर्गादिवर्णाः किल तद्दिशिस्मृतं शल्यं मुनीन्द्रैर्हपयैस्तु मध्यतः १२
स्मृत्वेष्टदेवतां प्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम् ।
गृहीत्वा तु ततः शल्याऽशल्यं सम्यग्विचारयेत् ॥ १३ ॥

टीका—नूतन गृह के बनाने के निमित्त प्रथम भूमिशोधन का प्रकार। पृच्छक इष्ट देवता का स्मरण करके ब्राह्मण से प्रश्न करे, उसके मुख से आदि अक्षर जिस वर्ग का निकले उसके उत्तर में अ क च ट त प य श वर्ग पूर्वादि अष्ट दिशाओं में, मध्यभाग में ह प य। वर्गों के आदि अक्षर जहाँ हों, उस स्थान में अमुक शल्य है, तिसका प्रकार नीचे लिखा है, उससे उन २ स्थानों का फल जानिये ॥ १२ ॥ १३ ॥

प्रश्नाक्षरफलम् ।

पूर्वे—

पृच्छायां यदि अः प्राच्यां नरशल्यं तदा भवेत् ।
सार्धहस्तप्रमाणेन तच्च मनुष्य मृत्युकृत् ॥ १४ ॥

आग्नेयां—

आग्नेय्यां दिशि कः प्रश्ने खरशल्यं करद्वये ।
राजदण्डो भवेत्तत्र भयं नैव निवर्तते ॥ १५ ॥

दक्षिणे—

याम्यायां दिशि चः प्रश्ने तदा स्यात्कटिसंस्थितम् ।
नरशल्यं गृहे तस्य मरणं चिररोगतः ॥ १६ ॥

नैर्ऋत्ये-

नैर्ऋत्यां दिशि टः प्रश्ने सार्द्धहस्तादधःस्थले।
शुनोऽस्थि जायते तत्र बालानां जायते मृतिः ॥ १७ ॥

पश्चिमे-

तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते।
सार्द्धहस्ते गृहस्वामी न तिष्ठति सदा गृहे ॥ १८ ॥

वायव्ये-

वायव्यां दिशि पः प्रश्ने तुषाङ्गराचतुष्करे।
कुर्वन्ति मित्रनाशं च दुःस्वप्नदर्शनं सदा ॥ १९ ॥

उत्तरे-

उदीच्यां दिशि यः प्रश्ने विप्रशल्यं करादधः।
तच्छीघ्रं निर्द्धनत्वाय कुबेरसदृशस्य हि ॥ २० ॥

ईशाने—

ईशान्यां यदि शः प्रश्ने गोशल्यं सार्द्धहस्ततः।
तद्गोधनस्य नाशाय जायते गृहमेधिनः ॥ २१ ॥

मध्यभागे—

हपया मध्यकोष्ठे च वक्षोमात्रं भवेदधः।
नृकपालमथो भस्मलोहं तत्कुलनाशकृत ॥ २२ ॥

टीका-पृच्छक के मुख से आदि अक्षर अवर्ग का निकले तो पूर्व दिशा में डेढ़ हाथ गहरा खोदने से मनुष्य की हड्डी निकलेगी, वह मृत्युकारक जानिये। कवर्गका यदि पहिला अक्षर हो तो आग्नेय कोण में दो हाथ गहरा खोदने पर गर्दभ का शल्य निकलेगा, उसका फल राजदण्ड का भय कभी निवृत्ति नहीं होता। यदि आद्याक्षर चवर्ग का हो तो कमरके बराबर गहरे जमीन में दक्षिण की तरफ मनुष्य की हड्डी निकलेगी, उसका फल तात्कालिक रोग से मृत्यु हो। यदि टवर्ग का पहिला अक्षर हो तो डेढ़ हाथ नैऋत्य दिशा में खोदने से कुत्ते की हड्डी निकलेगी उसका फल बालकों की अधिक मृत्यु हो। प्रश्नका यदि पहिला अक्षर तवर्ग का हो तो डेढ़ हाथ गहरा पश्चिम दिशा में बालक की हड्डी निकलेगी, उसका फल गृह स्वामी घर में स्थिरता से न रह सके प्रश्नकर्ता आद्याक्षर पवर्ग का उच्चारण करे

तो चार हाथ गहरे वायव्य दिशा में कोयला, जली हुई भूसी निकलेगी, उसका फल खराब स्वप्न दिखलाई देना, मित्रका नाश, इत्यादि। यदि यवर्ग में से किसी अक्षर का उच्चारण करे तो उत्तर दिशा में एक हाथके गहरे पर ब्राह्मणकी हड्डियाँ निकलेंगी, कुबेर के समान धनाढ्य भी निर्धन हो जाता है, ऐसा इसका फल है। यदि शवर्ग में से किसी अक्षर का उच्चारण करे तो डेढ़ हाथ गहरे ईशान्यदिशा में खोदने से गौका शल्य निकलेगा, फल गोधन का नाश होता है। ह प और य इन अक्षरों में से किसी का उच्चारण करे तो घर के बीच में छाती के बराबर खोद ने से मनुष्यकी खोपड़ी या भस्म या लोहा निकलता है, उसका फल कुलका नाश होता है ॥ १८ ॥ २२ ॥

गृहादेषु खदिशाज्ञानम्—

वन्हीन्मैत्राव्नगर्दस्थेचन्द्रेयाम्योत्तराननम्।
पित्र्याद्वासवतस्तद्वत्प्राक्परास्याद्गृहं शुभम् ॥२३॥

टीका—कृत्तिका से ७ नक्षत्रों का चन्द्रमा हो तो गृहका मुख दक्षिण उत्तर को और मघा से ७ नक्षत्रों चन्द्रमा तथा का गृह हो तो पूर्व पश्चिम मुखका अनुराधा से ७ नक्षत्रों का चन्द्रमा हो तो गृह का मुख दक्षिण उत्तर को नक्षत्रों का चन्द्रमा हो गृह का मुख पूर्व को और धनिष्ठा से ७ नक्षत्रों का चन्द्रमा हो तो गृह का मुख पूर्व पश्चिम को करने से शुभ फलदायक होता है ॥ २३ ॥

आयादिसाधनम्—

गृहेशकरमानेन गृहस्याऽयादिसाधयेत्।
करैश्चेन्नेष्टमायादि। साध्यमङ्गुलिस्तथा ॥ २४ ॥

टीका—गृह स्वामी के हस्तमान से आयादि का साधन करे, अगर हस्तमान से इष्ट आयादि न मिलें तो अंगुली मान से आयादि साधन करे ॥ २४ ॥

क्षेत्रफलमायादिक—

विस्तारगुणितंदैर्घ्यं गृहक्षेत्रफलं लभेत्।
तत्पृथग्वसुभिर्भक्तं शेषमायोध्वजादिकः ॥ २५ ॥

टीका—लम्बाई व चौड़ाई का जो गुणनफल वही क्षेत्रफल होता है। क्षेत्रफल आठका भाग देने से जो शेष बचे वह ध्वजादि आय होते हैं ॥ २५ ॥

---

१ इसके अनुसार गृह होना ठीक तभी होगा कि जब यमांशन न हो किन्तु राज अंश या इन्द्र अंश हो,

आयादिनाम—

ध्वजोधूम्रोऽथसिंहःश्व सौरभेयः खरो गजः ।
ध्वांक्षश्चैवक्रमेणैतदायाष्टकमुदीरितम् ॥ २६ ॥

टीका—ध्वज १ धूम्र २ सिंह ३ श्वान ४ बैल ५ गर्दभ ६ हस्ती ७ काक ८ इस क्रम से गृह के ८ आय होते हैं ॥ २६ ॥

वर्णक्रमसेआय—

ब्राह्मणस्य ध्वजोज्ञेयः सिंहो वै क्षत्रियस्य च ।
वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां तु गजः स्मृतः ॥ २७ ॥

टीका—ब्राह्मण को ध्वज आय, क्षत्रिय को सिंह, वैश्य को वृषभ, और शेष वर्णों को गज आय उत्तम होता है ॥ २७ ॥

अन्यमतसे आयफल—

ध्वजेकृतार्थो मरणं च धूम्रे सिंहेजयश्चाथ शुनि प्रकोपः ।
वृषे तु राज्यं च खरे हि दुःखं ध्वांक्षे मृतिश्चैव गजे सुखंस्यात् २८

टीका—ध्वज आयका फल कृतार्थ, धूम्र आय का मरण, सिंह आयका जय, श्वान आय का कोप, वृष आय का राज्य, खर आय का दुःख, ध्वांक्ष आय का मृत्यु, और गज आय का फल सुख प्राप्ति होता है ॥ २८ ॥

व्ययसाधनम्—

पूर्वद्वारे वृषः श्रेयान् गजः प्राग्यमदिङ्मुखः ।
क्षेत्रमष्टाहतेधिष्ण्यैर्विभक्तेस्यान् गृहस्यभम् ।
भेष्टभक्तेव्ययःशेषमायादल्पो व्ययः शुभः ॥ २९ ॥

टीका—पूर्वाभिमुख गृहों का वृष आय श्रेयस्कर होता है। पूर्व और दक्षिणाभिमुख गृहों का गज आय शुभ कहा है। क्षेत्रफल को आठ से गुणाकर २७ का भाग देने से जो शेष बचै सो अश्विन्यादि गणना से घरका नक्षत्र होता है। उन नक्षत्रों में ८ का भाग दे जो शेष रहे सो उस गृह का व्यय। आय की अपेक्षा व्यय अल्प हो तो गृह शुभ होता है ॥ २९ ॥

अथ गृहनामज्ञान—

दिक्षु पूर्वादितः शालाध्रुवाभूद्वौकृतागजाः ।
शालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैको वेश्मध्रुवादिकम् ॥ ३० ॥

टीका—पूर्व आदि चारों दिशाओं में शाला के अङ्क क्रम से जानना। पूर्व में १, दक्षिण में २, पश्चिम में ४, और उत्तर में ८, जिस दिशा में शाला (द्वार) हो उस दिशाके अङ्क जोड़कर एक और जोड़ देना, जितने अङ्क हों वे ही ध्रुव आदि गृह के नाम होते हैं ॥ ३० ॥

षोडशगृहनाम—

ध्रुवंधान्यं जयंनन्दं खरंकान्तंमनोरमम्।
सुमुखं दुर्मुखोग्रं च रिपुदं धनदं क्षयम् ॥
आक्रन्दं विपुलं ज्ञेयं विजयं चेति षोडशम्।
गृहं ध्रुवादिकं ज्ञेयं नामतुल्यफलप्रदम् ॥ ३१ ॥

टीका—ध्रुव १, धान्य २, जय ३, नन्द ४, खर ५, कान्त ६, मनोरम ७, सुमुख ८, दुर्मुख ९, उग्र १०, रिपुद ११, धनद १२, क्षय १३, आक्रन्द १४, पिपुल १५, और विजय १६ ये सोलह नाम हैं, इनका फल नाम के तुल्य होता है ॥ ३१ ॥

अथांशफलज्ञान—

टीका—जो व्यय आया हो उसे क्षेत्रफल में मिलावे और घरों के नाम के अक्षर संयुक्त करके, तीनका भाग दे। शेष दो बचे तो अशुभ और एक अथवा शून्य बचे तो शुभफल होता है ॥ ३२ ॥

आयादि निकाले का प्रकार-

व्ययेन संयुते क्षेत्रे गृहनामाक्षरान्विते।
त्रिभिर्भक्तांशका स्तेषां द्वितीयांशाः न शोभनः ॥ ३२ ॥
अष्टभिर्भाजितं पिंडे भवेदायोदि पिण्डकम्।
द्वाभ्यां विगुणितं वारो भवेत्सप्तविभाजितम् ॥ ३३ ॥
त्रिभिर्विगुणिं पिंडं नागैर्भक्ते मृणं भवेत्।
वेदैर्निघ्नं भवेद् योगो नक्षत्रै र्भाजितं यदा ॥ ३४ ॥
रत्नैर्निघ्नं भवेदंशो यदि रत्नै र्विभाजितम्।
अष्टभिर्निहतं पिण्डं रविभक्तं धनं भवेत् ॥ ३५ ॥
सप्तविंशतिभिर्भक्तं नक्षत्रं तिथिभिस्तिथिः।
खभानु भक्तयांयुश्च भवेद् दैवज्ञभूषणः ॥ ३६ ॥

टीका—पिंडमें ८ का भाग, लेनेसे शेष ध्वजादि आय, पिंडको दोसे गुणाकर ७ के भाग से शेष सूर्यादि वार, पिंडको इसे गुणाकर ८ का भाग देने से शेष ऋण, पिंडको ४ से गुणाकर २७ के भागसे शेष निष्कंभादियोग पिंडको ६ से गुणाकर ९ के भाग से अंश, पिंडकी ८ से गुणाकर चार जगह धरे उसमें १२ का भाग पर शेष धन, दूसरे जगह २७ का भाग देने से शेष अश्विन्यादि नक्षत्र, तीसरे जगह १५ का भाग देने से प्रतिपदादि तिथि और चौथे जगह १२० का भाग देने से आयु होती है, ध्यान रहे जहां शून्य शेष होजाय वहां जिससे भाग दिया है वही अंश जानना चाहिये जैसे ७ का भाग दिया शेष शून्य है शून्य कोइ वार नहीं अतः शनिवार जानै इसी प्रकार सब विचार लेना ॥ ३३ ॥ ३६ ॥

सूर्य चन्द्र वेध निर्णय—

दक्षिणोत्तर योर्दीर्घं वेधश्चन्द्र मसस्तथा ।
पूर्व पश्चिमयोर्दीघ वेधः कमलिनी पतेः ॥ ३७ ॥

टीका—उत्तर दक्षिण दीर्घ (लंबा) होतो चन्द्र वेध । और पूर्व पश्चिम लंबा हो तो सूर्य वेध होता है ॥ ३७ ॥

ग्रामे क्षेत्रे गृहे वाप्यां तडागे वाटिका सुच ।
शुभदश्चन्द्रवेधस्तु रवेः कोष्ठेऽग्निजीविनाम् ॥ ३८ ॥
जलाशये रवेर्वेधं गृहे चन्द्र मसः शुभम् ।
वाटिकायां द्वयोर्वेधमिति विज्ञा वदन्ति च ॥ ३९ ॥

टीका—ग्राम क्षेत्र गृह बावली तालाब बगैचा में चन्द्र वेध शुभ है कोष्ट में अग्नि से जीविका करने वाला के सूर्य वेध उत्तम है, हा जलाशयमें भी सूर्य वेध शुभ कहा है और गृहमें तो चन्द्र वेधही शुभ है और बगैचे में सूर्य वेध हो तो ठीक है चन्द्र वेध हो तो भी उत्तम है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

मण्डलज्ञान—

दीर्घ विस्तार सङ्ख्यैक्यं नवभिर्भागमाहतम् ।
शेषं तु मगडलं ज्ञेयं क्रमेण धरणी सुराः ॥ ४० ॥
दाता महीपतिः षण्ढस्तर्करश्च विचक्षणः ।
तथा कामी धनाढ्यश्च निर्धनो धनवान् ततः ॥ ४१ ॥

टीका—दीर्घ (लंबाई) विस्तार (चौडाई) की संख्या को एकत्र जोडकर

९ का भाग देने से शेष मंडल होता है। १ दाता, २ राजा, ३ नपुंसक, ४ चोर, ५ विद्वान, ६ कामी, ७ धनी, ८ दरिद्र, ९ धनी, इस प्रकार नव मंडल एकादि शेष से होते हैं ॥ ४० ॥ ४१ ॥

मण्डलेश ज्ञान—

गृहेश हस्त मानेन दीर्घ विस्तार संयुतम्।
द्विनिघ्नं वसुभिर्भक्तं शेषेण मण्डलेश्वराः ॥ ४२ ॥
शक्रो हरिर्यमोवायुः धनदो पार्वती पतिः।
विरञ्चि र्गणनाथश्च मण्डलेशा अमी स्मृताः ॥ ४३ ॥
शक्रः सुखं यशो विष्णु र्दुःखं कुर्यात् पेरतराट्।
उच्चाटनं गन्धवहो ददाति धनदो धनम् ॥ ४४ ॥
महेशः कलहं कुर्या विधता सुखदं तथा।
सर्व सिद्धिप्रदो गौरी नन्दनः कथितो बुधः ॥ ४५ ॥

परिहार—

अल्प दोषेगुण श्रेष्ठं दोषाय न भवेद्गृहम् ॥
आय व्ययौ प्रयत्नेन विरुद्धं भंचवर्जयेत ॥ ४६ ॥

टीका—अल्प दोष श्रेष्ठ गुण जिस गृहमें हो वह गृह दूषित नहीं होता है, आय व्यय तथा नक्षत्र विरुद्ध हो तो वर्जित करे ॥ ४६ ॥

गृहारम्भे श्रेष्ठ मासाः—

पौषफाल्गुनवैशाख भाद्रश्रावणकार्तिकाः।
मासाः स्युर्गृहनिर्माणे पुत्रारोग्यधनप्रदाः ॥ ४७ ॥

टीका—पौष १ फाल्गुन २ वैशाख ३ भाद्रपद ४ श्रावण ५ कार्तिक ६ इन महीनों में घर बनवाना, शिलान्यास और स्तंभप्रतिष्ठा शुभ होता है, पुत्रलाभ, आरोग्यता, आयु की वृद्धि और धनकी प्राप्ति होती है ॥ ४७ ॥

गृहारम्भे मासफलम्—

शोको धान्यं पञ्चता निःपशुत्वं स्वास्तिर्नैस्थ्यंसङ्गर-
भृत्यनाशनम्। सच्छ्रप्राप्तिं वन्हिभीतिं च लक्ष्मी
कुर्यु श्चैत्राद्यागृहारम्भकाले ॥ ४८ ॥

टीका—चैत्रमास में शोकप्राप्ति १ वैशाख में धान्य प्राप्ति २ ज्येष्ठ में मृत्यु

३ आषाढ़ में पशुहानि ४ श्रावण में द्रव्यप्राप्ति ५ भाद्रपद में दरिद्रता ६ आश्विन में कलह ७ कार्तिक में मृत्यों का नाश ८ मार्गशीर्ष में धनप्राप्ति ९ पौष में लक्ष्मी १० माघ में अग्निभय ११ फाल्गुन में लक्ष्मी १२ इस प्रकार शुभाशुभ फल जानिये ॥ ४८ ॥

रविराशिवशेन द्वारनिर्माणम्—

कर्कनक्रहरिकुंभगतेऽर्के पूर्वपश्चिममुखानि गृहाणि ।
तौलिमेषवृषवृश्चिकयाते दक्षिणोत्तरमुखानि वदन्ति ॥४९॥

टीका—कर्क, मकर, सिंह, कुम्भ, इन राशियों का सूर्य हो तो घर का द्वार पूर्व अथवा पश्चिम को करे। तुला, मेष, वृष, वृश्चिक इन राशियों का सूर्य हो तो घर का मुख दक्षिण अथवा उत्तर को करै। इस प्रकार रत्नमाला में कहा है ॥ ४९ ॥

गृहनिर्माणे चक्रशुद्धिः—

आरम्भे वृषभंचक्रं स्तंभे ज्ञेयं तु कूर्मकम् ।
प्रवेशे कलशंचक्रं वास्तुचक्रं बुधैः शुभम् ॥ ५० ॥

टीका-घरके आरम्भ करनेमें वृषभचक्र, स्तंभ स्थापन में कूर्मचक्र, गृहप्रवेश में कलशचक्र यह वास्तुचक्र हैं। पंडित लोग शुभकार्य में इसका विचार करें।५०।

गृहारंभ के नक्षत्र—

त्र्युत्तरामृगरोहिण्यां पुष्यमैत्रकरत्रये ।
धनिष्ठाद्वितये पौष्णे गृहारंभः प्रशस्यते ॥ ५१ ॥
आदित्यभौमवर्ज्यन्तु सर्वे वाराः शुभावहाः ।
चन्द्रादित्यबलं लब्ध्वा लग्ने शुभनिरीक्षिते ॥ ५२ ॥
स्तंभोच्छ्रायस्तु कर्त्तव्यो ह्यन्यत्तु परिवर्जयेत् ।
प्रासादेष्वेवमेव स्यात्कूपवापीषुचैव हि ॥ ५३ ॥

टीका—तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुष्य, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती ये नक्षत्र शुभ हैं। रवि भौम वार छोड़कर शेष वार शुभ। स्थिरलग्नमें, शुभग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तब स्तंभारोपण करावै, अन्य बातों का विचार न करे। देवालय, कूप, तड़ाग, वापी इन कृत्यों में भी इसी प्रकार विचार करे ॥ ५१ ॥ ५३ ॥

वृषभचक्रम्—

त्रिवेदाब्धि त्रिवेदाब्धि द्वित्रिभैर्व्यर्कतःशशी ।
कुर्याल्लक्ष्मीसमुद्वासं स्थैर्य लक्ष्मीं दरिद्रताम् ॥
धनं हानिं क्रमान्मृत्युमारंभे वृषचक्रकम् ॥ ५४ ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक जितने, नक्षत्र हों तिनमें प्रथम भाग ३ नक्षत्र लक्ष्मीदायक, दूसरा भाग ४ उद्वासकारक, तृतीय भाग ४ स्थिरताकारक, चतुर्थभाग ३ लक्ष्मी, पंचम भाग ४ दरिद्रता, षष्ठ ४ धनदायक, सप्तम भाग २ नक्षत्र हानिकारक, अष्टम भाग ३ नक्षत्र मृत्यु, इस क्रमसे जिस दिनका नक्षत्र शुभ फल दायक हो उसी में घरका आरम्भ करावै ॥ ५४ ॥

वर्ज्य—

वज्र व्याघात शूलश्च व्यतीपातश्चगण्डकः ।
विष्कुम्भ परिघौ वर्ज्यौ करौमङ्गलभारकरौ ॥ ५५ ॥

टीका—वज्र व्याघात, शूल व्यतीपात, गंड, विष्कुम्भ और परिघ ये योग, रवि और मंगल ये वार वर्जित हैं ॥ ५५ ॥

विवाहोक्तन् महान् दोषान् ते यामित्र शुद्धितः ।
रिक्तां कुजार्कवारौ च चरलग्नंचरांशकम् ॥ ५६ ॥

टीका—या मित्र शुद्धि छोड़कर, और रिक्ता तिथि मंगल सूर्य वार तथा चर लग्न चरांश त्याग देय ॥ ५६ ॥

त्यक्त्वा कुजार्कयोश्चांशं पृष्ठंचाग्रेस्थितं विधुम् ।
बुधेज्यराशिगं चार्कं कुर्यात् गेहं सुखासये ॥ ५७ ॥

टीका-मंगल रविवार के अंश को त्याग देय, आगे पीछे के चन्द्रमा को त्याग देय और बुध के तथा गुरुके गृह के सूर्य (३।६।९।१२) को त्यागकर सुख के लिये गृहारंभ करें[१] ॥ ५७

द्वारशुद्धिं निरीक्ष्यादौ भू शुद्धिं वृषचक्रमम् ।
निव्यङ्ग केस्थिरेलग्ने द्व्यङ्गे वालयमाद लयमारभेत् ॥५८॥

१. गृहेशतत्स्त्री सुख वित्तनाशो केंद्रिज्यशुक्रे बिवलेस्तनीचे ।
नास्त दोष दिवानाथे न नीचं दोषयेद् विधौ ।

पहिले द्वार शुद्धि को विचारै फिर भू शुद्धि वृषचक्र को विचार कर निः पंचक में स्थिर लग्न में वाद्विस्वभाव लग्न में गृहारम्भ करें[1] ॥ ५८ ॥

दक्षिणपूर्वेकोणे कृत्वत्वा पूज्जा शिलां न्यसेत्प्रथमाम् ।
शेषाः प्रदक्षिणेन स्तम्भाश्चैवं प्रतिष्ठाप्याः ॥ ५९ ॥

टीका—आग्नेयकोणमें प्रथम पूजन करिके शिला स्थापन करे, शेष शिला प्रदक्षिण क्रमसे स्थापित करे । इसी प्रकार स्तंभ की भी स्थापना करे ॥ ५९॥

शिलान्यासे नक्षत्राणि ।

शिलान्यासः प्रकर्त्तव्यो गृहाणां श्रवणे मृगे ।
पौष्णे हस्त च रोहिण्यां पुष्याश्विन्युत्तरात्रये ॥ ६० ॥

टीका—श्रवण, मृगशिरा, रेवती, हस्त, रोहिणी, पुष्य, अश्विनी, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में शिलान्यास करना चाहिये ॥ ६० ॥

शेषमुखम्—

कन्यासिंहतुलायां भुजगपतिमुखं शंभुकोणाग्निखातं ।
वायव्ये स्यात्तदास्यंत्वलिधनमकरे ईशखातं वदन्ति ।
कुम्भेमीने च मेषे निऋतिदिशिमुखं खातवायव्यकोणे ।
आग्नेकोणेमुखं वै वृषमिथुनगते कर्कटे रक्षखातम् ॥६१॥

टीका—कन्या, तुला, सिंह लग्नों में शेष का मुख ईशान्य कोण में होता है, अतः अग्निकोण में खात करावै । वृश्चिक, धन, मकर इन लग्नों में शेष का मुख वायव्य कोण में होता है, अतः ईशान्यकोण में खात करावे । मीन, कुम्भ और मेष इन लग्नों में शेष का मुख नैऋत्य कोण में होता है अतः वायव्य कोण में खात करावै । वृष मिथुन और कर्क इनमें शेष का मुख आग्नेयकोण में होता है, अतः नैऋत्य में खात करावै ॥ ६१ ॥

कूर्मचक्रम्—

तिथिस्तु पंचगुणिता कृतिकाद्यृक्षसंयुता ।
यथा द्वादशमिश्रा च नवभागेन भाजिता ॥ ६२ ॥

---

१ पञ्चकं द्विविधं प्रोक्तं नक्षत्राख्यं सु चाणकम् ।
पूर्वभाद्र पद भेषु पाणेषु च धनञ्जयम ॥

फलम्—

जले वेदामुनिश्चन्द्रः स्थले पंचद्वयंपसुः ।
त्रिषट्कंनवचाकाशे त्रिविधं कूर्मलक्षणम् ॥ ६३ ॥
जलेलाभस्तथा प्रोक्तः स्थले हानिस्तथैव च ।
आकाशे मरणं प्रोक्त मिदं कूर्मस्यचक्रकम् ॥ ६४ ॥

टीका—गृहारम्भ की तिथि को पाँच से गुणा करे, कृत्तिका नक्षत्र से लेकर दिन नक्षत्र तक की संख्या को उस गुणनफल में मिलावे, फिर १२ और उसी में मिलावे, नवका भाग दे, ४।७।१ जो शेष रहे तो कूर्म जलस्थान में जानिये तिसका फल और ५।२।७ शेष बचे तो कूर्म स्थल में जानिये, तिसका फल हानि और ३।६।६ बचे तो कूर्म आकाश में जानिये, तिसका फल मरण, ये तीनों प्रकार का कूर्म कहा है ॥ ६२ ॥ ६४ ॥

त्रिषडायगतः पापैरष्टान्त्येन्तरगैः शुभैः ।
चन्द्रलग्नेऽरिरंध्रांत्यवर्जितं स्याच्छुभं गृहम् ॥ ६५ ॥

टीका—३।६।११ स्थानों में पापग्रह शुभ और ८।१२ स्थानों का छोड़ कर इतर स्थानों में शुभग्रह हों तो शुभ जानिये । परन्तु चन्द्रमा, लग्न षष्ठ द्वादश तथा अष्टम स्थान में न हों ॥ ६५ ॥

लग्नशुद्धिः—

धनकेन्द्रत्रिकोणस्थः क्षीणचन्द्रो न शोभनः ।
शत्रोनवांशगः खेटः खास्तसंस्थोपि नो शुभः ॥ ६६ ॥

टीका—लग्नसे २।१।४।७।१०।५।९ स्थानों में क्षीणचन्द्र स्थित हो तो अशुभ है और शत्रु नवांशक स्थितग्रह १०।७ भाव में स्थित हो तो भी नेष्ट है। क्षीण चन्द्र कृष्णपक्ष के पंचमी से शुक्लपक्ष के ५ तक होता है ॥ ६६ ॥

आयुःप्रमाणम्—

लग्नेजीवः सुखेशुक्रो बुधः कर्मण्यरौरविः ।
रविजः सहजे नूनं शतायुः स्यात्तदा गृहम् ॥ ६७ ॥

टीका—लग्न में वृहस्पति, ४ शुक्र बुध, १० सूर्य, ३ शनि ऐसे लग्न मे गृहारम्भ करने से उस गृहकी १०० वर्षकी आयु निश्चय कर जानना ॥६७॥

अन्यप्रकारः--

भृगुर्लग्ने बुधोव्योम्नि लाभेऽर्कः केन्द्रगो गुरुः ।
यस्यारम्भश्च तस्यायु र्वत्सराणां शतद्वयम् ॥६८॥

टीका--शुक्र और बुध १० दशमस्थानी ११ रवि और १।४।७।१० गुरु, ऐसी लग्नमें गृहारम्भ करावै तो २०० वर्ष की आयु होती है ॥ ६८ ॥

अन्यच्च--

जीवोबुधभृगुर्व्योम्नि लाभगौ भानुभूमिजौ ।
प्रारम्भे यस्य तस्यायुः समाशीतिः सहश्रिया ॥ ६९ ॥

टीका--गुरू, बुध, शुक्र, ये १० स्थानी, ११ व स्थान में रवि और भौम हो तो लक्ष्मी युक्त घर की ८० वर्ष की आयु होती है ॥ ६९ ॥

स्वोच्चवर्तिनि भृगौ विलग्नगे देवमंत्रिणि रसातलेऽथवा ।
स्वोच्चगेरविसुतेऽथवाऽऽयगे स्यात्स्थितिश्व सुचिरं सह श्रिया ॥७०

टीका- लग्नमें उच्चका शुक्र हो, गुरु ४ हो, उच्चका वा स्वक्षेत्री शनि ११ स्थानमें हो तो लक्ष्मी युक्त, चिरकाल, घरकी आयु कहना ॥ ७० ॥

स्वर्क्षगे हिमगौ लाभे सुरेज्य केन्द्रसंस्थिते ।
धनधान्यसुतारोग्यं युक्तधामचिरं भवेत् ॥ ७१ ॥

टीका--कर्कका चन्द्रमा ११ स्थानमें और गुरु केन्द्र में (१।४।७१०) हो तो वह धनयुक्त और सुत, आरोग्य सहित चिरकाल रहता है ॥ ७१ ॥

द्वार--

नवभागं गृहं कुर्यादपञ्च भागं तुदक्षिणे ।
त्रिभागं वामतः कुर्यांच्छेषं द्वारं प्रकल्पयेत् ॥ ७२ ॥

टीका--पूर्व या पश्चिम मुख द्वार बनाना हो तो घरके लंबाई में से उत्तर दक्षिण द्वार बनाना हो तो घरके चौड़ाई में से नव भाग करे उसमें द्वारके दक्षि पांच भाग और वाम भाग में तीन भाग छोड़कर द्वार बनावे दक्षिण वाम दिशा बरका ही है वाराही संहिता विश्वकर्मा प्रकाश तथा मुहूर्त गणपति में इसका विशेष विवरण है ॥७२॥

द्वारमाह (माणिक्यरत्नाकरे)--

चतुर्थ भागे मुखमाहु रेकेत्र्यङ्गे षु वाणे क्रमतोऽन्य ऊचुः ।
सव्येन पूर्वादिषु गेह दैर्ध्यं नन्देन भक्तं रिपुपृष्ट दिक्स्थम् ॥७३

टीका—पूर्व या पश्चिम मुख द्वार बने तो गृह के दीर्घ का और उत्तर या दक्षिण मुख द्वार बने तो पूर्व वा पश्चिम मुख द्वार बने तो गृहके दीर्घ को और उत्तर या दक्षिण मुख द्वार बने तो या विस्तार को नव भाग करना जिस दिशा में द्वार बनाना हो उसका शत्रु वर्ग पीछे पड़े उन नव भागों में कुछ आचार्यों का मत है कि गृह के वाम भाग से गृहका द्वार चौथे अंश में चारो दिशामें बनना उत्तम है किसी का मत है कि पूर्व में ३ रे दक्षिण में छठें पश्चिम तथा उत्तर में पाँचवें भाग में द्वार बनावे ॥ ७३ ॥

जयन्तेन्द्रे च सत्यांशे पूर्वं द्वारंशुभं स्मृतम् ।
गृहक्षतांशे वितथे गन्धर्वान्शे तु दक्षिणे ॥ ७४ ॥
पश्चिमद्वार शुभदं पुष्पदन्ते च वारुणे ।
उत्तरे शुभदं द्वारं सोमांशे वल्लभांशके ॥ ७५ ॥

टीका—अर्थ सरल है ॥ ७४-७५ ॥

गृहद्वारम्—

द्वारस्योपरियद्वारं द्वारस्यान्यच्चसंमुखम् ।
व्ययदं तु यदा तच्च न कर्तव्यं शुभेप्सुभिः ॥ ७६ ॥

टीका—द्वार के ऊपर का द्वार और आमने सामने का द्वार व्ययदायक होते हैं, शुभाभिलाषी पुरुषों को वर्जित करना चाहिये ॥ ७६ ॥

द्वारवेधः—

कोण मार्ग भ्रमि द्वारा कर्दम स्तम्भभूरुहे ।
देवालय प्रकूपानां वेधो द्वारेऽथ सन्मुखे ॥ ७७ ॥

अजिर—

यदीच्छेद् विचारं शुभं प्राङ्गणस्यन दादीर्घ विस्तारयोगं प्रकुर्यात् ।
यहैर्भाजिते भूमिदेवा हि शेषाद् विचाराङ्गणस्य प्रकुर्य्याद् विधिज्ञाः ।
दानीविज्ञोऽतिभीरुश्च कलहो भूपद्धानवौ ।
नपुंसकस्तथादस्यु र्धनीनाम समंफलम् ॥ ७८ ॥
धनंधान्य मीशान वायव्यकोणो तथा चोत्तरे चोत्तमं मङ्गलंस्यात् ।
नृणामालये वारिसंचारणार्थं विलंकर्तुमाहुःधरादेववृन्दाः ॥७९॥

गृहे स्थानयोजना प्रकारः—

स्नानागारं दिशिप्राच्यामाग्नेय्यां पचनालयम् ।
याम्यायां शयनागारं नैर्ऋत्यांशस्त्रमन्दिरम् ॥
प्रतीच्यां भोजनागारं वायव्यां पशुमन्दिरम् ।
भाण्डकोशंचोत्तरस्यामीशान्यां देवमन्दिरम् ॥ ८० ॥

टीका—पूर्वमें स्नान का घर १, अग्निकोणमें रसोई का स्थान २, दक्षिण में सोने का स्थान ३, नैऋत्य में शस्त्रालय ४, पश्चिम में भोजनस्थान ५, वायव्य में पशु मन्दिर ६, उत्तर में भन्डारकोश ७, ईशान्य में देवमन्दिर ८, इस प्रकार से स्थानों की योजना करै ॥८०॥

गृहाभ्यन्तरे गृहे वाह्ये च कूप फलम् -

कूपं गृहस्य मध्ये सकलधनहरः ईशकोणादितस्तु ।
पुष्टि कोशस्य वृद्धिस्त्व तनु धनहरः स्त्रीविनाशो मृतिश्चः॥
सम्पत्पीड़ा रिवर्गा दयित सुखकरश्चाथ वाह्ये विचारः ।
वायव्ये स्त्री विनाशोऽसुप दिशि सुतहा वन्हिभीतिस्तुवन्हौ ॥८१॥

टीका—यदि कूप मध्य गृह में होतो संपूर्ण धनको हरे और ईशानादिकोण में रहने से क्रमशः पुष्टि धन वृद्धि पुत्र नाश स्त्री विनाश मृत्यु संपत से पीड़ा और विशेष सुखहो । यह मकान के भीतर का विचार है । अब बाहर के विचार को कहताहूं वायव्य में कूप रहने से स्त्री की मृत्यु नैर्ऋत्य दिशामें पुत्रकी हानि और अग्निकोण में रहने से अग्निका भय होता है ॥ ८१ ॥

स्तंभचक्रम्—

सूर्याधिष्ठितभद्वयं प्रथमतो मध्ये तथा विंशतिः ।
स्तंभाग्रे रससंख्यया मुनिवरै रुक्तं मुहूर्तं शुभम् ॥ ८२ ॥
स्तंभाग्रे मरणं भवेत् गृहपते मूले धनार्थ क्षयः
मध्ये चैव तु सततसौख्यमतुलं प्राप्नोति कर्त्ता सदा ॥ ८३ ॥

टीका—सूर्य नक्षत्रसे दिन नक्षत्र पर्यन्त गिनने से जो संख्या हो उसको क्रम से प्रथम दो २ नक्षत्र स्तम्भ मूलमें, तिसका फल धनक्षय और द्वितीय २० नक्षत्र स्तम्भके मध्यमें, तिसका फल लक्ष्मी और कीर्ति प्राप्ति, तृतीय ३ नक्षत्र

स्तम्भ के अग्रभाग में तिसका फल मृत्यु जानिये। ऐसे शुभ फल देखके स्तम्भारोपण करावै ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

देहलीस्थापनम्--

मूलेभोभेत्रिऋक्षं गृहपतिमरणं पञ्चगर्भे सुखंस्या-
न्मध्येदेयाष्टऋक्षं धनसुतसुखदं पुच्छदेशेऽष्टहानिः
पश्चाद्देयंत्रिऋक्षं गृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं
सूर्यर्क्षाच्चन्द्रऋक्षंप्रतिदिनगणयन्भोभचक्रंविलोक्य ॥ ८४॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक की नक्षत्र संख्या और फल ऐसे क्रमसे जाने। प्रथम तीन नक्षत्र मूलमें, तिसमें स्तम्भारोपण करे तो मृत्यु, द्वितीय ५ नक्षत्र गर्भमें फल सुख, तीसरे ८ नक्षत्र मध्य में फल धन सुत सुख, चतुर्थ ८ नक्षत्र पुच्छ भागमें फल मित्रहानि, पंचम ३ नक्षत्र अग्र भागमें फल सुख भोग पुत्र लाभ, ऐसे शुभ फल होते हैं ॥ ८४ ॥

द्वारचक्रम्—

अर्काच्चत्वारिऋक्षाणि ऊर्ध्वंचैव प्रदापयेत्।
द्वौ द्वौकोणेषु दद्याद्वै शाखायां च चतुश्चतुः ॥ ८५ ॥
अधश्चत्वारि देयानि मध्ये त्रीणि प्रदापयेत्।
ऊर्ध्वे तु लभते राज्यमुद्वासं कोणकेषु च ॥ ८६ ॥
शाखायां लभते लक्ष्मी मध्ये राज्यप्रदं तथा।
अस्थे मरणं प्रोक्तं द्वारचक्रं प्रकीर्त्तितम् ॥ ८७ ॥

टीका—सूर्य नक्षत्रसे दिन नक्षत्र पर्यन्त लिखनेका क्रम। तिसमें प्रथम ४ नक्षत्र ऊर्ध्व, तिसका फल राज्यप्राप्ति। द्वार कोण चार, तिनमें प्रतिकोणमें २ नक्षत्र, तिनका फल उद्वसन। बगल दो, तिनमें नक्षत्र चार चार प्रत्येक में फल लक्ष्मी, और नीचे नक्षत्र ४ तिनका फल, राज्य, मध्य नक्षत्र ३, तिनका फल मरण, यह जानिये, ॥ ८५ ॥ ८७ ॥

गृहप्रवेश मुहूर्तः—

अथ प्रवेशो नवमंदिरस्य यात्रा निवृत्तावथभूपतीनाम्।
सौम्यायने पूर्वदिने विधेयं वास्तवर्चनं भूतबलिश्च सम्यक् ८८

टीका—नवीनगृहप्रवेश में और राजा के यात्रा से निवृत्ति होनेके बाद दुर्ग

में प्रवेश का मुहूर्त उत्तरायण के सूर्य हों । प्रवेश से पूर्व दिन में वास्तुपूजा और भूतबलि करके प्रवेश करना चाहिये ॥ ८८

चित्रानुराधा मृगपौष्णपुष्ये स्वातीधनिष्ठा श्रवणं च मूलम् ।
वारेष्वसूर्यक्षितिजेष्वरिक्तातिथौ प्रशस्तौ भवनप्रवेशः ॥ ८९ ॥

टीका—चित्रा, अनुराधा, रेवती पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा, श्रवण मूल ये नक्षत्र और रवि भौम ये वार तथा रिक्ता तिथिको त्यागके प्रवेश करना शुभ है ॥ ८९ ॥

कलशचक्रम्—

प्रवेशःकालशेऽर्कर्क्षात्पञ्चनागाष्टषट् क्रमात् ।
अशुभं च शुभं ज्ञेयमशुभं च शुभं तथा ॥ ९० ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र तक जो नक्षत्र हों उसमें प्रथम ५ नक्षत्र अशुभ आठ नक्षत्र शुभ, आगे ८ नक्षत्र अशुभ और शेष ६ नक्षत्र शुभ, ऐसे कलश चक्र में जानिये ॥ ९० ॥

वामार्कलक्षणम्—

रन्ध्रात्पुत्राद्धनादायात् पञ्चस्वर्केस्थिते क्रमात् ।
पूर्वाशादिमुखं गेहं विशेद्वामोभवे द्रविः ॥ ९१ ॥

टीका—गृहप्रवेश का जो लग्न हो उस लग्न से अष्टमस्थान, पंचमस्थान, द्वितीय स्थान एवं एकादशस्थान, इन प्रत्येक स्थानों से यदि पाँच पाँच स्थानों में रवि हो तो क्रम से पूर्वादि मुखों के घर में प्रवेश करने से वामरवि होता है ॥९१॥

ग्रहसंस्थाविचारः—

त्रिकोणकेन्द्रगैः शुभै स्त्रिषष्ठलाभसंस्थितैः ।
असद्ग्रहैः स्थिरोदये गृहंविशेद्बलविधौ ॥ ९२ ॥

टीका—त्रिकोण और केन्द्रस्थान में शुभ ग्रह हों ऐसी स्थिर लग्न देख के, तीसरे, छठें तथा लाभस्थान में पापग्रह हों, चन्द्रमा बली हो तो गृहप्रवेश करना शुभ होता है ॥ ९२ ॥

वास्तुप्रकरणम् समाप्तम् ।

जन्म पत्र प्रकाशः--

प्रणम्येश्वरं पार्वतीं शम्भु-पुत्रं समुद्रात्मजावल्लभं वासरेशम् ।
प्रवक्ष्याम्यहं जन्मपत्र-प्रकाशं द्विजानां हितं विप्रमातृप्रसादः ॥१॥

टीका—ईश्वर पार्वती, गणेश विष्णु तथा सूर्यनारायण को प्रणाम कर द्विजोंके हितार्थ मैं मातृ प्रसाद सरयूपारीण ब्राह्मण जन्म पत्र प्रकाश को बनाता हूँ ॥ १ ॥

इष्टकाल बनाने का प्रकार—

जन्मेष्ट ज्ञानमिच्छा चेत् दिनार्धात्पूर्व तो यदि ।
तदा होरादिमानस्य घटीं कृत्वा प्रयत्नतः ॥ २ ॥
दिनार्धमुत्तरं रात्रेरर्धतः प्राग् यदीष्टकम् ।
होरादिकं घटीं कृत्वा दिनार्धं योजयेत्तदा ॥ ३ ॥
निशीथतोर्ध्वं वै जन्म जायते यस्य निश्चितम् ।
तदा होरादि मानस्य घटीं कृत्वा दिनार्धकम् ।
योजयेत् योजयेत् त्रिंशत् तदा हीष्टं प्रभाततः ॥ ४ ॥

टीका—सूर्योदय के बाद दिनार्ध के पूर्व जन्म के इष्ट काल जानने की इच्छा हो तो होरा घंटा मिन्ट जितना सूर्योदय से हो उसको ढाई से गुणने पर सूर्योदय से इष्ट होगा। दिनार्ध के बाद और मध्यरात्रि के पूर्व का इष्ट हो तो घंटा मिन्ट को अढ़ाई से गुणा करके उसमें दिनार्ध जोड़े तो इष्ट होगा। मध्यरात्रि के बाद जितने घंटा मिन्ट पर जन्म हो उसको अढ़ाई से गुणा कर घटी बनाकर उसमें दिनार्धको जोड़ना बाद ३० जोड़न तो सूर्योदय से इष्टकाल बनेगा॥ २-३-४॥

(दिनमान का आधा दिनार्ध है दिनार्ध में ३० जोड़ने पर मध्यरात्रि होती है, दिनमान को ६० में घटाने से रात्रिमान होता है। एक घंटामें २॥ दंड होता है और १ मिन्ट में अढ़ाई पल होते हैं दंडको घटी भी कहते हैं और कुछ लोग "मुहूर्तो घटिका द्वयम्" के अनुसार दो दंडको घटी कहते हैं महाराज काशी नरेश के यहाँ तो अभी तक मुहूर्त के ही अनुसार घंटा बजता है।)

१—दिन रात्रि में चौबीश होरा होता है। और २४ घंटा भी होता है। सूर्योदय से होरा आरंभ होता है, मध्यरात्रि के बाद से घंटा आरंभ होता है, सूर्योदय के घंटा मिन्ट को इष्टकालिक घंटा मिन्ट में घटाने से शेष सूर्योदय से घंटा मिन्ट (होरा) होता है।

दिवा समयज्ञानम्।

पादप्रभानगयुतारहिताचमेषात्षट्स्विंदुनात्रियुगवाणशराब्धिरामैः
स्याद्भाजकोदिनदलस्य नगाहतस्यपर्वेगताःस्युरपरेदिनशेषनाड्यः॥५

टीका—अपनी छाया को पाँव से नापो, जितने पांव आवें उनमें ७ मिलावै और मेष संक्रान्ति से कन्या की संक्रान्ति तक उसमें १ घटावे, आगे तुला से मीन तक जो संक्रान्ति हो तो उसका क्षेपक इस भाँति से घटा दे, तुला ३ वृश्चिक ४ धन ५ मकर ५ कुम्भ ४ और मीन के ३ अंक उठाकर, पृथक् लिखे यह भाजक होगा, उस दिनके दिनार्धको ७ से गुणै तो भाज्य होगा वा १५ को ७ से गुणै तो १०५ हुए. इनमें पीछे लिखे हुए अंकों का भाग दे, जो भागांक आवै वह घटी जान, परन्तु दिनके पूर्वार्द्ध में दिन चढ़ने की घड़ी और उत्तरार्द्ध में शेष दिन की घटी जानना चाहिये ॥ ५ ॥

रात्रौ समयज्ञानम्—

सूर्यभान्मध्यनक्षत्रं सप्त संख्या विशोधितम्।
विंशतिघ्नं नवहृतं गतारात्रिः स्फुटाभवेत् ॥ ६ ॥

टीका—जो नक्षत्र रात्रि में हो उसकी संख्या तक सूर्य नक्षत्र से गिनकर ७ घटा दे, शेष रहे उसको २० से गुणा कर ९ का भाग दे जो अंक शेष रहे उतनी ही रात्रि का प्रमाण जानै ॥ ६ ॥

अहोरात्रप्रमाणम्—

अयनादिकवासररामहताः शिवनेत्ररसाशरचन्द्रयुताः।
परिभाजितशून्यरसैर्घटिकाः कर्कादिनिशा मकरादिदिनम् ॥७॥

टीका—कर्क की संक्रान्ति से मकर की संक्रान्ति तक छः मास और मकर से कर्क की संक्रान्ति तक ६ भाग अयन होता है। जिस दिन का दिनमान जानना चाहे कर्क की संक्रान्ति से उस दिन तक गिन तिगुना करे फिर १५६३ मिलाय ६० का भाग दे जो बचे वह रात्रि निकल आती है। इसी भाँति मकर की संक्रान्ति से गिनने पर दिनमान निकल आता है ॥ ७ ॥

चालन बनाने की विधि—

प्रस्तारस्तु यदाग्रे स्यादिष्टं संशोधयेद्दशम्।
इष्टकालं यदाग्रेस्यात् प्रस्तारं शोधयेद् धनम् ॥ ८ ॥

टीका—(पंचांगों में ग्रह स्पष्ट रहता है उसको प्रस्तार या पंक्ति कहते हैं, जिस समय जन्म हो वा वर्ष लगे वा प्रश्न हो उस समय को इष्ट कहते हैं। इष्ट समय

से पंक्ति के बीच के वारादिको चालन कहते हैं चालन दो प्रकार का होता है (एक ऋण दूसरा धन है)। प्रस्तार इष्टकाल से आगेका हो तो प्रस्तार को वार आदि में इष्टकाल के वार आदिके घटाने से जो शेष बचता है वह ऋण चालन वारादि होता है। इष्टकाल प्रस्तार से जो आगे का हो तो इष्टकाल में प्रस्तार को घटाने से वारादि धन चालन होता है।

उदाहरण—श्रीमान् हरिहर प्रसाद व्यास सरजूपारीण मलांव पाण्डेयजी का जन्म श्रीसंवत् १०६६ शाका १८३१ वैशाख वदी १० गुरुवार ४१।११ घनिष्ठा नक्षत्र शुभयोग ४६।३६ फिर विष्टिकरण श्री सूर्योदयादिष्टकाल ४१।३७ पर है, उसदिन दिनमान ३१।२३ रात्रिमान २८।२७ अर्द्ध रात्रिमान ४५।४६।३० है।

इष्ट १० गुरुवार का है इसके पहले प्रस्तार तिथि ७ चन्द्रवार के ४६ घ. २०प. पर है और इष्टके बाद तिथि १४ चन्द्रवार के प्रस्तार ४६ दं. ३६ प. मिश्रमानपर है दोनों ही का चालन बनाकर दिग् दर्शन कराता हूँ।

७ से १० आगे है इससे इस चालन से इष्ट में प्रस्तार घटाया जायगा।

इष्ट वारादि	५ । ४१ । ३७
प्रस्तार वारादि	२ । ४६ । २०
चालन धन	२ । ५५ । १७

और चतुर्दशी का जो प्रस्तार है वह इष्टसे आगे का है।

इससे प्रस्तार के वारादि	२ । ४६ । ३६ में
इष्ट वारादि	५ । ४१ । ३७ घटाया
चालन ऋण	४ । ४ । ५९ हुआ

जब वारोंमें न घटे तो उसमें ७ जोड़दे।

दोनों चालनों में से जो सप्तमी का चालन बना है वह कम है इससे वही इष्टके पासका है अतः उससे ही ग्रह स्पष्ट करे।

चालन धन २ । ५५ । १७ वारादि है ॥ ८ ॥

ग्रहस्पष्ट विधि—

गतैष्य दिवसाघे न गति र्निघ्नी खषट् हता।
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवद् ग्रहः ॥ ९ ॥

चालन का जो वार आदि है उसके ग्रहोंके गतिसे गुण गति चालको कहते हैं यह ग्रह इतना चला गतिकला विकला आदि होती है। चालन के वार के नीचे गति के कलादिको धरे दण्ड के नीचे धरे पलके नीचे भी धरे।

गत दिन आदि (ऋण चालन) से वा आगामी दिन आदि (धन चालन) से सूर्यादि ग्रहों की गति का गोमूत्रिका के रीति से गुणे फिर उसमें १० का भाग देने से जो लब्ध अंशादि मिले वह यदि गत दिनका हो तो पंचाङ्गस्थग्रह में घटावे, और यदि ऐष्य दिन (धन चालन का हो तो पंचाङ्ग स्थग्रह में जोड़े तो इष्ट समय का ग्रह बनेगा ॥ ९ ॥

"सूर्य चन्द्रौ मार्गिणौ च राहुकेतू हि वक्रिणौ
भौमादि पंच खेटा वै वक्रिणो मार्गेणस्तथा ।
धने वक्रिणि खेटेतु शोध्यं योज्यं ऋणे ग्रहे" ॥

टीका—(सूर्य और चन्द्रमा सदा आगे चलते हैं और राहु केतु ये दोनों सदा वक्री पीछे चलते हैं और मंगल आदि पाँच ग्रह को पंच तार कहते हैं ये आगे पीछे दोनों तरफ चलते हैं अर्थात् मार्गी वक्र दोनों होते हैं धन चालन हो तो, वक्रीग्रह हो तो चालन गति के गुणन फल में ६० के भाग से जो प्राप्त हो उसको पचाङ्गस्थग्रह में घटावे और ऋण चालन हो तो जोड़े, अर्थात् वक्री में उलटी क्रिया होती है)

वार	घ०	प०
चालन धन वारादि २	५५	१७
कला	विकला	प्रतित्रिकला
सूर्य की कलादि ५८	५८	५८
गति विकला	प्रतिविक०	
४५	४५	४५ प्रतिविकलाकापष्टंशश

चालन गति का गुणनफल

चालन २	५५	१७
दो अट्ठावन का गुणनफल	पचपन अट्ठावन का गुणनफल	सतरह अट्ठावनका गुणनफल
कलादि ११६	३१९० विकलादि	९८६ प्रति विकलादि
दो पैंतालीस का गुणनफल	पचपन पैंतालिसका गुणनफल	सत्रहपैंतालिशका गुणनफल
त्रिकलादि ९०	२४७२ प्रतिविकलादि	७६५ प्रतित्रिकलाके षष्ठ्यंश

सबसे बड़ा कला का गुणनफल है विकला का गुण फल दो जगह है उससे एकत्र जोड़े प्रति विकला का गुणनफल भी एकत्र जोडे । सबसे छोटा प्रति विकला साठवाँ हिस्सा है ।

११६ ५५ लब्ध ६०) १७१ (२ लब्ध १२० अंश शेष ५१ कला गुणन ६० फल ३१६० ३२८० ५७ लब्ध ६०) ३३३७ (५५ लब्ध ३०० कला ३३७ ३०० ३७ शेष विकला	यहाँ का गुणन फल नब्बे के नीचे है २४७५ ९८६ ३४६१ १२ लब्ध ६०) ३४७३ (५७ लब्ध ३०० विकला ४७३ ४२० ५३ शेष प्रति विकला	यहाँ का गुणनफल २४७५ के नीचे देखो ६०) ७६५ (१२ लब्ध प्रति ६० विकला १६६ १२० ४५ शेष प्रति विकला का ६० हिस्सो

अंश २, कला ५१, विकला ३७ मिला है धन चाल है इससे इसको पंक्ति के सूर्य में जोड़े

पक्ति का सूर्य ११ । २६ । ४८ । १७
चालनगति से प्राप्त २ । ५१ । ३७

सूर्य स्पष्ट ० । २ । ३६ । ५४

गतर्क्ष नाडी खरसेषु शुद्धा सूर्योदयादिष्ट घटीषु युक्तो ।
भयात संज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्ष नाडी सहितो भभोगः ॥१०॥
इष्टान्न्यूनं गतर्क्ष चेत् दिष्टे संशोधयेतदा ।
भयातं हि भभोगं तु पूर्ववत् साधयेत् सुधीः ॥ ११ ॥

टीका—जिस नक्षत्र में जन्म हो उसके पहिले का नक्षत्र गतर्क्ष कहाता है, गत नक्षत्र के दंडपल को ६० में घटा दे जो बचे उसे दो जगह लिखे एक जगह इष्ट काल जोड़े तो भजात होगा, दूसरे जगह जिस नक्षत्र में जन्म हो उस के दंडादि को जोड़े तो भभोग होगा ।

यदि इष्ट दिन को गत नक्षत्र की समाप्ति हो तो इष्ट काल में गत नक्षत्र के दंडादि के घटा देने से भजात होता है यदि इष्ट के ही दिन जन्म नक्षत्र लगे उसी दिन समाप्त भी हो जाय तो उस नक्षत्रका ही दंड पल मात्र भभोग होता है । यदि नक्षत्र की वृद्धि हो तो गतर्क्ष जो ६० में हीन करने से बचा है उसमें ६० जोड कर फिर तीसरे दिन जो वर्तमान नक्षत्र का दंड पल जोडे तब भभोग होता है ॥ १० ॥ ११ ॥

पहला उदाहरण ६० में गतर्क्ष १० । ३३ हीन किया

४६ । २७ बचा इसे दो जगह धरा

	४६ । २७		४६ । २७	
इष्ट	८ । ०		१७ । ५	निजर्क्षदंडादि
भजात	५७ । २७		६६ । ३२	भभोग

उदाहरण दूसरा

गतर्क्ष २५ । २८ उस दिन का है इष्ट ३५ । ७ है इष्ट में गतर्क्ष घटाया तो भजात ६ । ३६ हुआ ।

गतर्क्ष ६० में २५ । २८ घटाया

३४ । ३२ बचा इसमें वर्तमान नक्षत्र का दंडादि २३ । ८ जोड़ा तो भभोग ५७ । ४० हुआ ।

तीसरा उदाहरण

६०
गतर्क्ष ५८ । ५
१ । ५५
निजर्क्ष ६० ० दो दिन निजर्थ था इससे दोनों दिन का जोड़ा
निजर्क्ष २ २५ ६० में गतर्क्ष शोधने पर
भभोग ६४ २०

१ । ५५
इष्ट ७ । २४
भजात ६ । १६

चौथा उदाहरण इसी उदाहरण के अनुसार यह कुण्डली है
इष्ट ४१ ३७ है इष्ट के पहिले उसी दिन गतर्क्ष समाप्त है
गतर्क्ष १ । ४१ इष्ट में गर्क्ष को घटाया
भजात ३६ । ५६

उस दिन गत नक्षत्र के
बाद ५६ । २६ पर्यन्त
धनिष्ठा नक्षत्र था ।
यही भभोग हुआ ।

भभोग
५६ । २६

स्पष्ट चन्द्र प्रकार—

खषट्घ्नं[1] भजातं भभोगोद्धृतं तत्
खतर्कघ्न पिष्णेषु युक्तं द्विनिघ्नम्

---

१ दशघ्नं भजातं भभोगो द्धृतं तद् दशघ्नेषुधि ष्णोषुयुक्तेषु रविघ्नम् । नवा प्तंशशि भागपूर्व स्तुभुक्ति खखा भ्राष्ट वेदा भभोगेन भक्ताः ॥

नवाप्तं शशीभाग पूर्वस्तु भुक्तिः
खखाभ्राष्ट वेदा भभोगे भक्ताः ॥ १२ ॥

टीका—भजात के दंड को ६० से गुणा कर पल मिला दे और भभोग के दंड को भी ६० से गुणा कर के पल मिला दे पल स्वरूप भजात को ६० से गुणे उस में पलात्मक भभोग का भाग दें लब्ध एक जगह धरे शेष को ६० से गुणा करके उस में पलात्मक भभोग का भाग दे लब्ध पहले लब्ध के नीचे लिखे शेष को ६० से गुणा कर उसमें भभोग जो पलात्मक है उस का भाग दे लब्ध उन दोनों लब्धो के नीचे धरे ।

टीका—जिस नक्षत्र में जन्म हुआ है उस के पीछे के नक्षत्र का अश्विनी से गिने जो संख्या हो उसको ६० से गुणा कर के उस में लब्धांक को जोड़े फिर तीनों अंकों को दूना करे फिर पहले अंक में ९ का भाग दे लब्ध अंश होगा शेष को ६० से गुणा कर दूसरे स्थान के अंक को जोड़ कर ९ का भाग देने से लब्ध कला होगी शेष को ६० से गुणा करके तीसरे अंक को उसमें जोड़ने से ९ का भाग दे लब्ध विकला होगी अंश में ३० का भाग देने से लब्ध राशि शेष अंश रहेगा ।

४८००० इसको ६० से गुणा कर पलात्मक भभोगका भाग देने से लब्ध गति होगी शेष को ६० से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग देने से लब्ध विगती होगी ।

उदाहरण—

भजात	भभोग
३९।५६	५६।२९
६०	६०
२३४०	३३६०
५६	२९
भजात २३९६	भभोगपलात्मक ३३८९ यह चन्द्र साधन का भाजक है और दशाका भी भाजक है ।
पलात्मक ६० — चन्द्रस्पष्टका	
१४३७६० — यह भाज्य है ।	

३३८९) १४३७६० (४२ प्रथमलब्ध
१३५५६
८२००
६७७८
१४२२
६०
३३८९) ८५३२० (२५ द्वितीयलब्ध
६७७८
१७५४०
१६९४५
५९५
६०
३३८९) ३५७०० (१० तृतीयव्लब
३३८९
१८१०

धनिष्ठा नक्षत्र का जन्म है इससे गत नक्षत्र श्रवण है अश्विनी से श्रवण २२ है
२२ गतनक्षत्र
६० गुणक
१३२० इसमें
४२।२५।१० तीनों लब्धों
१३६२।२५।१० को जोड़ो
२ दूना किया
९) २७२४।५०।२० (३०२
२७
२४
१८
शेष ६
६०
३६०
५०
९) ४१० (४५
३६
५०
४५
५
६०
३००
२०
९) ३२० (३५
२७
५०
४५
५ शेष

अंशादि चन्द्र ३०२।४५।३५
अंशामें ३०) ३०२ (१०लब्ध
३०
२ शेष
राश्यादिचन्द्र१० २।४५।३५

४८०००
६० चन्द्रगति
३३८९) २८८०००० (८४९ कला
२७११२
१६८८०
१३५५६
३३२४०
३०५०१
२७३९
६०
३३८९) १६४३४० (४८विगत विकल
१३५५६
२८७८०
२७११२
१६६८ शेष

ग्रहाः स्पष्टाः

सू.	चं.	मं.	बु	गु.	शु	श.	रा.	के.
०	१०	६	०	४	०	११	१	७
२	२	८	१	१३	०	२१	२८	२८
३६	४५	४८	२३	११	२५	२१	५१	५१
५५	३५	२०	२७	१६	१०	५७	१६	१६
५८	८४६						३	३
४५	४८						११	११

अयनांश बनाने का प्रकार—

भूनेत्र वेदोनशकस्त्रि निघ्नो व्योमाभ्रनेत्रैर्विहृतोऽयनांशाः ।
त्रिघ्नोऽर्कराशिःस्वदलेनयुक्तस्तावन्मितास्याद्विकलाभिराढ्याः १३

टीका—जिस शाके में अयनांशा बनाना है उस शाके में ४२१ को घटा दे जो शेष बचे उसे ३ से गुणा करदे फिर गुणनफल में २०० का भाग देने से लब्ध अंश होता है, शेष को ६० से गुणा कर २०० का भाग देने से लब्ध कला होती है शेष को ६० से गुणाकर २०० का भाग देने से लब्ध विकला होती है इस प्रकार वर्षा रम्भ में अयनांशा मकरंद के अनुसार होती है। तत्कालिक अयनांशा जिस समय का बनाना है उस समय सूर्य की जो राशी हो उसको ३ से गुणा करे जो गुणनफल हो उसका आधा और भी गुणनफल में जोड़ दे जो हो उसके अयनांशा जो वर्षारम्भ में है उसके विकला में युक्त करे तो तत्कालिक अयनांशा होगा।

नोट—५४ विकला प्रत्येक वर्ष अयनांशा बढ़ता है, जो साढ़े चार विकला प्रत्येक मास की वृद्धि हुई, १० दिनका १॥ विकला इस प्रकार प्रत्येक दिनका ६ प्रति विकला हुआ। प्रत्येक दंड में एक प्रति विकला के ६० वे हिस्से का ६ बढ़ा करता है। सूर्य की राशि अंश देख के अयनांशा की वृद्धि करे।

उदाहरण—शाक १८३१ में
४२१ को घटाया
१४१० बचे, इसको
३ से गुणा
भाजक २००) भाज्य ४२३० हुआ (२१ लब्ध
४००
२३०
२००
३० शेष को
६० से गुणा
२०) १८०० हुए (९
१८००
० शेष

यह वर्षारंभ का अयनांशा है सूर्य ० । २ । ३९ । ५४ है ९ प्रति विकला मकरंदीय अयनांशा प्रतिदिन बढ़ता है राशि शून्य है।

इससे सूर्य के अंशादि को २ । ३९ । ५४ को
९ से गुणा
१८ । ३५१ । ४८६
६ ८ ४८०
३५९ । ६
२३ । ५९ । ६ अर्धाधिक्य से २३ में १
बढ़ा दिया २४ इसको अयनांशाः
२१ । ६१ / में
२४
२१ । ७ । ० । २४ हुआ

तत्कालिक अयनांशा

अयनांशाः २१ । ६ । ० है सूर्य ४ । १५ । १ । २१ है
सूर्य की राशि ४ को । ९ से अंशादि को गुणा
३ से १३५ । ९ । १८९
१२ हुए इसमें इसका । १२० । ३ । १८०
६ आधा जोड़ा । १५ । १२ । ९
१८
२
२० । १५ हुआ इसको
२१ । ६ । ० में जोड़ा
२१ । ६ । २० । तो तत्कालिन अयनांशा हुआ

जयनांशा ज्ञानार्थ शकांक

शाका	१८२१	१८५१	१८८१	१९११	१९४१	१९७१	२०११	२०३१	२०६१	२०९१	
संवत्	१९५६	१९८६	२०१६	२०४६	२०७६	२१०६	२१३६	२१६६	२१९६	२२२६	
अंश	२१	२१	६१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	
कला	०	२७	५	१	४८	१५	४२	९	३६	३	
विकला	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
शाका	२१२१	२१५१	२१८१	२२११	२२४५	२२७१	२२११	२२३१	२३६१	२३९१	२४२१
सम्वत्	२२५६	२ ८६	२३२१	२३४६	२३७६	२४०६	२४३६	२४६६	२४९६	२५२६	२५१६
अंश	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	०
कला	३०	५७	२४	११	१८	४५	१२	३९		३३	०
विकल	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शेषांक

शेष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंश	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कला	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१३
विकल	२४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०
शेष	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंश	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कला	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
विकुल	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०

सूर्य राशि

सूर्यगत राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
कला	४	९	१३	१८	२२	३७	३	३६	४०	४५	४९	५५
दि.	३०	४	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

अयनांश ज्ञानार्थ सूर्य अंश

सूर्य अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
विकलादि	० ९	० १८	० २७	० ३६	० ४५	० ५४	१ ३	१ १२	१ २१	१ ३०	१ ३९	१ ४८	१ ५७	२ ६	२ १५
सूर्य अंश	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
विकलादि	२ २४	२ ३३	२ ४२	२ ५१	३ ०	३ ९	३ १८	३ २७	३ ३६	३ ४५	३ ५४	४ ३	४ १२	४ २१	४ ३०

अयनांश ज्ञानार्थ सूर्य कला

सूर्य कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
प्रति विकलादि	० ९	० १८	० २७	० ३६	० ४५	० ५४	१ ३	१ १२	१ २१	१ ३०	१ ३९	१ ४८	१ ५७	२ ६	२ १५
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	२ २४	२ ३३	२ ४२	२ ५१	३ ०	३ ९	३ १८	३ २७	३ ३६	३ ४५	३ ५४	४ ३	४ १२	४ २१	४ ३०
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
	४ ३९	४ ४८	४ ५७	५ ६	५ १५	५ २४	५ ३३	५ ४२	५ ५१	६ ०	६ ९	६ १८	६ २७	६ ३६	६ ४५
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	६ ५४	७ ३	७ १२	७ २१	७ ३०	७ ३९	७ ४८	७ ५७	८ ६	८ १५	८ २४	८ ३३	८ ४२	८ ५१	९ ०

चरखण्डाज्ञान-

द्विगुणा विषुवच्छाया विभजेत् क्रमशस्त्रिधा ।
सूर्याहः पट् गुणैर्लब्धं चरखण्डा पला भवेत् ॥ १४ ॥

टीका—मेषराशि के सायन सूर्य जिस दिन हो उस दिन मध्याह्न के समय १२ अंगुल की लकडी की जो छाया हो उसको पलभा कहते हैं ॥ १४ ॥

(विषुवच्छाया (पलभा) को २१ से गुणा कर पलात्मक बनाकर तीन जगह धरे उसमें क्रम से १२।१५।२६ का भाग लेने से जो लब्ध मिले वह उस देश का चरखंडा होता है)

उदाहरण—

श्री काशीजी की पलभा ५।४।५ है इसको २ से गुणा किया तो ११।३० हुआ ११ को ६० से गुणा किया तो ६६० हुआ इसमें ३० जोड़ा तो ६९० हुआ इसे तीन जगह धरा—

भाजक		लब्ध	भाजक		लब्ध	भाजक		लब्ध
१२)	६९० (	५७ ।	१५)	६९० (	४६ ।	३६)	६९० (	१९
	६०			६०			३६	
	९०			९०			३३०	
	८४			९०			३२४	
	६ शेषत्याग			०			६ शेषत्याग	

इस प्रकार चरखण्डा ५७। ४६। १९ हुआ।

वस्वर्द्धनन्दनन्दा त्रित्रिरदं च क्रमोत्क्रमात्।
चरखण्डोनितं युक्तं विनाड्यो नाडिकादयः॥ १५॥

लंका में मेषराशि का २७८ वृषराशि का २९९ मिथुन का ३२३ पलमान हैं इसको विपरीत करने से कर्क का ३२३ सिंहका २९९ कन्याका ३२३ पल मान है इन छवों के मान के उलटने पर तुलादि छः राशि का मान होगा। लंका का मेष वृष मिथुन इन तीन राशि का मान है उसमें चर खंडा हीन करने से स्वदेश में मेष वृष मिथुन का मान होगा, और लंका में कर्कादि।

तीन राशियों का मान है उसमें चरखण्डा युक्त करने से कर्कादि तीन का स्वदेश मान होता है। कन्या सिंह इत्यादि विपरीत राशियोंका मान तुला वृश्चिक इत्यादि राशियों का क्रम से मान होता है।

राशि	लंकोदय मान्य	चरखण्डा	काशीकामान (काशी)	राशि	लंकोदय	चरखंडा	काशीकामान
मेष	२७८	५७	२२१	तुला	२७८	५७	३३५
वृष	२९९	४६	२५३	वृश्चिक	२९९	४६	३४५
मिथुन	३२३	१९	३०४	धन	३२३	१९	३४२
कर्क	३२३	१९	३४२	मकर	३२३	१९	३०४
सिंह	२९९	४६	३४५	कुंभ	२९९	४६	२५३
कन्या	२७८	५७	३३५	मीन	३२३	५७	२२१

सं. १९५६ शाका १८२१ में अयनांशा का दशा ६१ था शा. २०२१ में २४ अंश होगा और शाक २२२१ में अयनांश का पूर्ण अंश २७ होगा और शाका २४२१ में पूरा तीस अंश अयनांशा हो जायगा।

(१) राशि पत्वयमासेपेः गुणापञ्चयमाघृषेमिथुने अब्धिविद्राम कर्कटे द्विकृताग्नयः। पञ्चाब्धिवह्नयः सिंहे कन्या वारा गुणाब्धयःतुलादौ विपरीतं तु राशि मान मुदाहृतम्।

राशि			लंकोदयमान		काशी का मान पलात्मक		
मे.	कन्या	तु.	मी.	२७८	मे.	मीन	२२१
वृष	सिं.	वृश्चि.	कुं.	२९९	वृ.	कुं.	२५३
मि.	कक	ध.	म.	३२३	मि.	म.	३०४
					क.	ध.	३४२
					सिं.	वृ.	३४५
					क.	तु.	३३५

काशी लंका का राशि प्रमाण—

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
२२१	२५३	३०४	३४२	३४५	३३५	३३५	३४५	३४२	३०४	२५३	२२१	पलात्मक
३ ४१	४ १३	५ ४	५ ४२	५ ४५	५ ३५	५ ३४	५ ४५	५ ४२	५ ४	४ १३	३ ४१	घ. प.
४ ५	४ ५२।	५ ३२॥	५ ४२॥	५ ३७॥	५ ३५	५ ४२॥	५ ४२॥	५ १३॥	४ ३५	३ ४९	३ ४१	घ. प.
२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८	पला. लंका

निरयन के अनुसार राशिमान घंटा मिन्ट में और एक अंश का तथा नवांश का मिन्ट सेकेंट प्रमाण।

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
लग्नमान	१ ३७	१ ५६	२ १४	२ १८	२ १७	२ १६	२ १६	२ ७	२ ६	१ ४९	१ ३१	१ २८	घ. मि.
लग्नमान	९७	११६	१३४	१३९	१३७	१३६	१३६	१२७	१२६	१०९	९१	८८	मिन्ट
एकअंश	२ ६	३ ५२	४ २८	४ ३८	४ ३९	४ ३२	४ ३२	४ ३४	४ १२	३ ३८	३ २	२ ५६	मिन्ट सेकेंट
नवांश	१० ४६ ४०	१२ ५३ २०	१४ ५३ २०	१ १३ २०	१५ ६ ४०	१५ ६ ४०	१५ १३ २०	१४ १३ २०	१४ ० ०	१३ ६ ४०	१० ६ १०	९ ४६ ०	मिन्ट सेकेंट

मकरंदीय अयनांश ४२१ शाके में प्रारंभ हुआ ९ प्रति विकला प्रतिदिन बढ़ता है। इस प्रकार प्रत्येक मास में साढ़े चार विकला की वृद्धि है और वर्ष भर में ५४ विकला ६७ वर्ष में १ अंश १८ विकला सौ वर्ष में डेढ़ अंश बढ़ता है २० सौ वर्ष में ३० अंश पूर्ण हो जाता है। शाका १८२१ में २१ अंश पुरा हुआ शा २०२१ में २४ अंश शा० २२२१ में २७ अंश और शाका का २४२१ में ३० अंश पूर्ण होगा और इसी शाका में मेष के १ अंश पर ९ घात कला इस प्रकार शाका २४२२ में अयनांश । ० । ० । पाठ होगा ।

अक्षांश पलभा देशान्तर सारिणी।

नगरनामानि	अक्षांशाः	पलभा	काशी से देशान्तर	नगरनामानि	अक्षांशाः	पलभाः	काशी से देशान्तर
	अं. क.	अं. व्य.	घ. प.		अं. क.	अं. व्यं.	घ. प.
अमृतसर	२१ । २९	७ । २३	१।२१ प.	काश्मीर	२८ । २६	६ । ३०	२।१४ प.
अलीगञ्ज,	२६ । १२	५ । ५४	०।१७ पू.	कानपुर	२६ । २८	५ । ५८	०।२७ प.
अञ्जार (कच्छ)	२३ । ७	५ । ७	२।७ प.	काशी	२५ । १८	५ । ४०	०।० पू.
अमरावती	२० । ५४	४ । ३५	०।१२ प.	कासगञ्ज	२७ । ४७	६ । १९	०।४३ प.
अयोध्या	२६ । ४८	६ । ४	०। ८ प.	काल्पा	२६ । १०	५ । ५४	०।३२ प.
अमेठी	२६ । ६	५ । २२	०।१२ प.	काठमांडू, नेपाल	२७ । ४३	६ । ११	०।२२ पू.
अजमेर	२६ । २८	५ । ५८	१।२३ प.	कृष्णगढ़			
अमरपुर	२६ । ५०	६ । ४	०।३८ पू.	बङ्गाल	२३ । २३	५ । ११	१।५५ प.
अहमदनगर	१९ । ६	४ । ६	१०।२२प.	कोटाबूंदी	२५ । १२	५ । ३८	२।११ प.
अलवर	२७ । ३२	६ । १६	१।४ प.	कुरुक्षेत्र	२९ । ५७	६ । ५४	१।२ प.
अल्मोड़ा	२९ । ३५	६ । ४९	०।३३ प.	कूंच विहार	२६ । २०	५ । ५६	१।४ प.
अलीगढ़	२७ । ५२	६ । २१	०।४९ प.	खण्डपारा	२० । १६	४ । २६	०।२२ पू.
अम्हर्स्ट	१६ । १५	३ । ३०	२।२५ पू.	गया	२४ । ४९	५ । ३३	०।२० पू.
अहमदाबाद	२३ । १	५ । ६	१।४४ प.	गाजीपुर	२५ । ३५	५ । ४५	०।६ पू
आरा	२५ । ३४	५ । ४४	०।१६ पू.	गोरखपुर	२६ । ४७	६ । ३	०।३ पू.
आजमगढ़	२६ । ४	५ । ५२	०।२ प.	गोंडा	२७ । ८	६ । ९	०।१० प.
आगरा	२७ । १२	६ । १०	०।४९ प.	ग्वालपाड़ा	२६ । ११	५ । ५४	१।१६ पू.
आवा }	२१ । ५५	४ । ५०	२।१० पू.	ग्वालियर	२६ । १२	५ । ५४	०।४८ प.
मण्डाले }				गिद्धौर	२४ । ५१	५ । ३३	०।३३ पू.
आसन्सोल	२३ । ४३	५ । १६	०।४० पू.	गोलाघाट	२६ । ३१	५ । ५९	१।४९ पू.
इटावा	२६ । ४६	६ । ३	०।३९ प.	गौहाटी			
इन्दौर	२२ । ४४	५ । २	१।१२ प.	आसाम	२६ । ११	५ । ५४	१।२७ पू.
इच्छागढ़	२३ । ५	५ । ७	०।२९ पू.	गोविन्दपुर	२३ । ५०	५ । १८	०।३५ पू.
उज्जयिनी	२३ । ११	५ । ८	१।११ प.	चरखारी	२५ । २४	५ । ४२	०।२३प.
उदयपुर	२४ । ३४	५ । २६	१।३३ प.	चन्दौसी	२८ । २८	६ । ३०	०।४२ प.
उन्नाँव	२६ । ४८	६ । ४	०।२३ प.	चित्रकूट	२५ । १२	५ । ३६	०।२१ प.
एटा	२७ । ३४	६ । १६	०।४३ प.	चुनारगढ़	२५ । ७	५ । ३८	०।१ प.
कछार	२४ । ५०	५ । ३३	१।३८ पू.	चैबासी	२२ । ३३	४ । ५९	०।२८ पू.
कलकत्ता	२२ । २३	४ । ५६	०।५३ पू.	छटक (सिलहट	२५ । १	५ । ३६	०।२६ पू.
कर्नाल	२६ । ४२	६ । ५१	०।४६ प.	छतरपुर	२४ । ५५	५ । ३४	०।३३ प.
कटक	२० । ३०	४ । २६	०।२९ पू.	छपरा	२५ । ४६	५ । ४८	४।१७ पू.
करांची	२४ । ५१	५ । ३३	२।३६ प.	छयगांव (आसाम)	२६ । ५	५ । ५२	१।२३पू.
कन्नौज	७२ । ३	६ । ८	०।२९ प.				

नगरनामानि	अक्षांशाः अं.	क.	पलभाः अं.	व्यं.	काशी से देशान्तर घ. प.
जयपुर	२६	५३	६	५	१।११प.
जबलपुर	२३	१२	५	८	०।३०प.
जगन्नाथपुरी	१९	४९	४	१९	०।२८पू.
जामनगर	२२	२७	४	५७	२।९ पू.
जनकपुर	२३	४३	५	१६	०।१२पू.
जालौन	२६	९	५	५४	०।३६प.
जमालपुर (मैमनसिंह)	२४	५८	५	३५	१।१०पू.
जोधपुर	२६	२०	५	५६	१।३९प.
जौनपुर	२५	४४	५	४७	०।३ प.
जलपाईगूरी	२६	३२	५	५९	०।५७पू.
झांसी	२५	२८	५	४३	०।४४प.
टेकारी	२४	५८	५	३५	०।१७पू.
डुमरांव	२५	३३	५	४४	०।१२पू.
ढाका	२३	४२	५	१६	१।१४प.
तिलहर	२७	५०	६	२३	०।३२प.
दतिया	२५	४०	५	४६	०।४५प.
दरभंगा	२६	८	५	५४	०।२९पू.
दार्जिलिङ्ग	२७	३	६	८	०।५३पू.
दीनाजपुर	२५	३७	५	४५	०।५६पू.
देहली	२८	३८	६	३३	०।५७प.
देहरादून	३०	१९	७	१	०।४९प.
द्वारिका	२२	१४	४	५४	२।२०प.
दिब्रगढ़	२७	२९	६	१५	१।५९प.
धवलपुर	२६	४२	६	२	०।१५प.
नरसिंहपुर	२२	५७	५	५	०।३७प.
नागौद बुन्देलखण्ड	२४	३४	५	२६	०।४२प.
नासिक	१९	५९	४	२२	१।३२प.
नागपुर	२१	१०	४	३९	०।३८प.
नीमच	२४	२७	५	१८	१।२१प.
नैनीताल	२९	२३	६	४५	०।३४प.
नेपालगंज	२८	२	६	२३	०।१३प.
पटना	२४	०	५	२१	१।२ प.
पटियाला	३०	२०	७	१	१।५ प.

नगरनामानि	अक्षांशाः अं.	क.	पलभाः अं.	व्यं.	काशी से देशान्तर घ. प.
पटना	२५	३६	५	४५	० । २२ पू.
प्रतापगढ़	२५	३४	५	४४	० । १० प.
पीलीभीत	२८	३८	६	३३	० । ३१ प.
प्रयाग	२५	२८	५	४३	० । १२ प.
पुर्निया	२५	४६	५	४८	० । ४५ पू.
पूना	१८	३०	४	१	१ । ३१ प.
पुष्कर	२६	२९	५	५९	१ । २५ प.
पुरुलिया	२३	२०	५	११	० । ३४ पू.
पेशावर	३४	२	८	३	१ । ५४ प.
पोरबंदर	२१	३९	४	४६	२ । १४ प.
प्रोम	१८	४७	४	५	२ । ० पू.
पेण्डरा	२२	४५	५	२	० । १० प.
फतेपुर	२५	५५	५	५०	० । २१ प.
फैजाबाद	२६	४७	६	३	० । ९ प.
फर्रुखाबाद	२७	२६	६	१३	० । ३४ प.
बलिया	२५	४६	५	४८	० । १२ पू.
बहराइच	२७	३४	६	१६	० । १४ प.
बरैली	२८	२२	६	२९	० । ३५ प.
बक्सर	२५	३३	५	४४	० । १० पू.
बड़ौदा	२२	१८	४	५५	१ । ३७ प.
बम्बई	१८	५६	४	७	१ । ४६ प.
बलरामपुर	२७	२७	६	१४	० । ८ प.
बर्दवान	२३	१७	५	१०	० । ४८ पू.
बांदा	२५	२८	५	४३	० । २७ प.
बिहार	२५	१५	५	४०	० । २६ पू.
बीकानेर	२८	२	६	२३	१ । ३६ प.
बेतिया	२६	४०	६	२	० । १५ पू.
बालेश्वर	२१	३०	४	४४	० । ३९ पू.
बिलासपुरी	२२	५	४	५२	० । ८ प.
बूंदी	२५	२६	५	४३	१ । १३ प.
बुलन्दशहर	२८	२४	६	२९	० । ५१ प.
बराकर	२३	४६	५	१७	० । ३८ पू.
बाँसी (बस्ती)	२६	१५	६	११	० । १ प.
बाकरगञ्ज	२०	३०	४	२९	१ । १२ पू.
बदायूँ	२८	२	६	२३	० । ३८ प.

नगरनामानि	अक्षांशाः अं. कं.	पलभाः अं. व्यं.	काशी से देशान्तर घ. प.	नगरनामानि	अक्षांशाः अं. क.	पलभाः अं. व्यं.	काशी से देशान्तर घ. प.
बस्ती	२६ । ४८	६ । ४	० । ३ प.	रायपुर	२१ । १५	४ । ४०	०।१३ प.
बाराबङ्की	२६ । ५६	६ । ६	० । १८ प.	रुड़की	२६ । ५२	६ । ५३	०।५१ प.
बीरभूमि	२३ । ५४	५ । १६	० । ४५ पू.	लखनऊ	२६ । ५५	६ । ६	०।२० प.
भरोच	२१ । ४१	४ । ४६	१ । ४० पू.	लखीमपुर	२७ । ५५	६ । २२	०।३२ प.
भरतपुर	२७ । १४	६ । १०	० । ५५ प.	लाहौर	३१ । ३५	७ । २३	१।२१ प.
भागलपुर	२५ । १४	५ । ४०	० । ४० पू.	लोहरदग्गा	२३ । २७	५ । १२	०।१७ पू.
भुज (कच्छ)	२३ । ५	५ । ६	२ । १२ प.	बाराहभूम	२३ । १०	५ । ८	०।३४ पू.
मधुबनी	२६ । २०	५ । ५६	० । ३१ पू.	वैद्यनाथ	२४ । ३०	५ । २८	०।३७ पू.
मण्डाले०	२२ । ०	४ । ५१	२ । ११ पू.	शक्तिगढ़	२३ । १५	५ । ६	०।५० प.
मथुरा	२७ । ३१	६ । १५	० । १२ प.	शाहजहाँपुर	२७ । ५३	६ । २१	०।३१ प.
मफौलीराज्य	२६ । ३८	६ । १	० । १ प.	शिवसागर	२६ । ५६	६ । ७	१।५६ पू.
मालदा	२५ । ३	५ । ३७	० । ५१ पू.	सहारनपुर	२६ । ५७	६ । ५५	०।५४ प.
माण्डवी (कच्छ)	२२ । ५०	५ । ३	२ । १५ प.	सागर	२३ । ५०	५ । १८	०।४३ प.
				सोहावल	२४ । ३५	५ । २६	०।२२ प.
मेरठ	२६ । १	६ । ३९	० । ५२ प.	सिलचर	२४ । ५०	५ । ३३	१।३८ पू.
मेदिनीपुर	२२ । २५	४ । ५७	० । ४३ पू.	सिलहट	२४ । ५३	५ । ३४	१।३९ पू.
मोतिहारी	२६ । ४०	६ । २	० । १९ पू.	सीतामढ़ी	२६ । ३४	६ । ०	०।२४ पू.
मैहरराज्य	२४ । १६	५ । २५	० । २२ प.	सीतारामपुर	२३ । ४५	५ । १७	०।३६ पू.
मुरादाबाद	२८ । ५१	६ । ३७	० । ४२ प.	सरगुज्जा	२३ । ५	५ । ७	०।२ पू.
मुंगेर	२५ । २३	५ । ४२	० । ३५ पू.	सीतापुर	२७ । ३४	६ । २६	०।२३ प.
मैनपुरी	२७ । १४	६ । ११	० । ३९ प.	सुलतानपुर	२६ । १६	५ । ५५	०।१६ प.
मिर्जापुर	२५ । ९	५ । ३८	० । ४ प.	हजारीबाग	२३ । ५९	५ । २१	०।२४ पू.
मुजफ्फरपुर	२६ । ७	५ । ५३	० । २४ पू.	हरिद्वार	२९ । ५८	६ । ५५	०।४८ प.
मैमनसिंह	२४ । ४६	५ । ३२	१ । १४ पू.				
मौलमीन	१६ । २६	३ । ३३	२ । २६ पू.	हैदराबाद दक्षिण	१७ । २३	३ । ४५	०।४७ प.
मुर्शिदाबाद	२४ । ११	५ । २३	० । ५३ पू.				
रंगून	१६ । ४६	३ । ३७	२ । ११ पू.	हैदराबाद (सिन्ध)	२५ । २५	५ । ४२	२।२६ प.
रङ्गपुर	२५ । ४५	५ । ४७	१ । २ पू.				
रानीगञ्ज	२३ । ३५	५ । १४	० । ४१ पू.	हाजीपुर	२५ । ४४	५ । ३०	०।२२ प.
रांची	२३ । २३	५ । ११	० । २३ पू.	हमीरपुर	२५ । ५८	५ । ५१	०।२८ पू.
राजमहल	२५ । २	५ । ३६	० । ४८ पू.	हरदोई	२७ । २३	६ । १३	०।२८ प.
रायबरेली	२६ । १४	५ । ५५	० । १७ प.	हल्द्वानी	२९ । १५	६ । ४३	०।३४ प.
रीवां	२४ । ३१	५ । २८	० । १७ प.	हाथरस	२७ । ३७	६ । १७	८।४० प.

पूर्व नतं स्याद् दिन रात्रि खण्ड दिवानिशोरिष्ट घटी विहीनम् ।
दिवा निशोरिष्ट घटीषुशुद्धं द्यु रात्रिखण्डं त्वपरं नतंस्यात् ॥१६॥
उदये चास्त मध्याह्ने मध्यरात्रे ततं नहि ।
अंकराशि युते लग्ने कर्म भात सदैवहि ।
तत्काले सायनार्कस्थ भुक्त भोग्यांश संगुणात् ।
स्वोदयात खाग्नि लब्धं यद् भुक्तं भोग्यंरवेस्त्यजेत् ॥१७॥
इष्टनाडी पलेभ्यत्त गतगम्या निजोदयाद् ।
शेषं खत्र्या हतं चैव अशुद्धेन लवादिकम् ॥ १८ ॥
अशुद्ध शुद्धभेर्हीनं युक्तनुर्व्ययनांशकम् ॥

टीका—दिनका इष्टकाल दिनार्ध में और रात्रि का इष्टकाल रात्र्यर्ध में इष्टको घटाने से पूर्व नत होता है। दिन के इष्टकाल में दिनार्ध और रात्रि के इष्टकाल में रात्र्यर्ध हीन करने से पर नत होता है। दशम लग्न साधने के इष्ट का नत नाम है।

उदाहरण—दिनमान ३१।३३ रात्रिमान २८।२७ अर्ध रात्रि ४५।४६।३० इसमें इष्ट ४१।३७ को घटाया तो रात्रि का पूर्वनत ४।९।३ यह दंडादि है नत को ही दशम लग्न में इष्ट कहा है।

टीका—सूर्योदय सूर्यास्त मध्यदिन मध्यरात्रि को नत नहीं होता है लग्न में ९ जोड़ने से लग्न होता है।

तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नं तदुच्यते ॥

टीका—जिस राशि के सूर्य हों वही लग्न सूर्योदय में होता है। और उसमें सप्तम लग्न सूर्यास्त में होता है। उसको अस्त लग्न जानिये।

सूर्य ० । २ । २९ । ५४ में
अयनांश २१ । ९ । ० ॥ २४ जोडा तो।
सायनसूर्य । ० । २३ । ४८ । ५४ । २४ हुआ।
भुक्तांश २३ । ४८ । ५४ । २४ है इसको ३० में हीन किया तो
भोग्यांश ६ । ११ । ५ । ३६ हैं।

टीका—तत्कालिक सायन सूर्य का जो भुक्तांश या भोग्यांश उसको सायन सूर्य जिस राशि का हो उस राशि के स्वदेश राशि मान से गुणे और

(दशम लग्न साधना होतो लंका के मान से गुणे) फिर तीस का भाग देने से लब्ध भुक्तांश का गुणा हो तो भुक्त काल होगा भोग्यांशा से गुणा होगा तो भोग्य काल होगा ।

इष्ट काल के दंड को ६० से गुणा करके उसमें पल मिलादे फिर जो हो उसमें भोग्य काल को घटादे फिर जिस राशि के सयन सूर्य है उसके बाद की जेतनी राशियों का मान घटे घटादे अंत्य में जिस राशि का मान घटेगा वह शुद्ध संज्ञा वाली राशि होगी उसके आगे राशि अशुद्ध संज्ञावाली है घटाने से जो शेष है उसको ३० से गुणा करे और उसमें अशुद्ध लग्न के मान से भाग दे लब्ध अंश होगा शेष को ६० से गुणा कर अशुद्धोदय लग्न के मान का भाग दे लब्ध कला होगी शेष को ६० से गुणा कर अशुद्धोदय राशि के मान से भागदे लब्ध विकला होगी ।

इस प्रकार अंशादि निकाल ले अंशाके पहले शुद्धराशि की मेष से जो संख्या हो उसे लिखे फिर अयनांशाके घटा देने से स्पष्ट लग्न होगा ।

उदाहरण

सायन सूर्य का भोग्यांशा ६ । ११ । ५ । ३६ है ।

सायन सूर्य मेष राशि का है उसके मान २२१ से गुणा

तो यह हुआ दाहिने तक के अंक में ६० का भाग दो वामभाग के अंक में जोड़ दो फिर उसमें भाग दे उसके वामभाग में लब्ध जोड़े फिर अंत्य के अंक में ३० का भाग दे ।

१३२६	२४३१	११०५	७९५६
४०	२०	१३२	६०
१३६६	२४५१	१२३७	१९५
	२४०	१२०	१८
	५१	३७	१५६
	शेष	शेष	१२०
			३६
			शेष

नोट—भोग्यकाल तो बचा सायन सूर्य मेष का है मेष घट गया इसके आगे वृष का मान २५२ मिथुन का मान ३०४ कर्क का मान ३४२ सिंह का मान ३४५ कन्या का मान ३३५ तुला का मान ३२५ वृश्चिक का मान ३४५ २२५९ शुद्धराशि वृश्चिक हुई अशुद्धिराशि धन हुई ३४२ इसा का भाग दिया ।

३०) १३६६ (४५ लब्धअंश ।
१२०
१६६
१५०
१६ शेष
६०
९६०
५१ शेष जोड़ा
३०) १०११ (३३ लब्धकला
९०
१११
९०
२१ शेष

शेष २१
६०
१२६० से गुणा
३७ शेष जो०
३०) १२९७ (४३ लब्ध विकला
१२०
९७
९०
७ शेष
६० से गुणा
४२०
३६ शेष जोड़ा
३०) ४५६ (१५ लब्ध प्रति विकला
३०
१५६
१५०
६

इस प्रकार भोग्य काल ४५ । ३३ । ४३ । १५ । हुआ इसी प्रकार भुक्तांशास भुक्त काल भी बनेगा ।

इष्ट काल ४१ । ३७
६० सेगुणा
२४६०
३७ पलकोजोड़ा
२४९७ तो हुआइसमें
४५।३३। ३ १५ को घटाया
२४५१।२६।१६।४५
२२५९वृषसेवृश्चिकराशितककामानघटा
१९२ । २६ । १६ । ४५
३०

५७६०	७८०	४८०	१३५०
१३	८	२२	१२०
५७७३	७८८	५०२	१५०
	६०	४८०	१२०
	१८८	२२	३०
	१८		
	८		

३४२) ५७७३ (१६ लब्ध अंश
३४२
२३५३
२०५२
३०१
६०
३४२) १८०६८ (५६ इसमें ८ जोड़ा है
१५९० कला लब्ध
२१६८
२०५२
११६
६०
६९६०
२२ जोड़ा
३४२) ६९८२ (२० विकला लब्ध
६८४
१४२
६०
८५२०
३०
३४२) ८५५० (२५ प्रति विकलालवध
६८४
१७१०
१५९०
१२० शेष

लब्ध अंशादि १६ । ५६ । २० । २५
शुद्ध राशि ८ ।

८ । १६ । ५६ । २० । २५
अयनांशा २१ । ९ । ० । २४

स्पष्टलग्न ७ । २५ । ४७ । २० । १

एवंलङ्कोदयैर्भुक्तंभोग्यं शोध्यं पलीकृतात् ॥ १९ ॥
पूर्वं पश्चान्नतादन्यत् प्राग्वद्दशमं भवेत् ।
सषड्भेलग्नखे जाया तूर्यौ लग्नोन तूर्यतः ॥ २० ॥
षष्ठांशयुक्तनुः सन्धिरग्नेषष्ठांश योजनात् ।
त्रयः ससन्धयोभावाषष्ठांशोनैक्ययुक् सुखात् ॥ २१ ॥
अग्रेत्रयः षडेवन्तेभार्धयुक्तापरेऽपिषट् ।
खेटेभाव समेपूर्णं फले सन्धिसमेतुखम् ॥ २२ ॥

टीका—इसी प्रकार सायन सूर्य के भुक्तांश और भोग्यांश को लंकोदय के मन से गुणाकर ३० का भागदे भुक्तकाल और भोग्यकाल को बनावे (भुक्तांशासे भुक्तकाल ऋण) [भोग्यांशासे भोग्यकालधन] नत को पलबन कर उसमें भुक्तकाल या भोग्यकाल के घटावे, भुक्तकाल घटाया हो तो सायन सूर्य के पीछेकी राशियों की जेतना मान घटे उतना घटावे जहाँतक घटगया अंत्यकी राशिशुद्ध हुई उसके नीचे की राशि अशुद्ध हुई, भोग्यकाल घटाया हो तो सायन सूर्य के आगे की राशिमानों को घटावे अंत्यकी राशि शुद्ध उसके आगे की अशुद्ध है । शेषको ३० से गुणे उसमें अशुद्ध राशिके मानसे भागदे लब्ध अंशादि निकाललें भुक्तकिया कियाहो तो अशुद्ध राशिकी संख्या में लब्ध अंशादिको घटायदेय फिर अयनांशा घटाने से दशम लग्न होगा । भोग्यक्रिया किया हो तो लब्ध अङ्क के पहले शुद्ध राशिकी संख्या जोड़कर अयनांश घटाने से दशमलग्न स्पष्ट होता है । इसी लिये लिखा है कि पूर्व के तरह दशम को बनावे । लग्नमें ६ राशि जोड़ने से जायाभाव और दशम में ६ राशि युक्त करने से तूयभाव होता है सूर्य में लग्नको घटाकर ६ का भाग देने से षष्ठांशं नैक्य होता है ।

---

१ भुक्तकाल के घटावे तो जिस राशि के सायन सूर्य हो उसके पीछे पीछे की राशियों का मान जेतने की घट सके घटा दे अंत्य में घटने वाली राशि शुद्ध उसके नीचे की राशि अशुद्धसंज्ञा वाली है ।

लग्न में षष्टांश युक्त करने से लग्न संधि होती है लग्न संधि में षष्टांशं युक्त करने से धनभाव होता है इसी प्रकार आगे भी भाव संधियों में षष्टांशा युक्त करने से सुख भाव तक बन जायगा सुख भाव में षष्टांशौनैक्य जोड़ने से सुख भाव की संधि होगी आगे शत्रु भाव की संधि तक षष्टांशौनैक्य जोड़ ६ भाव सन्धि के सहित इस प्रकार हुई फिर आगे का जो छःभाव है उनमें छः छः राशि जोड़ने से छःभाव सन्धि के सहित होंगे । अंशादि ऊपर के ही भाव के रह जायगे ।

सायन सूर्य का भुक्तांशा २३ । ४८।५४ । २५

इसको मेष के लंका के मान २७८ से गुणा

३०) ६६२० (२२० लब्ध अंश
६०
६२
६०
२० शेष
६० से गुणा
१२००
शेष २६ जोड़ा
३०) १२२६ (४० कला लब्ध
१२०
२६
३०
२६
६० से गुणा
१५६०
शेष ३
३०) १५६३ (१२ विकला लब्ध
१५०
६३
१०
३ शेष
६० सेगुणा किया
१८०
शेष १२
३०) १९२ (लब्ध प्रति विकला
१८०
१२ शेष

१८४ १६१ ४६	३८४ ३२६ ९६	४३२ ३७८ १०८	१९३ १६८ ४८
६३९४ ल. २२६	१३३ ४ ल २५२	१५०१२ ल. १११	६६७२ ६०काभाग
६६२०	१३५८६ १२०	१५१२३ १२०	६७ ६०
	१५८ १२०	३१२ ३००	७२ ६०
	३८६ ३६०	१२३ १२०	१२
	२६ शेष	३ शेष	शेष

इस प्रकार भुक्तकाल २२० । ४१ । १२ । ६ ।

इसको २७८ शेष के मान में घटाने से भोग्य काल—

यह ५७ । १८ । ४७ । ५४ हुआ ।

पूर्व नत ४ । ६ । ३० है इसको ६० से गुणाकर पल जोड़ा

६०
२४०
६
२४६ । ३०

भुक्तकाल २२० । ४१ । १२ । ६ को घटाया

शेष २८ । ४८ । ४७ । ५४ को

गुणा ३० से

मेष शुद्ध	८४०	१४४०	१४१०	१६२०	६० के भाग
	ल. २४	लब्ध २३	लब्ध २७	१२०	
मीन अशुद्ध	८६४	१४६३	१४३७	४२०	
		१२०	१२०	४२०	
		२६३	२३७	० शेष	
		२४०	१८०		
		२३ शेष	५७ शेष		

२७८) ८६४ (३ लब्ध अंश
८३४
३०
६०
१८००
शेष २३
२७८) १८२३ (६ लब्ध कला
१६६८
१५५
६०
९३००
५७
२७८) ९३५७ (३३ लब्ध विकला
८३४
१०१७
८३४
१८३ शेष
६०
२७८) १०९८० (३९ लब्ध प्रतिविकला
८३४
२६४०
२५०२
शेष त्याग १३८

अशुद्ध राशि १२ । में घटाया
३ । ६ । ३३ । ३९
११ । २६ । ५३ । २६ । २१
२१ । ९ । ० । २४
अयनांश
११ । ५ । ४४ । २५ । २७
स्पष्ट दशम लग्न में तूर्य लग्न आया
अतः ६ राशि जोड़ा तो दशम लग्न
५ । ५ । ४४ । २५ । ५७

सूर्यलग्न ११ । ५ । ४४ । २५ । ५७
स्पष्ट लग्न ७ । ५५ । ४७ । २० । १७
३ । ९ । ५७ । ५ । ५६

६) ३ (० । लब्ध राशि
३०
९०
९
६) ९९ (१६ अंश
६०
३९
३६
३
६०
१८०
५७
६) २३७ (३९ कला
१८
५७
५४
३
६०
१८०
५
६) १८५ (३० विकला
१८
५
६०
३००
५६
६) ३५६ (५९ प्रति विकला
३०
५६
५४
२
६० प्रतिविकला षष्टांश
६) १२० (२०
१२०
०

३० में घटाया
षष्टांशा ० । १६ । ३९ । ३० । ५९ । २४
षष्टांशोनैक्य । ० । १३ । २० । २९ । ० । ४०
तनु १७ । २५ । ४७ । २० । १
० । १६ । ३९ । ३० । ५९ । २०
सं० ८ । १२ । २६ । ५१ । ० । २०
० । १६ । ३९ । ३० । ५९ । २०
ध० ८ । २९ । ६ । २१ । ५९ । ४०
० । १६ । ३९ । ३० । ५९ । २०
सं० ९ । १५ । ४५ । ५२ । ५९ । ०
। १६ । ३९ । ३० । ५९ । २०
सहज १० । २ । २५ । २३ । ५८ । २०
१६ । ३९ । ३० । ५९ । २०
सं० १० । १९ । ४ । ५४ । ५७ । ४०
१६ । ३९ । ३० । ५९ । २०
सुख ११ । ५ । ४४ । २५ । ५७ । ०
१३ । २० । २९ । ० । ४०
सं० ११ । १९ । ४ । ५४ । ५७ । ४०
१३ । २० । २९ । ० । ४०
पुत्र १२ । २ । २५ । २३ । ५८ । २०
१३ । २० । २९ । ० । ४०
सं० ४ । १५ । ४५ । ५२ । ५९ । ४०
१३ । २० । २९ । ० । ४०
४ । २९ । ६ । २१ । ५९ । ४०
१३ । २० । २९ । ० । ४०
५ । १२ । २६ । ५१ । ० । २०

भुक्तं भोग्यं स्वेष्टकाला न्न शुद्धेत् ।
त्रिंशन्निघ्नात्सोदयाप्तं लवाद्यम् ॥
हीनं युक्तं भास्करे तत् तनुः स्यात्–
रात्रौ लग्नं भार्ध युक्तारवेस्तु ॥२३॥

यदि पलात्मक इष्टकाल में सायन सूर्य का भुक्त क्रिया में भुक्तकाल और भोग्य क्रिया में भोग्य काल न घटे तो उस पलात्मक इष्ट को ३० से गुणा करके उसमें सायन सूर्य जिस राशि का हो उस राशि के मान से भागदे लब्ध अंशादि निकाल ले फिर लब्धको सूर्य में हीन वा युक्त करने से स्पष्ट लग्न हो जाता है ।

उदाहरण—इष्ट २ । ५ है सूर्य ६ । १८ । ३७ । ४ । सायन सूर्य ७ । १० । ३ । २८ भोग्यकाल २२८ । ५० । ८ है । पलात्मक इष्ट १२५ में भोग्य काल, नहीं घटा, अतः

पलात्मक इष्ट १२५ को
३० से गुणा किया
इस सायन सूर्य वृश्चिक के काशी के मान का भाग दिया ३४५) ३७५० हुआ (१० लब्ध अंश
३४५
३००
६०
३४५) १८००० (५२ लब्ध कला
१७२५
७५०
६९०
६०
६०
३४५) ३६०० (१०
३४५
१५०

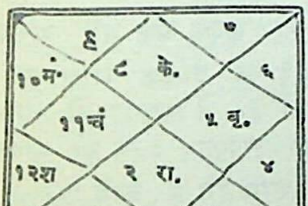
:अंशादिलब्धि १० । ५२ । १० को
सूर्य ६ । १८ । ३७ । ४ में जोड़ा तो
स्पष्ट लग्न ६ । २९ । २९ । १४ ।

तन्वादि द्वादशभावाः स्पष्टाः ससन्धयः—

त.	सं.	ध.	सं.	स.	सं.	सु.	सं.	पु.	सं.	श.	सं.
७	८	८	९	१०	१०	११	११	०	०	०	१
२५	१२	२९	१५	२	१९	५	१९	२	१५	२९	१२
४७	२६	६	४५	२५	४	४४	४	२५	४५	६	२६
२०	५१	२१	५२	२३	५४	२५	५४	२३	५२	२१	५१
१	०	५९	५९	५८	५७	५७	५७	५८	५९	५९	०
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	४०	४०	२०

जा.	सं.	मृ.	सं.	ध.	सं.	क.	सं.	ला.	सं.	व्य.	सं.
१	२	२	३	४	४	५	५	६	६	६	७
२५	१२	२९	१५	२	१९	५	१९	२	१५	२९	१२
४७	२६	६	४१	२५	४	४४	४	२५	४५	६	२६
२०	५१	२१	५२	२३	५४	२५	५४	२३	५२	२१	५१
१	०	५९	५९	५८	५७	५७	५७	५८	५९	५९	०
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०

जन्माङ्गकुण्डलीयम् ।



भावचलितकुण्डलीयम् ।



खेटे सन्धिद्वयान्तस्थे फलं तद्भावजं भवेत् ।
हीने धिके द्विसन्धिभ्यां भावेपूर्वा परे फलम् ॥ २४ ॥

टीका—दोनों सन्धियों के बीच में जोभाव हो उसभावमें स्थितग्रह उसी भावका फल करने वाला होता है अर्थात् आरम्भ संधि से अधिक विराम संधिसे न्यूनग्रह जिसभावमें स्थितहो वह उसी भावका फल देगा और आरम्भ विराम

इन दोनों संधियों से हीन वा अधिक ग्रह के होनेपर पूर्व व परभावोंमें फलहोता है जो आरम्भ संधिसे न्यूनग्रह हो वह पूर्वभावका फल देता है तथा जो विराम संधिसे अधिक हो तो आगेके भावका फल देता है, लग्न संधि लग्न की विराम संधि है और वही दूसरे भावका आरम्भ संधि है इसी प्रकार सब जाने ॥२४॥

ग्रहसन्ध्यन्तरं कार्यं विंशत्यागुणितं भजेत् ।
भावसंध्यन्तरेणाप्तं फलं विंशोपकांस्मृताः ॥ २५ ॥

टीका—ग्रह और संधिका अंतरकरे फिर अन्तरको २० से गुणाकर सबको कला बना लेनेसे भाज्य होगा और भाव और संधिके अंतर करे फिर इसको भी विकलात्मक बनादे तो भाजक होगा भाज्यमें भाजक का भाग लेनेसे लब्ध उस-भावमें उस ग्रह का विंशोप का बल होगा ॥ २५ ॥

स्फुटसायनभागार्क भोग्यांश फलसंमितः । सायनांशतनोश्चापि भुक्तांश फलसंयुक्तः । मध्यलग्नोदयैर्युक्ता पष्ठयाप्ता नाडिकास्तनोः ॥ २६ ॥

टीका—सायनसूर्य से भोग्य और सायनलग्न से भुक्त बनाने की रीति। दोनों का योग करके सूर्य और लग्न के मध्य का उदय लेकर युक्त करे फिर उसमें ६० का भाग देनेसे लग्नपर से सूर्य का भोग्यकाल स्पष्ट हो जाता है ॥ ८३ ॥

उदाहरण-शकः १७६९ कार्तिक सुदी ९ भौमवार स्पष्टसूर्य की राशि आदि ७।१।१७।५३ और अयनांश २२।५ को सूर्यके अंश और घड़ियोंमें मिलावें तो सायन सूर्य राश्यादि ७।२३।२२।५३ यह वृश्चिक राशि का सूर्य २३ अंश २२ घटिका ५३ पल हुए इनको ३० में घटाया तो भोग्यांश ६।३७।७ सूर्य वृश्चिक राशिका है वृश्चिक का राश्युदय ३३१ को भोग्यांश से गुणने से हुए अङ्क २१९४ इनमें ३० का भाग देने से आये ७३।४ यह सूर्य का भोग्यकाल जानिये ॥

लग्न से भुक्त लाने का प्रकार ।

मकर लग्न में वृष का नवमांश तिसो कोष्टक में देखकर वह स्पष्ट लग्न लेवे वे राश्यादि ९।१३।२० याने मकर राशि की लग्न १३ अंश २० घटिका होती है । इस लग्न के अंश घड़ी में अयनांश २२।५ मिलाने से सायन लग्न १०।८।२५ हुई कुम्भ रासिके लग्न अंश ८ घड़ी में २५ सायन लग्न होती है। लग्नके भुक्तांश ८।२५ कुम्भ राशिका उदय २६७ इनको गुणने से अंक हुए १४।४६ इनमें ३० का भाग देनेसे लब्धि ४८।६ यही लग्नका भुक्त होता है ॥

भोग्य भुक्त से इष्टकाल लाने का प्रकार ।

टीका—भोग्यभुक्तयोग १२१।२० सूर्य तथा लग्न जिस राशि के हैं उनके मध्यान्तर में उदय २, धन ३३६ मकर ३१० इनका योग ६४६, भोग्ययुक्त योग १२१ इसमें मिलाया तो अङ्क हुये ७६७ इस भुक्त अङ्क में ६० का भाग दिया तो इष्टकाल की घटी पल ४७ हुए इन पलों में प्रवृत्ति के ५ पल जोड़ने से स्पष्टकाल १२।५२ आ जाती है ।

उदाहरण—सायन सूर्य से भोग्य लाने का क्रम ।

	अंश	घटी	पल
	३०	०	०
भुक्त—	२३	२२	१५
भोग्य	६	३७	४५
			३३१ गुणक
	१९८६	२०१७	१६६५
	२०८	२९३	१३२४

२१९४   १२२४७ | भाग ६०) १४८९५ (घटिका २४८

२४८ | १२०

इस प्रकार से भोग का फल मिला २१९४ । १५ । १५

भाग ६०) १२४९५ (अ २०८ | २८९

१२०
४९५
४८०
१५ शेष

२४०
४९५
४८०
१५ शेष

रवि का भोग्यकाल लाने का प्रकार ।

अंश
भाग ३०) २१९४ (७३
२१०
९४
९०
४
६० गुणक
२४०
१५ शेष घटी
भाग ३०) २५५ (८ शेष
२४०
१५ शेष

अतः फल मिला ७३ । ८

लग्न से भुक्तकाल लाने का प्रकार।

रा. अं. क.
९ १३ २० मकर लग्न
२२ ५ अयनांश मिलावें
१० ५ २५ शायनलग्न भुक्त
२६७ लग्न का उदय
१३३५ १०५
१११ १५०
१४४६ ५० अंश
६०) ६६७५ (१११
६०
६७
६०
७५
६०
१५

अभुक्तांश
भाग ३०) १४४६ (४८१२
१२०
२४६
२४०
६
६० गुणक
भाग ३०) ३६० (१२
अतः फल हुआ ४८।१२ ३०६

इष्टकाल
धन २३६
मकर ३१० मिलावे
६४६
१२१ यह भुक्त मिलावे
भाग ६०) ७६७ (१२ घ०
६०
१६७
१२०
४७
६० गुणक
भाग ६०) २८२० (४७ पल
२४०
४२०

भुक्तभोग्ययोग
४८ १२ भुक्त
७३ ८ भोग्य
१२१ २० सूर्य व लग्न के राशियों के मध्यान्तर का उदय

उत्तर इष्ट घटिका
घ० प०
१२ ४७
५ प्रवृत्ति का फल
१२ ५२ उत्तर इष्ट घटी

इष्टकालिक समय का तात्कालिक सूर्य साधन।

तत्कालभवस्तथाः भटीघ्नः खरसैर्लब्धकलोन संयुक्तःस्यात् ॥२७

टीका—तत्कालिक सूर्य पर से इष्ट कालिक रवि लाना होतो सूर्य के गति को अपने इष्ट घटि पलों से गुणा कर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले उस फल को तात्कालिक सूर्य में जोड़ने वा घटाने से [तात्कालिक रवि से इष्ट काल पहले हो तो उस फलको तात्कालिक रवि में घटाने से इष्ट कालिक रवि होगा,

एवं—तात्कालिक रवि से इष्ट काल बाद मे हो तो उस फलको जोड़ने से इष्ट कालिक सूर्य होगा] इष्ट कालिक रवि होगा ॥ २७ ॥

उदाहरण—शकः १९६९ कार्तिक सुदी ९ भौमवार के दिन प्रातः काल का सूर्य ७ । १ । १७ । १५ है तो कहो कि इष्टकालीन सूर्य क्या होगा ?

इष्ट घड़ी व गति का गुणाकार ।

१२	५२	इष्टघड़ी
६०	६०	गति
४७	४७	

गुणन फल=७२० । ३६८४ । २४४४

घटी पलों का भागाकार

७२० ३६८४ ६०) २४४४ (४०
६२ ४० ४४

७८२ ६०) ३७२४ (६२
३६०
१२४
१२०
४

भाग ६०) ७८२ (१३।२
६०
१८२
१८०
२
६० गुणक
६०) १२०
१२०

७ १ १७ १५ प्रातः काल काल का रवि
१३ २ गम्य घटि
७ १ ३० १७
२२ ५ ० अयनांश
७ २३ ३५ १७ तात्कालिक सांयन सूय

भौमोशनिः सौम्य शशीनवित्
सितारेज्याऽर्किमन्दाङ्गिसो गृहेश्वराः ।
आद्या कुजाद्यारवितोऽपि मध्यमा
स्सिता तृतीय क्रियतो द्रेष्काणयाः ॥ २८ ॥

मेषादि राशियों का मंगल शुक्र बुध चन्द्र सूर्य बुध शुक्र मंगल गुरु शनि शनि गुरु स्वामी हैं । द्रेष्काण एक राशिमें ३ होते हैं १० अंशतक पहला, बाद २० अंशतक दूसरा बाद ३० अंश पर्यन्त तीसरा (पहला मंगल से आरम्भ है दूसरा सूर्य से तीसरा शुक्र से , यहाँ यद्यपि यह क्रम है परन्तु अनेक ग्रंथकारों का मत है कि "द्रेष्काण या प्रथम पञ्चनवाधिपानाम्" द्रेष्काण का पहला भाग अर्थात् १० अंश उसी राशिका होता है, फिर १० के बाद २० अंश पर्यन्त ५ वी राशिका फिर २० अंश के बाद तीस अंश तक उस राशिका नववीं राशिका होता है ॥ २८ ॥

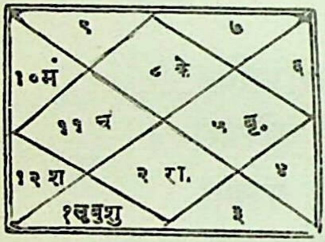
राशीश-

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म	कुं	मी.	राशि
स्वामी	मगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	श.	गुरु	राशीश

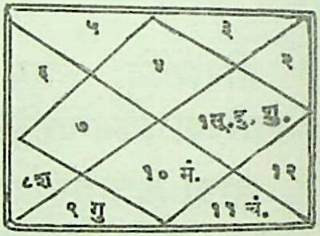
द्रेष्काणेश-

राशि	मे.	वृ.	मि	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
प्रथम १० अंश	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२
द्वितीय २० अंश	सू. ५	बु. ६	शु. ७	म. ८	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४
तितीय ३०	बृ. ९	श. १०	श. १२	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८

१ जन्माङ्गम् ।



२ द्रेष्काणम् ।



ग्रहों का उच्च नीच राशि विभाग-

सूर्यादि तुङ्गर्दयजोक्षनक्र, कन्या कुलीरानय तुलालवैः स्युः ।
दिग्भिगु णौरष्टयमैः शरैं कैभूं तैभं संख्यैर्नखसम्मितैश्च ॥२९॥

टीका—सूर्यादि ग्रहोंके मेषादि राशियाँ दश आदि अंशों से परमोच्च होती हैं जैसे सूर्य शेष का उच्च है मेष का १०अंशय हो तो मोच्च है, चन्द्रमाष्टम् का उच्च ३ अंश होतो परमोच्च, मंगल करका उच्च २८ अंश हो तो परमोच्च बुध कन्या का उच्च १५ अंश होतो परमोच्च, बृहस्पति कर्क का उच्च ५ अंश हो तो परमउच्च, शुक्र मीन राशि का उच्च २७ अंश हो तो परम उच्च शनि तुलाराशि का उच्च २० अंश होती परम उच्च होता है ॥ २९ ॥

तत्सप्तमं नीचमनेनहीनोग्रहोधिकश्चेद्भमभादिशोध्यः।
चक्रात्तदंशाङ्क लवैस्त्रिलंस्यात् क्रियेणनौलिन्द्रिभतो नवांशः॥३०॥

टीका-ग्रहों के जो उच्च राशि कह आये हैं उससे सातवीं नीच राशि होती है, मेष सूर्य की उच्च राशि है तो उससे सातवीं तुला राशि सूर्यकी नीच राशि है और १० अंसपर परम नीच कहाता है। स्पष्ट ग्रहमें नीच राशि अंशको घटावे न घटै तो १२ राशिमें जोड़कर घटावे यदि घटने पर ६ राशिमे अधिक रहै तो १२ राशिमें हीन करले फिर राशिका अंश बनाकर ९ का भाग देनेमें लब्ध उच्च बल होता है ३०

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
उच्च राशि	०	१	९	५	३	११	६
अंश	१०	३	२८	१०	५	२७	२०
नीच राशि	६	७	३	११	९	५	०
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०

जो ग्रह शत्रु के घर हो वह एकचरण अर्थात् ७।३० का बल ग्रहण करता है। एवं जो ग्रह अपने हद्दा हो वह १५ मित्रके हद्दा ग्रह ११।१५ समके हद्दाका ग्रह ७।३० शत्रुके हद्दा ३।४५ बलपाता है एवं अपने द्रेष्काण में जो ग्रह हो वह १० बलपाता है मित्रके द्रेष्काण का ग्रह ७।३० बलपाता है। सूर्यके द्रेष्काणका ग्रह ५ बलपाता है, और शत्रुके द्रेष्काणका ग्रह २।३० बलपाता है एवं अपनेनवांशका ग्रह ५ बलपाता है, मित्रके नवांशका ग्रह ३।४५ बलपाता है। समके नवांशका ग्रह होतो २।३० बलपाता है और शत्रुके नवांशका ग्रह १।१५ बलपाता है। इसप्रकार सबका बल निकालकर जोड़ले फिर ४ का भागदे विश्वा बलजाने जो ग्रह ५ विश्वा बलसे कमहो उसे निर्बल जाने।

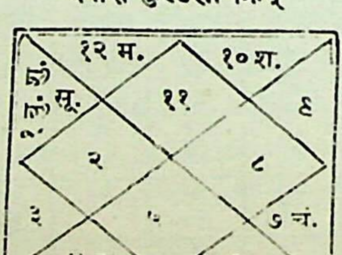
	स्वगृह	मित्रगृह	समगृह	शत्रुगृह
गृहेश	३०	२२ ३०	१५ ०	७ ३०
हद्दा	१५	११ १५	७ ३०	३ ४५
द्रेष्काण	१०	७ ३०	५ ०	२ ३०
नवांशा	५	३ ४५	२ ३०	१ १५

नैसर्गिकमित्रसमशत्रु चक्रम्—

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
मित्र	मं. चं. बृ.	सू. बु	सू. चं बृ.	सू. शु.	सू. मं. चं.	श. बु.	बु. शु.
सम	बु.	चं.बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	श.	बृ. मं.	बृ.
शत्रु	शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	
अ. क. ३।२०	म. मे. १	श. मं.१०	शु. तु. ७	चं. क. ४	मं. मे. १	श. म.१०	शु. तु. ७	चं. क. ४	मं. मे. १	श. म.१०	शु. तु. ७	चं. क. ४	ग्र. रा.
६।४०	शु. वृ. २	श. कुं.११	मं. वृ. ८	सू. सिं. ५	शु. वृ. २	श. कुं.	मं. वृ. ८	सू. सिं.	शु. वृ. २	श. कुं.११	म. वृ. ८	सू. सिं. ५	ग्र. रा.
१०।०	बु. मि. ३	बृ. मी.१२	बृ. ध. ९	बु. क. ६	बु. मि. ३	बृ. मी.१२	बृ. ध. ९	बु. कं. ६	बु. मि. ३	बृ. मी १२	बृ. ध. ९	बु. क. ६	ग्र. रा.
१३।२०	चं. क. ४	मं. मे. १	श. म.१०	शु. तु. ७	चं. क. ४	मं. मे. १	श. म.१०	शु. तु. ७	चं. क. ४	मं. मे. १	श. म.१०	शु. तु. ७	ग्र. रा.
१६।४०	सू. सिं. ५	शु. वृ. २	श. कुं.११	मं. वृ. ८	सू. सिं. ५	शु. वृ. २	श. कुं.११	मं. वृ.	सू. सिं. ५	शु. वृ. २	श. कुं.११	मं. वृ. ८	ग्र. रा.
२०।०	बु. क. ६	बु. मि. ३	बृ. मी.१२	बृ. ध. ९	बु. कं. २	बु. मि.	बृ. मी.१२	बृ. ध.	बु. क. ६	बु. मि. ३	बृ. मी.१२	बृ. ध. ८	ग्र. रा.
२३।२०	शु. तु. ७	चं. क.	भौम मे. १	श. म.१०	शु. तु. ७	चं. क.	मं. मे. १	श. म.	शु. तु. ७	चं. क. ४	मं. मे. १	श. म.१०	ग्र. रा
२६।४०	मं. वृ. ८	सू. सिं.	शु. वृ. २	श. कुं.११	मं. वृ.	सू. सिं.	शु. वृ. २	श. कुं.	मं. वृ. ८	सू. सिं.	शु. वृ. २	श. कुं.११	ग्र. रा.
३०।०	बृ. ध. ९	बु. क.	बु. मि. ३	बृ. मी.१२	बृ. ध. ९	चं. क.	बु. मि. ३	बृ. मी.	बृ. ध. ९	बु. क.	बु. मि. ३	बृ. मी १२	ग्र. रा

नवांश कुण्डलीचक्रम्



मेषेऽङ्ग तर्काष्टशरेषु भागा जीवास्फु जित्सार शनैश्चराणाम्।
वृषेऽष्ट षण्नाग शरान लांशाः शुक्रज्ञजीवा र्किकुजेशहद्दा ॥३१॥
युग्मेषडङ्गेषु नगाङ्गभागा सौम्यास्फुजिज्जीव कुजार्किहद्दाः।
कर्केऽद्रितर्काङ्ग नगाब्धिभागा कुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ३२
सिंहेऽङ्ग भूताद्रि रसाङ्ग भागा सुरेज्यशुक्रा र्किबुधारहद्दाः।
स्त्रियोनगांशाब्धिनगाद्रि भागाः सौम्योशनो जीवकुजार्किनाथा ३३
तुले रसाष्टाद्रि नगाश्विभागाः कोणज्ञजीवास्फुजिदारनाथाः।
कीटेनगाब्ध्यष्ट शराङ्ग भागा भौमास्फुजिज्ज्ञेज्य शनैश्चराणाम् ३४
चापेरवीष्वम्बुधि पञ्चवेदा जीवास्फु जिज्ज्ञार शनैश्चराणाम्।
मृगेनगाद्र्यष्ट युगश्रुतीनां सौम्येज्यशुक्रार्किकुजेशहद्दाः ॥३५॥
कुम्भे नाङ्गाद्रि शरेषुभागाः शुक्रज्ञ जीवार शनैश्चराणाम्।
मीनेऽर्क वेदानलनन्द पक्षाः सितेज्य सौम्यार शनैश्चराणाम् ३६

इन श्लोकों का अर्थ इस हद्दा चक्र से जानिये।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
बृ. ६	शु. ८	बु. ६	मं. ७	बृ. ६	बु. ७	श. ६	मं. ७	बृ. १२	बु. ७	शु. ७	शु. १२
शु. ६	बु. ६	शु. ६	शु. ६	शु. ५	शु. १०	बु. ८	शु. ४	शु. ५	बृ. ७	बु. ६	बृ. ४
बु. ८	बृ. ८	बृ. ५	बु. ६	श. ७	बृ. ४	बृ. ७	बृ. ८	बु. ४	शु. ८	बृ. ७	बु. ३
मं. ५	श. ५	मं. ७	बृ. ७	बु. ६	मं. ७	शु. ७	बु. ५	मं. ५	श. ४	म. ५	मं. ९
श. ५	मं. ३	श. ६	श. ४	मं. ६	श. २	मं. २	श. ६	श. ४	मं. ४	श ५	श. २

उच्चनीच बोधक चक्र—

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
उच्चराशि परामोच्चांश	० १०	१ ३	९ २८	५ १५	३ ५	११ २७	६ २०
नीचराशि परमनीचांश	६ १०	७ ३	३ २८	११ १५	९ ५	५ २७	० २०

क्षेत्र में	हद्दामें	द्रेष्काणमें	नवांशमें
सू. मित्रगृही	सू. मित्रगृही	सू. मित्रगृही	सू. मित्रगृही
चं. शत्रुगृही	चं. सम ,,	चं. सम ,,	चं. सम ,,
मं. समगृही	मं. मित्र ,,	मं. सम ,,	मं. मित्र ,,
बु. सम ,,	बु. सम ,,	बु. सम ,,	बु. शत्रु ,,
बृ. मित्र ,,	बृ. सम ,,	बृ. स्वगृह	बृ. मित्र ,,
शु. सम ,,	शु. सम ,,	शु. सम ,,	शु सम ,,
श. सम ,,	श. शत्रुगृही	श. शत्रु ,,	श. स्वगृही

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
क्षेत्र ३०	२२ ३३	७ ३०	१५ ०	१५ ०	२२ ३०	१५ ०	१५ ०
उच्च २०	१४ ११	९ ५८	१७ ५२	१ ४९	१५ ४५	१९ ३७	३ ११
हद्दा १५	७ ३०	११ १५	७ ३०	७ ३०	७ ३०	७ ३०	३ ११
द्रेष्काण १०	७ ३०	५ ०	५ ०	५ ०	१० ०	५ ०	२ ३०
नवांश ५	३ ४५	२ ३०	३ ४५	१ १५	३ ४५	२ ३०	५ ०
योग	६४ ११	३२ २८	५२ ५२	३० ३४	५९ ३०	४९ ३६	२९ २६
विश्वाबल	१६ २॥।	८ ७	१३ १३	७ ३८॥	४ ५२	१२ २४।	७ २१॥

उदाहरण—सूर्य ० । २ । ३९ । ५४ में राशि में १२ जोड़ दिया सूर्य का परम नीच ६ । १० राश्यादि को घटाया तो बचा ५ । २२ । ३९ । ५४ इसको अंशात्मक

किया ३०
१५०
२२
९) १७२ (१९
९
८२
८१
१
६०
६०
३९
९) ९९ (११
९
९
९
९) ५४ (६

सूय का बल कलादि १९ । ११ । ६
इसी प्रकास व ग्रह का बल बनवे

चन्द्रमा	९ । ५८ । २४
मंगल	१७ । ५२ । २
बुध	१ । ४१ । १६
वृहस्पति	१५ । ४५ । २५
शुक्र	१९ । ३७ । १२
शनि	३ । १० । ५५

गुरु ४ । १३ । ११ । १६ राशि ४
९ । ५ में
७ । ८ । ११ । १६ इसको १२ में घटाया तो
४ । २१ । ४८ । ४४ बचा

इस ४ को ३० से गुणा तो १२० हुआ २१ जोड़ा तो १४१ हुआ इसमें का भाग दिया तो लब्ध १५ । ४५ । १५ इसी प्रकार सबका उबबल बनाना ।

प्रसाद लग्न

त्रिभिर्विभक्तेष्टघटी वेदघ्नंशेषकं पुनः ।
तिथ्याप्तैश्च पलैर्युक्तं पलशेषं द्विनिघ्नितम् ।
चरेऽर्के योजयेत्तत्र स्थिरे दिनकरेऽङ्कभे ।
द्विस्वभावे दिवानाथे पंचमे योजयेत्तदा ॥ ३८ ॥
स्पष्टंप्राणपदं लग्नं द्वयोरंशे समे स्फुटम् ।

सूर्योदयसे जो इष्ट काल के दंड में ३ का भाग दे लब्धि त्याग दे शेष जो बचे उसको चार से गुणो, फिर उसमें फलमें १५ का भाग देने से जो लब्ध मिले उसको युक्त करे तो राशि होगी, १५ के भाग से जो पलमें शेष बचा हो उसको दूना करने से अंश होगा। इस राशि आदि को यदि सूर्य चर राशि में हो तो

सूर्य के राश्यादिमें जोड़ने से प्राण पद होगा, यदि सूर्य स्थिर राशि में हो तो सूर्य को राशि से नवमी राशि प्राण पद होगा, और सूर्य द्विस्वभाव राशि में हो तो सूर्य के राशि से राशि प्राण पद की होगी।

उदाहरण–इष्ट ४१। ३७ है दंड में ३ का भाग दिया, शेष२ बचा लब्ध का कोई कार्य नहीं है शेष २ को ४ से गुणा तो ८ हुआ, पल ३७ में १५ का भाग दिया तो लब्ध २ मिला इसको चार से गुणे हुए शेष ८ में जोड़ा तो राशि १० मिली ७ को दूना किया तो १४ हुआ यह अंश है इसराश्यादि १०। १४ को सूर्य चरराशि के हैं इससे राश्यादि सूर्य ०। २। ३९। ५५ में जोड़ा तो प्राणपद १०। १६। ३९। ५४ हुआ। लग्न ७। २५। ४७। २० है इससे समानता न हुई अतः दोनों अंतर भया तो अन्तर ९। ७। २६। इसका आधा ४। ३३।४३ इष्ट के पल में जोड़ा तो इष्ट ४१। ४१। ३३। ४३ हुआ इस इष्ट के प्राणपद लग्न की एकता होगा यदि न हो तो उक्त क्रिया करता जाय एवं अवश्य होगी। (प्राणपद का अंश इष्ट काल के एक पल में प्राणपद का दो अंश होता और प्राणपद के १० अंश का होरालग्नका एक अंश होता है।)

होरालग्नप्रकार—

द्विघ्नेष्टनाड्यः पञ्चाप्तः भंशेषं च पलीकृतम्।
दशाप्तमंशास्तैर्युक्ता रवौ होरोदयं भवेत्॥
विषमेऽङ्के रवौ योज्यं समेऽङ्के लग्नभांदिषु॥ ३८॥

इष्टनाडी पलको २ से गुणा करे फिर उसमें ५ का भाग दे लब्धि राशि होगी शेष को ६० से गुणपल बनाकर १० से भाग देने से जो लब्ध मिले वह अंश फिर शेष को ६० से गुणाकर १० के भाग से जो लब्धि मिले वह कला होती है।

उदाहरण इष्ट घ ४१ पल ३७ इसको दो से गुणा तो ८३। १४ हुआ इसमें ५ का भाग दिया तो लब्धराशि १६ शेष ३ को ६० से गुणा तो १८० हुआ इसमें १४ को युक्त किया तो १९४ हुआ इसमें १० का भाग दिया तो लब्ध अंश १९ मिला शेष ४ को ६० से गुणातो २४० हुआ इसमें १० का भाग दियातो लब्ध कला २४ मिका इसप्रकार राश्यादि १६। १९। २४ मिला इसको सूर्य ०। २। ३९। ५४ में जोड़ातो १६।२२।३।५४ हुआ १६ में १२ घटाया तो स्पष्ट होरा लग्न ४।२२।३।५४॥ ३९॥

---

१ इष्टकाल को घन्टा मिन्ट बनाले घन्टा के अनुसार राशि और दोमिन्ट का एक अंश होरा का होता है।

रवि वारादि शन्यतं गुलिकादि निरूप्यते ।
दिवसानष्टधाकृत्वा वारेशा गणयेत्क्रमात् ॥ ४० ॥
अष्टमांशो निरीशः स्याच्छन्यंशो गुलिकः स्मृतः ।
रात्रिरप्यष्टधा भक्ता वारेशात्पञ्चमादित ॥ ४१ ॥
गणयेदष्टमः खण्डो निष्पत्तिः परिकीर्तिता ।
शन्यंशे गुलिकः प्रोक्तो गुर्वंसे यमघंटकः ॥ ४२ ॥
भौमांशोमृत्युरादिष्टो रव्यंशे कालसंज्ञकः ।
सौम्यांशेर्धप्रहरकः स्पष्ट कर्म प्रदेशकः ॥ ४३ ॥

टीका—सूर्यादि शनि पर्यत गुलिका निरूपण करते हैं सूर्यादि सात वारों में दिनमान के ८ भाग करके उसदिन प्रथम खडाधिपति वारेश बाद उसग्रह के आगे क्रमसे खंडेश जाने, आठवाँ अंश निरीश है, सातो वारों में शनि का अंश गुलिक है, (रविवार में ७ भाग शनि का है वह गुलिक है चन्द्र वार में ६ वां भौमवार ५ वां बुधवार में ४ था गुरुवार में तीसरा, शुक्रवार में दूसरा और शनिवार में पहला गुलिक है, दिनमें उसीवार से गणापेता है सोमवार को पिचोना है सोमवार से शनि ६ वां है अतः सोमवार के ६ वां गुलिक होगा) रात्रि में भी रात्रि मान को ८ भाग में विभक्त करके उस वारेश से पांचवां आदि खंडेश होते हैं। रविवार से गुरु पाँचवां होता है इससे शनि ३ हुआ शनि का अंश गुलिक है, अतः रविवार के रात्रि में तीसरा गुलिक हुआ, गुलिक रविवार के रात्रि में ३ रा चन्द्रवार में २ रा भौमवार में १ ला बुधवार में ७ वांगुरुवार में ६ वां शुक्रवार में ५ वां शनिवार में ४ था है। गुरुका अंश यमघंट, मंगलका अंश मृत्युसंज्ञक, सूर्यांशि काल बुधांश अर्ध प्रहर आधायाम स्पष्ट कर्म प्रदर्शक है ॥ ४० ॥ ४३ ॥

उदाहरण दिनमान् ३३ । १४ इसका अष्टमांश ४ । ९ । १५ है बुधवारका जन्म है इससे गुणक ४ से गुणा तो १६ । ३७ यह गुलिक लग्न का इष्ट काल हुआ स्पष्ट लग्न की विधि से स्पष्ट गुलिक लग्न ५ । ६ हुआ । इस उदाहरण को अनेक विद्वानों ने दिया है इसका नूतन उदाहरण

एक दंड का ७॥ पल तथा एक पल का ७॥ त्रिपल अष्टमांश होता है । इस प्रकार ८ दंड का एक दंड मांश होगा ।

दिन मान ३२ । ४ अष्टमांस ८ । १ । ३० चन्द्रवार का जन्म है इससे इसके गुणाक ६ से गुणा तो अष्टमांश २४ । ३ । ० हुआ । स्पष्ट लग्न की रीति से स्पष्ट लग्न ४ । १४ । ६ । ३० । हुआ

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
०	६	५	४	५	२	१	दिन
३	२	१	७	६	५	४	रात्रि

प्राणपसे यद्वा गुलिक से वा चन्द्रमासे शुद्धकिये बिना । अशुद्ध लग्न रहता है । उसी प्रकार स्थावरो भी होता है । दोनों में जो बलवान् हो उससे शुद्ध करे दोनों बलरहित हो तो गुलिक से विचारे वा उससे जो सप्तम स्थान से वा उस उस के अंशक के सप्तम से गिने, वहाँ इसके त्रिकोण से जन्म लग्नको जाने मनुष्यों के लिये प्रश्न से वा जन्म से यह कहे । पशुओं का और पक्षियों का २ । १० । ६ । ३ । ७ । ११ से और शेष स्थानों से कीट सर्प जलचर जीवों का जाने ।

उदाहरण—संवत् १९७९ कार्तिक शुक्ल शनिवार श्री सूर्योदया दिष्ट घटी १७, पल ४८, विपल २८ प्रतिविपल ५० है सूर्य स्पष्ट ६ । १ । २५ । ५१ । ३० स्पष्ट लग्न ६ । ८ । २० । २८ । १९ है इष्ट काल का दंड १७ है इसको ४ से गुणा तो ६८ हुआ, पल ४८ है इसमें १५ का भाग दिया तो लब्ध ३ मिले इसको चारसे गुण हुए इष्ट ६८ में युक्त किया तो ७१ हुआ इसमें १२ का भाग देने से शेष राशि १५ हुई, १५ के भाग से शेष ३ बचा है इसको और विकलादिको दूना किया तो ६ । ५७ । ४० हुआ इसके पूर्व राशि ११ लिखा तो राश्यादि ११ । ६ । ५७ । ४० हुआ इसमें राश्यादि सूर्य ६ । १ । २५ । ५१ ३० जोड़ा तो स्पष्ट प्राणपद ५ । ८ । २३ । ३१ । ३० । लग्न का और प्राण पद का अंशादि तुल्य होना चाहिये, अंशतो यहाँ तुल्य है । परन्तु कलादि तुल्य नहीं है अतः लग्न को प्राण पद में घटाया तो कलादि अंतर ३ । ३ । ११ हुआ इसका आधा १ । ३१ । ३५ । ३ है प्राणपद लग्न से विशेष है अतः अतर के अर्धभाग १ । ३१ । ३५ । ३० की इष्टकाल में घटाया तो इष्टकाल १७ । ४८ । २७ । १८ । २४ । ३० हुआ इस इष्ट पर सूर्य ६।१।२५।५०।४० । हुआ स्पष्टलग्न ६ । ८ । २० । १६ । १८ पूर्वो प्रकार से प्राणपद ५ । ८ । २० । २७ । १८ विकला का समता नहीं हुआ इससे दोनों का अन्तर प्रति विकलादि ८ । ० इसका आधा ४ हुआ इसको इष्ट में हीन किया तो इष्ट काल १७ । ४८ । २७ । १४।२४।३० हुआ. सू. ६ । १ । २५ । ५० । २६ स्प. ल. ६ । ८ । २०।१९।१८ प्राणपद ५।८।२०।१६।१८ हुआ । प्राणपद से ५ वीं राशि लग्न का है लग्न प्राणपदके अंशादि सब मिल गये अतः इष्ट शुद्धि लग्न शुद्धि हो गई ।

द्वादशराशियों के नाम ।

मेषों वृषोऽथमिथुनो कर्कटः सिंहकन्यके ।
तुलाऽथवृश्चिको धन्वी मकरः कुंभमीनकौ ॥ १ ॥

टीका—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन यही बारह राशियों के नाम हैं ॥ १ ॥

द्वादशराशियों के स्वामी ।

कुजः सितोबुधोविधुरविज्ञशुक्रभूमिजाः ।
सुरेज्यमंदसूर्यजा गुरु क्रियाद्यभेश्वराः ॥ २ ॥

टीका—मेषके स्वामी मंगल, वृषके शुक्र, मिथुनके बुध, कर्कके चन्द्रमा, सिंह के सूर्य, कन्याके बुध, तुलाके शुक्र, वृश्चिकके मंगल, धनके गुरु, मकरके शनि कुंभके शनि और मीनके स्वामी गुरु हैं ॥ २ ॥

द्वादश भावों के नाम ।

तनुधनसहजसुहृत्सुतरिपुजायामृत्युधर्मकर्म्माणि ।
आयव्ययौ इति पृथक् क्रमेण च द्वादशैव भवनानि ॥३॥

टीका—१ भावको तनु, २ को धन, ३ को सहज, ४ को सुहृत् ५ को सुत, ६ को रिपु, ७ को जाया, ८ को मृत्यु, ९ को धर्म, १० को कर्म, ११ को लाभ और १२ को व्यय कहते हैं ॥ ३ ॥

ग्रहों की दृष्टि ।

पादैकदृष्टिर्दशमेतृतीये द्विपाद्दृष्टिर्नवपञ्चमे च ।
त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टकेच संपूर्णदृष्टिःसमसप्तकेच ॥ ४ ॥
शनेस्त्रिदशमेपूर्णादृष्टिर्जीवस्य कोणके ।
बुधैर्ज्ञया पूर्णदृष्टि भौमस्य चतुरष्टके ॥ ५ ॥

टीका—कुंडली में ग्रह बैठे हुए स्थान से दशवें और तीसरे स्थानको एक पाददृष्टिसे देखते हैं । नवम और पंचम स्थान को द्विपाद दृष्टि से । चौथे और आठवें स्थानको त्रिपाद दृष्टिसे और सातवें स्थानको पूर्ण दृष्टि से देखते हैं । शनि ग्यारहवें वा तीसरे स्थानको पूर्ण दृष्टि से देखता है, पाँचवें और नवम स्थान को बृहस्पति एवं चौथे और आठवें स्थान को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता है ॥ ५ ॥

ग्रहोंका उच्चत्व व नीचत्व ।

रविर्मेष तुलेनीचो वृषे चन्द्रस्तु वृश्चिके ।
भौमश्च नक्रे कर्के च स्त्रियां सौम्यो भषे तथा ॥ ६ ॥

गुरुः कर्के च नक्रे च मीनकन्ये सितस्य च ।
मंदस्तुलायां मेषे च कन्या राहुग्रहस्य च ॥ ७ ॥
राहुर्युग्मे तु चापे च तमोवत्केतुजं फलम् ।
प्रोक्तं ग्रहाणामुच्चत्वं नीचत्वं च क्रमोद्बुधैः ॥ ८ ॥

ग्रह	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	१० मि०	तुला
अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०		
नीच	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धन	मेष
अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०		

जन्मलग्न का फल ।

मेषेदैन्यमुपैति गर्वित वृषे नानामतिर्मन्मथे ।
शूरः कर्कटके धृतिश्च वनये कन्या च मानान्विता ॥
सत्यंचैवतुले त्वलौमलिनता पापान्वितं वै धनु-
र्मूर्खोयं मकरे घटे चतुरता मीनेत्वधीरामतिः ॥ ९ ॥

टीका—मेषलग्नमें जन्म होनेसे दीनता, वृषमें गर्व, मिथुन में अनेक भांति की बुद्धिमत्ता, कर्कमें शूरता, सिंहमें स्थिर बुद्धि, कन्या में मानी, तुलामें सत्यवादी वृश्चिकमें मलीनता, धनमें पापकी बुद्धि, मकरमें मूर्खता, कुम्भ में चतुरता और मीन में जन्म होने से मनुष्य अधीर और कायर होता है ॥ ९ ॥

जन्मसमय में सूर्यादिग्रहों का फल ।

तनुस्थान ।

लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेगपीडां पृथ्वीसुतं वितनुते रुधिरप्रकोपम् । छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखभाजं जीवेन्दुभार्गवबुधाः सुखकांतिदास्युः ॥ १ ॥

धनस्थान ।

दुःखावहाधनविनाशकराः प्रदिष्टा वित्तस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः । चन्द्रे बुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनो वा नानाविधं धनचयं कुरुतधनस्थः ॥ २ ॥

सहजस्थान ।

भानुःकरोतिविरुजं रजनीकरोऽपि कीर्त्यायुतंक्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् । ऋद्धिंबुधः सुधिषणां सुविनीतवेषं स्त्रीणांप्रियं गुरुकवी-रविजस्तृतीये ॥ ३ ॥

सुहृत्स्थान ।

आदित्यभौमशनयः सुखवर्जितांगं कुर्वंति जन्मनिनरं सुचिरं चतुर्थे । सोमो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा सौख्यान्वितं च नृप-कर्मरतः प्रधानम् ॥ ४ ॥

सुतस्थान ।

पुत्रेरविः प्रचुरकोपयुतं बुधश्च स्वल्पात्मजं शनिधरातनुजावपुत्रम् । शुक्रेंदुदेवगुरवः सुतधामसंस्थाः कुर्वन्तिपुत्रबहुलंसुखिनंसुरूपम् ५

रिपुस्थान ।

मार्तण्डभूमितनुजौ हतशत्रुपक्षं पगुर्नरं रिपुगृहेष्वतिपूज-नीयम् । काव्येंदुजौ मतिविहीनमनल्परोगं जीवःकरोतिविकलं मरणं शशांकः ॥ ६ ॥

जायास्थान ।

तिग्मांशुभौमरविजाः किलसप्तमस्था जायाकुकर्मनिरता तनुसंततिं च ॥ जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्ता रूपान्विता जन मनोरमरूपशीला ॥ ७ ॥

मृत्युस्थान ।

सर्वेग्रहा दिनकर प्रमुखा नितांतं मृत्युस्थितां वितनुते किल दुष्टबुद्धिम् । शस्त्राभिवात परिपीडितगात्रयष्टिं सौख्यैर्विहीनम-तिरोगगणैरुपेतम् ॥ ८ ॥

धर्मस्थान ।

धर्मस्थिता रविशनैश्चर भूमिपुत्रा कुर्वंति धर्मरहितंविमतिं कुशीलम् । चन्द्रो बुधो भृगुसुतःसुरराजमंत्री धर्मक्रियासुनिरतंकुरुतेमनुष्यम् ९

कर्मस्थान ।

आदित्यभौमशनयः किलकर्मसंस्थाः कुर्यर्नरं बहुकुकर्मरतं कुपुत्रम् ॥ चन्द्राः सुकीर्तिमुशनाबहुवित्तयुक्तं रूपान्वितं बुधगुरु शुभकर्मभाजम् ॥ १० ॥

लाभस्थन ।

लाभस्थितोदिनकरो नृपलाभयुक्तं तारापतिर्बहुधनंक्षितज क्षितीशम् सौम्याविवेकसुभगं च धनाद्युपीज्यः शुक्रः करोतिसगुणां रविजः सुकीर्तिम् ॥ ११ ॥

व्ययस्थान ।

सूर्यः करोतिपुरुषं व्ययगो विशालम्,
काणंशशी क्षितिसुतो बहुपापभाजम् ।
चन्द्रात्मजो गतधनं धिषणः कृशांङ्ग,
शुक्रो बहुव्ययकरं रविजः सुतीव्रम् ।
राहु केतु फलं सर्वं मंदवत्कथितं बुधैः ॥ १२ ॥

जन्मलग्न में बालक के मृत्युकारक ग्रह ।

चंद्रेऽष्टमेजन्मलग्नात् सप्तमेधरणी सुते ॥
तथा च नवमेराहौ शनौ जन्मनिसंस्थिते ॥ १३ ॥
गुरौतृतीयेचाऽर्के तु पञ्चमे षष्ठगे भृगौ ।
बुधे चतुर्थेजातश्चेन्नजीवति कदाचन ॥ १४ ॥

टीका—जन्ललग्न से आठवें चन्द्रमा, ७ में भौम, ९ में राहु, जन्म लग्न में शनि, तीसरे गुरु, छठें शुक्र और चौथे स्थान में बुध के पड़ने से बालक की मृत्यु होती है ॥ १३ ॥ १४ ॥

जन्मलग्न में स्त्री के मृत्युकारक ग्रह ।

षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तमसंभवः ।
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥ १५ ॥

टीका—जन्म लग्न से छठें भौम सातवें राहु और आठवें शनि जिसके उसकी स्त्री नहीं जीती है ॥ १५ ॥

स.	स्थान	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि राहु केतु
१	तनु	अंग पीड़ा	कान्ती और सुख	रक्त कोप	कान्ति और सुख	कान्ति और सुख	कान्ति और सुख	अति दुःख दायक
२	धन	अति दुःख वा धन नाश	बड़ी सम्पत्ति की प्राप्ति	दुःख पावै धन नष्ट करै	अनेक प्रकार की सम्पत्ति का लाभ	अनेक भाँति की संपति लाभ	अनेक भाँति की संपत्ति लाभ	अति दुःखी रहे धनहीन हो
३	सहज	निरोगता	कीर्ति प्राप्ति	क्रोधी हो	समृद्धिशाली हो	सुबुद्धि प्राप्त करै	नाना वेष धरै	स्त्रियों को प्रिय
४	सुहृत	अधिक शरीर कष्ट	सुख भोगी	अधिक शरीर कष्ट	सुख भोगे	सुख भोग	सुख भोगे	अधिक शरीर कष्ट
५	सुत	बहुरोगी	बहुत पुत्र हो	संतात रहित हो	अल्प पुत्र हो	बहुत पुत्र हो	बहुत पुत्र हो	सन्तान न हो
६	रिपु	शत्रु को नष्ट करै	मृत्य को पावै	शत्रु को नष्ट करै	बुद्धिहीनबहु रोगी	शरीर विकल रहे	बुद्धिहीन रोगी हो	शत्रुग्रह पूजा
७	जाया	दुष्टा स्त्री मिलै अल्प सतान हो	रूपगुणसपन्नस्त्री मिले गुणी पुत्रहो	दुष्टा स्त्री मिलै अल्प संतान हो	स्त्री रुपवती मिलै बहुत पुत्र हो	मनोहारिणी स्त्री से सुख भोगे	मनोहारिणी पुत्रवती चतुर स्त्रीमिलै	दुष्टा स्त्री मिले अल्प सतान हो
८	मृत्यु	सब ग्रहों का फल	इसमें समान होता	है—दुष्टबुद्धि	सखघात शरीर	पीड़ा सुख रहित	और रोगी हो।	
९	धर्म	अधर्मी दुःशील	धार्मिक	अधर्मी दुःशील	परम धार्मिक	परम धार्मिक	परम धार्मिक	अधर्मी दुःशील
१०	कर्म	बड़ादुराचारीकुपु	अतुल कीर्तिवान	दुराचारी कुपुत्र	कीर्तिवान	शुभकर्मकरनेवाला	सम्पत्तिशाली	दुराचारी कुपुत्र
११	आय	राक्षसी से मिले	बड़ा धन मिलै	राजा सेपृथ्वी मिलै	वेवेकी और सुन्दर	धनी औरदीर्घजीवी	गुणी हो	सुकीर्ति प्राप्त करै
१२	व्यय	दुष्टस्वभाव	काना हो	पाप करै	निर्धन हो	दुर्बल हो	व्याधिसे युक्त हो	तीव्र

अच्छेपराक्रमाग्रह ।

मूर्तौ शुक्र बुधौ यस्य केंद्रे चैव बृहस्पतिः ।
दशमोङ्गारकौ यस्य स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥ १६ ॥

टीका-जिसके जन्म लग्नमें शुक्र एवं बुध केन्द्र में (पहिले, चौथे, सातवें और दशम में) बृहस्पति, वा दशमस्थान में मंगल हो तो उसको कुलदीप जाने ॥१६॥

पराक्रमीग्रह ।

नैव शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ।
दशमोऽगारको नैव सजातः किं करिष्यति ॥ १७ ॥

टीका-जिसके लग्नजन्म में बुध शुक्र वा केन्द्र में गुरु वा दशम स्थान में मंगल न पड़े हों तो उसका होना ही वृथा जान ॥ १७ ॥

जातिभ्रंशकारकग्रह

धनस्थाने यदा सौरिः सैंहिकेयो धरात्मजः ।
शुक्रोगुरुः सप्तमे च त्वष्टमौ रविचन्द्रमौ ॥ १८ ॥
ब्रह्मपुत्रपदेवापि वेश्यासु च सदारतिः ।
प्राप्यते विंशतिमे वर्षे म्लेच्छो भवति नान्यथा ॥ १९ ॥

टीका-जिसके धनस्थानमें शनि, राहु, मंगल और सातवें स्थानमें शुक्र गुरु तथा आठवें स्थान में सूर्य चन्द्रमा हो तो वह बालक ब्राह्मण के घर जन्म लेकरभी वेश्यागामी होकर बीस वर्ष की अवस्थामें अवश्यमेव म्लेच्छ हो जायगा इसमें कुछ संशय नहीं जाने ॥ १८ ॥ १९ ॥

मातापिता के नाशकग्रह ।

षष्ठे च द्वादशेराशौ यदा पापग्रहो भवेत् ।
तथा मातृभयंविद्याच्चतुर्थे दशमेपितुः ॥ २० ॥

टीका-जिसके छठें वा बारहवें स्थान में पापग्रह हो तो वह मात को अशुभ और चौथे वा दशवें स्थान में पापग्रह हो तो ब पिता को अशुभ होता है ॥ २० ॥

मृत्युकारकग्रह

अर्को राहुःकुजः सौरिर्लग्नेतिष्ठति पंचमे ।
पितरं मातरं हंति भ्रातरं स्वशिशून्क्रमात् ॥ २१ ॥

लग्नस्थाने यदा सौरिः षष्ठोभवति चंद्रमा ।
कुजस्तु सप्तमस्थाने पितातस्य न जीवति ॥ २२ ॥
पातालस्थो यदा राहुश्चेन्दुः षष्ठाष्टमेपि च ।
पापदृष्टो विशेषेण सद्यः प्राणहरः शिशोः ॥ २३ ॥
जन्मलग्ने यदा राहुः षष्ठोभवति चन्द्रमा ।
जातो मृत्युमवाप्नोति कुदृष्ट्यां त्वपमृत्युना ॥ २४ ॥
जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ।
वर्षे च द्वादशेमृत्यु र्यदिरक्षति शंकरः ॥ २५ ॥
शनिक्षेत्रे यदा सूर्या भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
वर्षे च द्वादशेमृत्यु र्देवोवै रक्षिता यदि ॥ २६ ॥
षष्ठोष्टमस्तथामूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः ।
चतुर्थवर्षेमृत्युश्च यदिरक्षति शंकरः ॥ २७ ॥
भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः ।
वर्षेष्टमेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ॥ २८ ॥
दशमोऽपि यदाराहु र्जन्मलग्ने यदा भवेत् ।
वर्षे तु षोडशज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥ २९ ॥

टीका—जन्मलग्नसे पाँचवें स्थान में सूर्य के होने से पिता को, राहु के होने से माता को, मंगल के होने से भ्राता को और शनि के होने से उत्पन्न हुए बालक को अशुभ होता है, जिसके जन्मलग्न से शनि, छठें चन्द्रमा, सातवें स्थान में मंगल हो तो उसके पिता की मृत्यु होती है, जन्मलग्न से ७ में राहु, छठें वा आठवें चन्द्रमा और शेष ग्रहों की पापदृष्टि होने से जन्मते ही बालक की मृत्यु होती है, जन्मलग्न में राहु और छठें चन्द्रमा होने से जात बालक की अपमृत्यु होती है, जिसके जन्मलग्न में मंगल और आठवें स्थान में बृहस्पति हो तो वह बारहवें वर्ष शंकर की रक्षा पाने से भी मृत्यु को प्राप्त होता है, जिसके शनि हो तो उसको देवता भी रक्षा नहीं कर सकते बारहवें वर्ष अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त होगा । छठें आठवें वा जन्मलग्न में बुध होने से बालक चौथे वर्ष शंकर के रक्षा करने पर भी नहीं बच सक्ता है । मङ्गल के

घर में बृहस्पति और छठें वा आठवें चन्द्रमा के होने से ईश्वर रक्षा करने पर भी आठवें वर्ष बालक की मृत्यु हो जाती है। जन्मलग्न से दशम वा जन्मलग्न में राहु के होने से सोलहवें वर्ष बालक की मृत्यु होती है ॥ २१ ॥ २९ ॥

स्त्रीजातक।

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वत्सरे पतिः।
म्रियते चाष्टमवर्षे चन्द्रः षष्ठाष्टमे यदि ॥ १ ॥

टीका—स्त्रीके जन्म समय लग्नमें पापग्रह के होने से सातवें वर्ष पति की मृत्यु होती है छठें और आठवें चन्द्रमा के होने से आठवें वर्ष पति की मृत्यु होगी ऐसा जाने ॥ १ ॥

अन्यमत।

द्वादशे चाष्टमे भौमे क्रूरे तत्रैव संस्थिते।
लग्ने च सिंहिकापुत्रे रण्डा भवति कन्यका ॥ २ ॥

टीका—जन्मसमय क्रूर ग्रह के एक साथ बारहवें एवं आठवें स्थान में मङ्गल हो और लग्न में राहु हो तो कन्या विधवा हो जाती है ॥ २ ॥

अन्यमत।

लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपि वा।
सद्यो निहन्ति दंपत्योरेकेनास्त्यत्र संसयः ॥ ३ ॥

टीका—लग्न से सातवें और चन्द्रमा से सातावें पापग्रह होने से स्त्री विवाह के उपरान्त थोड़े समय में ही विधवा हो जाती है ॥ ३ ॥

रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरोमकरोपगतो भवेत्।
किल जलोदरसञ्जनिता तदा निधनता वनितासुतु कीर्तिता ॥४॥

टीका—कर्क में शनि और मकर में चन्द्रमा होने से स्त्री की जलोदर रोग से मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

निशाकरः पापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति।
पापेस्मरस्थेऽन्यखगे च धर्मे किलाङ्गना प्रवृजितत्वमेति ॥५॥

टीका—पापग्रह के साथ चन्द्रमा के होने से स्त्री की शस्त्र से मृत्यु होती है, मंगल के स्थान में चन्द्रमा के होने से स्त्री अग्नि से जलकर मरती है और सातवें वा नवम स्थान में शुभग्रह के साथ पापग्रह हो तो स्त्री संन्यासिनी हो जाती है ॥ ५ ॥

सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता चोणिजे च विधवा खलु बाल्ये।
पापखेचर विलोकनमाते मन्दगे च युवती जरतीस्यात्॥ ६॥

टीका—जिसके जन्मलग्न से सातवें सूर्यहों उस स्त्रीको पति त्याग देता हैं। सातवें मंगल के होने से बालविधवा, सातवें पापग्रह के होने से युवावस्था में विधवा और सातवें शनि के होने से वृद्धावस्था में विधवा होती है॥ ६॥

लग्नेसितेन्दू कुजमंदभस्थौ क्रूरेक्षितौ सान्यरता च बाला।
स्मरेकुजांशेर्कसुतेनदृष्टे विनष्टयोनिश्च शुभो शुभांशे॥ ७॥

टीका—जिसके लग्नमें शुक्र वा चन्द्रमा हो और मंगल वा शनि दशम स्थानमें हो, उनपर ग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री परपुरुषगामिनी होती है। सातवें मंगल का अंश हो और शनि सातवें घरको देखता हो तो उसको नष्ट योनि जाने। सातवें स्थान में शुभग्रह के अंश रहने से शुभ जाने॥ ७॥

सूर्यारौ खजलाश्रितौ हिमवतः शैलाग्रपातान् मृति-
भौमेन्द्वर्कसुताः स्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः।
सूर्याचन्द्रमसौ खलेक्षितयुतौ कन्यायुतौ बन्धुना-
तौचेद्द्व्यङ्गविलग्नसंस्थितिकरौ तोये निमग्नत्वतः॥ ८॥

टीका—जिस स्त्री के दशवें सूर्य, चौथे मंगल हो उसकी पत्थर से मृत्यु जाने। मंगल, चन्द्र, शनि, दूसरे स्थान में, सातवें वा चौथे स्थान में हों, उसकी कूआँ, बावली, तालाव आदि से मृत्यु जाने, सूर्य और चन्द्रमा पर पापग्रह की दृष्टि हो वा पापग्र से युक्त हों तों उस स्त्री का बन्धन से मृत्यु होगी, सूर्य और चन्द्रमा के द्विस्वभाव में होने से जल में डूबकर मृत्यु जाने॥ ८॥

समेविलग्ने यदि संस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेन्दुजीवाः।
स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चा परागमज्ञानविराजमाना॥ ६॥

टीका—समराशिके लग्न में शुक्र, बुध, चन्द्र, गुरु, बलवान हों तो वह स्त्री ब्रह्मविचारिणी हो और श्रेष्ठ ज्ञानवती होव। ९

सप्तमेभागवेजातो कुलदोषकरीभवेत्।
कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैराभ्रमतिवेश्मसु॥ १०॥

टीका—जिनके लग्न से सातवें शुक्र हो तो वह स्त्री कुल को दूषित करती

है। कर्कराशि में मंगल होने से वन्ध्या होती है और दूसरे के घर में वास करती है॥ १०॥

तनुस्थान।

मूर्तौकरोतिविधवांदिनकृत्कुजश्च राहुर्विनष्ट तनयां रविजो-दरिद्राम्। शुक्रःशशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वी मायुःक्षयं च कुरुतेऽत्र च सर्वरीशः॥ १॥

धनुस्थान।

कुर्वन्तिभास्करशनैश्चरराहुभौमा दारिद्रयदुःखमतुलं नियतं द्वितीये। वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्या नारीं प्रभूततनयां कुरुतेशशाङ्कः॥ २॥

सहजस्थान।

सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रवुधास्तृतीये कुर्युः स्त्रियं बहुसुतां धनभागिनी च। सत्यं दिवाकरसुतः कुरुतेधनाढ्यां लक्ष्मींददातिनियतं किल सैंहिकेयः॥ ३॥

सुहृत्स्थान।

स्वल्पंपयोभवति सूर्यसुते चतुर्थे दौर्भाग्यमुष्णकिरणः कुरुते शशी च। राहुर्विनष्टतनयां क्षितिजोऽल्पवीजां सौख्यान्वितां भृगुसुरेज्यबुधाश्च कुर्युः॥ ४॥

सुतस्थान।

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पञ्चमस्थौ चन्द्रात्मजो बहुसुतां गुरुभार्गवौ च। राहुर्ददातिमरणं रविजस्तुरोगः कन्याप्रसूतिनिरतां कुरुते शशाङ्कः॥ ५॥

रिपुस्थान।

षष्ठस्थिताशनिदिवाकरराहु भौमाः जीवस्तथाबहुसुतां धन-भागिनीं च। चन्द्रःकरोतिविधवामुशनादरिद्रां वेश्या शशांक-तनयः कलहप्रियां च॥ ६॥

जायास्थान।

सौरारजीवबुधराहुरवीन्दुशुक्रादद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः। वैधव्यबन्धनभयं क्षय वित्तनाशं व्याधिं प्रवासमरणं नियतं क्रमेण ॥ ७ ॥

मृत्युस्थान।

स्थानेष्टमे गुरुबुधौ नियतं वियोगं मृत्युं शशी भृगुसुतश्च तथैव राहुः ॥ सूर्यः करोति विधवां धनिनीं कुजश्च सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च ॥ ८ ॥

धर्मस्थान।

धर्मस्थिता भृगुदिवाकरभूमिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतां शशिजं सुभोगाम्। राहुश्च सूर्यतनयश्च करोतिवन्ध्यां नारी प्रसूतितनयां कुरुते शशांकः ॥ ९ ॥

कर्मस्थान।

राहुर्नभःस्थलगतो विधवां करोति पापे परा दिनकरश्च शनैश्चरश्च। मृत्युं कुजोर्थरहितां कुटिलां च चन्द्रे शेषाग्रहा धनवतीं बहुवल्लभां च ॥ १० ॥

आयस्थान।

आयेरविर्बहुसुतां धनिनीं शशांकः पुत्रान्वितां क्षितिसुतो रविजो धनाढ्याम्। आयुष्मतीं सुरगुरुर्भृगुजः सुपुत्रां राहुः करोति सुभगां सुखिनीं बुधश्च ॥ ११ ॥

व्ययस्थान।

अन्त्ये धनव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रां वन्ध्याकुजः षररतां कुटिलां च राहुः। साध्वीं सितेज्यशशिजां बहुपुत्रपौत्रयुक्तां विधुःप्रकुरुते व्ययगोदिनान्धाम् ॥ १२ ॥

विशेशविचार ।

भाव भावं शर्पो लग्नं संयोज्यं ता येन्मिथः ।
पिण्डे क्षेपास्तथा युक्ता तथा भागैस्तु कल्पना ॥ १ ॥
धातु मूलयथा जीव बीव मूलस्य धातुकः ।
पिण्डे क्षेपा स्तथा युक्ता तथा भागैस्तु कल्पना ॥ २ ॥
एवं क्रमेण बोधव्यं द्वादशांग च क्षेपकम् ।
भ्रूतरे नासिका चच्छु: भुजौ पाणी कटिस्तथा ॥ ३ ॥
गुह्य लिंगे तथा जानुः पृष्टेपादौ क्रमागतः ।
समके विषये जातः समे कन्या उपस्थितः ॥ ४ ॥
विषये पुत्रकं ज्ञात्वा लाभा लाभं क्रमागतः ।
गौरः श्यामःस्तथा कृष्णः वर्ण मेव समाश्रितः ॥ ५ ॥
चन्द्रांश युक्तहीनां कः वर्णशंकर क्रमागतः ।
एवं क्रमेण संयोज्यं कुज्ञ वा मन मंगलम् ॥ ६ ॥
लग्नांशः क्रयद्वो यांशः चन्द्रांशः युक्त हीनकः ।
एवं क्रमेण बोधव्यं पञ्चमार्ग तु जातयः ॥ ७ ॥
इत्यापि ब्राह्मणा पंच जातयः अन्ते अंत्यजा ।
रजकश्चर्मकरश्चनदो वरुण एव च ॥ ८ ॥
कौवतः कोलभिल्लश्च एते अन्त्यज जातयः ।

टीका—भाव भावेश क्षेयकांक में १८ का भाग देने से देश निश्चय होगा । १ मठ देश । २ कटक ३ मोद्रक ४ कुन्तल ५ दोप ६ पुलिन्द ७ कश्यप ८ नाग, नृ अङ्ग ९ वङ्ग १० कलिङ्ग ११ गौड़ १२ गुजर १३ एवं च, अवध १४ काशी १५ मगध १६ सोप्रतं १७=लग्न १ लग्नेश ७=८ परस्पर ताड़ना ६४ नव जोड़ा=७३ इसमें ३ का भाग दिया शेष १ धातु भया= ॥

एवं क्रमेण बोधव्यं धनभावः क्रमा गतः ॥ ९ ॥
लाभालाभं भवेद् द्रव्यं द्विशेषे शृणु भागव ।
बाले कौमारके जातः युवां वृद्धां मृतांमतः ॥ १० ॥
षोडशान्ते च व्ययते सोधनीयं विशेषत् ।
शतं सहस्त्र मयुतं विंशति स्त्रिंश तिंस्तथ ॥ ११ ॥
शून्याब्धि चैव पञ्चाशत् षष्टि सप्तति संगतम् ।
असीति नवति लक्षं दश लक्षं च कोटयः ॥ १२ ॥
एवं क्रमेण बोधव्यं भ्रातृ भगिनी कनिष्टकम् ।
विषमे भ्रातृ बहव समजातश्च साकमं ॥ १३ ॥

विक्र मे मातृकं ज्ञानं पितृ एवं च साहसम् ।
ज्ञान वाहन यात्राच मातृएवं विचारणात् ॥ १४ ॥
एवं क्रमेण वोधव्यं भाव भावे त्नयोर्युतम् ।
पञ्चमं भाव संसोध्यं पुत्र विद्या विचारणाम् ॥ १५ ॥
विषमे वह वीविद्या समेजात च निर्वला ।
अष्टमं भाव संशोध्यं भाव भाव शयो र्युतम् ॥ १६ ॥
पिण्डं त्तेपा तथा युक्ता यथा मार्गैस्तु कल्पना ।

राक्षित्तेपक—

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा
९	८	७	६	५	४	३	२	१	९	८	७	त्ते

अष्टोत्तरीमहादशा ।

अद्रीपुनर्वसुः पुष्यः आश्लेषा तु रवेर्दशा ।
मघापूर्वोत्तरा चैव चन्द्रस्य च दशा यथा ॥ १ ॥
हस्तोविशाखा चित्रा च स्वाती भौमदशास्मृता ।
ज्येष्ठानुराधा मूले च सौम्यस्य च दशाबुधैः ॥ २ ॥
अभिजिच्छ्रवणः पूषा ऊषा चैव शनेर्दशा ।
धनिष्ठा शततारा च पूर्वाभाद्रपदागुरोः ॥ ३ ॥
ऊभापूषाश्विनीकाले राहोश्चैव दशास्मृता ।
कृत्तिकारोहिणांचोक्तामृगाः शुक्रदशाबुधैः ॥ ४ ॥
एषां भानां क्रमेणैव ज्ञेया सूर्यादिकादशाः ।
क्रूरजा अशुभाप्रोक्ता शुभास्यात्सौम्यखेटजा ॥ ५ ॥
सूर्यस्य रसवर्षाणि इन्द्रोः पंचदशैव च ।
भौमस्य वसुवर्षाणि ऋषिचन्द्रोबुधस्य च ॥ ६ ॥
मन्दस्य दशवर्षाणि गुरोश्चैकोनविंशतिः ।

स्थान	नाम	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु-केतु
१	तनु	विधवा	आयु नाश	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रा	पुत्रनाश
२	धन	दरिद्र दुःख	बहुपुत्र वती	दरिद्र दुःख	सौभाग्य सम्पत्ति	सौभाग्य सम्पत्ति	सौभाग्य सम्पति	दरिद्र दुःख	दरिद्र दुःख
३	सहज	पुत्रवती धनाढ्या	पुत्रवती धनाढ्या	पुत्रवती धनाढ्या	पुत्रवती धनाढ्या	पुत्रवती धनाढ्या	पुत्रवती धनाढ्या	लक्ष्मी वती	लक्ष्मी वती
४	सुहृत	दरिद्रता	दुर्भगा	अल्प सन्तान	अति सुखिनी	अति सुखिनी	अति सुखिनी	दुग्ध अल्प	पुत्रनाश
५	सुत	शिशुनाश	कन्या अधिक	शिशुना शवती	बहुफल प्राप्ति	बहुफल प्राप्ति	बहुफल प्राप्ति	रोगिणी	मरण प्राप्ति
६	रिपु	धनवती	विधवा	धनवती	कलहरूप	धनवती	दरिद्री वेश्या	धनवती	धनवती
७	जाया	रोहिणी	प्रवासिनी	विधवा	क्षय	भयबंध	मृत्यु	वैधव्य मरण	वित्तना
८	मृत्यु	विधवा	मरणांत वियोगी	धनवती	स्वजन वियोग	स्वजन वियोग	मरणान्त वियोग	अनिपुत्र सतान	मरणान्त वियोग
९	धर्म	धर्मपुष्क लकरे	पुत्रवती	धर्मकार्य कर्त्री	उत्तम भोगवती	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	बाँझ	बाँझ
१०	कर्म	पापका- रिणी	दरिद्रव्य भिचारी	मृत्यु	धनवती	धनवती घरकीप्रा	धनप्राप्ति	पाप कर्मिणी	विधवा
११	आय	अतिपुत्र प्राप्ति	लक्ष्मी वती	बहुपुत्र वती	सुखिनी	आयु- ष्मति	पुत्रवती	धर्मवती	सौभाग्य वती
१२	व्यय	खर्च कर्नी	दिनांध	बांझ व्य- भिचारो	सुपुत्रा	सुशीला	पतिव्रता	खर्च कर- ने हारी	व्यभिचा रिणी

राहोर्द्वादशवर्षाणि शुक्रस्यैकानविंशतिः ॥ ७ ॥

टीका—आर्द्रा नक्षत्र से मृगशिरा तक २८ नक्षत्रों में सूर्य से शुक्र तक ८ ग्रहों की पृथक् २ क्रम से महादशा की वर्ष संख्या जाने। पाप ग्रह के ४ और शुभ ग्रह के ३ नक्षत्र जाने। आर्द्रा से सूर्य की दशा तक गिने. दशा की संख्या नक्षत्र के विभाग के अन्त में हो उसे क्रम से भोग्य दशा जाने और जो जन्म समयमें दशा हो उसे प्रथम जाने ॥ ७ ॥

ग्रहों की अन्तर्दशा निकालने की रीति

महादशा स्वस्वदशाब्दनिघ्ना भक्तावसुव्योमकुभिः समाप्ताः ।
अन्तर्दशास्युर्गगनेचराणां तदेकभावोहि महादशास्यात् ॥ ८ ॥

टीका—जिस ग्रह की अन्तर्दशा निकालनी हो उसकी वर्ष संख्या से महादशा की वर्ष संख्या को गुणा करो फिर १०८ से भाग दो जो बचे उनको वर्ष जाने, शेष को १२ से गुणा करो और १०८ द्वारा भाग देने से बचे जो उन्हें

सूर्य की महादशा ६ वर्ष
आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य आश्लेषा ।

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
सूर्य	०	४	०	०	अशुभ
चन्द्र	०	१०	०	०	शुभ
मङ्गल	०	५	१०	०	अशुभ
बुध	०	११	१०	०	शुभ
शनि	०	६	२०	०	अशुभ
गुरु	१	०	२०	०	शुभ
राहु	०	०	०	०	अशुभ
शुक्र	१	२	०	०	शुभ
वर्ष सं.	६	०	०	०	

चन्द्र की महादशा वर्ष १५
मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी ।

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
चन्द्र	२	१	०	०	शुभ
मंगल	१	१	१०	०	अशुभ
बुध	२	४	१०	०	शुभ
शनि	१	४	२०	०	अशुभ
गुरु	२	७	२०	०	शुभ
राहु	१	८	०	०	अशुभ
शुक्र	२	११	०	०	शुभ
रवि	१	१०	०	०	अशुभ
वर्ष सं.	१५	०	०	०	

भौम की महादशा वर्ष ८
हस्त, चित्रा, स्वाती विशाखा ।

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
सूर्य	०	७	३	२०	अशुभ
बुध	१	३	३	२०	शुभ
शनि	०	८	२६	४०	अशुभ
गुरु	१	४	२६	४०	शुभ
राहु	०	१	२०	०	अशुभ
शुक्र	१	६	२०	०	शुभ
रवि	०	५	१०	०	अशुभ
चन्द्र	१	१	१०	०	शुभ
वर्ष सं.	८	०	०	०	

बुध की महादशा वर्ष १७
अनुराधा ज्येष्ठा मूल

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
बुध	२	८	३	२०	शुभ
शनि	१	३	२६	४०	अशुभ
गुरु	२	११	२६	०	शुभ
राहु	१	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	३	३	२०	०	शुभ
रवि	०	११	१०	०	अशुभ
चन्द्र	२	४	१०	२०	शुभ
मंगल	१	३	३	०	अशुभ
वर्ष सं.	१७	०	०	०	

शनि की महादशा के वर्ष १० पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित, श्रवण।					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
शनि	०	११	३	२०	अशुभ
गुरु	१	६	३	२०	शुभ
राहु	१	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	१	११	१०	०	शुभ
सूर्य	०	६	२०	०	अशुभ
चन्द्र	१	४	२०	०	शुभ
मंगल	०	८	२६	४०	अशुभ
बुध	१	६	२६	४०	शुभ
वर्ष सं.	१०	०	०	०	

गुरु की महादशा वर्ष १६ धनिष्ठा, शततारका, पूर्वाभाद्रपदा।					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
गुरु	३	४	३	२०	शुभ
राहु	२	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	३	८	१०	०	शुभ
रवि	१	०	२०	०	अशुभ
चन्द्र	२	७	२०	०	शुभ
भौम	१	४	२६	४०	अशुभ
बुध	२०	११	२६	४०	शुभ
शनि	१	६	३	२०	अशुभ
वर्षसं.	१६	०	०	०	

राहु की महादशा वर्ष १२ उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी।					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
राहु	१	४	०	०	अशुभ
शुक्र	२	४	०	०	शुभ
रवि	०	८	०	०	अशुभ
चन्द्र	१	८	०	०	शुभ
मंगल	१	१०	२०	०	अशुभ
बुध	२	१०	२०	०	शुभ
शनि	१	१	१०	०	अशुभ
गुरु	१	१	१०	०	शुभ
वर्ष सं.	१२	०	०	०	

शुक्र की महादशा वर्ष २२ कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा।					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
शुक्र	४	१	०	०	शुभ
रवि	१	२	०	०	अशुभ
चन्द्र	२	११	०	०	शुभ
भौम	१	६	२०	०	अशुभ
बुध	३	३	२०	०	शुभ
शनि	१	११	१०	०	अशुभ
गुरु	२	८	१०	०	शुभ
राहु	३	४	०	०	अशुभ
वर्ष सं.	२२	०	०	०	

मास जाने फिर बाकी को, ३० से गुणा करो और १०८ द्वारा भाग दो जो बचे उनको दिन जाने, फिर जो शेष बचे उसको ६० से गुणा करो और १०८ द्वारा भाग दो जो बचे उन्हें घड़ी जाने॥ ३८७॥

विंशोत्तरी महादशा।

द्व्यूनमेव च जनुर्भमंकहृत्क्रमाऽर्केन्दुकुजागुसूरयः।
शनिचन्द्रकेतुभार्गवाः परिशेषात्तु दशाधिपास्तथा॥ १॥

टीका—जन्म नक्षत्र में २ कम कर ९ का भाग देने से जो शेष १ बचे तो

प्रथम सूर्य की दशा २ बचे तो चन्द्रमा की दशा ३ बचे तो भौम की दशा ४ बचे तो राहू की दशा ५ बचे तो गुरु की दशा ६ बचे तो शनि की दशा ७ बचे तो बुध की दशा ८ बचे तो केतु की दशा शून्य बचे तो शुक्र की दशा जाने । इन्हीं को क्रम से दशाओं के स्वामी जाने ॥ १ ॥

दशाओं के वर्ष भोग्याभोग्य निकालने की रीति ।

ऋतुदिग्गिरयो धृतिर्नृपातिधृति र्मेघहयो नखाः समाः ।
क्रमतो हि मता अथादिमा जनिभस्था घटिकाः समाहताः ॥२॥
भभोगेनभुक्ताः फलंभुक्तपाकस्तदूना दशांशाभवेद्भोग्यसंज्ञा ॥३॥

टीका—६ ऋतु १० दिग् ७ गिरि १८ धृति १६ नृप १९ अतिधृति १७ मेघ ७ हय २० नख इस रीति से वर्ष संख्या सूर्य से शुक्र तक चक्र में स्पष्ट देखो । जन्म समय जिस ग्रह के जितने वर्ष हों उन वर्षों से जन्म के नक्षत्र को गुणा कर फिर भभोग से भाग दे जो बचे उन्हें वर्ष जाने । शेष को बारह से गुणा कर भोग्य को भागदे जो शेष बचे उन्हें मास जाने । फिर शेष को ६० से गुणा कर भोग्य से भाग देने पर जो बचे उन्हें दिन जाने फिर । शेष बचे हुए को ६० से गुणा कर भोग्य घड़ी का भाग दे जो बचे उन्हें घड़ी जाने ॥१–२॥

विंशोत्तरी की दशा क्रम ।

कृत्तिकादिक्रमेणैव ज्ञेयाविंशोत्तरी दशा ।
अन्तर्दशायुतावर्षमासवासरवर्तिताः ॥ ४ ॥

टीका—कृत्तिका से भरणीतक नक्षत्र और दशा अन्तर्दशा के स्वामियों के नाम एवं वर्ष संख्या चक्र से स्पष्ट जाने ॥ ४ ॥

सूर्य के दशा वर्ष ६ कृत्तिका उ फा. उ. षाढ़ा अन्तर्दशा ।					चंद्र के दशा वर्ष १० रोहिणी हस्त, श्रवण अन्तर्दशा ।					भौमके दशा वर्ष ७ मृगशिरा चित्रा, धनिष्ठा अन्तर्दशा ।				
नाम	वर्ष	मास	दिन	घ०	नाम	वर्ष	मास	दन	घ०	नाम	वर्ष	मास	दन	घ.
रवि	०	३	१८		चन्द्र	०	१०	०		मंगल	०	४	२७	
चन्द्र	०	६	०		मंगल	०	७	०		राहु	१	०	८	
मंगल	०	४	६		राहु	१	६	०		गुरु	०	११	६	
राहु	०	१०	२४		गुरु	१	४	०		शनि	१	१	९	
गुरु	०	९	१८		शनि	१	७	०		बुध	०	११	२७	
शनि	०	११	१२		बुध	१	५	०		केतु	०	४	२७	
बुध	०	१०	६		केतु	०	७	०		शुक्र	१	२	०	
केतु	०	४	६		शुक्र	१	८	०		रवि	०	४	६	
शुक्र	०	०	०		रवि	०	६	०		चन्द्र	०	७	०	

राहु के दशा वर्ष १८ आर्द्रा, स्वाती, शततारका, अंतर्दशा				
नाम	वर्ष	मास	दिन	घ.
राहु	२	८	१२	
गुरु	२	४	२४	
शनि	२	१०	६	
बुध	२	६	१८	
केतु	१	०	१८	
शुक्र	३	०	०	
रवि	०	१०	२४	
चन्द्र	१	६	०	
मंगल	१	०	१८	

गुरु के दशा वर्ष १० पुनर्वसु विशाखा, पूर्वाभाद्र, अंतर्दशा				
नाम	वर्ष	मास	दिन	घ.
गुरु	२	१	१८	
शनि	२	६	१२	
बुध	२	३	६	
केतु	०	११	६	
शुक्र	२	८	०	
रवि	०	९	१८	
चन्द्र	१	४	०	
मंगल	०	२१	६	
राहु	२	४	२४	

शनि के दशा वर्ष १९ उत्तराभा पुष्य, अनुरा., अंतर्दशा				
नाम	वर्ष	सि	दिन	घ.
शनि	३	०	३	
बुध	२	८	९	
केतु	१	१	९	
शुक्र	३	२	०	
रवि	०	११	२१	
चन्द्र	१	७	०	
मंगल	१	१	९	
राहु	२	१०	६	
गुरु	२	६	२१	

बुध के दशावर्ष १७ अश्लेषा ज्येष्ठा, रेवती, अंतर्दशा ।				
नाम	वर्ष	मास	दिन	घ.
बुध	२	४	२७	
केतु	०	११	२७	
शुक्र	२	१०	०	
रवि	०	१०	६	
चन्द्र	१	५	०	
मंगल	०	११	२७	
राहु	२	६	१८	
गुरु	२	३	६	
शनि	२	८	९	

केतु के दशा वर्ष ७ मघा, मूल, अश्विनी, अंतर्दशा				
नाम	वर्ष	मास	दिन	घ.
केतु	०	४	२७	
शुक्र	१	२	०	
रवि	०	४	६	
चन्द्र	०	७	०	
मंगल	०	४	२७	
राहु	१	०	२८	
गुरु	०	११	६	
शनि	१	१	९	
बुध	०	११	२	

शुक्र के दशा वर्ष २० पूर्वा फा. पू.षा., भरणी, अंतर्दशा				
नाम	वर्ष	मास	दिन	घ.
शुक्र	३	४	०	
रवि	१	०	०	
चन्द्र	१	८	०	
मंगल	१	२	०	
राहु	३	०	०	
गुरु	२	८	०	
शनि	३	२	०	
बुध	२	१०	०	
केतु	१	२	०	

महादशा और अन्तर्दशाओं के फल ।

रविकी अन्तर्दशा ।

देशान्तरं च निजवंधुवियोगदुःखमुद्वेगरोगभयचौरभवा च पीडा । पूर्वस्थितस्य निखिलस्य धनस्य नाशो भानोदशाजनन कालदशाभवन्ति ॥ १ ॥

टीका—देशान्तर में वास, भाई का वियोग, दुःख, मनको उद्वेग, रोगभय और चोर से पीड़ा एवं संचित धनका नाश सूर्य की अन्तर्दशा के फल से होता है ॥ १ ॥

चन्द्रान्तर्दशा।

हेमादिभूतिहयवाहनयानलाभ शत्रौप्रतापबलवृद्धिपरम्परा च। इष्टान्नदानशयनासनभोजनानि नूनं सदा शशिदशागमने भवन्ति ॥ २ ॥

टीका-सुवर्णादि ऐश्वर्य एवं घोड़ा, हाथी, पालकी अरदि वाहन की प्राप्ति शत्रु का पराजय, बलकी वृद्धि अनेक प्रकार से सुरस अन्न दान शयन को उत्तम आसन और भोजन की प्राप्ति चन्द्रमा की अन्तर्दशा के फल से होती है ॥ २ ॥

भौमकी अन्तर्दशा।

भूपालचौरभयवन्हिकृता च पीडा सर्वाङ्गरोगभयदुःखसुदुःखिता च। चिन्ताज्वरश्च बहुकष्टदरिद्रयुक्तः स्यात्सर्वदा कुजदशा जनने भवन्ति ॥ ३ ॥

टीका-राजा और चोर से भय, अग्नि से पीड़ा, सर्वाङ्ग में रोग, सदा दुःख नाना भाँतिसे चिंता, ज्वरका कष्ट और दरिद्र भौमकी अन्तर्दशा में होते हैं॥३॥

राहुकी अन्तर्दशा।

दीनोनरोभवति बुद्धिविहीनचिंता सर्वाङ्गरोग भयदुःखसुदुःखिता च। पापानि वंध बहुकष्टदरिद्रयुक्तं राहोदशाजननकालदशा भवन्ति ॥ ४ ॥

टीका—बुद्धि की हानि, दीनता, चिता से युक्त, सर्वाङ्ग पीड़ा, भयभीत, दुःख, बन्धन, कष्ट और दरिद्रता के कारण कष्ट, राहु की अन्तर्दशा में होती है ॥ ४ ॥

गुरु की अन्तर्दशा।

राज्याधिकारपरिवर्द्धितचित्त वृत्तिर्धर्माधिकारपरिपालनसिद्धिवृद्धिः। सद्धिग्रहोपिधनधान्यसमृद्धिता च स्याद्दवता गुरुदशागमने भवन्ति॥

टीका—राज्याधिकार, धर्म में चित्त, वृत्ती की निष्ठा, आरोग्यता, निश्चिन्त रूप से धन धान्य की वृद्धि गुरु की अन्तर्दशा में होती है ॥ ५ ॥

मिथ्यापवादवधबन्धनमर्थहानिर्मित्रे च बंधु वचनेषु च युद्धबुद्धिः ।
सिद्धं च कार्यमपियत्र सदाविनष्टं स्यात्सर्वदा शनिदशागमनेभवन्ति६

टीका—मिथ्यापवाद, दूसरे का वध, बन्धन, द्रव्य का नाश, मित्र तथा बान्धवों से क्लेश की वृद्धि, काय नष्ट होना शनिकी अन्तर्दशा का फल है ॥६॥

बुध की अन्तर्दशा ।

दिव्यांगनामदनसंगमकेलिसौख्यं
नानाविलासमभिरागमनोभिरामम् ।
हेमादि रत्न विभवागम ईशध्यानं
स्यात्सर्वदाबुधदशागमने भवन्ति ॥ ७ ॥

टीका—सुन्दर स्त्री का सुख, सब प्रकार के भोग विलास, सुवर्ण और रत्नादिकों की प्राप्ति, धनका संग्रह, ईश्वर का स्मरण आदि बुधकी अन्तर्दशा में होते हैं ॥ ७ ॥

केतु की अन्तर्दशा ।

भार्यावियोगजनितं च शरीरदुःखंद्रव्यस्य हानिरतिकष्टपरम्परा च ।
रोगाश्चबंधुकलहश्चविदेशिता च केतोर्दशाजननकालदशाभवन्ति ८

टीका—स्त्री के वियोग से शरीर को दुःख शरीर का नाश, कष्ट, रोग, बान्धवों से क्लेश और देशान्तर में जाना केतुकी अन्तर्दशा के फल से होता है ॥ ८ ॥

शुक्रकी अन्तर्दशा ।

आरामवृद्धिरथसर्वशरीरवृद्धिः श्वेतातपत्र धनधान्य समाकुलं च । आयुः शरीरसुतपौत्रसुखंनराणां द्रव्यं च भार्गवदशागमने भवन्ति॥ ९ ॥

टीका—बाग आदि स्थान की प्राप्ति, शरीर की पुष्टि, श्वेत छत्र की प्राप्ति, धनधान्य की वृद्धि, आयु एवं पुत्र पौत्रकी वृद्धि और द्रव्य की प्राप्ति शुक्र की अन्तर्दशा में होती है ॥ ९ ॥

योगिनी दशा के नाम ।

मंगलापिंगलाधान्या भ्रामरीभद्रिकापि च ।
उल्कासिद्धासंकटा च योगिन्यष्टदशाः स्मृताः ॥ १ ॥

टीका—मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा; यह आठों योगिनी दशाओं के नाम हैं ॥ १ ॥

अथासामधीशाः क्रमान्मंगलान्तः,
शशी तीक्ष्णभानुर्गुरुः भूमिसूनुः ।
बुधः सूर्यसूनुर्भृगुः सिंहिकाया—
सुतःसंकटायास्तथान्ते च केतुः ॥ २ ॥

टीका—मंगला दशाके स्वामी चन्द्र, पिंगला के सूर्य, धान्या के गुरु, भ्रामरी के मंगल, भद्रिका के बुध, उल्का के शनि, सिद्धा के शुक्र और संकटा के पूर्वार्द्धका राहु एवं संकटा दशा के उत्तरार्द्ध के स्वामी केतु जाने ॥ २ ॥

योगिनी दशाक्रम् ।

स्वर्क्षं पिनाकिनयनैःसंयोज्यं वसुभिर्भजेत् ।
योगिन्यष्टौ समाख्याताः शून्यापातेनसंकटा ॥ ३ ॥

टीका—जन्म नक्षत्र में ३ अंक मिलावै और आठ से भाग दे जो शेष अंक बचे उनकों मंगलादि दशाक्रम से जाने ॥ ३ ॥

वर्ष संख्या ।

एकद्वित्रीणिवेदाश्च पञ्चषट्सप्तभानि च ।
अष्टवर्षाणि हि भवेन्मंगलादावनुक्रमात् ॥ ४ ॥

टीका—मंगला १ वर्ष, पिंगला २ वर्ष, धान्या ३, भ्रामरी ४, भद्रिका ५, उल्का ६, सिद्धा ७, संकटा दशा, ८ वर्ष की होती है ॥ ४ ॥

अन्तर्दशा ।

अन्तर्दशायाः प्रकार प्रवच्मि दशावर्षकं स्वस्ववर्षेणगुण्यम् ।
ततःषट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिका सा सदाखेटविज्ञैर्विधेया फलार्थम् ॥ ५

टीका— प्राप्त दशा से जिस दशा का अन्तर निकालना हो उसको प्राप्त दशा की वर्ष संख्या से गुणा करे फिर उसमें ३६ का भाग दे तो अन्तर्दशा आ जाती है। उसको आगे के चक्र में देखो ॥ ५ ॥

मङ्गला के वर्ष १ दिन ३६०	पङ्गला के वर्ष २ दिन ७२०	धान्या के वर्ष ३ दि. १०८०	भ्राम. के वर्ष ४ दि १४४०	भाद्रका के वर्ष ५ दि. १८००	उल्का के वर्ष ६ दि २१६०	सिद्धा के वर्ष ७ दि. २५२०	सङ्कटा के वर्ष ८ दिन २८००
मङ्गला १०	पिं. ४०	धा. ६	भ्रा. १६०	भ. २५०	उ. ३६०	सि. ६०	सङ्क ६४०
पिङ्गला २०	धा. ६०	भ्रा. १२०	भ. २००	उ. ३००	सि. ४२०	सं. ५६०	मङ्ग. ८०
धान्या ३०	भ्रा. ८०	भ. १५०	उ. २४०	सि. ३५०	सं. ४८०	मं. ७०	पिं० १६०
भ्रामरी ४०	भ. १००	उ. २८०	म. २८०	सं. ४००	मं. ६०	पि. १४०	धा. २३०
भद्रिका ५०	उ. १२०	सि. २१०	मं. ३२०	मं. ५०	पिं. १२०	धा. २१०	भ्रा. ३२०
उल्का ६०	सि. १४०	सं. २४०	म. ४०	पि. १००	धा १८०	भ्रा. २८०	भ. ४००
सिद्धा ७०	सं. १६०	मं. ३०	पिं. ८०	धा. १००	भ्रा. २३०	भ. ३५०	उ. ४८०
सङ्कटा ८०	मं २०	पिं. ६०	धा. १२०	भ्रा. २००	भ. ३००	उ. ४२०	सि. ५६०
जोड़ ३६०	७२०	१०८०	१४४०	१८००	२१६०	२५०२	२८००

दशा का फल।

वैरिणान्तु विपदां विनाशिका वाहनादि वसु रत्न लाभदा।
कामिनां सुतगृहादि लाभदा मंगला सकलमंगलोदया ॥ १ ॥

टीका—शत्रु के उपद्रवों का नाश, घोड़ा, हाथी, सुवर्ण, रत्न, स्त्री, पुत्र, गृहादि की प्राप्ति और मांगलिक कर्म मनुष्य मंगला दशा में करता है ॥ १ ॥

दुःखशाककुलरोगवर्धिता व्यग्रता च कलहः स्वजनैश्च।
अन्त्यभागकथिता फलदासौ पिंगला च विदुषां सुखदादौ ॥२॥

टीका—पिंगला दशा में प्रथम सुख पीछे दुःख और शोक की प्राप्ति, कुल में रोग की वृद्धि, चित्त में व्याकुलता और बान्धवों में वैर होता है ॥ २ ॥

धनं धान्यवृद्धिं धरानाथमान्यं सदा युद्धभूमौ जयं धैर्यवत्ताम्।
कलत्रांगजानांसुखं चित्रवस्त्रैर्युतं धान्यका धान्यवृद्धिं करोति ॥३

टीका—धन धान्य की वृद्धि, राज्य से पूजा, सदा रण में जय, धीरता स्त्री पुत्र का सुख और चित्र युक्त वस्त्र मनुष्य को धान्या दशा में प्राप्त होते हैं ॥ ३ ॥

विदेशेभ्रमणं हानिमुद्वेगता च कलत्रांगपीडां सुखैर्वर्जितत्वम् ।
ऋणं व्याधिवृद्धिं जनानांप्रकोपं दशाभ्रामरी भ्रामयेत्सर्वदेशम् ॥४॥

टीका—भ्रामरी दशा के फल से मनुष्य परदेश में घूमता है। युद्ध में हानि उठाता, स्त्री, पीड़ित रहती, सुखहीन रहती, ऋणी हो जाता, रोग की वृद्धि होती, मनुष्यों का कोप सहता हुआ देशान्तरों में भ्रमता है ॥ ४ ॥

धनानंदवृद्धिं गुणानांप्रकाशं समीचीनवस्त्रागमं राजमान्यम् ।
अलंकार दिव्याङ्गना भोगसौख्यंसदा भद्रिका भद्रकार्यं करोति ॥५॥

टीका—भद्रिका दशा धन देनेवाली, आनन्द बढ़ने वाली, गुण को प्रकाश करनेवाली, उत्तम वस्त्र देनेवाली, राज्य से मान दिलाने वाली, आभूषण देनेवाली, स्त्री भोगादि सुख और कल्याण देनेवाली है ॥ ५ ॥

भ्रमं व्याधिकष्टं ज्वराणांप्रकोपं धनं देशदारादिकानां वियोगम् ।
स्वगोत्रैर्विवादं सुहृद्बंधुवैरं दशा चोल्किकानर्थकारी सदैव ॥६॥

टीका—भ्रमण, रोग, दुःख, ज्वर प्रकोप, धन, देश और स्त्री से वियोग, गोत्र में कलेश, मित्र एव बान्धवों से वैर, अनेक प्रकार के अनर्थ, उल्का दशा में होते हैं ॥ ६ ॥

राज्याभिमानं स्वजनादिसौख्यं धान्यादिलाभं गुणकीर्तिसिद्धिम् ।
राज्यादिलाभं सुतवृद्धिसौख्यं सिद्धं च सिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ॥७॥

टीका—राजा से अभिमान, बान्धवों से सुख, धान्यादि का लाभ, गुण और कीर्ति का प्रकाश एवं सब कामों की सिद्धि सिद्धा दशा में होती हैं ॥ ७ ॥

जनानांविवादं ज्वराणांप्रकोपं कलत्रादिकष्टं पशूनां हि नाशम् ।
गृहेस्वल्पवासं प्रवासाभिलापं दशासंकटा संकटं राजपक्षात ॥८॥

टीका—मनुष्यों से वैर, ज्वर से कष्ट, स्त्री आदि का कष्ट, पशुओं का नाश, घर में थोड़े दिन रहे और परदेश में रहने की इच्छा करे, राजा से कष्ट उठावै, यह संकटा दशा में मनुष्य भोगता है ॥ ८ ॥

प्रतिदिन की दशाओं का क्रम ।

तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षर समन्वितम् ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥१॥

रविचन्द्रौ भौमराहू गुरुर्मंदज्ञकेसिता ।
क्रमेणैता दशाज्ञेया फलं पूर्वोक्तमेव हि ॥ २ ॥

टीका—तिथि वार नक्षत्रों की संख्या को एकत्र कर उसमें अपने नाम के अक्षरों की संख्या मिलाकर ९ का भाग दे, १ बचे तो पहिले सूर्य की दशा, २ बचने से चन्द्र की, ३ बचने से मंगलकी, ४ बचने से राहुकी, ५ बचने से गुरु की, ६ बचने से शनि की, ७ बचने से बुध की ८ बचने से केतु की और शून्य बचने से पहिले शुक्र की दशा जाने ॥ १ ॥ २ ॥

सूर्यादिग्रहोंकी दिनदशा और फल ।

रविदिन नखसंख्या चन्द्रमा व्योमवाणैः क्षितितनय गजा-
श्वी चन्द्रजः पट्टशराश्च । शनि रसगुणसंख्या वाक्-
पति नागवाणौ नयनयुगकराहुः सप्ततिः शुक्रसंख्या ॥३॥
जन्मना विंशतिः सूर्ये तृतीये दश चंद्रमाः ।
चतुर्थे भौमचाष्टौ च षष्ठे बुध चतुर्थके ।
सप्तमं दश सौरिः स्यान्नवमे चाष्टमे गुरौ ।
दशमे राहुविंशत्या तदूर्ध्वं तु भृगोर्दशा ॥ ४ ॥

फल ।

पन्था भोगोनुतापश्च सौख्यं पीडा धनं क्रमात् ।
नाशः शोकश्च सौख्यं च जन्मसूर्यदशाफलम् ॥ ५ ॥

टीका—एक वर्ष में सूर्यादि नवग्रहों की दशा नीचे लिखानुसार जाने । सूर्य जन्म स्थान में रहकर १२ राशि में भोग करता है, अर्थात् जन्म स्थान में सूर्य की दशा बीस दिन की होती है, वह मार्ग चलाते हैं । चन्द्रमा की ५० दिन की दशा में ३ स्थान के सूर्य दशदिन भोगते हैं और अनेक प्रकार के उत्तम भोग देते हैं । २८ दिन की मंगल की दशा में ४ स्थान के ८ दिन सूर्य भोगते हैं और रोग एवं संताप देते हैं । ५६ दिन की बुधकी दशा में ६ स्थान के ४ दिन सूर्य भोग देते है । २८ दिन की मंगल की दशा में ४ स्थान के ८ दिन सूर्य भोगते हैं और रोग एवं संताप देते हैं । ५६ दिन की बुधकी दशा में ६ स्थान के ४ दिन सूर्य भोगते हैं और सुख देते हैं । ३६ दिनकी शनिकी दशामें ७ स्थानके १० दिन सूर्य भोगते हैं और पीड़ा देते हैं । ५८ दिनकी बृहस्पति की दशा में ९ स्थान के आठ दिन सूर्य भोगते हैं ।

और धन देते हैं। ४२ दिन राहुकी दशामें दशम स्थान में २० दिन सूर्य भोगते हैं और अनेक प्रकार की चिन्ता उत्पन्न करते हैं। ७० दिन की सूर्य की दशाको १ स्थान के सूर्य पूण भोगते हं और सुख देते हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥

गोचरप्रकरण।

सूर्यादि नवग्रहों का द्वादशराशियों में भोग का फल।

मासं शुक्रबुधादित्याः सार्धमासं तु मङ्गलः
त्रयोदश गुरुश्चैव सपादद्विदिनं शशी ॥
राहुरष्टादशान्मासान्त्रिंशन्मासान् शनैश्चरः।
राहुवत्केतुरुक्तस्तु राशिभोगाः प्रकीर्तिताः ॥ १ ॥
सूर्यः पञ्चदिनं शशी त्रिघटिका भौमोष्ट वै वासरं।
सप्ताहं ह्यु शनां बुधस्त्रयदिनं मास द्वयं वै गुरुः।
षण्मासं रविजस्तथैव सततं स्वर्भानु मासद्वये
केतोश्चैव तथा फलं परिमितं ज्ञेयं ग्रहाणांफलम् ॥ २ ॥
राशिप्रवेशे सूर्यारौ मध्ये कवृहस्पती।
राहुश्चन्द्रशनिश्चान्ते सौम्यश्चैव सदा शुभः ॥ ३ ॥

टीका—सूर्य १ मास, १ राशिको भोगता है और पहिले ५ दिन फल देता है। चन्द्र २। दिन १ राशि को भोगता है और अन्त की ३ घड़ी फल देता है। मंगल १॥ मास १ राशि को भोगता है और पहिले ८ दिन फल देता है। बुध-१ मास १ राशि को भोगता है और सब दिन फल देता है। गुरु-१३ मास १ राशि को भोगता है और मध्य में २ मास फल देता है। शुक्र-१ मास १ राशि को भोगता है और बीच में ७ दिन फल देता है। शनि-३० मास १ राशि को भोगता है और अन्त के ६ मास फल देता है। राहु एवं केतु-१८ मास १ राशि को भोगता है और अन्त के २ मास फल देता है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

नवग्रहों का गोचर फल।

सूर्यः स्थानविनाशं भयं श्रियं मानहानिमथदैन्यम्।
विजयं मार्गपीड़ां सुकृतं हन्ति सिद्धिमायुरर्थहानिम् ॥ ४ ॥

चन्द्रो चन्द्रोऽन्नं च धनं सौख्यं रोगं कार्यं क्षतिं श्रियम् ।
स्त्रियं मृत्युं नृपभयं सुखमायव्ययं क्रमात् ॥ ५ ॥
भौमोरिभीतिं धननाशमर्थं भयं तथाऽर्थक्षतिमर्थलाभम् ।
धनात्ययं शत्रुभयं च पीडा शोकं धनं हानिमनुक्रमेण ॥ ६ ॥
बुधस्तु बन्धनधनमन्यभीतिं धनं रुजं स्थानभयो च पीडाम्
अर्थं रुजं सौख्य मथात्मसौख्य मथक्षतिं जन्म गृहात् करोति ॥७॥
गुरुर्भयं धनं क्लेशं धननाश सुखं शुचम् ।
मानं रोगं सुखं दैन्यं लाभं पीडा च जन्मभात् ॥ ८ ॥
कविः शत्रुनाशं धनं सौख्यमथ सुताप्तिं रिपोः साध्वसं शोकमर्थम् ।
बृहद्वस्त्रलाभं विपत्तिं धनाप्तिं तनोत्यात्मना जन्मराशेःक्रमेण ॥९॥
शनिः सर्वनाशं तथा वित्तनाशं शत्रुवृद्धि सुतादेर्धवृद्धिम ।
श्रियं दोषसंधिंरिपून्द्रव्यनाशस्तथा दौर्मनस्यं निशेद्धनर्थम्॥१०॥
राहुर्हानिः तथा नैःस्वं धनं वैरं शुचं श्रियम् ।
कलिर्वसुं च दुरितं वैरं सौख्यं शुचं क्रमात् ॥ ११ ॥

नाम	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	नाश	अन्नप्राप्ति	शत्रुभय	बन्धन	भय	शत्रुनाश	सर्वनाश	हानि	रोग
धन	भय	धनप्राप्ति	धननाश	धनप्राप्ति	धनप्राप्ति	धनप्राप्ति	वृत्तनाश	धनलाभ	वैर
सहज	धन	सुख	धनप्राप्ति	भीति	क्लेश	सौख्य	धननाश	धनप्राप्ति	सुख
सुहृत	मा.हा	रोग	भय	रोग	धननाश	धनप्राप्ति	शत्रुवृद्धि	वैर	भय
सुत	दैन्य	कार्यक्षय	अथप्राप्ति	स्थानला	सुख	पुत्रप्राप्ति	सुतप्राप्ति	शोक	शोक
रिपु	विज	लक्ष्मी	लाभ	पीड़ा	शोक	रिपुभय	धनप्राप्ति	लक्ष्मी	धन प्र
जाया	मार्ग	लक्ष्मी	खच	धनप्राप्ति	मान	शोक	दोष	कलह	मा
मृत्यु	पीड़ा	मृत्यु	शत्रु भय	अथप्राप्ति	रोग	धनप्राप्ति	रिपु	धनलाभ	रोग
धर्म	पुय	राजभय	पीड़ा	रोग	सुख	वस्त्रलाभ	धनमान	पापी	श्रक.
कर्म	सि.	सुख	शोक	सौख्य	दैन्य	विपत्ति	अरवा	वैर	शोक
आय	लाभ	आय	धनप्राप्ति	सौख्य	लाभ	धनप्राप्ति	धनप्राप्ति	सौख्य	कीर्ति
व्यय	हानि	खर्च	हानि	नाश	पीड़ा	धनप्राप्ति	धननाश	शोक	शत्रु

केतुः क्रमाद्रुजं वैरं सुखं भीतिं शुचं धनम्।
गतिर्गदं दुष्कृतं च शोकं कीर्तिं च शत्रुताम् ॥ १२ ॥

जन्म के चन्द्रमा में वर्जित कर्म।

जन्मस्थर्क्षे शशांके तु पंचकर्माणि वर्जयेत।
यात्रा युद्धं विवाहं च क्षौरं गृहप्रवेशनम् ॥ १३ ॥

टीका—जन्म के चन्द्रमा में यात्रा, युद्ध, विवाह, क्षौर और गृहप्रवेश ये पाँच कर्म नहीं करना चाहिये ॥ १३ ॥

चन्द्रमा का बल।

द्विपञ्चनवमे शुक्ले श्रेष्ठश्चन्द्रो हि उच्यते।
अष्टमे द्वादशे कृष्णे चतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते।
शुक्लपक्षे बलीचन्द्रः कृष्णे तारावलीयसी ॥ १४ ॥

टीका—२।५ और ९ स्थान का चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में श्रेष्ठ जाने। एवं ८, १२ और ४ स्थान का चन्द्रमा कृष्ण पक्ष में श्रेष्ठ जाने। परन्तु शुक्ल पक्ष में चन्द्रबल और कृष्णपक्ष में तारावल श्रेष्ठ माना गया है ॥ १४ ॥

ग्रहों के नेष्टस्थान।

ये खेचरा गोचरतोष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाप्यशुभा भवन्ति।
दानादिनां ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवक्ष्ये ॥१५॥

टीका—गोचर, अस्टवर्ग वा दशा में जो दोषित ग्रह हों उसकी प्रसन्नतार्थ दान किया जाता है अतएव अब दान की विधि को चक्र में कहते हैं ॥१५॥

ग्रहों के नाम	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
दानकी सामग्री	सोना तांबा माणिक गेहूँ रक्तचंदन गुड़ रक्त- वस्त्र रक्तपुष्प	सोना चाँदी मोती चावल शुक्ल बैल घी श्वेत- वस्त्र श्वेतपुष्प	सोना कांसा मूँगा मसूर लालबैल गुड़ रक्त- वस्त्र रक्तपुष्प	सोना कांसा मूङ्गा गारुत्मक गजदंत घी नीला- वस्त्र सर्वपुष्प	सोना कांसा पुष्पराग च. कीदा. घोड़ा शक्कर पीता· वस्त्र पीलेपु.	सोना चाँदी हीरा तंडुल श्वेतघोड़ घी चित्रित- वस्त्र श्वेतपुष्प	सोना लोहा नीलम उड़द भैंस तेल काला- वस्त्र कालेपु.	सोना सीसा गोमेद तिल घोड़ा तेल नीला· वस्त्र पुकाले	सोना लोहा लसुन तिल छाग तेल काला वस्त्र धूम्रपु.
जप सं	७०००	११०००	१००००	४०००	१९०००	१६०००	२३०००	१८००	१७००

ग्रहों के दोष दूर करने का उपाय ।

देव ब्राह्मण वन्दनाद् गुरुवचः सम्पादनात्प्रत्यहम् ।
साधूनामपिभाषणच्छ्रुतिरवश्रेयः कथा कारणात् ॥
होमादध्वरदर्शनाच्छुचिमनोभावाज्जपाद् दानतो ।
नोहं कुर्वन्ति कदाचि देव देव पुरुषस्यैवग्रहाः पीडनम् ॥१६॥

टीका—देवता और ब्राह्मण को सादर प्रणाम करै, प्रतिदिन गुरुदेव की आज्ञा पालन करै, साधुओं का सदुउपदेश और उत्तम कथाको सुनै, हवन एवं यज्ञका दर्शन करै, शुद्ध मनसे जप और दान करै तो शीघ्र ग्रहों की पीड़ा शान्त हो जाती है ॥ १६ ॥ ग्रहदोष समाप्तः ।

वर्ष प्रकरण

श्रीगणेशं रमाकान्तं वन्दे गौरीं हरं रविम् ।
यथा वर्ष प्रकाशोऽयं रच्यते विदुषां मुदे ॥

वर्षनिकालने का प्रकार ।

गताब्दवृन्दैर्भुविखाभ्रचन्द्रैर्निघ्नेनभोव्योमगजैःसुभक्ता ।
त्रिधाफलंवारघटीपलानिस्वजन्मवारादियुतानिइष्टम् ॥ १ ॥

टीका—वर्तमान संवत् में जन्म संवत् को कम करे तो गत वर्ष निकल आते हैं । गत वर्षों को भुवि १ ख० अभ्र० चन्द्र १ अर्थात् १०० से गुण और नभ० व्योम० गज ८ अर्थात् ८०० का भाग दे फिर ३ जोड़ने से जो फल प्राप्ति हो उसे वार इष्ट जाने, उसमें जन्म का वार इष्ट जोड़ दे और ऊर्ध्वाङ्क में ७ का भाग दे तो वर्ष का वार इष्ट आ जाता है ॥ १ ॥

उदाहरण—वर्तमान संवत् १९६६ जन्म संवत् १९८० का अन्तर १४ को १००७ गुणा तो १४०९८ हुये और ८०० का भाग दिया तो १७ प्राप्त हुये और शेष ४९८ रहे इसको ६० से गुणा तो २९,८८० हुये फिर इनमें ८०० का भाग दिया तो ३७ मिले और शेष २८० रहे इनको ६० से गुणा तो १६८०० हुये तो इनमें ८०० का भाग दिया तो २१ लब्ध हुये, १७ वार ३७ घटी०२१ पल सिद्ध हुए । वार १७ में ७ का भाग दिया शेष ३ बचा अतवा-रादि ३।३७।२१ इनमें जन्म वारादि ५।४१।३७ जोड़े ९।१८।५८ हुवे ऊर्ध्वाङ्क ९ में ७ के भाग से शेषांक २।१८।१८ यह वर्ष का इष्ट हुआ ।

तिथ्यानयनम् ।

यातान्दवृन्दो गुणवेदरामै र्निघ्नः कुरामैर्विहृतो दिनाद्यम् ।
घस्रैः सहात्थः सहितंखरामैर्भक्तं च शेषो तिथिरत्रवर्षे ॥ २ ॥

टीका—गतवर्षों को ३४३ से गुणा करे पुनः २१ का भाग दे जो अंक प्राप्त हो उसे तिथि जानैं । इसमें जन्म को तिथि युक्त करै फिर ३० से जो शेष रहै सो वर्षका तिथि होगी, परन्तु तिथिमें एक ऊनाधिक कहीं हो जाती है ॥२॥

नक्षत्रानयनम् ।

व्योमेन्दुभिःसंगुणितागताब्दाःततोस्ववेदाश्विलवैर्विहीना ।
जन्मर्क्षयोगेसहिता अवस्था नक्षत्रयोगेभवतो भतष्टौ ॥ ३ ॥

टीका—गत वर्षों को १० से गुणा करे, फिर दो जगह रक्खे और एक जगह २४ का भाग दे. जो फल प्राप्त हो वह दूसरे में घटा दे और अश्विनी से लेकर जन्म नक्षत्र पर्यन्त की संख्या (अभिजित् रहित) को योग जोड दे, २७ का भाग देने जो शेष बचे सो अश्विन्यादि नक्षत्र होंगे ॥ ३ ॥

वर्ष प्रवेशमारिणीयम् । जन्मवारेष्टघटीपलेषुप्रतिवर्षक्षेपकंवारादि ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	गतवर्ष
१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	वार
१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	घटी
३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	पल
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	त्रिपल
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गतवर्ष
०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	वार
५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	घटी
४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	पल
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	त्रिपल
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	गतवर्ष
०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	वार
३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	घटी
३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	पल
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	त्रिपल
६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	गतवर्ष
०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	वार
२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	घटी
१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	पल
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	त्रिपल

८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	गतवर्ष
०	१	२	३	५	६	०	१	वार
१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	घटी
४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	पल
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	त्रिपल

लग्नसाधन प्रकारः ।

समागणश्चन्द्रकृशानुनिघ्नः खचन्द्रभक्तो जनिलग्नयुक्तः ।
तष्टोदिनेशैः किलवर्षलग्न सामान्यतोमान्यतरैर्निरुक्तम् ॥४॥

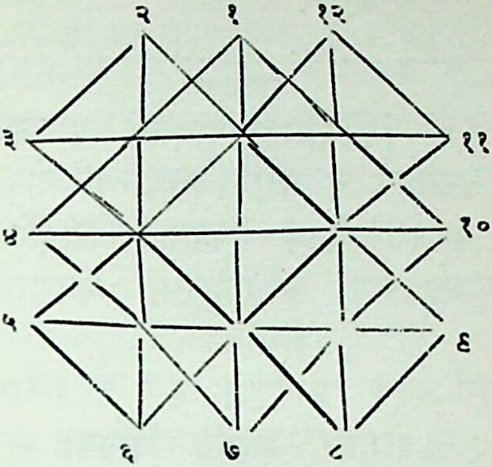
टीका—गताब्द को ३१ से गुणे १० का भाग दे उसमें जन्मलग्न युक्त करै फिर १२ से उसे तष्टित करने से जो शेष बचे तो सामान्य रीति से वर्ष लग्न जानना चाहिए ॥ ४ ॥

त्रिपताकी चक्र—

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्व संस्थ मन्योन्य विद्धाग्रकमीश कोणात् ।
स्मृतं बुधैस्तत् त्रिपताकि चक्रं प्राङ्मध्य रेखाग्र वर्ष लग्नात् ॥५॥
न्यसेद्भ चक्रं किल जन्म सैकांयाताब्द संख्या विभजेन्नभोगैः ।
शेषोन्मिते जन्मगचन्द्रराशे तुल्ये च राशौ विलिखेच्छशांके ॥६॥
परे चतुर्भाजित शेष तुल्ये स्थाने स्वराशेः खचरास्तुलेख्याः ।
स्वर्भानुविद्धे हिमगौत्वरिष्टं तापोऽर्कविद्धेरुगिणोऽर्कपुत्रे ।
महीजविद्धेतुशरीर पीडा शुभैश्चविद्धे जयसौख्यलाभः ॥ ७ ॥

टीका—तीन रेखा बेड़ा और तीन रेखा खड़ी बनावै और परस्पर ईशान कोण से वेध करना इसको पंडित लोग त्रिपदा की चक्र कहते हैं । इसके मध्य रेखा पर ऊपर वर्ष लग्न को लिखना, गतवर्ष में एक जोड़ना उसमें नव का भाग देना शेष जो रहे उसमें जन्म स्थान से चन्द्रमा लिखना । और ग्रहों में ४ का भाग देना शेष रहै सो लिखना । राहु केतु को जन्म स्थान से पीछे लिखना । चन्द्रमा राहु तथा केतु से विद्ध हो तो अरिफल कहना । सूर्य से वेधित हो तो ज्वर, शनि से वेधित हो तो रोगी, मंगल से विद्ध हो तो शरीर में पीड़ा और शुभ ग्रहसे विद्ध हो तो जय सौख्य लाभ फल जानना ॥५-६-७॥

त्रिपता की चक्र—



मुंथ स्थाननिरूपणम्

सैकागताब्दा विहृतापतङ्गैस्तच्छेषभावे मुथहाजनुर्भात् ॥ ८ ॥

टीका— गतवर्षों में एक मिलाय १२ से भाग दे जो शेष रहे उसी को जन्म लग्नसे मुंथा का स्थान जानना चाहिये ॥ ८ ॥

पञ्चाधिकारिण ।

मुन्थेशो १ वर्षलग्नेश २ स्तत्त्रैराशिकनायकः ।
दिवार्कराशिनाथश्च रात्रौचन्द्रर्क्षनायकः ॥
जन्मलग्नेश्वर ५ श्चैव वर्षपञ्चाधिकारिणः ॥ ९ ॥

टीका—मुंथेश १ वर्ष लग्नेश २ त्रिराशीश ३ दिन में वर्ष प्रवेश होने से सूर्य की राशि का स्वामी ४ रात्रि में वर्ष प्रवेश होने से चन्द्र की राशि का स्वामी और ५ जन्म लग्नेश्वर वर्ष में यह पंचाधिकारी होते हैं। शुभाशुभ फल के लिये ग्रहों का अधिकार देखे। जिसके दो तीन अधिकार आवैं उसे बलवान जानना चाहिये ॥ ९ ॥

त्रिराशिपाःसूर्यसितार्किशुक्रा दिने निशीज्येन्दुबुधक्ष्माजाः ।
मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं नित्यंपरेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥१०॥

टीका—त्रिराशिपति सूर्य, शुक्र, शनि और शुक्र दिन में मेष से आदि लेकर कर्क राशि तक होते हैं। शेष चक्र में स्पष्ट देखो ॥ १० ॥

१२ राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवास्वामी	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श	मं.	गु.	चं.
रात्रिस्वामी	बृ.	चं,	बु.	मं.	र.	शु	श.	शु.	श.	चं	गु.	चं.

दृष्टिक्रमः

पादंचतुर्दिक् १५ त्र्यंशोनंत्रिरुद्रे पादत्रयं स्यान्नवपञ्चमेपि ।
पश्यंतिपूर्णां समसप्तके च ग्रहास्वचान्योन्यविलोकयन्ति ॥११॥
लग्नस्थमुन्था प्रकरोतिसौख्यं नृपप्रसादं विजयंरिपूणाम् ।।
हर्षोदयं बाहुबलप्रतापं वृद्धिंविलासं धनलाभमुग्रम् ॥१२॥

वर्षेश फल—

बल पूर्णेऽब्दये पूर्णाशुभे मध्ये च मध्यमम् ।
अधमे दुःख रोगारि भयानि विविधाः शुचः ॥ १२ ॥

टीका—वर्षेश पूर्ण बली हो (१२ । ३० के उपरान्त हो तो वर्ष भर पूर्ण शुभ फल जानना । मध्यमबल (६ । २० के उपरान्त १२ । २० के अंतर) हो मध्य फल जानना और अधमबल ६ । ४० के भीतर हो तो दुःख रोग शत्रुभय भाँति भाँति का होता है । ॥ १२ ॥

मुद्दादशाप्रकार-

जन्मर्क्षसंख्या सहिता गताब्दा,
द्व्यूनिता नन्द हता च शेषात् ।
आ. चं. कु. रा. जी. श. बु. के. शु. पूर्वा,
भवन्ति मुद्दादशिका क्रमोऽयम् ॥ १३ ॥

टीका-अश्विनीसे जन्म नक्षत्र की जो संख्या हो उसमें गत वर्ष जोड़ना फिर दो घटा देना जोड़ है उसमें ९ का भाग देना शेष से सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, और शुक्र ये क्रम से मुद्दादशा होती है ।

उदाहरण-जन्म नक्षत्र धनिष्ठा की संख्या २३ में गताब्द १४ को जोड़ा तो ३७ हुआ दो घटाया तो ३५ रहे इसमें ९ का भाग देने से शेष ८ बचा अतः केतु की दशा हुई सूर्यादिग्रहों की दशा के वर्ष संख्या का तिगुना दिन मुद्दा दशा में ग्रह रहते हैं ॥ १३ ॥

ग्रहं	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मा.	०	१	०	१	१	७	१	०	२
दि	१	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

मुन्थाधनस्थानमलाभमुग्रकरोतिमिष्टान्नसमागमं च ।
सर्वार्थसिद्धिं निजबाहुवीर्यात्सुखोदयं मित्रसुतोदयं च ॥ १४ ॥

लोकाश्रयंनिजजनाचसहोत्थसौख्यं ।
देहार्तिकिर्त्तिशुभकार्यसमृद्धिदात्री ।
सत्संगति च सबलां तनुतेहमैत्र
मुन्था पराक्रमगता नृपतिप्रसादम् ॥ १५ ॥
वित्तक्षयं रिपुजनादयशश्चवृद्धिं
वैरोदयं स्वजनराजकुलेषु कुर्यात् ।
गुरुर्त्तिकृद्धदिरुजस्यविवर्त्तिदात्री
तुर्येन्थिहाविविधरोगभयानिपुंसाम् ॥ १६ ॥

प्रतापमाहात्म्यसुरार्च्चनं च सुबुद्धिवृद्धिश्च यशःप्रवृद्धिः ।
वित्तप्रलाभो जनताप्रसादः पुत्राप्तिसौख्यं सुतगेंथिहायाम् ॥१७॥
नृपाद्भयं चौरभयं कृशत्वं निरुद्यमत्वं रिपुजं भयं च ।
कार्यार्थहानिः कुमतीष्टवैरं षष्ठेंथिहा दुष्टरुजंविदध्यात् ॥१८॥
सौख्यार्थनाशो वनितादिकष्टं चिन्तामनोमोहमनल्परोगम् ।
क्लेशोदयं स्वेष्टजनेषुवैरं यशोविनाशो मुथगेंथिहायाम् ॥१९॥
दुष्टाभयार्ति र्धनधान्यनाशो विपत्तभाति र्व्यसनानिमोहाः ।
कान्ताविनाशं स्वजनेषुपीडा नृपाद्भयं चा मगेंथिहायाम् ॥ २०॥
धर्मार्थलाभं स्वजनेषुमैत्री नृपोत्तमैः प्रीतियशः प्रवृद्धिः ।
प्रमोदभाग्योदयकार्यसिद्धिः पुण्योपगेंथा प्रकरोतिसौख्यम् ॥२१॥
मनोरथाप्तिः स्वजनेषु सौख्यं निजेष्टमैत्री स्वजनोपकारः ।
भूपात्प्रसादो दशमेंथिहायां पुण्योदयः स्याद्विपुलंयशश्च ॥२२॥

सुखार्थलाभं शुभबुद्धिवृद्धिर्मनोरथाप्तिं नृपतिप्रसादम् ।
निजेष्टसौख्यं मनसाप्रहर्षं करोतिमुंथा भवगेवशित्वम् ॥२३॥
निरुद्यमत्वं निजमित्रकष्टं दुष्टार्ति रुक्कुन्नृपतेर्भयं च ।
धर्मार्थनाशो रिपुचौरभीतिः स्वाभीष्टपीडा व्ययगेंथिहायाम्॥२४॥

मासप्रवेश विधिः—

मासार्कस्य तदा सन्नपंक्त्यर्केण सहान्तरम् ।
कली कृत्वार्कगत्याप्तं दिनाद्येन युतोनितम् ॥ २५ ॥
पंक्तिस्थंवारएव मासार्केधिक हीनके ।
तद्वाराद्ये मासवेशोद्यु: प्रवेशः कला समाः ॥ २६ ॥

टीका – वर्षके सूर्य एक एक राशि बढ़ता है और उसी अंश पर मास प्रवेश होता है मासार्क और सनीपस्थपंक्ति दोनों के अन्तर का कला बनावे सूर्य की गति का भाग देने से वारादि लब्ध होंगे, इसको यदि पंक्ति के सूर्य पीछे हो तो जोड़े । आगे हो तो हीन करे तो मास प्रवेश वारादि होता है ॥२५॥२६॥

ग्रहचक्र प्रकरणम् ।

सूर्यचक्रम् ।

ऋत्तसंक्रमणं यत्र द्वेवक्त्रे विनियोजयेत् ।
चत्वारि दक्षिणेबाहौ त्राणि त्रीणि च पादयोः ॥ १ ॥
चत्वारि वामबाहौ च हृदये पञ्च निर्दिशेत् ।
अक्षणोर्द्वयं द्वयं योज्यं मूर्ध्नि चैकैककं गुदे ॥ २ ॥

फलम् ।

रोगोलाभस्तथाऽध्वा च बन्धनं लाभ एव च ।
ऐश्वर्यं राजपूजा च अपमृत्युरितिक्रमात् ॥ ३ ॥

चन्द्र चक्रम् ।

चन्द्रचक्रं प्रवक्ष्यामि नराकारं सुशोभनम् ।
शीर्षे षट्कं मुखेत्वेकं त्रीणि दक्षिणहस्तके ॥ ४ ॥
हृदिषट्क प्रदातव्यं वामहस्ते त्रयं तथा ।
कुक्ष्योः पटकं च दातव्यं पादैकैकं विनिर्दिशेत् ॥ ५

फलम्।

शीर्षे लाभकरं ज्ञेयं मुखे ये द्रव्यहारकम्।
हानिदं दक्षिणेहस्ते हृदये च सुखावहम्॥ ६॥
वामहस्ते तु रोगाश्च कुक्ष्याः शोकमतथैव च।
पादयोर्हानिरोगौ च जन्मधिष्ण्यादि चन्द्रभम्॥ ७॥

भौम चक्रम्।

भौमचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मधिष्ण्यादि भौमभम्।
शीर्षे षट्कं मुखेत्रीणि त्रीणि वै दक्षिणेकरे॥ ८॥
पादयोः षट्प्रदातव्या वामहस्ते त्रयं तथा।
गुह्ये चैकं नेत्रयो द्वे हृदये त्रयमेव च॥ ९॥

फलम्।

विजयश्चैव रोगश्च लक्ष्मीः पन्था भयं तथा।
मृत्युर्लाभसुखं चापि फलं ज्ञेयं विचक्षणैः॥ १०॥

बुध फलम्।

बुधचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मर्क्षादि सौम्यभम्।
शिरसि त्रीणि राज्यंस्या दक्त्रेकं धनधान्यदम्॥ ११॥

सूर्य			चन्द्र			मङ्गल		
सूर्य संक्रांति जिस नक्षत्र में हो उससे जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिननेसे जितने नक्षत्र आवें उसका फल देखें।			जन्म नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिने जितने नक्षत्र आवें वह फल जाने।			जन्म नक्षत्र से जिस नक्षत्र में मङ्गल होय तिनके गिननेसे जितने नक्षत्र आवें वे फल जानिये।		
स्थान	नक्षत्र	फल	स्थान	नक्षत्र	फल	स्थान	नक्षत्र	फल
मुख में	२	रोगप्राप्ति	मस्तक	६	लाभ	शिर पर	६	विजय
दा ह. हा.	४	लाभ	मुख में	३	द्रव्यहरण	मुख में	३	रोगप्राप्ति
पैरों में	३।३	मार्गचल.	दाहि. हा.	३	हानिकात्त	दाहि. हा.	३	लक्ष्मी
वाम हू.	४	बन्धन	हृदय में	६	सुखप्राप्ति	पायों में	६	मार्ग चले
हृदय में	५	लाभ	बायं हाथ	३	रोगप्राप्ति	बाँया हा.	२	भय
नेत्रों में	४	लक्ष्मीप्रा	कुक्षि में	२	शोक	गुदा में	१	मृत्यु
मस्तक में	१	राजासेपू.	दाहि. पाँव	१	हानि	नेत्रों में	२	मृत्यु
गुदा में	१	अपमृत्यु	वामपद	३	रोगप्राप्ति	हृदय में	३	सुख

नेत्रे द्वे प्रीतिलाभौ च नाभौ श्रीः पंचकं तथा ।
पादयोः षट्प्रवासश्च वामे वेदा धनं तथा ॥१२॥
चत्वारि दक्षिणे हस्ते धनलाभस्तथैव च ।
गुह्यस्थाने भद्वयं च बन्धनं मरणं फलम् ॥ १३ ॥

गुरु चक्रम् ।

गुरुचक्रं प्रवक्ष्यामि गुरुभाज्जन्मऋक्षकम् ।
दद्याच्छिरसि चत्वारि चत्वारि दक्षिणे करे ॥ १४ ॥
एकं कण्ठे मुखे पंच पादयोः षट् प्रदापयेत् ।
करे वामे च चत्वारि त्रीणि दद्याच्च नेत्रयोः ॥ १५ ॥

फलम् ।

राज्यं लक्ष्मी धनप्राप्तिः पीडा मृत्युस्तथैव च ।
सुखं चैव क्रमेणैव फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ १६ ॥

शुक्र चक्रम् ।

शुक्रचक्रं प्रवक्ष्यामि शुक्रधिष्ण्यात्तु जन्मभम् ।
मुखे त्रीणि महालाभः शीर्षेपञ्च शुभावहः ॥ १७ ॥

बुध			गुरु			शुक्र		
जन्म नक्षत्र से बुध के नक्षत्र पर्यन्त गिनें, जिस स्थान में बुध पड़े उसका फल जानिये ।			गुरुके नक्षत्रसे जन्म नक्षत्र तक गिननेसे जिस स्थानमें गुरु पड़ा हो उस स्थान का फल जानें ।			शुक्र जिन नक्षत्रमें हो उस से जन्म नक्षत्र पयन्त गिनने से जिस स्थानमें पड़ाहो उस स्थान का फल जानिये ।		
स्थान	नक्षत्र	फल	स्थान	नक्षत्र	फल	स्थान	नक्षत्र	फल
मस्तक	३	राज्य प्रा.	मस्तक	४	राज्य प्रा.	मुख में	३	उत्तम ला.
मुख में	१	धन प्रा	दाहि. हा.	४	लक्ष्मी	मस्तक में	५	शुभ
नेत्रों में	२	प्रीतिलाभ	कण्ठ में	१	धनलाभ	दाहि. पा.	३	क्लेशहा.
नाभिमें	५	लक्ष्मी	मुख में	५	पीड़ा	ये पा.	२	क्लेशहा
पायों में	६	प्रवास	पायों में	६	मृत्यु	हृदय में	२	धनसौ.
बायें हाथ	४	धनलाभ	बायें हाथ	४	सुखप्रा.	हाथों में	८	मित्रसुख
दाहि. हा.	४	धनलाभ	नेत्रों में	३	सुखप्रा.	गुदा में	३	स्त्रीलाभ
गुदा में	२	बन्धुलाभ	०	०	०	०	०	०

त्रिकं तु दक्षिणेपादे क्लेशहानिकरं सदा ।
तथैव वामपादे च त्रीणि भानि तु योजयेत् ॥ १८ ॥
हृदये द्वे धनप्राप्ति र्गुह्ये त्रीणि तथैव च ।
स्त्रीलाभश्च फलं प्रोक्तं भृगुपुत्रस्य सूरिभिः ॥ १९ ॥

शनि चक्रम् ।

सौरिचक्रं प्रवक्ष्यामि सौरिभा जन्मऋक्षकम् ।
मूर्ध्न्येकं च तथावक्त्रे करे चत्वारि दक्षिणे ॥ २० ॥
विन्यसेत्पादयुग्मेषट् वामबाहौ चतुष्टयम् ।
हृदये पञ्चऋक्षाणि क्रमाच्चत्वारि नेत्रयोः ॥ २१ ।
हस्तेद्वयं गुदेचैकं मन्दस्य पुरुषाकृतेः ॥ २२ ॥

फलम् ।

मूर्द्धवक्त्रस्थभे रोगो लाभौ वै दक्षिणेकरे ।
स्यादध्वा चरणद्वन्द्वे बन्धो वामकरे नृणाम् ॥ २३ ॥
हृदयेपंच लाभो वै नेत्रे प्रीतिरुदाहृता ।
पूजामस्ते परा नूनं गुदेमृत्यु र्विनिर्दिशेत् ॥ २४ ॥

राहु चक्रम् ।

राहुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभाद्राहुऋक्षभम् ।
मूर्ध्नि त्रीणि तथा प्रोक्तं करे चत्वारि दक्षिणे ॥ २५ ॥
पादयोः षट् च ऋक्षाणि वामहस्ते चतुष्टयम् ।
हृदयेत्रीणि कण्ठकं मुखेद्वे नेत्रयोर्द्वयम् ।
गुदेद्वयं क्रमेणैव राहुचक्रं स्वभावतः ॥ २६ ॥

फलम् ।

राज्यं रिपुक्षयः पन्था मृत्युर्लाभोऽथरोगकः ।
जयः सौख्यं तथा कष्टं क्रमाज्ज्ञेयं फलं बुधैः ॥ २७ ॥

केतु चक्रम् ।

केतुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभात्केतुऋक्षभम् ।

मूर्ध्नि पंच जयश्चैव मुखेपंच महद्भयम् ॥ २८ ॥
हस्तयोर्भानि चत्वारि विजयश्च जयस्तथा ।
पादयोः षट् च सौख्यंस्याद् हृदिद्वे शोककारके ।
कण्ठे चत्वारि च व्याधिर्गुह्यैकं च महद्भयम् ॥ २९ ॥

शनि			राहु			केतु		
शनि जिस नक्षत्र में हो उससे जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिने, जिस स्थल में नक्षत्र पड़ा हो वह फल जानिये।			जन्म नक्षत्र से राहु नक्षत्र पर्यन्त गिने, जहाँ नक्षत्र पड़ा हो वहाँ फल जानिये।			जन्म नक्षत्र से केतु जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र तक गिनें, जितने नक्षत्र पड़ें वे फल जानें।		
स्थान	नक्षत्र	फल	स्थान	नक्षत्र	फल	स्थान	नक्षत्र	फल
मस्तक	१	रोग	मस्तक	३	राज्यप्राप्ति	मस्तक	५	जय
मुख	१	रोग	दो हाथ	४	रिपुक्षय	मुख	५	बड़ाभय
दाहि.हा.	४	लाभ	पावों में	६	मार्गचलन	हाथ में.	४	विजय
पावों में	६	मार्गचलना	बाँयहाथ	४	मृत्यु	पाँवों में	६	सुख
बाँया हा.	४	बन्धन	हृदय	३	लाभ	हृदय	२	शोक
हृदय में	५	लाभ	कण्ठ	१	रोग	कण्ठ	४	व्याधि
नेत्रों में	४	प्रीतिलाभ	मुख	२	जय	गुदा	१	बड़ाभय
हाथ में	२	पूजा	नेत्र	२	सौख्य	०	०	०
गुदा	१	मृत्यु	गुदा	२	कष्ट	०	०	०

जन्म नक्षत्र ज्ञानम् ।

शीर्षेत्रीणि मुखेत्रयं च रविभादेकैकभं स्कन्धयो-
रेकैकं भुजयोस्तथा करतले धिष्ण्यानि पञ्चोदरे ॥
नाभौ गुह्यतले च जानु गले चैकैकमृक्षमीया-
ज्जन्तोः केचिदिति ब्रुवन्तु गणकाः शेषाणि पादद्वये ॥३०॥
अल्पायुश्चरणस्थिते च गमनं देशान्तरं जानुभे ।
गुह्ये स्यात्परदाररंभनमथो नाभौ च सौख्यप्रदम् ॥
ऐश्वर्यं हृदि चौर्यमस्य करयो र्बाह्वोर्बलं वै मुखे ।
मिष्टान्नं च लभेच्च मानवगणो राज्यं स्थिरं मूर्द्धनि ॥३१॥

टीका—मनुष्य चक्र सूर्य नक्षत्र द्वारा जन्म नक्षत्र तक इस भाँति देख, पहिले ३ नक्षत्र मस्तक पर राज्य देते, एवं ३ नक्षत्र मुख पर मीठा भोजन कराते, २ कंधो में बल देते, २ भुजा में बल देते, २ हाथ की हथेली पर चोर बनाते, ५ हृदय पर ऐश्वर्य देते, १ नाभि पर सुखद, १ गुदा में स्त्री लंपट बनता, २ जान में प्रवासी करते और ३ नक्षत्र दोनों चरणों में होने से अल्पायु करते हैं।

जन्म नक्षत्र समाप्त

प्रश्नप्रकरण-

श्रीगणेशं रमाधीशं वन्देऽर्कं पार्वतीं शिवम्।
मयाप्रश्न प्रकाशाख्यो रच्यते विदुषां मुदे ॥

कार्यसिद्धि प्रश्न—

तिथि प्रहर संयुक्ता तारका वारमिश्रिता।
अग्निभिस्तु हरेद्भागं शेषं सत्वंरजस्तमः ॥ १ ॥

फलम्—

सिद्धिस्तत्कालकी सत्वे रजसा तु विलम्बिता।
तमसा निष्फलं कार्यं ज्ञातव्यं प्रश्न कोविदैः ॥ २ ॥

टीका—जिस समय प्रश्न करे उस समय की तिथि वार नक्षत्र प्रहर को एकत्र योग करें, उस में ३ का भाग देने से १ शेष से सत्व, २ से रज और ३ शेष से तम जानना। सत्व सकार्य सिद्धि रज से विलंब में कार्य सिद्धि और तम से कार्य सिद्ध न होना जानना ॥ १-२ ॥

उदाहरण—तिथि ५ वार २ नक्षत्र १२ प्रहर ३ सब जोड़ने से २२ हुए इस में ३ का भाग देनेसे शेष १ बचा, अतः पहला सत्व आया शीघ्र कार्य सिद्धि होना जानना ॥ १-२ ॥

स्वच्छायोपरिप्रश्नः ।

आत्मच्छाया त्रिगुणिता त्रयोदशसमन्विता।
वसुभिश्च हरेद्भागं शेषं चैव शुभाशुभम् ॥ ३ ॥
लाभश्चैके त्रिकेसिद्धिर्वृद्धिः पञ्चमसप्तमे।
द्वयोर्हानिश्चतुः शोकं षष्ठाष्टे मरणं ध्रुवम् ॥ ४ ॥

टीका—अपनी आयाको तिगुनी कर उसमें १३ मिलाय ८ का भाग दे, जो बचै उनका फल चक्र में देखे ॥ ३ ॥ ४ ॥

शेष १	शेष २	शेष ३	शेष ४	शेष ५	शेष ६	शेष ७	शेष ८
लाभ	हा न	सिद्धि	शोकः	वृद्धिः	मरणं	वृद्धिः	मरणं

कार्याकार्यप्रश्नः ।

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्यलक्षणम् ॥ ५ ॥

फलम् ।

पञ्चैके त्वरितासिद्धिः षट्चतुर्थे दिनत्रयम् ।
त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वौचाष्टौ न च सिद्धिदौ ॥ ६ ॥

टीका—प्रश्न करनेवाले का मुख जिस दिशा को हो वह दिशा, प्रहर, वार और नक्षत्रोंको एकत्र कर, आठका भागदे, शेष बचै उनसे शुभा शुभ फल जाने। १ वा ५ शेष बचै तो शीघ्र कार्य सिद्धि जाने, ६ या ४ बचे तो ३ दिन में कार्य सिद्धि, ३।७ बचै तो विलम्ब, २।८ बचै तो कार्य नहीं होगा ॥ ५ ॥ ६ ॥

अंकप्रश्नः ।

अंकं द्विगुणितं कृत्वा फलनामाक्षरैर्युतम् ।
त्रयोदशयुतं कृत्वा नवभिर्भागमाहरेत् ॥ ७ ॥

फलम् ।

एकेहि धनवृद्धिश्च द्वितीये च धनक्षयः ।
तृतीये क्षेममारोग्यं चतुर्थे व्याधिरेव हि ॥ ८ ॥
स्त्रीलाभः पञ्चशेषेस्यात्षष्ठे बन्धुविनाशनम् ।
सप्तमे ईप्सितासिद्धिरष्टमे मरणंध्रुवम् ॥ ९ ॥
नवमेराज्यसंप्राप्तिर्गर्गस्यवचनं यथा ॥ १० ॥

टीका—जितने अंक का नाम हो उनको दूना कर फल और नाम के अक्षरों को मिलावै फिर १३ जोड़कर ९ का भागदे, शेष बचे उसका फल कहै, एक से धन वृद्धि, २ से धन क्षय, ३ से आरोग्य, ४ से व्याधि, ५ से स्त्री लाभ, ६ से

बंधुनाश, ७ से कार्य सिद्धि, ८ से मरण, ९ से राज्य प्राप्ति, यह गर्गमुनि वचन है ॥ ९ ॥ १० ॥

नवग्रहात्मकं यन्त्रं कृत्वा प्रश्नं निरीक्षयेत् ।
फलं पूर्वोक्तमेवात्र द्रष्टव्यं प्रश्नकोविदैः ॥ ११ ॥

टीका—९ कोठों का चक्र बनाके उसमें देखे जो अङ्क आवै उसका फल पूर्वोक्त प्रकार से जानै ॥ ११ ॥

४	३	८
९	५	१
२	७	६

अन्यमतेन ।

सप्तत्रयाङ्के कथयन्तिवार्ता नवैकपंच त्वरितंवदन्ति ।
अष्टौद्वितीये न हि कार्यसिद्धिः रसाश्चवेदा घटिकात्रयं च ॥१२॥

टीका-पूर्वोक्त कथित अङ्कों की रीतिसे प्रश्न विचारै, परंतु फल भिन्न भिन्न रीति से कहै, अर्थात् शेष ७ वा ३ रहै तो वार्ता करता जाने, ९ । १ । ५ बचै तो शीघ्र कार्य होगा, ८।२ बचै तो कार्य नहीं होगा, ६।४ बचै तो तीन घड़ी में कार्य होगा, ऐसा कहै ॥ १२ ॥

अङ्कप्रश्नः ।

अष्टोत्तरशताऽङ्केषु प्रष्टात्वेकंवदेल्लिखेत ।
तस्मिन् द्वादशभिर्भक्ते शेषं चैव शुभाऽशुभम् ॥ १३ ॥

फलम् ।

एकेदुर्गासप्तकेवैविलंबंनागे तुर्येदिक्तभूतेषुनाशः ।
रुद्रेसिद्धियुग्मकेवृद्धिरुक्ता शीघ्रकायस्यात्त्रिषड्द्वादशेषु १४

टीका-पृच्छक से एक सौ आठ अङ्कों में से एक अङ्क का नाम लिखावे वा कहावे और उसमें बारह का भाग दे, शेष बचै उससे फल कहै १।७।९ बचने से देर में काम होगा, ८।४।१०।५ बचने से नाश, ११ बचने से सिद्धि, २ बचने से वृद्धि ३।१२ बचने से शीघ्र कार्य होगा, ऐसा कहै ॥१३॥१४॥

पन्थाप्रश्नाः ।

तिथिः प्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं तु फलमादिशेत् ॥ १५ ॥
वर्तमानं च नक्षत्रं गणयेत्कृत्तिकादितः ।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्यलक्षणम् ॥ १६ ॥

प्रश्नाक्षरं रुद्रयुक्तं सप्तभिर्भाजितं तथा ।
फलमेवं क्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषां हि शुभाशुभम् ॥ १७ ॥

टीका---तिथि, वार, नक्षत्र और प्रहर को इकट्ठा करके सात से भागदे, शेष बचने के अनुसार फल जानै। दूसरी रीति से कृत्तिकासे वर्तमान नक्षत्र तक गिनै और ७ से भाग दें। तीसरी रीति प्रश्न के अक्षरों में ११ मिलाय ७ का भाग दे जो शेष बचे उनके अनुसार फल जानै ॥ १५ ॥ १७ ॥

फलम् ।

एकशेषेभवेत्स्थानं द्वितीयेपथिवर्तते ।
तृतीयेप्यर्द्धमार्गेतु चतुर्थेग्राममादिशेत् ॥ १८ ॥
पंचमे पुनरावृत्तिः षष्ठेव्याधियुतंवदेत् ।
शून्यंज्ञयं सप्तमेचैतत्प्रश्नस्यलक्षणम् ॥ १९ ॥

टीका---१ बचनेसे स्थानही में जाने, २ बचने से मार्ग में, ३ बचने से अर्द्ध मार्ग में, ४ बचने से ग्राम में, ५ बचने से मार्ग से लौट गया, ६ बचनेसे रोग कहो शून्य बचने से मृत्यु जाने ॥ १८ ॥ १९ ॥

विदेशी प्रश्न---

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं त्रयोदश समन्वितम् ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥ २० ॥
एकेन गमनं कुर्यात् द्वितीये मार्ग मेव च ।
तृतीये चार्ध मार्ग च चतुर्थो द्वारमागतः ॥ २१ ॥
पञ्चमे पुनरावृत्तिः षष्ठेव्याधि समन्वितः ।
सप्तमे शून्यतावृत्तिरष्टमे मरणं ध्रुवम् ॥ २२ ॥

टीका---प्रश्न के अक्षर को दूना करना उसमें १३ जोड़ना, फिर उसमें ८ का भाग देना शेष के अनुसार प्रश्नफल जानना, एक बचे तो विदेशी अपने स्थान से चला है, दो बचे तो मार्ग में जानना, तीन बचै तो आधे मार्ग में जानना। चार बचै तो द्वार के पास आना समझना, पाँच बचै तो जानना एक बार चलकर लौट गया, छः बचै तो व्याधि से पीड़ित जानना, सात बचै तो शून्य फल जानना आठ बचैं तो परदेशी की मृत्यु जानना ॥२०॥२२॥

धनसहजगतौ सितामरज्या कथयेचागमनं प्रवास पुंसाप ।
तनुहिवुकगता विभौच्च तद्वद् झटिति नरः कुरुते गृहप्रवेशम्॥२३॥

टीका—प्रश्न लग्न से दूसरे शुक्र तीसरे गुरु हो तो परदेशी मनुष्य का आना कहै, इसी प्रकार लग्न में शुक्र हो और चौथे चन्द्रमा हो तो शीघ्र मनुष्य प्रवासी गृह में आवे ॥ २३ ॥ वारनक्षत्र प्रयुक्तपन्थाप्रश्नः ।

बुधेचन्द्रे भवेत् मार्गे समीपे गुरुशुक्रयोः ।
रवौ भौमे तथा दूरे शनौ च परिपीड्यते ॥ २४ ॥
निर्जीवाः सप्तऋक्षाणि सजीवा द्वादशस्मृताः ।
व्याधिता नवऋक्षाणि सूर्याधिष्ण्यात्तु चंद्रभम् ॥ २५ ॥

टीका—बुध, चन्द्रवार को प्रश्न करने से मार्ग चलता हुआ जाने । गुरु शुक्र को प्रश्न करने के समीप आया जाने। रवि वा भौम को दूर जाने और शनि को पीडा युक्त जाने । सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त लिखने का क्रम, प्रथम ७ नक्षत्र पर्यंतं चन्द्रमा आवै तो निर्जिव । द्वितीय १२ नक्षत्रतक चन्द्रमा आवै तो जीवित जाने । तृतीय ९ नक्षत्र पर्यन्त चन्द्रमा आवै तो रोगी जाने । इस प्रकार से मुंथा प्रश्न करना चाहिये ॥ २४ ॥ २५ ॥

संज्ञानुसारेणलग्ननामानि ।

धातुमूलं जीवश्चरस्थिरद्विस्वभावश्च ।
मेषादयः क्रमेणैव ज्ञातव्या प्रश्नकविदैः ॥ २६ ॥

टीका-मेषादि बारह लग्नों के नाम की तीन तीन संज्ञा हैं-धातु-चर-मेष लग्न की संज्ञा, मूल-स्थिर-वृष की, जीव, द्विस्वभाव मिथुन-की, धातु,-चर, कर्क की मूल-स्थिर-सिंह की, जीव द्विस्वभाव, कन्या की, धातु-चर-तुलाकी, मूल स्थिर-वृश्चिक की, जीव द्विस्वभाव धन की, धातु-चर-मकर की मूल-स्थिर, कुम्भ की, और जीव-द्विस्वभाव-मीन की संज्ञा जानना ॥ २६ ॥

लग्न बलेन मनश्चिन्तितप्रश्नः ।

मेषे च द्विपदांचिन्ता वृषेचिन्ता चतुष्पदाम् ।
मिथुनेगर्भचिन्ता च व्यवसायस्यकर्कटे ॥ २७ ॥
सिंहे च जीवचिन्तास्यात्कन्यां च स्त्रियास्तथा ।
तुलायांधनचिंन्ता च व्याधिचिन्ता च वृश्चिके ॥ २८ ॥

चापे च धनचिन्तास्यान्मकरे शत्रुचिन्तनम् ।
कुम्भेस्थानस्यचिन्तास्यान्मीनेचिन्ता च दैविकी ॥ २९ ॥

टीका—मेष लग्न में प्रश्न करने से मनुष्य की चिन्ता जाने, वृष में गाय, भैंस की, मिथुन में गर्भकी, कर्कमें व्यापार की, सिंह में जीव की कन्यामें स्त्री, की, तुला में धन की, वृश्चिक में रोगकी, धन में धनकी, मकर में शत्रुकी, कुम्भ में स्थान की, मीनमें देवता, भूत, पिशाचादि बाहरी बाधाकी, चिन्ता जाने ॥ २७ ॥ ॥ २९ ॥

मुष्टिप्रश्नः ।

मेषेरक्तं वृषेपीतं मिथुनेनीलवर्णकम् ।
कर्के च पाण्डुरंज्ञेयं सिंहेधूम्रं प्रकीर्तितम् ॥ ३० ॥
कन्यायांनीलमिश्रं तु तुलायां पीतमिश्रितम् ।
वृश्चिकेताम्रमिश्रं च चापेपीतविमिश्रितम् ॥ ३१ ॥
नक्रे कुम्भेकृष्णवर्णं मीने पीतं वदेत्सुधीः ॥ ३२ ॥

टीका—प्रश्न कर्ता के मुट्ठी में की वस्तु बतावे कीरीति यह है. मेष लग्न में प्रश्न होने से लाल रंग की वस्तु मुट्ठी में है, वृष होने से पीत, मिथुन में होने से नीली, कर्क में पांडुर रङ्ग, सिंहमें धुमिली, कन्यामें नील मिश्रित, वृश्चिकमें ताम्र वर्ण मिश्रित, धनमें पीत मिश्रित, मकर एवं कुम्भ में लोहमय अर्थात् काली औरमीन लग्न में प्रश्न होनेसे पीली वस्तु जाने ॥ ३० ॥ ३२ ॥

मुष्टि चिन्ता प्रश्न ।

तिथिप्रहर संयुक्तं तारकानव मिश्रितम्
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषाङ्के वर्णमादिशेत् ॥ ३३ ॥
नाम्रा मुक्ता सदृशो श्वेत मिश्ररक्तो वर्णश्च ३
दूर्वा सदृशो वर्णः ४ सर्ववर्णावर्णो मौक्तिक सदृशः ६ ।
सप्तमे श्यामवर्णो ७ रक्त नीलमिश्रितः । अष्टौश्वेत
नील रक्तोवर्णो नवमेवदेत् विबुधः ॥ ३४ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	शेष
ताम्र	मोती	सफेद लाल	दुग्ध	अनेक	माता	श्याम	लाल नीला	नील	[illegible]
या तामेके समा.	या मोतीके सदृश	या सफेद लालके तुल्य	के समा.	रङ्गका	के समा.		पिला	रक्त	

अमुकाद्द्रव्यप्राप्तिर्भविष्यति नवेति परिज्ञानं प्रश्नादाह—

प्रश्ननाम गुणैर्हन्यात् स्ववर्णामिश्रितं हरेत् ।
रामैः प्राप्तिं विजानीया देकशेषे द्विके नहि ॥ ३५ ॥
त्रिशेषे चिर कालेन द्रव्यप्राप्तिर्भविष्यति ॥

टीका—प्रश्नाक्षर संख्या को ३ से गुणना उसमें अपने नामाक्षर संख्या जोड़ना फिर उसमें ३ का भाग देना १ शेष वचै तो प्राप्ति कहना दो वचै तो द्रव्य न प्राप्त होना जानना तीन शेष वचै तो देर में प्राप्त जानना ॥३५॥

दुर्ग प्राप्तिर्भविष्यति नवोति ज्ञानम्—

रामै र्गुणित वारस्तु नक्षत्रैर्योजितं त्रिहृतम् ।
दुर्गे प्राप्तिरेक शेषे द्विके सन्धि स्त्रिके न हि ॥ ३६ ॥

टीका—प्रश्न जिस दिन करै उस दिन के वारसंख्या को ३ से गुणना उसमें नक्षत्र जोडना फिर तीन के भाग से १ शेष वचै तो किला मिलेगा दो शेष वचने पर मेल होगा तीन शेष वचने पर न मिलेगा ॥ ३६ ॥

गर्भिणी प्रश्न—

तत्प्रश्नलग्ने रविजीव भौमे
तृतीय सप्ते नवपञ्चमेच ।
गर्भःपुमान्वैर्न्मुषिभिः प्रणीत—
श्चान्य ग्रहे स्त्री विबुधैः प्रणीता ॥ ३७ ॥

टी—गर्भिणी जिस लग्नमें प्रश्नकरै उस लग्नसे तृतीय सप्तम नवम पञ्चम स्थान में रवि भौम गुरु स्थितहो तो पुत्रहोय और अन्यग्रह होतो कन्या का जन्म जानना ॥ ३८ ॥

नखद्वयं गर्भिणी नामधेयं तिथि प्रयुक्तं रससंयुतम् ।
एकेन हीनं नवभाग धेयंसमेकुमारी विषमे च कुमारः ॥ ३८॥

चौरज्ञान-

अन्धाक्षं वसु पुष्य धातृ जलभद्वीशार्यमाल्याभिधम्,
मन्दाक्षं रवि विश्वमित्रजलपाश्लेषाश्चिचान्द्र भवेत् ।
मध्याक्षं शिवपितृजैक चरणत्वाष्ट्रेन्द्र विध्यन्तकं ।
स्वक्षं स्वाति दितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्नरक्षो भगम् ॥ ३९ ॥

टीका—धनि, पुष्य०, रो०, पूर्वाषा० विशा०, उत्तराफा०, और रेवती ये सात अन्दाक्ष नक्षत्र हैं, हस्त, उ०षा० अनु०, शत, श्लेषा अश्विनी और मृग० ये सात मन्दाक्ष नक्षत्र हैं, आर्द्रा, मघा० पूर्वाभा०, चित्र० ज्ये० अभिजित् और भरणी इनसात नक्षत्रों को मध्याक्ष संज्ञा है, स्वाती, पुनर्व० श्रव०, कृत्ति० उत्तराभा०, मूलं उत्तराफा० इनसात नक्षत्रों की सुलोचन संज्ञा है ॥ ३९ ॥

रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	विशाखा	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	अंधाक्ष
मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनु.	उत्तराषा.	शतभि	अश्विनी	मन्दाक्ष
आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	मध्याक्ष
पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	सुलोचना

विनष्टार्थस्यलाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः ।
स्याद्दूरे श्रवणेमध्ये श्रुत्याप्ति न सुलोचने ॥ ४० ॥
अन्धके पूर्वतो याति मन्दके याति दक्षिणे ।
मध्येच पश्चिमे याति सुनेत्रं याति चोत्तरे ॥ ४१ ॥

टीका—अन्ध नक्षत्रमें धन चोरी जायतो शीघ्रमिलै, मन्दाक्ष में जायतो यत्न से मिलै, मध्याक्ष में जायतो दूर सुनिमडै और सुलोचन में जायतो न सुन पडै न मिलै । अंधाक्ष नक्षत्रमें धनजायतो पूर्वदिशामें गया हुआ जानना, मन्द में दक्षिण दिशामें जानना, मध्याक्ष में पश्चिदिशा में जानना, और सुलोचन में उत्तर दिशामें धन जानना ॥ ४० ॥ ४१ ॥

"मध्यादि अर्यमान्तंच समीपे वस्तुदृश्यते।
हस्तादिवसुपर्यन्त मन्य हस्ते चदृश्यते ॥ १ ॥
शततारायमान्तंच स्वगृहे वस्तु दृश्यते।
अग्न्यादि सार्पपयन्तमदृष्टंदुर्गमं तथा ॥ २ ॥

तिथिवारंच नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम्।
दिक्संख्यया हतंचैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः ॥ ४२ ॥
एकेन भूतले द्रव्यंद्वयंचेद् भाण्डसंस्थितम्।
तृतीये जलमध्यस्थमन्तरिक्षे चतुर्थके ॥ ४३ ॥
तुषस्थं पञ्चमे तुस्यात् षष्ठे गोमय मध्यगम्।
सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्येतत् प्रश्न लक्षणम् ॥ ४४ ॥

टीका -प्रश्न समय के तिथि वार नक्षत्र और प्रहर को एकत्र जोड़ना उसको १० से गुणा करना फिर सात का भाग देना। शेषमें फल कहै। शेष एक बचै तो गई वस्तु भूमि में. दो बचे तो वर्तन में, तीन बचे तो जल में, चार बचै तो अंतरीक्ष में, पाँच बचै तो भूसी मे, छः बचे से गोबर में सात शेष बचै तो वस्तु राख में जानना ॥ ४२ ॥ ४४ ॥

तिथिवारंच नक्षत्रं लग्नं वह्नि विमिश्रितम्।
पञ्च भिस्तुहरेद्भागं शेषं तत्वं विनिर्दिशेत् ॥ ४५ ॥
पृथिव्यां तु स्थिरं ज्ञेयमप्सुव्योम्नि नलभ्यते।
तेजस्तु राजसाद्ज्ञेय वायौशोक विनिर्दिशेत् ॥ ४६ ॥

टीका—प्रश्न समय के तिथि वार नक्षत्र तथा लग्न को एकत्र जोड़कर उसमें तीन मिलाय ५ का भागदेय शेष १ बचे तो भूमि में २ बचे तो जल में है परन्तु न मिलैगा, ३ बचे तो आकाश में यह भी न मिलेगा, ४ बचे तो तेजमें राज्य में जाना जानना, ५ बचे तो वायु में शोक फल इसका जानना ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

स्थिरोदये स्थिरांशेवा वर्गोत्तम गतेऽपिवा।
स्थितं तत्रैवतद् द्रव्यं स्वकीयेनैव चोरितम् ॥ ४७ ॥

१ मध्यके च चतुः षष्टिः।
२ अन्ध्ये सद्यः प्राप्यते वस्तुनष्टं कष्टात्प्राप्यं मन्देनेत्रे चन्द्रत।
दूराच्छ्राव्यंमध्यनेत्रे नलभ्यं नष्टोनेत्रं ...... सुनेत्र॥

आदिमध्या वसानेषु द्रेष्काणेषु विशेषतः ।
द्वारदेशे तथा मध्ये गृहान्तेचवदेद्धनम् ॥ ४८ ॥
पूर्णः शशीलग्न गतः शुभोवा शीर्षोदये सौम्य निरीक्षितश्च ।
नष्टस्य लाभ कुरुतेतदाशुलाभोपयाते बलवान् शुभश्च ॥४६॥
दिग्वाच्या केन्द्रगतैर सम्भवे वा वदेद्विलग्नर्क्षात् ।
मध्याच्युतैविलग्ना नवांशके योंजना वाच्या ॥ ५० ॥

टीका—प्रश्न समय स्थिर राशि वा अन्य राशि में स्थिर नवांश वा लग्न में वर्गोत्तमांश हो तो गई वस्तु उसी स्थान में है, अपना खास आदमी लिया है। लग्न में पहला द्रेष्काण हो तो द्वार में दूसरा द्रेष्काण हो तो गृह में और तीसरा द्रेष्काण हो तो पिछवाड़े धन जानना। पूर्ण चन्द्रमा प्रश्न लग्न में हो वा शीर्षोदय राशि प्रश्न लग्न का हो उसमें शुभग्रह हो, वा दखते हो ग्यारहवें शुभ ग्रह हो तो गई वस्तु शीघ्र मिले। केन्द्र में बलीग्रह जिस दिशा का, स्वामी हो उसी दिशा में कई ग्रह हों तो बलवान की दिशा में वा प्रश्न लग्न की राशि की दिशा में और लग्न का नवांशां देख कर योजन का प्रमाण कहे पहले नवांश से पांच नवांश तक गई वस्तु उसी जगह उक्त दिशा में जानना इसके बाद जितने नवांश लग्न में गये हों उतने योजन पर उक्त दिशा में जानना ॥ ४७ ॥ ५० ॥

निबन्धमें—

"ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रोऽथ स्वजनोऽङ्गना ।
भ्राता पुत्रोऽथभृत्यश्चस्तथा स्यान्मूषको वधूः ॥ १ ॥
मेषादिपुक्रमाच्चौरनामैषांराशितादृशम् ।

प्रदीपमें—

अन्त्यजतस्कर सिंहेमृगे वैश्यजनस्तथा ॥ २ ॥
पुत्रो भ्राता सखानापि तुलायां तस्करो भवेत् ।
वृश्चिके सेवकश्चौरः पिता भ्राता स्त्रियो घने ॥ ३ ॥
आदि मध्यान्त्य भागेन ज्ञातव्याश्च पुमान् स्त्रियः ।
स्त्रीभागे तु भवेत्कन्या पुंभागे पुरुषोवदेत् ॥ ४ ॥

मे. १	वृ. २	मि. ३	क. ४	सिं. ५	कं. ६	तु. ७	वृ. ८	ध. ९	म. १०	कुं. ११	मी. १२	लग्नानि
नर	नारी	नारी	पुरुष	पुरुष	नारी	पुरुष	नारी	पुरुष	पुरुष	पुरुष	पुरुष	प्रथम द्रेस्काण १०
नारी	पुरुष	पुरुष	नारी	पुरुष	पुरुष	पुरुष	नारी	नारी	नारी	सुन्दरी	सुन्दरी	द्वितीय द्रेस्काण २०
पुरुष	पुरुष	पुरुष	पुरुष	पुरुष	नारी	पुरुष	पुरुष	पुरुष	पुरुष	पुरुष	पुरुष	तृतीय द्रेस्काण ३०
अ २ वा ॥ स २	व ४ फ ३ प ४	म ३ वा ॥ प ३	ह २ प २ त ३	३ म ३ श ३	र २ वा फ २	तादि वा २ कादि२	नादि वा ३ व २	भ २ वा ॥ क ३	जादि वी ३ हादि४	स ३ वा ॥ ल. ३	च २ ॥ व द	तस्कर स्याक्षरोपरि नामाक्षर संख्या

द्रेष्काणतो विजानीया चौर ज्ञानं विचक्षणः ।
गोऽलि युमाङ्गनानांहि प्रथमांशेऽङ्गनातथा ॥ ५ ॥
मेषकर्कालितोऽण्डान्त लग्नानां तु द्वितीय के ।
कर्कस्यैव तृतीयेच ज्ञेयानारी विचक्षणैः ॥ ६ ॥
प्रथम द्वितृतीयेषु शेषलग्नांशकेषुच ।
नरश्चौरो विजानीयाद् दैवज्ञकुलभूषणः ॥ ७ ॥

प्रश्न लग्नके द्रेष्काण के अनुसार स्त्री चोर है या पुरुष यह जाने, वृष मि. कन्या के प्रथम द्रेष्काण में मैं कर्कवृश्चिक ध. म. कुं. मीन के द्वितीय और कर्क के तीसरे द्रेष्काण में स्त्री चोर और अन्य में पुरुष चोर जाने चन्द्रदेविये ।

पशुविषयक प्रश्न—

द्युमणि भान्नवभेषु वनेपशुस्तदनुषट् सुकर्णा पथे स्थितम् ।
अचलभेषु गतं गृहमागतं द्वयगतं गतमेव मृतंत्रिषु ।

टीका—सूर्य नक्षत्र से नष्ट हुए दिनका वा प्रश्न का नक्षत्र नव तक हो तो पशु को वन में जानना, उसके बाद ६ नक्षत्रों पर्यन्त हो तो मार्ग में जानना, फिर सात नक्षत्र तक घर में आनेवाला जानना । फिर दो नक्षत्रों में न मिलै, फिर तीन नक्षत्रों में पशु की मृत्यु जानना ॥

अष्ट विध प्रश्न साधनार्थं हंस चक्रम्—

अ १२	आ २१	इ ११	ई १८	उ १५	ऊ २२	ए १८	ऐ ३२	ओ
औ २५	अं १३	अः ११	क २१	ख ३०	ग १०	घ १५	ङ ११	च
छ २५	ज २६	झ १०	ञ १३	ट २२	ठ ३५	ड ४५	ढ १४	ण
त १७	थ १३	द ३५	ध २८	न १८	प २६	फ २७	ब २६	भ
म २६	य १३	र १३	ल ३५	व २५	श ३५	ष ३२	स ३५	ह

समय भेदात् प्रश्नकस्य पिंड साधनार्थं नाम ग्रहणं कार्यम् ।
तत्राह—पूर्वाह्णे बाल मुखात् पुष्प नाम तु ग्राहयेत् ।
मध्याह्ने युवामुखान्मूल नाम तु ग्राहयेत् ॥
अपराह्णे वृद्धमुखाद् वृक्षनाम तु ग्राहयेत् ।
वनानाञ्च रात्रौ सर्व मुखाद्धरेत् ॥

प्रश्नाष्टविधः	क्षेपांकाः	भाजकाः	शेष	फल मिदं	शेष	फलमिदं	शेष	फलमिदं
लाभालाभे	४२	३	१	लाभः	२	स्वल्प लाभः	०	हानिः
जीवनमरणे	४०	३	१	जीवन	२	मंत्रसाध्यं	०	मरणम्
गमनागमने	३६	३	१	गमनं	२	स्थितिः	०	हानिः
जयाजय प्र	३५	३	१	जयज	२	सन्धिः	०	पराजय
गर्भागर्भ प्र.	३६	३	१	गर्भः	२	स्यात् सन्देहः	०	नगर्भः
यात्रा,यात्रा प्र.	३६	३	१	यात्रा	२	मध्यमा	०	नयात्रा
वृष्टि विष्टि प्र.	३२	३	१	सुवृष्टिः	२	अल्पवृष्टिः	०	नात्रवृष्टिः
सुख दुःख प्र	३८	[illegible]	१	सुखम	०	दुःखाप्तिः	०	

इस चक्र के अनुसार उदाहरण किसी ने पूर्वाह्न के समय मुझे लाभ होगा यह प्रश्न किया तो बालक के मुख से पुष्प का नाम ग्रहण कराया--बालक गुलाब का फूल कहा। ग १० उ १५ ल ३५ आ २१ व २६ अ १२ क २१ आ २१ फ २७ ऊ २२ ल ३५ अ १२ इस प्रकार सब वर्णों का स्वरों का अंक है एकत्र जोड़ा तो २५७ हुआ इसमे लाभालाभ का क्षेपक ४२ को जोड़ा तो २९९ हुआ इसमें ३ का भाग दिया तो शेष २ बचा स्वल्प लाभ होगा यह जानना ॥

नष्टार्थस्य दिग्ज्ञानम्।

वह्निभादिन्दुभावधिगणनीयम्। यत्रेन्दुभं तत्रदिगेव नष्टार्थस्यज्ञेयम्। वा चन्द्रभादग्निभपर्यन्तम् मध्यतो त्रित्रिभगणनीयम् यत्राग्निभं तत्र दिग् नष्टार्थस्यज्ञेयम्।अथवा तिथिसवारा नवसयुताच युगाप्तशेषे खलु पूर्वतः स्यात्। शून्य शेषेपूर्व, १ शेषे दक्षिण,

ईशान रे. अ. भ. ३	पूर्व आ. पु. पु. ३	अग्नि श्ले. म. पू. फा. ३
उतर श. पू. भा. उ. भ. ३	मध्य कृ. रो. मृ. ३	दक्षिण उ. फा. ह. चि. ३
वायव्य उ. षा. श्र. ध. ३	पश्चिम ज्ये. मू. पू. भा ३	नैऋत्य स्वा. चि. अनु ३

रोगर्त स्येष्टकालाद् बाधाज्ञानम्—

तिथिवारं च नक्षत्र लग्न यामंच संयुतम्।
वसुभिस्तु हरेद्भागं शेषे बाधा नियोजयेत्॥ ५२॥
हये ग्नौ देव बाधा स्यात् पितरो नेत्रदन्तिनः।
षट चतुर्थभूत बाधा ग्रहाणामेक पञ्चके॥ ५३॥
भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत्।
रामबाण रसाष्टौच नन्दरुद्रा सजीवति।
एकः पक्षो युगा सप्तदशार्का नात्र जीवति॥ ५४॥

टीका—रोगी के रोग के लिये प्रश्नकर्ता जिस समय प्रश्न करे उस समय की तिथि वार नक्षत्र लग्न प्रहर की संख्या को एकत्र जोड़ना उसमें ८ का भाग देना शेष के अनुसार बाधा जानना, ७-३ शेष से देवता की बाधा २-८ शेष से पितर बाधा, ६-४ शेषमें भूतबाधा। १-५ शेष से ग्रहों की बाधा जानना। उसी तिथि वार नक्षत्र लग्न प्रहरको जो एकत्र किया है उसमें १२ का भाग देनेसे जीवन मरण जानना, २-५-६-८-९-११ यदि शेष हो तो जीना कहना और यदि शेष १,३,४,७-१० १२ हो तो मृत्यु कहना ॥ ५२ ॥ ५४ ॥

उदाहरण—तिथि ५ गुरु वार ७ पुष्प वृष लग्न २ प्रहर ३ रात्में प्रश्न है सबकी संख्या जोड़ा तो २३ हुआ इसमें ८ का भाग दिया तो शेष ७ बचा अतः देव बाधा कहना। उस जो २३ में १२ का भाग दिया तो शेष ११ बचा। इससे जीना जानना ॥ ५२ ॥ ५४ ॥

रोगार्त स्येष्ट कालवशाद्बाधाज्ञानं शान्ति प्रकारश्च—

वारर्क्षंच तिथि दिशापारमितिसंयोज्य नागैर्भजे।
लब्धाङ्केन फलं चनाग नयने दोषं पितुर्नान्यथा॥
ससेराममित सुरस्य विदितं तर्के च वेदे तथा।
प्रेतस्यापिच खेचरस्य विदितं चन्द्रेच बाणाधिको ॥५५॥
लब्धाङ्कें त्रिगुणं तथा वसुयुतं वेदेनगुण्यं ततः।
ससासेष्वधिकं यथा विधुमितं कौल्यंच दोषं वदेत्॥
ग्राम्य वन्यभवंच राजज लजंस्याच्छत्रुजंपंक्तिजम्।
शून्ये व्योम भवं तथास्य विविधोपायैश्चशा न्तिवंदेत् ॥५६॥
कौल्यं होम द्विजार्चनैः शुभकरं।
ग्राम्यं चतुष्कोणके, होमे वन्य भवेत्तिथिं॥
वरभवैर्भोज्यैश्च वस्त्रेण वा। राज्ये तीर्थे।
पदे तथा प्परिकृते शक्तिक्रिया दानतो॥
गायत्री जपतोहि पंक्ति विषये चाकाशतोदीपतः ॥५७॥

टीका-प्रश्नदिन का वार नक्षत्र जोड़ना फिर ८ का भाग उसमें लेना शेष ८-२ बचै तो पितृदोष ७-३ शेष बचे तो देव दोष ६-४ शेष बचे तो प्रेत बाधा

१,५ शेष बचे तो यह बाधा जानो, यहतो शेषका फल हुआ और लब्ध जो उसको ३ से गुणा करना फिर उसमें ८ जोड़ना फिर ४ से गुणाकरना फिर उसमें सातका भाग देना शेष १ बचे तो कालीका, २ में ग्राम का ३ बनदोष, ४ में राजकुल शेष ५ शत्रु दोष ६ में पंक्ति दोष, शून्य शेष में आकाश दोष जानना इनका भांति भांति की उपाय से शान्ति कहता हूँ, कालीके दोष में होम करना ब्राह्मण का पूजा करना शुभहोता है । ग्रामदोष में चारो कोने होमकराना, वन्य दोष में श्रेष्ठ ब्राह्मणों को उत्तम भोजन कराना, राजदोष में तीर्थ जाने से रोग शान्ति होगा शत्रु दोष में शक्तिके अनुसार दान करना, पंक्ति दोषमें गायत्री जप करना, और आकाश दोषमें दीपदान करना तो कुशल होगा ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

उदाहरण—किसीने प्रश्न किया वार ५ नक्षत्र ८ तिथि ५ दिशा ५ इनको जोड़ा तो २३ हुआ इसमें ८ का भाग दिया तो शेष७ बचा इससे देव दोष मालुम हुआ । और लब्धि २ मिली इसको ३ से गुणातो ६ हुआ इसमें ८ जोड़ा तो १४ हुआ फिर इसे ४ गुणा किया तो ५६ हुआ इसमें ७ का भाग दिया तो शेष शून्य बचा इससे ज्ञात हुआ कि आकाश दोष है दीपदान करने से शान्त होगा ॥५५॥५७॥

बाधा ज्ञान समाप्त ।

मिश्र प्रकरण-

गौरी गौरी पतिं गौरी सुतं वन्दे हरिं रविम् ।
वक्ष्ये मिश्र प्रकरणं विदुषां प्रीतये मुदा ॥

छिकानुसारेण पाद छाया शकुन विचारः—

बुधः छिक्काकरं श्रुत्वा पादछायांच कारयेत ।
त्रयोदशयुतां कृत्वा चाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥ १ ॥

फलम्—

लाभः सिद्धिर्हानिशोकौ भयं श्रीर्दुःख निष्फले ।
क्रमेणैव फलं ज्ञेयं गर्गेण च यथोदितम् ॥ २ ॥

राग में दोष विचार—

१ मेषेचदेवी दोषः स्याद्वृषे दोषश्चपैत्रिकः ।
मिथुनेशाकिनीदोषः कर्कटेभूतदोषकः ॥
सिंहे सोदराणां वै कन्यायां कुलमातृजः ।
तुलेदोषश्चाग्निच्छाया नारीदोषो हि वृश्चिके ॥
चापेच यक्षिणीदोषो मकरे ग्रामदेवतात् । अतुराद्देविजः कुम्भे मीने चाकाशगामिनः ॥

टीका—छींक के शब्द को सुन, अपने पैर की छाया नाप, १३ मिलाय, ८ का भाग दे, शेष रहे उसका फल इस प्रकार होता है। १ बचने में लाभ, २ से सिद्धि, ३ से हानि, ४ से शोक, ५ से भय, ६ से लक्ष्मी, ७ से दुःख और ८ के बचने से निष्फल, ऐसा गर्ग मुनि का वचन है ॥ १ ॥ २ ॥

छिक्काशकुनम्—

छिक्काफलं प्रवक्ष्यामि पूर्वस्यामशुभंफलम् ।
आग्नेय्यां शोकदुःखंस्या दरिष्टं दक्षिणे तथा ॥ ३ ॥
नैऋत्यां च शुभं प्रोक्तं पश्चिमे मिष्टभक्षणम् ।
वायव्ये धनलाभस्तु उत्तरे कलहस्तथा ॥ ४ ॥
ईशान्यां च शुभं ज्ञेयं मात्मछिक्का महद्भयम् ।
ऊर्ध्व चैव शुभं ज्ञेयं मध्ये चैव महद्भयम् ॥ ५ ॥
आसने शयने चैव दाने चैव तु भोजने ।
वामाङ्गे पृष्ठतश्चैव षट्छिक्काश्च शुभावहाः ॥ ६ ॥

टीका—छींक का फल कहते हैं। पूर्व की छींक अशुभ, आग्नेय की शोक और दुःख देती है, दक्षिण की कष्ट देती है नैर्ऋत्य का शुभ, पश्चिम की मधुर भोजन कराती वायव्य की धन देती, उत्तर की क्लेश कारिणी, ईशान्य की शुभ, अपनी छींक अधिक भयदायक, ऊपर की छींक शुभ, मध्य की अधिक भय देती, आसन पर बैठने के समय, साते समय, दान के समय, भोजन करते समय, बाईं ओर की वा पीछे की छींक शुभ होती है ॥ ३ ॥ ६ ॥

खञ्जनदर्शनफलम्—

वित्तंब्रह्मणिकार्यसिद्धिमतुलां शक्रे हुताशे भयं ।
याम्ये रोगभयं सुरारि कलहं लक्ष्मी समुद्रालये ॥
वायव्ये वर वस्त्रलाभमखिलं दिव्याङ्गनाचोत्तरे ।
ईशाने मरणं ध्रुवं निगदितं दिग्लभ्यते खञ्जरीम् ॥ ७

अपांसमीपे गजमस्तके वा,
देवालये ब्राह्मण सांनिधौ च ।
आकाश मार्ग गहने वनेवा,
धन्योनरः पश्यतिखञ्जरीटम् ॥ ८ ॥

टीका-पूर्व मुख खञ्जन देखेतो धन मिलै और कार्य सिद्ध हो. अग्नि कोणमें देखें तो अग्नि भयहो, दक्षिणमें देखेतो रोगहो. नैऋत्य में देखे तो कलह हो, पश्चिम में देखेतो लक्ष्मी प्राप्ति हो, वायव्यमें देखेतो, वस्त्र लाभ हो, उत्तर में देखेतो उत्तम स्त्री मिले, ईशान में देखे तो मरण हो, जलके पास देखें हाथी के मस्तकपर देखे देवस्थान में देखे, ब्राह्मण के सन्निकट देखे, आकाश में देखे बड़े बनमें देखे, वह मनुष्य धन्य है, इस प्रकार खिञ्जरिच का विचार करै ॥ ७ ॥ ८ ॥

पल्ली पतन सरठाधिरोहणफलम् ।

राज्यं तु शिरसि ज्ञेयं ललाटे बन्धुदर्शनम् ।
भ्रूमध्ये राजसंमान मुत्तरोष्ठे धनक्षयम् ॥ ९ ॥
अधरोष्ठे धनैश्वर्यं नासान्ते व्याधिनाशनम् ।
आयुष्यं दक्षिणेकर्णे बहुलाभस्तु वामके ॥ १० ॥
अक्ष्णोस्तु बन्धनं ज्ञेयं भुजे भूपतितुल्यता ।
राजक्षोभं तथा वामे कण्ठे शत्रुविनाशनम् ॥ ११ ॥
स्तनद्वये च दुर्भाग्यमुदरे मण्डनं शुभम् ।
प्रजानाशः पृष्ठदेशे जानुजङ्घे शुभावहम् ॥ १२ ॥
करद्वये वस्त्रलाभः स्कन्धयो विजयीभवेत् ।
नाभौ बहुधनं प्रोक्त मूर्वोश्चैव भयादिकम् ॥ १३ ॥
दक्षिणे मणिबन्धे च मनस्तापो धनक्षयः ।
मणिबन्धे तथा वामे कीर्तिवृद्धि धनप्रदम् ॥ १४ ॥
नखेषु धान्यलाभं च वक्त्रो मिष्टान्नभोजनम् ।
गुल्फयो र्बन्धनं ज्ञेयं केशांते मरणं ध्रुवम् ॥ १५ ॥
अधोतु दक्षिणेपादे वामे बन्धुविनाशनम् ।
स्त्रीनाशः स्यात्पादमध्ये पदान्ते मरणं भवेत् ॥ १६ ॥
पल्ल्याः प्रपतने ज्ञेयं सरठस्याधिरोहणे ।
यात्रोद्यु क्त मनुष्यस्यैतच्छुभाशुभप्रसूचकम् ॥ १७ ॥

तिलमाषादिदानं च स्नात्वा देयं द्विजन्मने ।
पिनाकिनं नमस्कृत्य जपेन्मन्त्र षडक्षरम् ॥ १८ ॥
शतं सहस्रं मथवा सर्वदोष निवर्हणम् ।
शिवालये प्रदद्याद्दै दीपं दोषोपशान्तये ॥ १६ ॥

टीका—मनुष्य के अंग पर पल्ली अर्थात् छिपकली गिरे वा गिरगिट चढ़े तो उसका शुभाशुभ फल नीचे लिखे स्थानानुसार होता है ।

शिर पर गिरने से राज्य की प्राप्ति, कपाल पर बन्धु दर्शन, भृकुटि में राज सन्मान, उत्तरोष्ठ में धन क्षय, अधरोष्ठ में धनैश्वर्य लाभ, नासिका में व्याधि पीड़ा दहिने कान में आयु लाभ, बायें कान में विशेष लाभ, नेत्रों में बन्धन, दहिनी भुजा में राज से सन्मान, बाईं भुजा में राज भय, कण्ठ में शत्रु नाश, स्तनों में दुर्भाग्यता, उदर में शुभ मंडन, पीठ में बुद्धि नाश, जानुओं में शुभ, जंघा में शुभ, हाथों में वस्त्र लाभ, कन्धों में विजय, नाभि में विशेष धन लाभ, उरु में अश्वलाभ दहिने पहुँचे में धन क्षय, बायें पहुँचे कीर्ति लाभ, नख में धन लाभ, मुख में मधुर भोजन लाभ, गुल्फ में बन्धन, केशों में मरण, दहिने पाँव में मार्ग चलना पड़े, बायें पैर में बन्धु नाश और पैरों के बीच में छिपकली के गिरने से एवं गिरगिट के चढ़ने से स्त्री का नाश होता है । छिपकली के अंग पर गिरने से और गिरगिट के अंग पर चढ़ने से यात्रा में उद्यत हुआ मनुष्य शुभाशुभ फल जान कर वस्त्रों सहित स्नान कर तिल और उड़द ब्राह्मण को दे, फिर शिव जी को प्रणाम करके षडक्षर मन्त्र का १०० वा १००० जप करे तो सब दोष नष्ट हो जाते हैं । तदनन्तर सायंकाल को शिवजी के मन्दिर में सब दोषों की शान्ति के लिये घी का दीपक बलावै ॥ १६ ॥

अंगस्फुरणफलम् ।

ब्रूहिमे त्वं निमित्तानि अशुभानि शुभानि च ।
सर्वधर्मभृतां श्रेष्ठ त्वं हि सर्व विबुध्यसे ॥ २० ॥

टीका—मनु महराज मत्स्य से पूछते हैं कि हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ आप (अंगस्फुरण का) शुभाशुभ फल कहिये ॥ २० ॥

अंगस्य दक्षिणेभागे प्रशस्तं स्फुरणं भवेत् ।
अप्रशस्तं तथा वामे पृष्ठस्य हृदयस्य च ॥ २१ ॥

टीका—(मत्स्य उत्तर देते हैं) अंग का फुरना दक्षिण भाग में शुभ, बायें भाग में वा हृदय में अशुभ है ॥ २१ ॥

अङ्गानां स्पन्दनं चैव शुभाशुभम् विचेष्टितम् ।
तन्म विस्तरतो ब्रूही येनस्यात्तद्विधो भुवि ॥ २२ ॥

टीका-(मनु बोले) अंग के समस्त स्थानों के फुरने का शुभाशुभ फल विस्तार सहित वर्णन कीजिये ॥ २२ ॥

पृथ्वीलाभो भवेन्मूर्ध्नि ललाटे रविनन्दनः ।
स्थानवृद्धि समायांति भ्रूनसोः प्रियसंगमः ॥ २३ ॥
भृत्यलब्धिश्चाक्षिदेशे दृगुपांते धनागमः ।
उत्कण्ठोऽपगमे मध्ये दृष्टं राजन्विचक्षणैः ॥ २५ ॥
दृग्बन्धने समरे च जयं शीघ्रमवाप्नुयात् ।
योषिल्लाभोऽपांगदेशे श्रवणान्ते प्रियश्रुतिः ॥ २६ ॥
नासिकायां प्रीतिसौख्यं प्रियाप्तिरधरोष्ठयोः ।
कण्ठे तु भाग्यलाभः स्याद्भोगवृद्धिरथांसयोः ॥ २६ ॥
सुहृच्छ्रेष्ठश्च बाहुभ्यां हस्ते चैव धनागमः ।
पृष्ठे पराजयोत्सेधो जयो वक्षस्थले भवेत् ॥ २७ ॥
कुक्षिभ्यां प्रीतिरुद्दिष्टा स्त्रियाः प्रजननं भगे ।
स्थानभ्रंशो नाभिदेशे अन्त्रेचैव धनागमः ॥ २८ ॥
जानुसन्धौ परैः सन्धि र्बलवद्भिर्भवेन्नृपः ।
एकदेशे भवेत्स्वामी जङ्घाभ्यां रविनन्दनः ॥ २९ ॥
उत्तमस्थानमाप्नोति पद्भ्यां प्रस्फुरणे नृपः ।
अलाभश्चाध्वगमनं भवेत्पादतलेनृपः ॥ ३० ॥

टीका—(मत्स्य बोले कि) मस्तक के फुरने से पृथ्वी लाभ, ललाट के फुरने से स्थान की वृद्धि, भृकुटी के बीच का भाग फुरने से प्रिय दर्शन, नेत्रों के फुरने से सेवक की प्राप्ति, नेत्र के कोन के फरकने से धन लाभ, कंठ का मध्य भाग फरकने से राज्य प्राप्ति नयनबंधन फ० से युद्ध में जीत, अपांगदेश फु०से स्त्री लाभ,

कर्णान्तफु० से प्रिय मित्र का स्मरण, नासिकाफु०से सुख प्राप्ति, अधरोष्ठ फु० से प्रिय वस्तुका लाभ, कंठ फु० से ऐश्वर्य लाभ, स्कन्ध फु० से भोगकी वृद्धि, दोनों भुजा फु० से मित्र से मिलाप दोनों हाथ फु० धनलाभ, पीठफु० से पराजय, उरु फु० से जय, लाभ कोखफु० से जयलाभ, लिंग फुरकने से स्त्री लाभ, नाभि फुरकने से स्थान भ्रष्ट, आतों के फु०से धनलाभ, जानुकी संधि फुरकने से बलवान् क्षत्र से सन्धि, जंघा फु० से एक देशाधिपति, पैरोंको फु०से श्रेष्ठ स्थानों में मान और तरवा के फु० से हानि और यात्रा होती है ॥ २३ ॥ २९ ॥

लाञ्छनं पीठकं चैव ज्ञेयं स्फुरणवत् तथा ।
विपर्ययेण हि ततः सर्वं स्त्रीणां विपर्ययः ॥
दक्षिणोऽपि प्रशस्तेऽङ्ग प्रशस्तं स्याद्विशेषतः ॥ ३० ॥

स्त्रियों का अंगस्फुरण—

टीका—स्त्रियों का अंग भृकुटी के बीच और पीठमें फुरकै तो पुरुषों के समानही फल जानना, और अङ्ग फुरकै तो पुरुषों के फलसे विपरीत फल जानना स्त्रियों का बायाङ्ग फुरकना शुभ होता है ॥ ३० ॥

अनन्यथा सिद्धि रयत्नतोऽस्य फलस्य शस्तस्य च निन्दितस्य ।
अनिष्ट निर्दोष गमे द्विजानां कायसुवर्णेन तुतर्पणंस्यात् ॥३१॥

परिहार—

टीका—अंग स्फुरण के अनिष्ट फलके दूर करने के लिये और दुःस्वप्न जनित फलके दूर करने के लिये ब्राह्मण को सुवर्ण देके सन्तुष्ट करै ॥ ३१ ॥

मेघफल—

आषाढस्य सितेपक्षे दशम्यादि दिनत्रये ।
रोहिणी कालमाख्याति सुखदुर्भिक्ष लक्षणम् ॥ ३२ ॥
रात्रावेवनिरभ्रंस्यात्प्रभातेमेघाडम्बरम् ।
मध्याह्नेजलबिन्दुः स्यात्तदादुर्भिक्षकारणम् ॥३३॥

टीका—आषाढ के कृष्णपक्ष में दशमी, एकादशी और द्वादशी तिथि को रोहिणी नक्षत्र होने से सुभिक्ष, मध्य और दुर्भिक्ष जाने, रात्रि मेघ रहित होवे प्रातःकाल मेघ गर्जें और मध्याह्न में बूँदें पड़ें तो उस सम्वत्सर में महर्घका कारण जाने ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

जललग्नम्—

कुम्भकर्कवृषो मीनमकरो वृश्चिकस्तुला।
जललग्नानिचोक्तानि लग्नेष्वेतेषु सूर्यभम्॥
लभत्येवसदावृष्टि ज्ञातव्यागणकोत्तमैः॥ ३४॥

टीका—कुम्भ, कर्क, वृष, मीन, मकर, वृश्चिक और तुला जल की लग्ने हैं इनमें सूर्य नक्षत्र के मिलने से वर्षा होती है॥ ३४॥

जलदनक्षत्राणि-

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषाविष्णुमघासु च।
स्वात्यांप्रविशतेभानु वर्षतेनात्रसंशयः॥ ३५॥

टीका—अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, श्रवण, मघा और स्वाती नक्षत्र में सूर्य के प्रवेश करने पर अधिक वर्षा होती है॥ ३५॥

स्त्री, नपुंसक, पुरुष नक्षत्राणि-

आर्द्रादिदशकंस्त्रीणां विशाखादि त्रिनपुन्सकम्।
मूलाच्चतुर्दशंपुन्सां नक्षत्राणि क्रमात् बुधैः॥ ३६॥
वायुर्नपुन्सकेभे च स्त्रीणाभे चाभ्रदर्शनम्।
स्त्रीणापुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवतिनिश्चितम्॥ ३७॥

टीका—आर्द्रा से स्वाती पर्यंत १० नक्षत्र स्त्री सज्ञक हैं, विशाखा से ज्येष्ठा तक ३ नपुंसक हैं और मूल से मृगशिरा पर्यंत १४ पुरुष नक्षत्र हैं, नपुंसक नक्षत्र से स्त्री नक्षत्र मिले तो मेघ दर्शन हो और स्त्री पुरुष नक्षत्रों के योग होने से अवश्य वर्षा होती है॥ ३६॥ ३७॥

सूर्यर्क्षाणि चन्द्रर्क्षाणि च

अश्विन्यादित्रयं चैव आर्द्रादेः पञ्चकं तथा।
पूर्वाषाढादि चत्वारि चोत्तरारेवतीद्वयम्॥
उक्तानि शशिभान्यत्र प्रोच्यते सूर्यभान्यथा।
रोहिणी च मृगश्चैव पूर्वाफाल्गुनिकातथा॥ ३८॥

सूर्येसूर्येभवेद्वायुश्चन्द्रेचन्द्रेनवर्षति ।
चान्द्रसूर्येभवेद्योगस्तदावर्षतिमेघराट् ॥ ३९ ॥

टीका—अश्विनी भरणी कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तरा और रेवती को चन्द्र नक्षत्र, शेष नक्षत्रों को सूर्य नक्षत्र जाने (फल) दिन का नक्षत्र और महा नक्षत्र दोनों सूर्य के हों तो वायु और जो दोनों चन्द्र के हों तो मेघ नहीं वर्षे जो चन्द्र और सूर्य नक्षत्र का योग हो तो अच्छी वर्षा होवे ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

राज्यभंगादियोगः ।

यदिभवतिकदाचिच्चाऽश्विनी चद्यमायां ।
शशिरविकुजवारेस्वातिरायुष्मयोगे ॥
गगनचरपशूनां जङ्गमस्थावराणां ।
नृपतिजनविनाशोराज्यभङ्गस्तथोक्तः ॥ ४० ॥

टीका—शनि, रवि व भौमवार अमावस्या को अश्विनी वा स्वाती नक्षत्र एवं आयुष्मान योगके होने से पक्षी, पशु, जंगम, स्थावर राजा और प्रजाका नाश जाने । इस अशुभ योग के पड़ने से राजभंग योग होता है ॥ ४० ॥

सूर्य, चन्द्र, मंडल फलम् ।

रविशशि परिवेषे पूर्वयामे च पीड़ा ।
रविशशिपरिवेषे मध्ययामे च वृष्टिः ॥
रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये ।
रविशशिपरिवेषे राज्यभङ्गश्चतुर्थे ॥ ४१ ॥

टीका—रवि का अथवा चन्द्र का मंडल प्रथम प्रहर में होने से मनुष्य को पीड़ा, दूसरे प्रहर में होने से वर्षा, तीसरे प्रहर में होने से धान्यका नाश, चौथे प्रहर में होने से राज्य भंग होता है ॥ ४१ ॥

रात्रौधनुर्दिनेउल्का ताराचैव दिनेतथा ।
रात्रौ तु धूमकेतुश्च भूकम्पश्च तथैवहि ॥
ग...ानि दुष्टचिह्नानि देशक्षयकराणि च ॥ ४२ ॥

टीका—रात्रि में धनुष, दिनमें उल्का तथा नक्षत्रपात और रात्रिमें धूमकेतु का उदय तथा भूपिकंप आदि दुष्टचिह्न लक्षित हों तो देशका नाशजाने ॥४२॥

आषाढीयोगः तत्र कार्याकार्यविचारः—

आषाढ्यां समतुलिताधिवासितानां।
अन्येद्य यदधिकतामुपैति बीजम् ॥
तद्वृद्धिर्भवति न जायते यदूनं।
मंत्रोऽस्मिन् भवति तुलाभिमंत्रणाय ॥ ४३ ॥

टीका—आषाढ़मास की पूर्णिमाके दिन (नीचे लिखी रीति से) तराजू को अभिमंत्रित कर अनाज तौल कर रक्खे, यदि दूसरे दिन वह तोल में कुछ बढ़े तो अनाज बहुत उत्पन्न होगा और यदि वह तोल में घटे तो अनाज कम उत्पन्न होगा ऐसा जानें ॥ ४३ ॥

स्तोतव्या मन्त्रयोगेन सत्यदेवी सरस्वती।
दर्शयिष्यसि यत्सत्यं सत्ये सत्यव्रताह्यसि ॥ ४४ ॥

टीका—हे सत्यात्मिके देवी सरस्वती ! आप सत्यके सम्बन्धमें सत्यवक्ता हैं। इस कारण जो सत्य है, उसको दिखा दीजिये ॥ ४४ ॥

येन सत्येन चन्द्रार्कौ ग्रहा ज्योतिर्गणास्तथा।
उत्तिष्ठन्तीह पूर्वेण पश्चादस्तं व्रजन्ति च ॥ ४५ ॥
यत्सत्यं सर्वदेवेषु यत्सत्यं ब्रह्मवादिषु।
तत्सत्यं त्रिषुलोकेषु यत्सत्यमिहदृश्यताम् ॥ ४६ ॥
ब्रह्मणोदुहितासित्वमादित्येति प्रकीर्त्तिता।
काश्यपीगोत्रतश्चैव नामतोविश्रुतातुला ॥ ४७ ॥

टीका—जिसके सत्य से संसार में चन्द्र, सूर्य, ग्रह और समस्त ज्योतिः पदार्थ उदय होते और पीछे अस्त हो जाते हैं। सम्पूर्ण वेदों का सत्य आप मुझे दिखा दीजिये। कारण ब्रह्माकी पुत्री आदित्यानाम से प्रसिद्ध हो, हे देवी! आपका काश्यपगोत्र और नाम तुला (तराजू, नाम है) ॥ ४५ ॥ ४७ ॥

क्षौमं चतुः सूतकसन्निबद्धं षडङ्गुलं शिक्यकवस्त्रमस्याः ।
सूत्रप्रमाणं च दश ङ्गुलानि षडेवकक्षोभयशिक्यमध्ये ॥४८॥

टीका—की १० अंगुल लम्बी चार डोरियों से छः अंगुल बड़ी तराजू बाँधे और दोनों पल्लों की कक्षा को (जिसको पकड़ कर उठाते हैं) छः अंगुल को रक्खें ॥ ४८ ॥

याम्ये शिक्ये कांचनं सन्निवेश्यं शेषं द्रव्याण्युत्तरेम्भूनिचैवम् ।
तोयः कोप्यः स्यन्दिभिः सारसश्च वृष्टिर्हीना मध्यमाचौत्तमा च ४९

टीका—तराजू के दहिने पल्ले में कांचन (सुवर्ण) रक्खे और बाँये पल्ले में कुएँ का जल रक्खे, जल यदि दूसरे दिन तौल में भारी हो जाय तो वर्षा नहीं होगी, वृष्टि का जल दूसरे दिन भारी हो जाय तो मध्यम वर्षा जाने और नदी वा कुण्ड का जल दूसरे दिन भारी हो जाय तो उचित वर्षा होगी ऐसा जाने ॥ ४९ ॥

दन्तैर्नागागोहयाद्याश्चलोम्नहेम्नाभूपाः सिक्थकेन द्विजायाः ।
तद्धद्देशावर्षमासादिशश्च शेषद्रव्याण्यात्मरूपस्थितानि ॥ ५० ॥
हैमप्रधापारजतेनमध्यातयोरलाभे खदिरेण कार्या ।
विद्धः पुमान्येनशरेण सा वा तुलाप्रमाणेन भवेद्वितस्ति ॥५१॥

टीका—दन्त द्वारा नाग, लोम द्वारा अश्वादि पशु गण, स्वर्ण द्वारा राज गण, एक ग्रास अन्नद्वारा ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिस भाँति सन्तुष्ट हो जाते हैं देश वर्ष मांस और दिग्मंडल व आत्मरूप से विराजमान होने पर शेष सर्व द्रव्य उसी भाँति सन्तुष्ट हो जाते हैं। सोने की बनी तराजूकी दंडा तोलने में श्रेष्ठ चाँदी की मध्यम मानी गई है, इन दोनोंके अभाव में खैर की लकड़ी का ही दण्डी तराजू में डालकर तौले जिस शर से पुरुष विद्ध हो जाते हैं उसी आकार की लकड़ी की दंडी बनावे, दंडी सोने चाँदी और खैर आदि की भले हो परन्तु ठीक १ बालिस्तकी बराबर होनी चाहिये ॥ ५० ॥ ५१ ॥

हीनस्यानाशोऽभ्यधिकस्यवृद्धिस्तुल्येनतुल्यंतुलितंतुलायाः ।
एतत्तुलाकोशहरहस्यमुक्तंप्राजेशायोगेऽपिनरोविदध्यात ॥ ५२ ॥

टीका—तराजू से तोलने में जो पल्ला हल्का होता है वह ऊँचा हो जाता है और जो पल्ला भारी होता है वह नीचा हो जाता है। इसको तुला को शर-हस्य कहते हैं। मनुष्य रोहिणी योग में भी इसको धारण करते हैं ॥ ५२ ॥

पवनपरीक्षा ।

आषाढमासस्य च पौर्णमास्यां सूर्यास्तकाले यदिवातिवायुः ।
पूर्वस्तदाशस्ययुता च मेदिनी नन्दन्तिलोका जलदायिनोघनाः ५३

टीका-आषाढ मास की पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त के समय पूर्व दिशा की पवन चलने से पृथ्वी धन धान्य से युक्त होती है, मनुष्य सुखी रहते हैं और वर्षा भी अच्छी होती है ॥ ५३ ॥

कृशानुवातेमरणं प्रजानामन्नस्य नाशः खलु वृष्टिनाशः ।
याम्येमहीशस्य विवर्जितास्यात्परस्परं यान्ति नृपविनाशम् ॥५४॥

टीका—अग्निकोण की वायु चलै तो प्रजा और अन्न का नाश होता है, वर्षा भी नहीं होती है, दक्षिण का पवन न चलने से भूमि धन धान्य से रहित होती है, और राजाओं में परस्पर विरोध होता है ॥ ५४ ॥

नैशाचरो वाति यदाऽववातो न वारिदो वर्षति वारि भूरि ।
तदामहीशस्यविवर्जितास्यात् क्रन्दंतिलोकाःक्षुधयाप्रपीडिताः ५५

टीका-नैऋत्य कोण का पवन चलने से थोड़ी वर्षा होती है जिससे पृथ्वी धनधान्य से रहित होकर मनुष्य भूख से व्याकुल हो रोते फिरते हैं ॥ ५५ ॥

आसाढमासे यदि पौर्णमास्यां [सूर्यास्त काले यदिवारुणोऽनिलः ।
प्रवाति नित्यं सुखिनः प्रजाःस्यु-
जलान्न युक्ता वसुधातदा स्यात् ॥ ५६ ॥

टीका—आषाढ़ मास की पूर्णिमा को सूर्यास्त के समय पश्चिमको पवन चलै तो प्रजा सुखी धरणी धनधान्य से परिपूर्ण होती है ॥ ५६ ॥

वायव्यवातेजलदागमः स्यादन्नस्यनाशः पवनोद्धताद्यैः ।
सौम्येनिलेधान्यजलाकुलाधरानन्दन्तिलोकाभयदुःखवर्जिताः ५७

वायव्य कोण का पवन चलने से अधिक वर्षा अन्नका नाश और पृथिवी आँधी से व्याकुल रहै। उत्तर को हवा चलने से अच्छी वर्षा पृथ्वी धनधान्य से युक्त मनुष्य भय दुःख से मुक्त हो कर सुखी रहते हैं ॥ ५७ ॥

ईसानवृद्धि र्बहुवारिपूरिता धराचगावो बहुदुग्धसंयुक्ताः।
भवन्ति वृत्ताः फलपुष्पदायिनो भवेतऽभिन्नंदंन्ति नृपाःपरस्परम् ५८

अर्धोदय योग—

माघमाशिरवौदर्शेव्यतीपाते श्रगन्विते।
अर्धोदयाभिधोयोगः सूर्यपर्वशताधिकः।
अयमुक्तोदिवायोगः किंचिन्यूनोमहोदयः॥ १॥

गोविन्दद्वादशी—

यदा चापे जीवे भवनि घट राशौ दिन मणि—
स्तदा तारानाथे स्वभवनगते फाल्गुन सिते।
यदार्के द्वादश्यां भवति गुरुभं शोभनयुतं,
तदा गोविन्दाख्यो हरि दिवसमस्मिन् भूवितले॥ २॥

वारुणीपर्व—

वारुणोश समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी।
गङ्गायां यदि लभ्येत कोटि सूर्यग्रहैः समा॥ १॥
शनिवार समा युक्ता सा महावारुणी स्मृता।
शुभ योग समायुक्ता शनौशतभिषा यदि॥ २॥
महामहेति विख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत्।

गजछाया—

पितृपक्षे त्रयोदश्यां हस्तेऽर्केऽब्जे मघागते।
गजछाया भिधोयोगः श्राद्धेऽक्षय्यफलप्रदः॥ १॥

कपीलाषष्ठी—

आश्विने कृष्णपक्षे च षष्ठ्यां भौमोऽथ रोहिणी।
व्यतीपातस्तदा षष्ठी कपिलानन्त पुण्यदा॥

१ चैत्रेऽसितेवारुण ऋक्षयोगे त्रयोदशी सूर्यसुतस्यावारे।
योगे शुभःस्यान् महतीमहान्तं गङ्गाजलेऽर्कग्रहकोटि तुल्यम॥

व्यतीपातयोग—

वसुदस्तहरीश्वरोरगैः शशिना वासहितो विधुत्त्रयः ।
दिनकृद्दिवसे यदाभवे गवेत् व्यतिपातोऽभिहितस्तदाबुधैः ।

हरद्वार कुम्भ पर्व—

पद्मिनी नायके मेषे कुम्भराशिस्थिते गुरुः ।
गङ्गाद्वारे भवेद्योगः कुम्भनाम तदोत्तम[1]ः ॥ १ ॥

प्रयागे कुम्भ पर्व—

मकरे च दिवानाथे ह्यजगेच वृहस्पतौ ।
कुम्भयोगो भवेत् तत्र प्रयागे ह्यतिदुर्लभः ॥
माघे मेषे गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ ।
अमावस्यांतदा योगः कुम्भाख्यस्तीर्थ नायके ॥ २ ॥

उज्जयिनी कुम्भ पर्व—

घटे गुरुः शशीसूर्यः कुह्वां दामोदरे यदा ।
धरण्यांच तदा कुम्भो जायते खलु मुक्तिदः ॥ ३ ॥
कर्के गुरुस्तथा भानुश्चन्द्रत्त्वयस्तथा ।
गोदावर्य्यां तदा कुम्भो जायतेऽवनिमण्डले ॥ ४ ॥
षष्ठी च सप्तमीचैव वारश्चेदशुभालिनः ।
तदा पद्मकयोगोऽयं कोटिसूर्यग्रहैः सगः ।
चतुर्दश्याष्टमीकृष्णा त्वमावश्या च पूर्णिमा ।
पुण्ययानि पञ्चपर्वाणि संक्रान्ति दिवसंतथा ॥

---

१ चतुर्दशो मेषगतस्य भास्करे, प्रवर्ध पौष्णादिन कृद्दिने यदा ।
धा कुम्भनाम्नि सकला घनासिनी, गङ्गा हरद्वार समागमे तदा ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

बृहज्ज्योतिषसारे विशेषः।

पूर्वं यद् व्यरचं महत्तरमतिप्रौढं सुटीकान्वितम्।
ज्योतिस्सार सुनायकं सुललितं ग्रन्थं सताम्प्रीतये ॥
तस्यांशानधुनाप्रवच्मिसरलाञ्छिष्योपयोगीन् खलु।
श्रीवैद्यादिकनाथकस्य तनयेनोक्तः मुहुः सादरम् ॥ १ ॥

नत्वा गंगाधरं भक्त्या रच्यते विदुषा मुदे।
दैवज्ञरत्नहारस्य गृहरत्नं मनोहरम् ॥ १ ॥

श्री गंगाधर (महादेव) को भक्ति से नमस्कार कर दैवज्ञ रत्न हार के मनोहर गृहरत्न को बनाता हूँ।

गृह निर्माण करने की इच्छा से आये हुए मनुष्य के मनोरथ के परिपूर्णार्थ विद्वानों को चाहिये कि पहले यह विचारें कि जिस जगह गृह बनाना चाहते हैं वह जगह सहेगी कि नहीं, इस विचार पर ज्योतिष भंडार में अनेक प्रकार का विचार लिख रक्खा है, उन विचारों में से अपनी मन की प्रसन्नता और काकिणी विचार तथा दशा विचार को ही सर्व शिरोमणि माना है काकिणी विचार नवीन ग्राम में विचार करने के लिये निर्धारित किया है और और दशा का विचार अपने प्राचीन जन्मभूमि के ही ग्राम में नूतन गृह बनाने के निमित्त विचार करना योग्य है मन और नेत्र की प्रसन्नता नवीन प्राचीन सभी ग्रामों में होने से ठीक होता है।

जलाशय, वाटिका, चरणी, गोशाला, अश्वशाला, गजसाला तथा दलान आदि में भी दशा विचार करना उचित है। इस विचार के बाद उस मनुष्य

के नाम नक्षत्र से, जिस नक्षत्र से एक नारी और मकूट की विशेष शुद्धि विचारते हुए अधिक गुण बनें उस नक्षत्र के ही पिण्ड के अनुसार यजमान के दीर्घ विस्तार तथा आय आदि को श्रेष्ठ विचार के कहे कि यही पिण्ड आपको बनैगा, पिण्डों में १ से लेकर महाशंख पर्यन्त के अंग २७ नक्षत्रों में से किसी न किसी का पिण्ड रहता है । इन पिण्डों में से २१६ पिण्ड मुख्य पिण्ड हैं । मुख्य पिण्ड में २१६ का दुगुना, तीगुना, चौगुना आदि युक्त करने से सिद्ध पिण्ड होता है, जहाँ २१६ के भीतर कार्य हो जाता है वहाँ मुख्य पिण्ड ही की सिद्ध पिण्ड संज्ञा भी रहती है, पिण्ड को क्षेत्रफल तथा रकवा भी कहते हैं । दीर्घ उत्तर, दक्षिण, विस्तार पूर्व, पश्चिम गृहादि की रहना चाहिये ।

दशा जानने का प्रकार—

गज पञ्च रसा युग सप्त मही ,
गुण नेत्र सुरेश दिशादि क्रमात् ।
पुरदिग्गृहवल्लभ नामयुता,
नवभागहृताभवनस्यदशा ।। २ ।।
नागेष्वतुश्रुतीसप्त महिवह्निकराः क्रमात् ।
अवर्गादि स्वराङ्का वै गदितो धरणीसुरैः ।। ३ ।।
रविचन्द्रमहीसुतराहुसुरेश्वरः
पूज्यदिनेशसुताशशिजः ।
ध्वजदैत्यगुरु च दशा शुभदाः ,
कपिचन्द्रसुरेज्यनिशीशसुताः ।। ४ ।।

पूर्वादि दिशाओं का ८, ५, ६, ४, ७, १, ३, २ यह दशा बोध के लिए दिशाओं का अंक है और इसी प्रकार अवर्गादि आठों वर्गों का भी स्वरांक ८,५,६,४,७,१,३,२ होना पण्डितों ने कहा है, दिशाका स्वरांक, पुर का स्वरांक, गृहेश का स्वरांक एकत्र जोड़ने पर जो हो उसमें ९ का भाग देने से एक आदि शेष बचने पर सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र की दशा क्रम से होती है, इनमें शुक्र, चन्द्र, गुरु, बुध की दशा शुभ फल देती है ।

पिण्ड बनाने का प्रकार ।

इष्टर्क्षमेकरहितं निघ्नं यमशरेन्दुभिः ।
रूपाङ्करहितायं यन्निघ्नं चन्द्राष्टभिस्तदाः ॥ ५ ॥
युतं सप्तदशं तत्र भाजितं भूपबाहुभिः ।
शेषं पिंडं भवेन्मुख्यमग्रे भूपाश्विभिर्युतम् ॥ ६ ॥

इष्ट नक्षत्र में १ हीन करके उसको १५२ से गुणें, फिर इष्ट आय में १ हीन कर ८१ से उसे गुणे फिर इन गुणित अंकों में १७ युक्त कर उसमें २१६ का भाग देने से शेष मुख्य पिण्ड होता है । फिर सिद्धपिण्ड के लिये २१६ को जे बार जोड़ने से अभीष्ट पिण्ड आवें ते बार जोड़े ॥ ५ ॥ ६ ॥

आयादि	आय	वार	अंश	धन	ऋ.	नक्षत्र	तिथि	योग	आयु
गुणक	९	९	६	८	३		८	४	८
भाजक	८	७	९	१२	८	२७	१५	२७	१२०

पिण्ड के आयादि से गुणक के गुणा कर भाजक का भाग देने से आय, वार इत्यादि होते हैं पिण्ड में विस्तार के अंग का भाग देने से दीर्घ होता है । यदि दीर्घ बनाने में हाथ के बाद शेष बचे तो २४ से गुणा कर विस्तारांक के भाग से अंगुल निकाले । इस बार भी यदि शेष रहे तो ८ से गुणा करके विस्तार के भाग से यव बनावें । पिण्ड वाले नक्षत्र को ८ से शेषित करने से व्यय होता है, १,२,४,८ पूर्वादि दिशाओं का शाला ध्रुवांक है । शाला ध्रुवांक में १ मिलाने से ध्रुवादि गृह होते हैं, पिण्ड में व्यय ध्रुवादि नामाक्षर की संख्या युक्त कर ३ का भाग देने से १ शेष में इन्द्रांश, २ शेष में यमांश, ३ शेष में राज अन्श होता है । इन्द्रांश और राज अन्श शुभ होते हैं । यमांश अशुभ होता है ।

यह सब सारणी में लिख दिया है ।

टिप्पणी—बिना मुख का गृह १ 'पू. मु.' २ 'द. मु.' ३ 'पू. द. मु.' ४ 'प. मु.' ५ 'पू. प. मु.' ६ 'पू. उ. मु.' १० प. उ. मु.' १३ वां 'गृह दो अक्षर के नाम वाले हैं । 'पू. द. प. मु' ८ 'उ. मु.' ९ 'द उ. मु.' ११ 'पू. द. उ. मु. १२ 'पू. प. उ.' १४ 'द. प. उ.' मुख, १५ चतुर्दिङ्मुख १६ वां ये सब गृह दो अक्षर के नाम के हैं और केवल सातवाँ गृहजिसको द प. मुख रहना है वह तीन अक्षर का गृह है ।

मुख्य पिं	१४३	१९५	५	३९	६९	१०७	१४१	३	५	४३	५१	९३
क्षेपकाः	०	०	२१६	२१६	२१६	२१६	२१६	२१६	४३२	४३२	४३२	४३२
सिद्धपिंड	१४३	१९५	२२१	२५५	२८५	३२३	३५७	३६९	४३७	४७५	४८३	५२५
विस्ता.ह.	११	१३	१३	१५	१५	१७	१७	१९	१९	१९	२१	२१
दीर्घ ह.	१३	१५	१७	१७	१९	६	२१	२१	२३	२५	२	२५
आया	७	३	५	७	५	३	५	७	५	३	३	५
वाराः	६	५	१	६	३	२	७	७	६	५	७	७
अंशाः	३	९	३	९	९	३	९	९	३	६	८	९
धनानि	४	१२	४	१२	१२	४	१२	१२	४	८	१२	१२
ऋणानि	५	१	७	५	७	१	७	५	७	१	१	७
नक्षत्राणि	१०	२१	२३	१५	१२	१९	२१	६	१३	२०	३	१५
तिथयः	४	१५	१३	१५	१५	४	६	१२	१	५	९	१५
योगाः	५	२४	२०	२२	६	२३	२१	३	२०	१०	१५	२
आयु. पि	६४	१२०	८८	१२०	१२०	६४	९६	७२	१६	८०	२४	१२०
व्यय	२	५	७	७	४	३	५	६	५	४	३	७
त्रिशे.पि.	२	३	२	३	३	२	३	३	२	१	३	
नक्षत्रदि.	द.	प.	उ.	द.	द.	प.	प.	पू.	द.	प.	पू.	द.
द्वारदिशा	पू. प.	द. उ.	पू. प.	पू. प.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	पू. प.
द्व्यक्षर	रा.	इ	य.	रा.	रा.	इ.	इ.	य.	रा.	र.	य.	रा.
त्र्यक्षर	इ.	य.	रा.	इ.	इ	य.	य.	रा.	इ.	ग.	रा.	इ.
चतुरक्षर	य.	रा.	इ.	य.	य.	रा.	र.	इ.	य.	रा.	इ.	य.

मुख्य पिं.	१३५	१४७	१८९	१९	२७	७१	१२७	१३५	१०९	२७	८१	३५
क्षेप काः	१३२	४३२	४३२	६४८	६४८	६४८	६४८	६४८	६४८	८६४	८६४	८६४
सि.पिं.	५६७	७५	६२	६६७	६७५	७२५	७०५	७८३	८३७	८६१	६४५	६६६
वि. ह.	२१	२३	२७	२३	२५	२५	२५	२७	२७	२७	२७	२९
दी. ह.	७	२५	२०	२९	२७	२९	३१	२९	३१	३३	३५	३१
आयाः	७	७	५	३	३	५	७	७	५	३	१	३
वाराः	७	२	३	४	६	१	३	५	१	४	७	६
अंशाः	९	३	९	६	९	३	६	९	९	९	९	३
धनानि	१२	४	१२	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	४
ऋणानि	५	५	७	१	१	७	५	५	७	१	३	१
नक्षत्राणि	२७	१०	७	१७	२७	२२	१७	२७	२७	२७	२७	१०
तिथयः	६	१०	३	११	१५	१०	५	९	६	३	१५	७
योगाः	२७	५	१७	२२	२७	११	२२	२७	२७	२७	२७	५
आयूंषि	१६	४०	४८	५६	१२०	४०	८०	२४	९६	४८	१२०	११२
व्यय	३	२	३	१	३	६	१	३	३	३	३	२
त्रिशे. पि.	३	२	३	१	३	२	१	३	३	३	३	२
नक्ष. दि.	उ.	द.	उ.	प.	उ.	प.	प.	उ.	उ.	उ.	[illegible]	द.
द्वार दि.	पू. प.	पू. प.	पू. प.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	पू. प.	पू. प.	पू. प.	पू. प.
द्व्यक्षर	य.	रा.	य.	इ.	य.	इ.	इ.	य.	य.	य.	य.	रा.
त्र्यक्षर	रा.	इ.	र.	य.	रा.	य.	य.	रा.	रा.	रा.	रा.	इ.
चतुरक्ष	इ.	य.	इ.	रा.	इ	रा.	रा	इ.	इ.	इ.	इ.	य.

मुख्यपिं.	९३	१५१	२०९	५१	१५९	५	६७	१२९	९१	७५	१४१	२०७
क्षेपकाः	८६४	८६४	८६४	१०८०	१०८०	१०८०	१०८०	१०८०	१०८०	१०८०	१०८०	१०८०
सिद्धि पिं.	९५७	१०१५	१०७३	११३१	१०२३	१०८५	११४७	१२०९	१२७१	११५५	१२२१	१२८७
वि. हस्त	२९	२९	२९	२९	३१	३१	३१	३१	३१	३३	३३	३३
दी. ह.	३३	३५	३७	३९	३३	३५	३७	३९	४१	३५	३७	३९
आयाः	५	७	१	३	७	५	३	१	७	३	५	७
वाराः	३	७	४	१	२	२	५	३	१	७	४	६
अंशाः	९	६	३	९	९	३	६	९	३	९	९	९
धनानि	१२	८	४	१२	१२	४	८	१२	४	१२	१२	१२
ऋणानि	७	५	३	१	५	७	१	३	५	१	७	५
नक्षत्राणि	१५	२०	२१	३	३	१३	२३	६	१६	६	३१	९
तिथयः	६	५	४	३	९	१०	११	१२	१३	१५	३	६
योगाः	२१	१०	२६	२५	१५	२०	१५	३	८	३	२४	१८
आयु पिं	९६	८०	६४	४८	२४	४०	५६	७२	८८	१२०	४८	९६
व्ययः	७	४	१	३	३	५	७	६	८	६	५	१
त्रिशे. पिं.	३	२	१	३	३	२	१	३	२	३	३	३
नक्ष. दि.	द.	प.	उ.	पू.	पू.	द.	उ.	पू.	द.	पू.	प.	पू.
द्वार दि.	पू. प.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	पू. प.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	द. उ.
द्व्यक्षर	रा.	य.	इ.	य.	य.	रा.	इ.	य.	रा.	य.	इ.	य.
त्र्यक्षर	इ.	रा.	य.	रा.	रा.	इ.	य.	रा.	इ.	रा.	य.	रा.
चतुरक्षर	य.	इ.	रा.	इ.	इ.	य.	रा.	इ.	य.	इ.	रा.	इ.

मुख्य पिं.	५७	१५३	२१५	६६	१३८	२०९	६३	१४७	५	७९	१५३	११
क्षेपकाः	१२९६	१२९६	१०८०	१२९६	१२९६	१२९६	१५१२	१२९६	१५१२	१५१२	१५१२	१७२८
सि. पिं.	१३५३	१४१९	१२९५	१३६५	१४३५	१५०५	१५७५	१४४३	१५१७	१५८१	१६६५	१७३९
हि. ध.	३३	३३	३५	३५	३५	३५	३५	३७	३७	३७	३६	३७
दी. ध	५१	४३	३७	३९	४१	४३	४५	३९	४१	४३	४५	४७
आयाः	१	३	७	५	३	१	७	३	५	७	१	३
वाराः	४	३	७	७	७	७	७	२	३	४	५	६
अंशाः	९	९	३	९	६	३	९	९	३	६	९	३
धनानि	१२	१२	४	१२	८	४	१२	१२	४	८	१२	४
ऋणानि	३	१	१	७	१	३	५	१	७	५	३	१
नक्षत्राणि	२४	१२	१९	१२	५	२५	१८	१५	१३	११	९	७
तिथयः	९	१२	१०	१५	५	१०	१५	९	१	८	१५	७
योगाः	१२	६	२३	६	१६	१९	९	२१	२०	१९	१८	१७
आयूंषि	२४	७२	४०	१२०	८०	४०	१२०	२४	१६	८	१२७	११२
व्ययः	८	४	३	४	५	१	२	७	५	३	१	७
त्रिधो पिं.	३	३	२	३	१	२	३	३	२	१	३	२
नक्ष. दि.	उ.	द.	प.	द.	पू.	उ.	प.	द.	द.	द.	पू.	पू.
द्वार दि.	पू. प.	पू. प.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	पू. प.	पू. प.	पू. प.	द. उ.	द. उ.
द्व्यक्षर	इ.	रा.	इ.	रा.	य.	य.	इ.	रा.	रा.	रा.	रा.	य.
त्र्यक्षर	य.	इ.	य.	इ.	रा.	रा.	य.	इ.	इ.	इ.	इ.	रा.
चतुरक्षर	रा.	य.	रा.	य.	इ.	इ.	रा.	य.	य.	य.	य.	इ.

मुख्यपिं.	८७	१६५	२७	१०५	१८३	४५	१२३	३५	११७	१९९	६१	१४७
क्षेपकाः	१५१२	१५१२	१७२८	१७२८	१७२८	१९४४	१९४४	१७२८	१७२८	१२७८	१९४४	१९४४
सिद्धि पिं.	१५९९	१६७७	१७५५	१८३३	१९११	१९८९	२०६७	१७६३	१८४५	१९[illegible]७	२००९	२०९१
वि. ह्रस्व	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४१	४१	४१	४१	४१
दी. ह.	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	४३	४५	४७	४९	५१
आयाः	७	५	३	१	७	५	३	३	५	७	१	३
वाराः	६	१	३	५	७	२	४	५	१	४	७	३
अंशाः	९	९	९	९	९	९	९	९	९	६	३	९
धनानि	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	१२	८	४	१२
ऋणानि	५	७	१	३	५	७	१	१	७	५	३	१
नक्षत्राणि	२१	२४	२७	३	६	९	१२	१०	१८	२६	७	१५
तिथयः	१२	६	१५	९	३	१२	६	४	१५	११	७	३
योगाः	२४	१२	२७	१५	३	१८	६	५	९	१३	१७	२१
आयुः पिं	७२	९६	१२०	२४	४८	२	९६	६४	१२०	५६	११२	४८
व्ययः	५	८	३	३	६	१	४	२	२	२	७	७
शिरो. पिं.	३	३	३	३	३	३	३	२	३	१	२	३
नक्ष. दि.	प.	उ.	उ.	पू.	पू.	पू.	द.	द.	प.	उ.	पू.	द.
द्वार दि.	द. उ.	पू. प.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	पू. प.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	पू. प
द्व्यक्षर	इ.	इ.	य.	य.	य.	रा.	रा.	रा.	इ.	रा.	य.	रा.
त्र्यक्षर	य.	य.	रा.	रा.	रा.	इ.	इ.	इ.	य.	रा.	रा.	रा.
चतुरक्षर	रा.	रा.	इ.	इ.	इ.	य.	य.	य.	रा.	इ.	इ.	इ.

मुख्य पिं.	१३	९७	२०७	७७	१६३	३३	११९	१०५	३५	१६१	११	४५
क्षेपकाः	२१६०	२१६०	१७२८	१९४४	१९४४	२१६०	२१६०	२१६०	२३१६	२३१६	१९४४	२१६०
सि.पि.	२१७३	२२५७	१९३५	२०२१	२१०७	२१९३	२२७९	२२६५	२३५१	२४७७	१९५५	२२०५
वि. ह.	४१	४१	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४५	४५
दी. ह.	५३	५५	४५	४७	४८	५१	५३	५५	५७	५९	४७	४९
आयाः	५	७	७	५	३	१	७	५	३	१	३	५
वाराः	६	२	६	३	७	४	१	५	२	६	२	७
अंशाः	६	३	९	३	६	९	३	६	९	३	९	९
धनानि	८	४	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	१२	१२
ऋणानि	७	५	५	७	१	३	५	७	१	३	१	७
नक्षत्राणि	२३	४	९	२२	८	२१	७	२०	६	१९	१८	९
तिथयः	१४	१०	१५	१३	११	९	७	५	३	१	१५	१५
योगाः	२५	२	१८	११	४	२४	१७	१०	३	२३	९	१८
आयुः पिं	१०५	४०	१२०	८८	५६	२३	११२	८०	४८	१६	१२०	१२०
व्ययः	७	४	१	६	८	५	७	४	६	३	२	१
त्रिशे. पि.	१	२	३	२	१	३	२	१	२	२	३	१
नक्ष. दि.	उ.	पू.	पू.	प.	पू.	प.	पू.	प.	पू.	प.	प.	पू.
द्वार दि.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	द. उ.
द्वयक्षर	इ.	य.	रा.	रा.	य.	इ.	य.	इ.	इ.	इ.	इ.	इ.
त्र्यक्षर	य.	रा.	इ.	इ.	रा.	य.	रा.	य.	य.	य.	य.	य.
चतुरक्षर	रा.	इ.	य.	य.	इ.	रा.	इ.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.

कुक्ष पिं	१३५	९	९९	१८९	६३	१५३	२७	१४३	२१	११५	२०८	८७
क्षेपकाः	२१६०	२३७६	२३७६	२३७६	२५९२	२५९२	२८०८	२१६०	२३७६	२३७६	२३७६	२५९२
सिद्धपिंड	२२९५	२३८५	२४७५	२५६५	२६५५	२७४५	२८३५	३२०३	२३९७	१४९१	२५८५	२६७९
विस्तार ह.	४५	५१	५१	५१	४	५१	४५	४७	५७	५७	४७	४७
दीर्घ ह.	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३	४९	६१	५६	५५	५७
आयाः	७	३	३	५	७	१	३	७	५	३	१	७
वाराः	५	३	१	६	४	२	७	७	६	५	४	३
अंशाः	९	९	९	९	९	९	९	३	९	६	२	९
धनानि	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	१२	८	४	१२
ऋणानि	७	१	१	७	५	३	१	५	७	१	३	५
नक्षत्राणि	२७	१८	९	२७	१८	९	२७	१०	६	२	२५	२१
तिथयः	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	४	६	८	१०	१२
योगाः	२७	९	१८	२७	९	१८	२७	५	३	२	२६	२४
आयु पिं	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	६४	९६	८	४०	७२
व्यय	३	२	१	३	२	१	३	२	६	२	१	५
त्रिशो. पिं.	१	१	३	३	३	२	३	२	३	१	२	३
नक्षत्रनाडि.	उ.	प.	पू.	उ.	प.	पू.	उ.	पू.	पू.	उ.	द.	द.
द्वारदिशा	पू. प.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	द. उ	पू. प.	पू. प.	पू. प.
द्वयन्तर	रा.	य.	रा	य.	इ.	रा.	य.	रा.	य.	रा.	य.	इ.
त्रयन्तर	इ.	रा.	इ.	रा.	रा.	इ.	रा.	इ.	रा.	रा.	रा.	रा.
चतुरन्तर	य.	इ	य.	इ.	इ	य.	इ	य.	इ.	इ.	इ.	इ.

मुख्य पिं.	१८१	५९	१५३	१२३	५	१०३	२०१	८३	१८१	६३	१६१	१११
चेदकाः	२०६२	२८०८	२८०८	२३७६	२५६२	२५६२	२५६२	२८०८	२८०८	३०२४	३०२४	२५६२
सिद्धपिंड	२७७३	२७६७	२९६१	२४९९	२५९७	२६९५	२७९३	२८९१	२९८९	३०८७	३१८५	२७०३
विस्ता ह.	४७	४७	४७	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५१
दीर्घ ह.	५९	६१	६३	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३	६५	५३
आयाः	५	३	१	३	५	७	१	३	५	७	१	७
वाराः	२	१	७	७	७	७	७	७	७	७	७	२
अंशाः	६	२	९	९	३	६	९	३	६	९	३	९
धनानि	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	१२
ऋणानि	७	१	३	१	७	५	३	१	७	५	३	५
नक्षत्राणि	१७	१३	९	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२४
तिथयः	१४	१	३	१२	१	५	९	१३	२	६	१०	९
योगाः	२२	२०	१८	६	२०	७	२१	८	२२	९	२३	१२
आयु: पिं	१०४	१६	४८	७२	१६	८०	२४	८८	३२	९६	४०	२४
व्यय	१	५	१	४	५	६	७	८	१	२	३	८
त्रिशो. पि.	१	२	३	३	२	१	३	२	१	३	३	३
नक्षत्रदि.	प.	द.	पू.	द.	द.	द.	द.	द.	प.	प.	पू.	उ.
द्वारदिशा	द. उ.	पू. प.	द. उ.	पू. प.	पू. प.	पू. प.	पू. प.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	पू. प.
द्व्यक्षर	इ.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	इ.	य.	य.	इ.
त्र्यक्षर	य.	इ	इ.	इ.	इ.	इ.	इ.	इ.	य.	रा.	रा.	य.
चतुरक्षर	रा.	य.	य.	य.	य.	य.	य.	य.	रा.	इ.	इ.	रा.

मुख्य पि.	२१३	६६	२०१	८७	१०६	७५	१७७	१०७	११३	१०३	१०६	६६
क्षेपकाः	२५६९२	२८०८	२८०८	३०२४	३०२४	३२४०	३२४०	२८०८	२८०८	३०२४	३०२४	३२४०
सि. पिं.	२८०५	२६०७	३००६	३१११	३२१	३३१५	३४१७	२६१५	३०२१	३१२७	३२२३	३३२६
वि. ह.	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५३	५३	५३	५२	५२
दी. ह.	५५	५७	५६	६२	६३	६५	६७	५५	५७	५६	६१	६३
आयाः	५	३	१	७	५	३	१	३	५	७	१	२
वाराः	३	४	५	६	७	१	२	६	१	३	५	७
अंशाः	६	६	६	६	६	६	६	३	६	६	३	६
धनानि	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	१२	८	४	१२
ऋणानि	७	१	३	५	७	१	३	१	७	५	३	१
नक्षत्राणि	३	६	१५	२१	२७	६	१२	१८	३	१५	२५	६
तिथयः	१५	६	१२	३	६	१५	६	१०	३	११	४	१२
योगाः	१५	१८	२१	२४	२७	३	६	२३	१५	७	२६	१८
आयु. वि	१२०	६६	७२	४८	२४	१२०	६६	४०	४८	५६	६४	७१
व्ययः	३	१	७	५	३	६	४	३	३	६	१	१
त्रिशे. पि.	३	३	३	३	३	३	३	२	३	१	२	३
नक्ष. दि.	पू.	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	पू.	द.	उ.	पू.
द्वार दि.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	पू. प.	पू. उ.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	पू. प.	द. उ.
द्व्यक्षर	य.	रा.	रा.	इ.	य.	रा.	रा.	इ.	य.	रा.	य.	रा.
त्र्यक्षर	रा.	इ.	इ.	य.	रा.	इ.	इ.	य.	रा.	र.	रा.	इ.
चतुरक्षर	इ.	य.	य.	रा.	इ.	य.	य.	रा.	इ.	य.	इ.	य.

मुख्य पि.	२०५	२१७	२०१	१०७	५	११४	९	११३	१७	१२३	१७	१२३
क्षेपकाः	३२४०	३२४०	३४२५	३२८०	३२४०	२३५०	३४५६	३४५६	३६७०	३६७२	३८८८	३२४०
सि. पि.	३४४५	३०५१	३६१७	३१३५	३२३५	३३९५	३४६५	३५७५	३६८५	३७९५	३९०५	३३६३
हि. ह.	५३	५३	५३	५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५७
दी. ह.	६५	६७	६९	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१	५९
आयाः	५	७	१	७	५	३	१	७	५	३	१	३
वाराः	२	४	६	५	१	४	७	३	६	२	५	६
अंशाः	६	३	९	९	३	६	९	३	६	९	३	९
धनानि	८	४	१२	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	१२
ऋणानि	७	५	३	५	७	१	३	५	७	१	३	१
नक्षत्राणि	२०	४	१५	२४	१३	२	१८	७	२३	१२	१	१२
तिथयः	५	१३	६	१५	१०	५	२१	१०	५	१५	१०	९
योगाः	१०	२	२१	१२	२०	१	९	१७	२५	६	१४	६
आयू. पि.	८०	८८	९६	१२०	४०	८०	१२०	४०	८०	१२०	४०	२४
व्यय	४	५	७	८	५	२	२	७	७	४	१	४
त्रिशे पि.	१	२	३	३	२	२	३	२	१	३	२	३
नक्ष. दि.	प.	पू.	द.	उ.	द.	उ.	द.	प.	उ.	द.	उ.	उ.
द्वार दि.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	पू. प.	पू. प.	प. पू.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	पू. प.	पू. प.	पू. प.
द्वयक्षर	इ.	रा.	रा.	इ.	रा.	रा.	इ.	य.	इ.	रा.	य.	रा.
त्र्यक्षर	य.	इ.	इ.	य.	इ.	इ.	य.	रा.	य.	इ.	य.	इ.
चतुरक्षर	र	य.	य.	रा.	य.	य.	रा.	इ.	रा.	य.	इ.	य.

मुख्य पिं.	२१	१३५	३३	१५७	५५	१५९	५७	१४३	१६३	६५	१८३	१६७
दीपकाः	३४५६	३५५६	३६७२	३६७२	३८८८	३८८८	४१०५	३४-६	३६७२	३५८८	३८८८	३६७२
सि. पिं.	३४७७	३५६१	३७०५	३८१९	३९ ३	४०४७	४१६१	३·९९	३८३५	३९·३	४०७१	३८४३
लि. ह.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५९	५९	५९	५९	६१
दी. ह.	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	६१	६५	६७	६९	६३
आयाः	५	७	१	३	५	७	१	७	३	१	७	३
वाराः	३	७	४	१	५	२	६	२	५	३	१	७
अंशाः	९	९	९	९	९	९	९	३	६	३	९	९
धनानि	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	८	४	१२	१२
ऋणानि	७	५	३	१	७	५	३	५	१	३	५	१
नक्षत्राणि	६	२१	२१	१५	९	३	२४	१०	८	७	६	१८
तिथयः	६	३	१५	१२	९	६	३	१०	५	४	३	९
योगाः	३	२७	२४	२१	१८	१५	१२	५	४	१७	३	९
आयुः पिं	६६	९८	१२०	७२	२४	९६	४८	११२	८०	६४	४८	२४
व्यय	६	५	५	७	१	३	८	२	८	७	६	२
त्रिशे. पिं.	३	३	२	२	३	२	२	१	१	२	२	३
गृह. दि.	पू.	प.	द.	द.	पू.	पू.	द.	उ.	पू.	पू.	पू.	प.
द्वार दि.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	द. उ.	द. उ.
द्व्यक्षर	य.	इ.	इ.	रा.	रा.	य.	रा.	य.	य.	य.	य.	इ.
त्र्यक्षर	रा.	य.	य.	इ.	इ.	रा.	य.	रा.	रा	रा.	रा.	य.
चतुरक्षर	इ.	रा.	रा.	य.	य.	इ	इ.	इ.	इ.	इ.	इ.	रा.

मुख्य पिं.	७७	१६९	१०५	१११	१३३	१५५	२०७	११७	२७	३५	१६५	७५
दोषकाः	३८८८	[illegible]८८८	१४०३	४३२०	४३२०	४३२०	[illegible]८८८	५१०४	४३२०	४३२०	४३२०	५५४०
सि. पिं.	३६६५	४०८७	४२०६	४३३१	४४५३	४५७५	४०६५	४२२१	४३४७	४३५५	४४८५	४६१५
थि. ह.	६१	६१	६२	६२	६१	६१	६३	६३	६३	६५	६५	६५
दी. ह.	६५	६७	६९	७१	७३	७५	६५	६७	६९	६७	६९	७१
आयाः	७	७	१	३	५	७	७	५	३	३	५	७
वाराः	६	६	७	१	७	१	७	२	७	२	३	-४
अंशाः	९	६	९	३	६	९	९	९	९	३	९	६
धनानि	१२	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	४	१२	८
ऋणानि	५	५	३	१	७	५	५	७	१	१	७	५
नक्षत्राणि	२१	२६	३	७	११	१५	९	१८	२७	१०	२४	११
तिथयः	६	२	१५	१३	१४	१२	१५	३	६	१०	१५	५
योगाः	२४	१३	१५	१७	१९	२१	१८	९	२७	५	२१	१९
आयु: पि	९६	३२	१२०	८८	१०४	७२	१२०	४८	६४	४०	१२०	८०
व्ययः	५	२	२	७	३	७	१	२	३	२	८	३
त्रिशो. पिं.	२	१	३	२	१	३	३	३	३	२	३	१
नक्ष. दि.	प.	उ.	पू.	पू.	द.	द.	पू.	प.	उ.	द.	उ.	प.
द्वार दि.	द. उ.	पू. प.	द. उ.	द. उ.	पू. प.	पू. द.	द. उ.	द. उ.	पू. द.	पू. प.	पू. प.	पू. प.
द्व्यक्षर	रा.	य.	य.	य.	रा.	रा.	रा.	इ.	य.	रा.	इ.	रा.
त्र्यक्षर	इ.	रा.	रा.	रा.	इ.	इ.	इ.	य.	रा.	इ.	य.	इ.
चतुरक्षर	य.	इ.	इ.	इ.	य.	य.	य.	रा.	इ.	य.	रा.	य.

भौमार्किचन्द्रगेहेऽर्के गृहारंभः शुभप्रदः ॥ ७ ॥

मङ्गल का गृह मेष वृश्चिक के सूर्य में और शनि का गृह मकर, कुम्भ के सूर्य में तथा चन्द्रमा का गृह कर्कराशि के सूर्य में होना शुभ है, सूर्य के स्थित नक्षत्र से जो ८ वाँ नक्षत्र उससे १८ नक्षत्र के भीतर यदि रो. मृ. पुष्य ३ उ. ह. चि. स्वा. अनु. ध. श. रे. ये नक्षत्र प्राप्त होने पर सूर्य मङ्गल से भिन्नवारों में स्थिर द्विस्वभाव लग्नों में गृहारंभ करे। मध्यरात्रि में गृहारंभ न करे और मध्य खास मध्य जगह को छोड़ कर और प्रत्येक दिशा के आठ २ भागों में दो दो भाग कोणों के तरफ त्याग के द्वार बनाना शुभ है। आँगन की लंबाई चौड़ाई को जोड़ कर ९ का भाग देने से १, २, ५, ९ शेष शुभ है नापदान वायव्य उत्तर ईशान तथा किसी के मत से पूर्व में बनाना श्रेष्ठ है।

वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन विकल्प में श्रावण में अमा रिक्ता रहित तिथि रवि भौम रहित वारों में द्वास्थ मृदु. ध्रुव नक्षत्र में गृह प्रवेश शुभ है परन्तु सूर्य के नक्षत्र से ६ वें से १२ वें तक तथा २२ वें से २७ तक जो नक्षत्र प्राप्त हो तब श्रेष्ठ है, और स्थिर द्विस्वभाव लग्न तथा वामरवि रहने पर प्रवेश करे। पूर्व मुखी द्वार हो तो सूर्य जिस राशि में रहे उससे दूसरा राशि से ५ राशियों में दक्षिण द्वारका मुख हो तो सूर्य के रहने वालीराशि से ५ वीं राशि से ५ राशि, पश्चिम मुख में सूर्य के रहने वाली राशि से ८ वीं राशि से ५ राशि और उत्तर मुख का गृहद्वार हो तो सूर्याक्रान्त राशि से ११ वीं राशि से ५ राशि में गृह प्रवेश करने से वाम रवि रहते हैं।

अथ द्विघटिकामुहूर्त का विचार।

त्रिपुरहरमुहूर्तं केन दृष्टं श्रुतं वा
सकलमपीह दृष्टं शम्भुना भूतहेतोः।
यदि शुभमशुभं वा यादृशं तादृशं वा
तदिदमपि मुनीन्द्रैः सर्वदा चिन्तनीयम् ॥८॥

त्रिपुरासुर के संग्राम के समय इस द्विघटी का मुहूर्त को शंकर जी निर्माण किये त्रिपुर हर मुहूर्त भी इसका नाम है। इसको पहले कोई भी देखा सुना नहीं था। शिवजी समस्त प्राणियोंके कल्याणार्थ प्रकट किये हैं। शुभ वा अशुभ जो है जैसा तैसा कार्य हो मुनीन्द्रों से यह विचारणीय मुहूर्त है, अत्यावश्यकीय कार्य में इसके विचार के बिना निर्वाह नहीं होता है, शत्रु आगया उससे सामना

करना है वा न्यायाधीश के समीप राजा महाराजा के पास जाना है वा अन्य किसी कार्य के साधना है मुहूर्त नहीं मिलता है तो मुहूर्त के अपेक्षा करने से कार्य की हानि होगी अतः ऐसे २ अवसरों पर द्विघटिका मुहूर्त का विचार करना अत्यावश्यक है श्रीरामचन्द्र जी को मनाने के लिये भरतजी को चित्रकूट जाने का समाचार सुन जनक जी वहाँ अपना जाना भी अत्यावश्यक जान "दूवरी साधि चले तत्काला किये विश्राम न मग महिपाला" इससे टपक रहा है कि आवश्यक कार्य में द्विघटी मुहूर्त का विचार करना अत्यावश्यक है, त्रिपुर के विनाश के समय शिवसे यह निर्मित हुआ और गंगाधर के परम भक्त जनक जी आदि महानुभावों से यह सत्कारित् है ।

शिवद्विघटीमुहूर्तः ।

देव्युवाच ।

श्री शम्भो प्राणनाथेश वद मे करुणानिधे ।
त्रिपुरस्यवधे प्रोक्ता मुहूर्त्ता ये शुभप्रदाः ॥ ९ ॥
भूतानामुपकारार्थं सर्वकालेष्टसिद्धिदम् ।
यातुरर्थप्रदं ब्रूहि करुणाकरसुंदरम् ॥ १० ॥

ईश्वर उवाच ।

शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि ज्ञानं त्रैलोक्यदीपकम् ।
ज्योतिःसारस्य यत्सारं देवानामपिदुर्लभम् ॥ ११ ॥
न तिथि नर्च नक्षत्रं न योगः करणं तथा ।
कुलिकं मम योगश्च न भद्रा नच चन्द्रमा ॥ १२ ॥
न शूलयोगिनीराशि र्नहोरा न तमोगुणः ।
व्यतीपाते च संक्रांतौ भद्रायामशुभेदिने ॥ १३ ॥
शिवालिखितमित्येवं सर्वविघ्नोपशान्तये ।
कदाचिच्चलतेमेरुः सागरश्च महीधरः ॥ १४ ॥
सूर्यः पतति वा भूमौ वह्निर्वा याति शीतताम् ॥ १५ ॥
तत्रादौ कथयिष्यामि मुहूर्तानि च षोडश ।
गुणत्रय प्रयोगेण चलन्त्येव अहर्निशम् ॥ १६ ॥

षोडशमुहूर्ताः ।

रौद्रं श्वेतं तथा मैत्रं चार्वटं च चतुर्थकम् ।
पञ्चमो जयदेवश्च षष्ठं च रोचनं तथा ॥ १७ ॥
तुरगादिकं सप्तमं च तथाष्टौ चाऽभिजित्तथा ।
रावणं नवमं प्रोक्तं बालवं दशमं तथा ॥ १८ ॥
विभीषणं रुद्रसंज्ञं द्वादशं च सुनन्दनम् ।
याम्यं त्रयोदशं ज्ञेयं सौम्यं ज्ञेयं चतुर्दशम् ॥ १९ ॥
भार्गवं तिथिसंज्ञं च सविता षोडशं भवेत् ।

मुहूर्तानां कार्याणि ।

रौद्रे रौद्रतरं कार्यं श्वेते कुञ्जरबन्धनम् ॥ २० ॥
स्नानदानादिकं मैत्रे चावर्टे स्तम्भनं भवेत् ।
कार्यजयदेवसंज्ञस्यात्सर्वार्थकरमुच्यते ॥ २१ ॥
तद्वैरोचनसंज्ञकेप्रभवतिपट्टाभिशेकंक्रमात् ।
ज्ञात्वैवं तुरगादिके सुविदिते शास्त्रादिकं साधयेत् ॥२२॥
तत्कार्यमभिजिन्मुहूर्तकवरे ग्रामप्रवेशं सदा ।
रावणे साधयेद्वैरं युद्धकाय च बालवे ॥ २३ ॥
विभीषणे शुभं काय मन्त्रकार्यं सुनन्दने ॥ २४ ॥
याम्येभवेन्मारणकार्यमप्यसौ सौम्येसभायांनृपवेशनंस्यात् ।
क्षीसेवनंभार्गवकेमुहूर्तेसावित्रनाम्नि प्रपठेत्सुविद्याम् ॥२५॥

वारपरत्वेन मुहूर्तोदयः ।

उदयंरौद्रमादित्ये मैत्रंसोमे प्रकीर्त्तितम् ।
जयदेवं कुजेवारे तुरदेवं बुधे तथा ॥ २६ ॥
रावणं च गुरोर्ज्ञेयं भार्गवे च विभीषणम् ।
शनौयाम्यंमुहूर्तं च दिवारात्रिप्रयोगतः ॥ २७ ॥

वारपरत्वे मुहूर्तानां सात्त्विकादि गुणविचारः ।

गुरुसोमदिनेसत्वं रजश्चाङ्गारकेभृगौ ।
रवौ मन्दे बुधे चैव तमोनाडांचतुष्टयम् ॥ २८ ॥
सत्वंगौर रजःश्यामं तामसं कृष्णमेव च ।
इमं वर्णं विजानीयात्सत्वादीनां यथोदितम् ॥ २९ ॥

सात्त्विकादिगुणानांफलम् ।

सत्वेनसाधयेत्सिद्धिं रजसाधनसंपदम् ।
तमसासाधयेन्मोक्षमिति ज्ञेयं सदा बुधैः ॥ ३० ॥
सत्वे रजसि सत्कार्यमथवाशुभमेव च ।
तमसा छेदभेदादि साधयेन्यमोक्षमार्गकम् ॥ ३१ ॥

मुहूर्तरेखाज्ञानम् ।

शून्यंनभःखादिभिरेववर्गैर्विघ्नंधनुर्युग्मगणाधिपाद्यैः ।
मृत्युं तथा पादयमादिवर्गैःश्रीविष्णुनामामृतसंज्ञसिद्धिः ॥३२
अमृतश्चोर्ध्वरेखैका कालरेखात्रयं भवेत् ।
विघ्नमावर्त्तके तत्र शून्ये शून्योन्मितिक्रमात् ॥ ३३ ॥

रेखाफलम् ।

शून्येनैवभवेत्कार्यं विघ्नमावर्त्तके भवेत् ।
कालरेखामृत्युकरी सर्वसिद्धिस्तथाऽमृते ॥ ३४ ॥
धनुर्मीनेकर्कटानां घातसत्वे विनिर्दिशेत् ।
तुलालिवृषमेषाणां घातोरजसिनिश्चितम् ॥ ३५ ॥
कन्यामिथुनसिंहानां कुम्भस्य मकरस्य च ।
घातस्तामसवेलायां विपरीतं शुभावहम् ॥ ३६ ॥

धनुकर्कटमीनानां गौरवर्णः क्रमोदिता ।
वृषमेषतुलायां च वृश्चिके श्यामवर्णता ॥ ३७ ॥
मिथुनेमकरेकुम्भे कन्यासिंहे च कृष्णता ।
गौरश्चम्रियतेसत्वे श्यामवर्णो रजोगुणे ॥ ३८ ॥
कृष्णो तामसवेलायां म्रियते नात्रसंशयः ।
यस्मिन्वर्षे भवेन्मासो गौणाधिक्यस्तथात्त्रयः ॥ ३९ ॥
मासेन गृह्यतेमासः सर्वकार्यार्थसाधने ।
माघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखे श्रावणेतथा ॥ ४० ॥
नभस्येमासिवाराणां मुहूर्त्तानि यथाक्रमात् ।
रुद्रप्रोक्तमिदं ज्ञानं शिवाय रुद्रयामले ।
गोपनीयं प्रयत्नेन सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ ४१ ॥

षोडशमुहूर्त चक्रम् ।

रौद्र	श्वेत	मैत्र	चार्वाट	जयदेव	वैरोचन	तुरग	अभिजित	मुहूर्त
रौद्र (भयंकर) कार्य	हलिसंधन	स्नानदानादि	सम्मान	सर्वकार्यसिद्धि	राज्याभिषेक	राजसाधन	पुरप्रवेश	फल

रावण	वालव	विभीषण	सुनन्दन	याम्य	सौम्य	भार्गव	सविता	मुहूर्त
वैरकार्य	युद्धकर्म	शुभकर्म	शुभप्रयोजन	मारण	शुभागमन	स्त्री सेवन	विद्यारम्भ	फल

वारपरत्वेन मुहूर्तोदय चक्रम् ।

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
रौद्र	मैत्र	जयदेव	तुरगदेव	रावण	विभीषण	याम्य	मुहूर्तोदय

वारपरत्वेन गुणोदय चक्रम् ।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
तमोगुण	सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण	सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण	गुणोदय
अशुभ कर्म	सिद्धि	धन ऐश्वर्य	अशु. क.	सिद्धि	धन ऐश्वर्य	अशुभ कर्म	फल

रेखा चक्रम् ।

अमृत	काल	विघ्न	शून्य	रेखा
श्रीविष्णु अमृत सिद्धि	मृत्युपद यम काल	विघ्न, धनु युग्म गणाधिप	शून्य नभ ख अभ्र	संज्ञा
।	।।।		०	रेखारूप
सिद्धिसाध	अशुभकर्म	विघ्नकर्म	कार्यहानि	फल

सतोगुणादिवर्णराशि तथा राशिवर्ण चक्रम् ।

सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण	गुण
गौर	श्याम	कृष्ण	वर्ण
कर्क धन मीन	मेष वृष तुलावृश्चिक	मि. सिं. क म. कु	जात राशि
गौर	श्याम	कृष्ण	वर्ण

माघे फाल्गुन चैत्रे च वैशाखे श्रावणे तथा ।
नभस्येमासिवाराणां मुहूर्त रचनोच्यते ॥ १ ॥

रवौनभः केशव विघ्नराजो गोविन्द नामा नभ आखुगामी ।

सूर्य	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	त्रि	सु	या	सौ	भा	स
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

रात्रौ नृसिंहं युगलं नभो यल्लक्ष्मीशलम्बोदर नाम संज्ञाः ।

सूर्य	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	त्रि	सु	या	सौ	भ	स	रौ
रात्रौ	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त

सोमेहरिर्विघ्नपतिः सुरेशः शून्यं च गौरी सुतविष्णु संज्ञौ ।

चन्द्र	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	त्रि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

एवंनिशायां खखविष्णु शून्यं युग्मं च नारायण विघ्न नाथौ ।

चन्द्र	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	त्रि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै
रात्रौ	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

भौमे यमोमारगणोऽथ युग्मे युग्मे हरिश्चैव गजाननश्च ।

भौमे	ज	वै	तु	अ	रा	वा	त्रि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त

नक्तं च विघ्नोद्विपदो मुकुन्दः पदत्रयं श्रीपतिनिभश्रीः ।

भौमे	वै	तु	अ	रा	वा	त्रि	सु	या	सौ	भा	स	सौ	श्वे	मै	चा	ज
रात्रौ	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

बुधे धनुः कृष्णयमौ च सौरिः सिद्धिर्धनुः सौरि यमौ च सिद्धि ।

बुधे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

रात्रौ सुपर्णध्वज एव युग्मं नभोऽथ दामोदर कुञ्जरास्यौ ।

बुधे	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु
रात्रौ	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त

गुरौ गोपिनाथः तथा विघ्नराजेनभः केशवः कुञ्जरास्यस्तथैव ।

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भ	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

निशायां पद्मः नन्दनः सूर्यसूनुर्नभो माधवश्चापमेकं हरिश्च ।

गुरु	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा
रात्रौ	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

शुक्रे कृष्णो माधवः खं मुरारि गौरी पुत्रः श्रीपतिश्शून्यमेकम् ।

शुक्रे	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	ख	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त

नक्तंकालः केशिहा खं च युग्मं पादद्वंद्वं वामनः खं च पादौ ।

शुक्रे	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि
रात्रौ	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

शनौ पदः श्री ख नभो नभः खं नारायणो ना हरि खं हरिश्च ।

शनौ	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	मु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

रात्रौ च शून्ययम माधवश्च खं विघ्न राजोनृहरिश्चपादौ ।

शनौ	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	मु	या
रात्रौ	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त

(चक्र नं० २)

तथाश्विने कार्तिक मार्ग पौषे सूर्यादिवारेषु मुहूर्तयोगाः ।
नामाक्षराणां वचनप्रवृत्या विचार पूर्वं विबुधैर्विचिन्त्यम् ॥२॥
सूर्ये नृसिंहौङ्घ्रिपदश्च चापौ हरिर्नभः खेपदमुच्यतोऽघ्रिः ।

रवि	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	मु	या	सौ	भा	स
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

रात्रौ पदं चापखमच्युतं च युग्मं यमौ विष्णु च सिद्धिसंज्ञौ ।

रवि	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	मु	या	सौ	भा	स	रौ
रात्रौ	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त

सोमेऽघ्रिचापं खनभो मुकुन्दो नभश्च युग्मं हरिखं हरिश्च ।

चन्द्रे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	मु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

पदं निशायां खयुगं मुरारि र्विनायको विष्णु नभश्चविष्णुः ।

चन्द्रे	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	मु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै
रात्रौ	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

भौमे महेभास्य नभोऽथ विष्णुर्नभो युगं गोपति खं गणेशः ।

भौमे	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त

नक्तं गजेन्द्रास्य खमच्युतश्च युग्मं च शून्यं नृहरिश्च युग्मम् ।

भौमे	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज
रात्रौ	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

बुधे धनुः श्रीपति पादयुग्मं नारायणः स्याद्गणनाथसिद्धिः ।

बुधे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

रात्रौ तु कालो हरिशून्यकालो गोविन्दगौरि सुतशून्य सिद्धिः ।

बुधे	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु
रात्रौ	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त

गुरौ हरिः शून्य युगं सुरेशः श्रीविघ्नराजो गगनंतथा श्रीः ।

गुरौ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

निशाङ्घ्रिदैत्यारिख कार्मुकं च पदे मुरारिं खयुगे पुनः श्रीः ।

गुरौ	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा
रात्रौ	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

शुक्रेऽमृतं चापमरिन्दमश्च लम्बोदरः केशवशून्यपादः ।

शुक्रे	त्रि	सु	या	सो	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	ख	र	र	त	त

नक्तं च युग्मं नृहरिः खयुग्मं नृसिंह युग्मं गगनं च युग्मम् ॥

शुक्रे	सु	या	सौ	भा	स	र	श्वे	मै	चा	स	वै	तु	अ	रा	वा	वि
रात्रौ	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

शनौ पदं श्रीनभौन कृष्णः खंश्री पदं विष्णुनभोहरिः पदम् ।

शनौ	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	ज	त	स	स

रात्रौ पदेखं पदनन्दसूनुर्गजाननो गोपति शून्यवादः ।

शनौ	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि
रात्रौ	र	र	त	त	स	स	स	र	त	त	स	स	र	र	त	त

(चक्र नं० ३)

ज्येष्ठे मासे तथाषाढ़े तथैव च मलिम्लुचे ।
सूर्यादिवारे संशोध्य मुहूर्तानिक्रमादिह ॥ ३ ॥
अर्के सूर्यों च कृष्णो युगपद युगलं खं हरि विष्णुचापम् ।

सूर्य	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स
दिने	त	त	स	स	र	त	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

रात्रौ शलिमश युग्मं युगलहरि युगं युग्मकृष्णं त्रिशून्यम् ।

सूर्य	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ
रात्रौ	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त

सोमो चापेद्धयंनो नृहरिख युगलं पीतवासश्च शून्यम् ।

चन्द्रे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

चापद्धद्वं निशायामजखपदश्चाप पद्मेशपादम् ।

चन्द्रे	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै
रात्रौ	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

भौमे शून्ये च कृष्णो युग गगन हरिस्त्रीणि चापानि सिद्धिः।

भौमे	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	र

नक्तं युग्न द्वि शून्यं युगल युगपदं श्रीखचापं हरिश्च ।

भौमे	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज
रात्रौ	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

सौम्ये श्रीविघ्ननाथोगणपती पद्मनाभश्च पादम् ।

बुधे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

दोषायां सिद्धियुग्मं हरिख गजमुखाः कृष्णशून्ये च कृष्णः ।

बुधे	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	स	रौ	श्वे	मै	ज	वै	तु
रात्रौ	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त

जीवेविष्णुश्चचापे गगन अजितखं चाग्नि युग्मं नृसिंहौ ।

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	८	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

रात्रौ नौखं मुरारिर्गगनयुगगजो विष्णु चापोऽग्नि युग्मम् ।

गुरु	वा	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वं	तु	अ	रा
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

शुक्रे युग्मे सुरारि गगन युगलजो विष्णु चापांग्नियुग्मम् ।

शुक्रे	वि	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	तं	त

तत्रादौ रुगभगोपी पति यम गगनं श्री रः खंपदः श्रीः ।

शुक्रे	सु	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि
रात्रौ	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र

मन्दे श्रीयुग्म सिद्धिः ख हरि हरि नभः शोरिखं सिद्धिखंवा ।

शनौ	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	भि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स

नक्तं श्रीयुग्म सिद्धिः ख युगल हरि व्योमगोविन्द शून्यम् ।

शनौ	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या
रात्रौ	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त

(चक्र नं० १)

माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, श्रावण, भाद्रपद इन महीनों में जो सोलह मुहूर्त हैं उनके रेखा का पहिचान चक्र के अनुसार जाने।

रविवार		चन्द्रवार		भौमवार	
दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
१ शून्यरेखा	३ अ.	२ अ.	१ का.	२ का.	२ वि.
२ अमृतरेखा	२ वि.	४ वि.	१ शू.	४ अ.	२ का.
४ विघ्नरेखा	१ शू.	३ अ.	२ अ.	४ वि.	३ अ.
३ अमृतरेखा	१ का	१ शू.	१ शू.	२ अ.	३ का.
१ शून्यरेखा	३ अ.	४ वि.	२ वि.	४ वि.	३ अ.
४ विघ्नरेखा	४ वि.	२ अ.	४ अ.		२ शू.
	२ अ.		४ वि.		१ अ.
बुधवार		**गुरुवार**		**शुक्रवार**	
दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
२ वि.	५ अ.	४ शू	१ का.	२ अ.	२ का.
२ अ.	२ वि.	१ व	३ अ.	२ का	३ अ.
२ का.	१ शू.	१ शू.	४ का.	१ शू.	१ शू.
३ अ.	४ अ.	३ अ.	१ शू.	३ अ.	२ वि.
२ वि.	४ वि.	४ वि.	३ अ.	४ वि.	२ का.
२ अ.			२ वि.	३ अ.	३ अ.
२ का.			१ अ.	१ शू.	१ शू.
१ अ.					२ का.

(चक्र नं० २)

आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष इन मासों में जो १६ मुहूर्त हैं उनके रेखा के नाम।

शनिवार		रविवार		चन्द्रवार	
दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
१ का.	१ शू.	३ अ.	१ का,	१ का,	२ शून्यरे,
१ अ.	२ का.	२ वि.	२ वि,	२ विघ्नरे,	४ अमृतरे,
४ शू.	३ अ.	२ व.	१ शू,	२ शून्यरे,	१ शून्यरे,
४ अ.	१ शू.	२ अ.	३ अ,	३ अमृतरे	२ विघ्नरे,
१ शू.	४ वि.	१ अ	२ वि.	१ शून्यरे,	४ अमृतरे,
२ अ.	३ अ.	१ का.	२ का,	२ विघ्नरे,	१ शून्यरे,
१ शू.	२ का.	३ अ.	२ अ,	२ अमृतरे,	२ अमृतरे,
[illegible] अ.		१ का.	१ शू,	१ शून्यरे	
			२ अ,	२ अमृतरे,	

भौमवार		बुधवार		गुरुवार	
दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
४ विघ्नरे.	३ वि.	२ वि.	२ का.	२ अ.	१ का.
१ शून्यरे.	१ शू.	३ अ.	२ अ.	१ शू.	३ अ.
२ अमृतरे.	३ अमृत	२ का.	१ शू.	२ वि	शू.
१ शून्यरे.	२ त्रि	३ अ.	२ का.	४ अ.	२ वि.
२ विघ्नरे.	१ शू.	४ वि.	३ अ.	४ वि.	२ का.
३ अमृतरे.	३ अमृत	१ शू.	४ वि.	२ शू.	३ अ.
१ शू.	२ वि.	१ अ.	१ शू.	१ अ.	१ शू.
२ वि.			१ अ.		२ वि.
					२ अ.

शुक्रवार		शनिवार	
दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
१ अ.	२ वि	१ का.	१ का.
२ व.	३ अ.	१ अ.	१ शू.
४ अ.	१ शू.	१ शू.	१ का.
४ वि.	२ त्रि.	१ अ.	४ अ.
३ अ.	३ अ.	१ शू.	४ वि.
१ शू.	२ वि.	२ अ.	३ अ.
१ का.	१. स,	१ शू.	१ शू.
	२ त्रि.	१ अ.	१ का.
		१ का.	
		२ अ	
		१ शू.	
		२ अ.	
		१ का.	

(चक्र नं० ३)

ज्येष्ठ आषाढ़ अधिकमासमें १६ मुहूर्तों के रेखा के नाम निम्नलिखित चक्रों द्वारा जाने।

रविवार		चन्द्रवार		भौमवार	
दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
२ शू.	३ अमृतरे.	४ त्रि.	४ बि.	२ शू.	४ त्रि.
२ अ.	४ विघ्नतरे.	१ शू.	२ अ.	२ .	१ शू.
२ त्रि.	२ अमृतरे.	३ अ.	१ का.	२ त्रि.	४ वि.
१ का.	४ विघ्नरे.	१ शू.	१ शू.	१ शू.	१ का.
२ वि.	२ अमृतरे	२ वि.	अ.	२ अ.	१ अ.
१ शू.	१ शून्यरे.	४ अ.	२ वि.	६ वि.	१ शू.
४ अ.		२ शू.	३ अ.	१ अ.	२ त्रि.
२ त्रि.			१ का.		२ अ.

बुधवार		गुरुवार		शुक्रवार	
दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
१ अ. ४ त्रि. २ अ. ४ वि. ४ अ. १ का.	१ अ. २ वि. २ अ. १ शू. ४ वि. २ अ. २ शू. २ अ.	२ अ. २ वि. १ शू. ३ अ. १ शू. ४ का. ३ अ.	२ शू. ३ अ. १ शू. ४ वि. २ अ. २ वि. २ का.	२ वि. ३ अ. १ शू. ४ वि. २ अ. २ का	२ वि. ४ अ. २ वि. १ शू. ३ अ. १ शू. १ का. १ अ.

शनिवार	
दिन	रात्रि
१ अमृतरे, २ विघ्नरे, २ अमृतरे, १ शून्यरे, ४ अमृतरे, १ शून्यरे २ अमृतरे, १ शून्यरे, २ अमृतरे, १ शून्यरे,	१ अमृतरे, २ विघ्नरे, २ अमृतरे, २ शून्यरे २ विघ्नरे, २ अमृतरे, १ शून्यतरे, ३ अमृतरे, १ शून्यतरे

उदाहरण—श्रावण शुक्ल ११ मंगलवार के २२ घटी ३० पल पर विचारना है उसदिन दिनमान ३२ घटी, २ पल है इसमें १६ का भाग देने से प्रत्येक मुहूर्त २ घटी ७ पल ३० विपल का हुआ, अतः २२ घटी ३० पल पर ११ वाँ मुहूर्त हुआ क्योंकि २ घटी ७॥ पल प्रत्येक मुहूर्त का भोग है इसे १० से गुणा करने पर २१ घटी १५ पल हुआ १० वाँ मुहूर्त और ११ वाँ २३ घटी २२ पल ३० विपल तक रहेगा; विचारणीय समय १० वें मुहूर्त के बाद ११.वें के भीतर होने से ११ वाँ मुहूर्त निश्चय हुआ। उस समय अमृत रेखा होने से शुभ है।

इति श्री दैवज्ञरत्नहारे शिवालिखिताख्यरत्नं समाप्तम्।

अथ सर्वतोभद्र चक्रम्।

अथातः संप्रवक्ष्यामिचक्रंत्रैलोक्य दीपकम्।
विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्यकारकम् ॥ १ ॥

अब मैं त्रलोक्य का प्रकाशक जो शर्वतोभद्र नाम से संसार में प्रसिद्ध है उस चक्रको कहता हूँ यह चक्र (सद्यः) तुरन्त ही प्रत्यय अर्थात् ज्ञानको देता है भाव यह हुआ कि वध द्वारा शुभाशुभ का निर्णय इस चक्र से होता है ॥१॥

ऊर्ध्वगादशविन्यस्यतिर्यग्रेखा तथादश।
एकाशीति पदं चक्रं जायते नात्रसंशयः ॥ २ ॥
अकारादि स्वरांकोष्ठे ईशादौ विदिशिक्रमात्।
सृष्टिमार्गेण दातव्या षोडशैवं चतुर्भ्रमम् ॥ ३ ॥
कृत्तिकादीनिधिष्णानिपूर्वाशादि लिखेत्तमः।
सप्तसप्तक्रमादेतानष्टाविंशति संख्यया ॥ ४ ॥
अवकहडादिदिशिप्राच्यां मट परतश्चदक्षिणे।
नयभजखास्तु वारुण्यां गद स चलास्तथोत्तरे ॥ ५ ॥
त्रयस्त्रयोवृषाद्याश्च पूर्वाशादि बुधैः क्रमात्।
राशयो द्वादशैवंतु मेषान्ता सृष्टिमार्गतः ॥ ६ ॥
शेषेषुकोष्ठकेष्वेवनन्दादितिथितश्चकम्।
वाराणांसप्तकं लेख्यं तिथिस्थाने प्रयत्नतः ॥ ७ ॥
भौमादित्यौ च नन्दायां भद्रायां बुधशीतगू।
जयायां च गुरुः प्रोक्तोरिक्तायां भार्गवस्तथा ॥ ८ ॥
पूर्णायां शनिवारश्चलेख्यश्चक्रविनिश्चितम्।
इत्येष सर्वतोभद्रविस्तारः कीर्तितोमया ॥ ९ ॥
शन्यर्कराहु केत्वाराः क्रूराः शेषाः शुभग्रहाः।
क्रूरयुक्तोबुधः क्रूरः क्षीणचन्द्रस्तथैव च ॥ १० ॥
यस्मिन्नृक्षेस्थितः खेटस्ततोवेधत्रयंभवेत।
ग्रहदृष्टिवशेनात्र वामसन्मुखदक्षिणम् ॥ ११ ॥

दश रेखा खड़ी और दश रेखा बेड़ बनाने से ८१ कोष्ठ का चक्र होने में संशय नहीं है अर्थात् ८१ पद का चक्र हो जाता है, इस कोष्ठ के ईशानादि चारो कोणों में सृष्टि मार्ग से अकारादि स्वरों को लिखे, कृत्तिकादि नक्षत्रों को पूर्वादि दिशा में क्रमसे सात २ दिशावों में २८ सों नक्षत्रों को लिखे।

अ व क ह ड' पूर्व में 'म ट प र त' दक्षिण में 'य म भ ज ख' पश्चिम में 'ग द स च ल' उत्तर में लिखे और पूर्वादि दिशायें वृष से तीन तीन राशि एवं मेषान्त बारह राशियों को लिखे, शेष कोष्ठों में नन्दादि पंचतिथियों को लिखे और सातवार भी यत्न से तिथि के स्थान पर लिखें।

नन्दा वाले कोष्ठ में मंगल सूर्य को, भद्रा वाले कोष्ठ में बुध चन्द्रमा को, जया के कोष्ठ में बृहस्पति को, रिक्ता के कोष्ठ में शुक्र को और पूर्णा के कोष्ठ में शनि को चक्र में निश्चय लिखे। यह सर्वतोभद्र के बिस्तार को मैंने कहा, शनि सूर्य्य मंगल क्रूर हैं शेष शुभग्रह हैं, क्रूर से युक्त रहने पर बुध और क्षीण चन्द्रमा भी क्रूर हो जाते हैं। जिस नक्षत्र में ग्रह रहता है। तिससे ३ नक्षत्र का वध होता है, ग्रह की दृष्टि के वश से वाम सन्मुख दक्षिण नक्षत्र राशि स्वरों के वध जाने अन्य से युतका वध नहीं होता है ॥ २ ॥ से ११ ॥

सर्वतोभद्र चक्रम्। पूर्व

उत्तर (बाएँ) — दक्षिण (दाएँ)

अ	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	आ
भ.	उ	अ.	व.	क.	ह.	ड.	ऊ	म.
अ.	ल.	लृ	वृ.	मि.	क.	लॄ	म.	पू.
रे.	च.	मे.	ओ	न.दा. सू.मं.	औ	सि.	ट.	उ.
उ.	स.	मी.	रिक्त शु.	पूर्णा श.	भ.द्रा. चं.बु.	क.	प.	ह.
पू.	द.	कुं.	अः	जया बृ.	अं	तु.	र.	चि.
श.	ग.	ऐ	म.	ध.	वृ.	ए	त.	स्वा
ध.	ऋ	ख.	ज.	भ.	य.	न.	ॠ	त्रि.
ई	श्र.	अ.	उ.	पू.	मू.	ज्ये.	अ.	इ

पश्चिम

अरण्यकारं वृषभंनन्दाभद्रा तु लोचनम्।
विशाखांश्रवणंखेटोविद्धत्यग्निसंस्थितम् ॥ १२ ॥

भरणी के आकार का वृषभका नन्दा भद्रा को नेत्र विशाखा श्रवण गृह चरण संस्थित जाने ॥ १२ ॥

वक्रगेदक्षिणा दृष्टि वामदृष्टिश्च शिघ्रगे।
मध्यचारे तथा मध्याज्ञेया भौमादिपञ्चके ॥ १३ ॥

मंगल आदि पाँच ग्रहों की वक्री में दक्षिण दृष्टि शीघ्र में वाम दृष्टि और मध्यचार में मध्य दृष्टि रहती है ॥ १३ ॥

राहु केतौ सदावक्रौ शिघ्रगौचन्द्रभास्करौ।
एतैरेकस्वभावत्वादेवांदृष्टि त्रयं वदेत् ॥ १४ ॥
क्रूरवक्रामहाक्रूराः सौम्याः वक्रा महाशुभा।
स्युः सहजस्वभावस्था सौम्याः क्रूराश्चशिघ्रगाः ॥ १५ ॥

राहु केतु सदा वक्री ग्रह हैं और चन्द्र सूर्य्य शीघ्र गामी हैं इनका एक स्वभाव होने से इनकी तीन प्रकार की दृष्टि कहै, क्रूर और वक्री दोनों होने से यहाँ क्रूर और सौम्य से महाशुभ सौम्य क्रूर शीघ्र गामी होने से सहज स्वभाव होते हैं ॥ १४—१५ ॥

घङ छारौद्रगेवेधी षणठा हस्तगेग्रहे।
धफढापा ढाथाथभ्फः ञा च भाद्रपदात्तरे ॥ १६ ॥
ववौशसौ खपौ च जयौङशोपरस्परम्।
एकेन द्वितयंज्ञेयं विद्धिसौम्याश्चभग्रहैः ॥ १७ ॥
अवर्णादि स्वरद्वद्वेष्वेकवेधेद्धयोद्धयः।
युक्तः स्वरात्मकेवेधेत्वनुस्वार विसर्गयोः ॥ १८ ॥
कोणस्थधिष्ण्ययोर्मध्ये अन्त्यादिपादगेग्रहे।
अकारादि चतुष्कस्य वेधः पूर्णातिथेस्तथा ॥ १९ ॥

घ ङ छ वर्ण का आर्द्रास्ति ग्रह से वेध है ष ण ठ का हस्त स्थित ग्रहसे ध फ ढ से पूर्वाषाढ़ स्थित ग्रह से थ झ ञ का उत्तर भाद्रपदस्थग्रह से वेधी

है ब व, श स, ख ष, ज य, ङ ञ यह परस्पर समान हैं। एक से दूसरे का सौम्यादिक ग्रहका वेध होता है। अवर्गादि दो दो स्वरों का एक के वेध से दोनों का वेध स्वरात्मक वेध में अनुस्वार विसर्ग को युक्त करे। कोण में स्थित दो नक्षत्रों के मध्य में अन्त्य आदि चरण गत ग्रह में अकार चार २ के जोड़े तो पूर्णा तिथि से वेध मालुम होता है ॥ १६—१९ ॥

एकादिपूर्ण वेधेन फलं पुंसां प्रजायते।
उद्वेगश्च भयं हानिः रोगो मृत्युः क्रमेण च ॥ २० ॥

एकादि पूर्ण वेध से पुरुषों को उद्वेग, भय, हानि, रोग, और मृत्यु फल होता है ॥ २० ॥

भ्रम ऋक्षेऽरे हानिः स्वरे व्याधिर्भवेत् तिथौ।
राशौ विद्धे महाविघ्नं पञ्चविद्धो न जीवति ॥ २१ ॥
एक वेधे भयं युद्धे युग्मवेधे धनक्षयः।
त्रिवेधेन भवेद्भंगो मृत्युर्वेधः चतुष्टये ॥ २२ ॥

भ्रमनक्षत्र में हानि, स्वर में व्याधि, तिथि, राशि वेधमें विघ्न, पाँच वेध से अधिक वेध वाला नहीं जीता है। युद्ध में एक वेध से भय, दो वेध से धन नाश, तीन वेध से भंग और चार वेध से मृत्यु होती है ॥ २१ ॥ २२ ॥

यथा दुष्टफलाः क्रूरास्तथा सौम्याः शुभप्रदाः।
क्रूरयुक्ता पुनः सौम्या ज्ञेया क्रूरफलप्रदाः ॥ २३ ॥

जिस प्रकार दुष्टफल देने वाला क्रूरग्रह है तिसी प्रकार सौम्यग्रह शुभफल देने वाला है, और क्रूर से युक्त सौम्य क्रूरफल देने वाला जाने ॥ २३ ॥

अर्कवेधे मनस्तापो द्रव्यहानिश्च भूपतेः।
रोग पीड़ाकरः सौरी राहुकेतू च विघ्नदौ ॥ २४ ॥
चन्द्रे मिश्रं फलं पुंसा रतिलाभश्च भार्गवे।
बुधवेधे भवेत्प्रज्ञा जीवः सर्वफलप्रदः ॥ २५ ॥

सूर्य के वेध से राजके मनमें ताप और धन की हानि, शनि रोगपीडा कारक, राहु केतु विघ्न देने वाले और पुरुषों को चन्द्रमा मिश्रफल देने वाला शुक्र आनंद

का फल देने वाला, बुध के वेध से बुद्धि और बृहस्पति के वेध से सम्पूर्ण शुभ फल होता है ॥ २४ ॥ २५ ॥

वक्रग्रहे फलं द्विघ्नं त्रिगुणं स्वोच्चसंस्थिते ।
स्वभावजं फलं शीघ्रे नीचस्थोर्ध फलग्रहः ॥ २६ ॥

वक्रीग्रह में दूना फल होता है । उच्च में तिगुना । शीघ्रग्रह में स्वभावोत्पन्न फल होता है और नीच भाव स्थित ग्रह आधा फल को देता है ॥ २६ ॥

यस्मिन् राश्यंश नक्षत्रं विद्धं क्रूरग्रहेण यत् ।
सर्वेषु शुभकार्येषु वर्जयेत् तं प्रयत्नतः ॥ २७ ॥
न नन्दन्ति विवाहे च यात्रायां नाभिवर्तते ।
न रोगान् मुच्यते रोगी वेधवेला कृतोद्यमः ॥ २८ ॥
रोगकाले यदा वेधः क्रूरखेचर सम्भवः ।
वक्रगत्या भवेन्मृत्युः शीघ्रे याम्यरुजान्वितः ॥ २९ ॥

जिस राशि के नक्षत्र को क्रूरग्रह वेधते हों वह सम्पूर्ण शुभ कार्यों में यत्न से वर्जित है ।वेध वेलामें विवाह करने से आनन्द नहीं होता हैं, यात्रा करने से फिर यात्रा करने वाला लौटता नहीं और रोगी की प्रथम रोगोपशान्ति वेध में करने से वह नहीं जीता है । रोग होने के समय क्रूरग्रह का वेध हो, वह ग्रह वक्री हो तो रोगी की मृत्यु होय, शीघ्रगामी हो तो रोगी रहै ।। २७-२९ ॥

स्वजन्मवारवेधस्यापि फलमुक्तं स्वरचिन्तामणौ:—

स्वजन्मवासरं विद्धं यस्य क्रूरग्रहेणतु ।
न तस्य सौमनस्यं स्यादधिपीड़ां च जायते ॥ ३० ॥

क्रूरग्रह से जिसके जन्म के वार को वेधता हो उसको आनन्द नहीं होता है अधिक दुःख होता है ॥ ३० ॥

यदि पूर्वादिकाष्ठानां वृषराश्यादिगो रविः ।
सादिशास्तिमिता ज्ञेया तिस्रः शेषाः सदोदिताः ॥ ३१ ॥
ईशानस्था स्वराः प्राच्यां ज्ञेया चाग्नयग यमे ।
नैर्ऋतस्थास्तु वारुण्यां वायव्यां सौम्यगमाताः ॥ ३२ ॥

नक्षत्राणिस्वरावर्णाः राशयस्तिथयोदिशः।
ते सर्वेऽस्तंगता ज्ञेया यत्र भानु स्त्रिमासकः ॥ ३३ ॥

यदि पूर्वादि दिशावों के वृषआदि राशि के सूर्य हो तो वह दिशा स्तिमित जाने, तीन शेष सदा उदित हैं। ईशान में स्वर पूर्वका, अग्नि में दक्षिण का, नैर्ऋत्य में पश्चिमका, वायव्यमें उत्तर का जाने। नक्षत्र, स्वर, वर्ण, राशि, तिथि, दशा ये सब जहाँ त्रिमासिक सूर्य रहें वहाँ अस्त रहते हैं ॥ ३१ ॥ ३३ ॥

नक्षत्रास्तेरुजावर्णो हानिः शोकः स्वरोस्तगे।
राशौ विघ्नं तिथौ भीतिः पञ्चास्तेमरणं ध्रुवम् ॥ ३४ ॥

नक्षत्र के अस्त से रोग, वर्ण के अस्त से हानि, स्वर के अस्त से शोक, राशि के अस्त से विघ्न, तिथि के अस्त से भय, और पाँचो के अस्त से मरण होता है ॥ ३४ ॥

यात्रा युद्धं विवाहं च द्वारं प्रासाद हर्म्ययोः।
न कर्तव्यं शुभं चान्यदस्ताशाभिमुखैर्नरः ॥ ३५ ॥

यात्रा, युद्ध, विवाह, द्वार, मंदिर, राजगृह के अटारी आदि की मनुष्य अस्त की दिशायें न बनायें ॥ ३५ ॥

अस्ताशायांस्थितं यस्य पदानामाद्यमक्षरम्।
तदा तु सर्वकार्येषु ज्ञेयो दैवहतो नरः ॥ ३६ ॥

जिसका नामका आदिवर्ण यदि अस्त दिशा में स्थित हो तो सबकार्य में दैवहत उस मनुष्य को जाने ॥ ३६ ॥

कवौ कोटे तथा युद्धे चातुरङ्गे महाहवे।
वर्ज्यास्तगता योधा यदीच्छेद् द्विजयोरणे ॥ ३७ ॥

कविता में कोटे में युद्ध में चतुरंगिणीमहासंग्राम में अस्तगतमें योधा यदि विजयकी इच्छा हो तो त्याग दे ॥ ३७ ॥

नक्षत्रेभ्यः दिने पुष्टिर्वर्णेलाभः स्वरेसुखम्।
राशौजयस्तिथौतेजः पदाप्तिः पञ्चकोदये ॥ ३८ ॥

नक्षत्र से दिनमें पुष्टि, वर्ण में लाभ, स्वर में सुख, राशि में जय,, तिथि में तेज, पाँचो के उदय में उत्तम पदकी प्राप्ति होती है ॥ ३८ ॥

क्रूरैरुभयतोविद्धाः यस्याक्षरतिथिस्वराः ।
राशिधिष्ण्यं च पञ्चापि तस्य मृत्युर्नसंसयः ॥ ३९ ॥
क्रूरवेधं समायोगे यस्योपग्रहसम्भवः ।
तस्यमृत्युर्नसंदेहोरोगादथरणेऽपिवा ॥ ४० ॥

क्रूरों से दोनों विद्ध जिसका अक्षर, तिथि, स्वर, राशि, नक्षत्र हो उसकी मृत्यु होनेमें संशय नहीं है, क्रूरके वेधके समायोगमें जिसके उपग्रहका संभव होय तिसकी मृत्यु रोग से वा रण में अवश्य होगी इसमें संदेह नहीं है ॥३९-४०

सूर्यभात्पञ्चमं धिष्ण्यं ज्ञेयं विद्य न्मुखाभिधम् ।
शूलंचाष्टमं प्रोक्तं सन्निपातं चतुर्दशम् ॥ ४१ ॥
केतुरष्टादशंप्रोक्तं उल्कास्यादेकविंशतौ ।
द्वाविंशतितमेकंपस्त्रयोविंशे च वज्रकः ॥ ४२ ॥
निर्घातश्चचतुर्विंशे उक्ताचाष्टौउपग्रहाः ।
स्वेस्थानेविघ्नदा प्रोक्ताः सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ ४३ ॥

सूर्यके नक्षत्र से ५ वां विद्युन्मुख, ८ वां शूल, १४ वां सन्निपात, १८ वां केतु, २१ वां उल्का, २२ वां कंप २३ वां वज्र २४ वा निर्घात यह ८ उपग्रह कहा है। वे अपने २ स्थान में सबकार्यों में सर्वदा विघ्न देने वाले हैं ॥ ४१—४३

जन्मभंकर्म आधानं विनाशं सामुदायिकम् ।
संस्थाधिकमिदं धिष्ण्यं षट्त्रिंशंसार्वजानिकम् ॥ ४४ ॥
जातिदेशाभिषेकैश्चनवधिष्ण्यानि भूपतेः ।
वेधं ज्ञात्वाफलंब्रूहि सौम्यैः क्रूरैः शुभाशुभम् ॥ ४५ ॥

जन्मभ, कर्म, आधान, विनाश, सामुदायिक, संस्थाधिक, षट्त्रिंश, सार्वजानिक, जातिदेशाभिषेक नवनक्षत्र राजा के वेधका ज्ञान सौम्यग्रह से शुभक्रूर ग्रह से अशुभफल को कहै ॥ ४४—४५ ॥

जन्मभंजन्मनक्षत्रंदशमंकर्मसंज्ञकम् ।
एकोविंशमाधानंत्रयोविंशांविनाशकम ॥ ४६ ॥

अष्टादशं च नक्षत्रंसामुदायिकसंज्ञकम् ।
संघातिकं च विज्ञेयमृक्षंषोडशमत्रहि ॥ ४७ ॥
षड्विंशाद्राजजातं च जातिनामस्वज्ञातिभम् ।
देशभंदेशनामर्क्षराज्यर्क्षंमाभिषेकजम् ॥ ४८ ॥

जन्मनक्षत्र का जन्मभ नाम है, दशमकाकर्म, १९ वें का आधान, २३ वें का विनाश, १८ वें का सामुदायिक, १६ वें का संघातिक, २६ वां राजजात, स्वजाति नक्षत्र का जाति संज्ञा, देशका नक्षत्र देशज, राज्यर्क्षकानाम अभिषेकज है ॥ ४६—४८ ॥

मृत्युःस्याज्जन्मभेविद्धेकर्मभे क्लेशएवच ।
आधानर्क्षेप्रवासः स्याद् विनाशे बन्धुविग्रहः ॥ ४९ ॥
सामुदयिक मनिष्टं हानिः स्यादघातिके तथा ।
जातिभे कुलनाशः स्याद् बंधनं चाभिषकभे ॥ ५० ॥
देशर्क्षेदेशभंगंच क्रूरैरेव शुभैः शुभम् ।
उपग्रहसमायोगे मृत्युर्भवति नान्यथा ॥ ५१ ॥

जन्म नक्षत्र के वेधसे मृत्यु, कर्मभ से क्लेश, आधान में प्रवास (परदेश) विनाशसे बंधुविग्रह, सामुदायिक नक्षत्र में अनिष्ट, अतिघाति में हानि, जातिभमें कुलका नाश, अभिषेक में बन्धन, देश नक्षत्र में देशभंग, क्रूरों से शुभों से शुभ उपग्रह के योगसे मृत्यु होती है अन्था नहीं होती है ॥ ४९-५१ ॥

भयंभङ्गश्चघातश्चमृत्युर्भङ्गयुतः स्थितः
क्रूरैएकादिपञ्चान्यैयु र्धिवेधेफलंभवेत् ॥ ५२ ॥
तिथिमृक्षंस्वरं राशिं वर्णं चैव तु पञ्चकम् ।
यद्दिनेवेधयेचन्द्रस्तद्दिनंस्याच्छुभाशुभम् ॥ ५३ ॥

भय भंग घात मृत्यु भंग युतस्थित क्रूरों से एक पंच अन्य युधिवेध में फल होता है । तिथि नक्षत्र स्वरराशि और पाँचवाँ वर्णजिस दिन चन्द्रमा वेधते हैं, वह दिन शुभ अशुभ होता है ॥ ५२—५३ ॥

अथ सर्वतोभद्रचक्रोद्धारः

उक्तं च— नरपतिजयचर्यायाम्

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् ।
विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥
याम्योत्तराप्रागपराश्चकोष्ठा, न चात्र चक्रे सुधियात्र लेख्या ।
स्वरर्क्षवर्णादिकमन्त्र लेख्या, प्रसिद्धभावान्नमयानिरुक्तम् ॥२॥

टीका—त्रैलोक्य दीपक ऐसा सर्वतोभद्र नाम प्रसिद्ध चक्रका वर्णन करता हूँ। जिस चक्र को देखते ही शीघ्र अनुभव पूर्वक शुभाशुभ फलको कहने में समर्थ हो सकते हो। इस चक्रके वास्ते दक्षिण से उत्तर तक १० रेखा और पूर्व से पश्चिम पर्यन्त १० रेखा खींचे जिससे ८१ कोष्ठ बने। फिर कोष्ठ में बुद्धिमान् जन अकारादि १६ स्वर को कृतिका से भरणी तक २८ नक्षत्र अवकहढ २० वर्ण वृष आदि बारह राशि का और नन्दा तिथि की लिखे यह प्रसिद्ध भाव से मैंने वर्णन किया ॥ १—२ ॥

भ्रमो ऋक्षेऽक्षरे हानिः स्वरेव्याधिर्भयंतिथौ ।
राशिवेधे महाविघ्नं पंचवेधोनजीवति ॥ ३ ॥

टीका—सर्वतोभद्र चक्र को इस प्रकार बना कर जो ग्रह जिस राशि पर होय उस ग्रह के राशि के अंशादि के अनुसार नक्षत्र जो नक्षत्र उस पर धरे और उन ग्रहों से शुभाशुभ फल को कहै। यदि पापग्रह से अक्षर वेधित हो तो हानि, यदि पापग्रह से स्वर वेधित हो तो व्याधि होती है, यदि पाप ग्रह से जन्म तिथि वेधित हो तो भय होय, यदि जन्म राशि को पाप ग्रह वेधता हो तो विघ्न होता है, यदि पाप ग्रह से तिथि, नक्षत्र, स्वर, अक्षर, राशि इन पाँचों से वेध हो तो वह मनुष्य कैसे जीवित रहै अर्थात् मृत्यु को प्राप्त होय ॥ ३ ॥

भरण्यकारौ वृषभं च नन्दा, भद्रा तकारं श्रवणं विशाखां ।
तुलां च विद्धोदनलर्क्षसंयुतोग्रहोऽत्रचक्र गदितं स्वरज्ञैः ॥ ४ ॥
वकार मोकार मुकार दास्रे, स्वतीरकारं मिथुनं च कन्या ।
तथाभिजित् संशकभं च विद्धे, वाह्यस्थसंस्थौ हिनभश्चरेन्द्रः ॥५॥

कर्कंककारं च हर्दि धकारं चित्रा च पौष्णं च तथा लकारम् ।
अकारकं चैत्र भक्षत्रविद्धे, दलं नभो मण्डल गोमृगस्थः ॥ ६ ॥

वेधविचार माह—

स्वरशास्त्र के विज्ञ आचार्यों ने कहा है कि कृतिका नक्षत्र पर स्थित हुआ ग्रह भरणी विशाखा श्रवण नक्षत्रों अकार स्वर को वृष तुला राशिको नन्दा तिथि (१।६।११) भद्रा तिथि (२।७।१२) को तथा वर्ण को वेधता है। रोहिणी नक्षत्र परस्थिति ग्रह वकार उकार रकार को अश्विनी स्वाती अभिजित् नक्षत्र मिथुन कन्याराशि को वेधता है, मृगशिरा नक्षत्र परस्थित ग्रह कर्क सिंहराशि को ककार पकार लकार आकार तथा उत्तराषाढ़ा रेवती नक्षत्र को वेधता है ॥ ४—६ ॥

ऐवंवेध सर्वतोभद्रचक्रे सर्वर्क्षेभ्यः चिन्तनीयः सुधीभिः ।
दद्यात् वेधः सत्फलं सौम्यजातोत्पन्नं कष्टं दुष्टवेधःकरोति॥७॥

इस प्रकार वेधसर्वतोभद्र चक्र में सब नक्षत्रों से विद्वान् विचार करें शुभग्रह का वेध शुभफल को देता है और पापक्रूर ग्रह का वेध दुष्ट फल को देता है ॥ ६ ॥

अर्कवेधेभवेत्तापो द्रव्यहानिस्त्रभूसुते ।
रोकपीडाकरः शौरीराहु केतौ च विघ्नदः ॥ ८ ॥
चन्द्रेमिश्र फलं पुंसां ऋतु लाभस्तुभार्गवे ।
बुधे वेधोभवेत् प्राज्ञो जीवः सर्वफलप्रदः ॥ ९ ॥

सूर्य के वेध से ताप, मंगल के वेध से द्रव्य का हानि, शनि के वेध से रोगपीड़ा करने वाला राहु तथा केतु वेध विघ्न करने वाला होता है, मनुष्यों को चन्द्रमा के वेधसे मिश्रफल (अच्छा खराब दोनों फल) होता है। शुक्र के वेध से यज्ञका लाभ होता है, गुरु के वेध से सर्व फल मिलता है ॥८—९॥

देवेश सहित देवगणताड़कासुर से परास्त होने पर आकासवाणी द्वारा यह जाना कि इस असुर का संहार शंकर के पुत्र से होगा, तब अग्नि को शंकरजीके संनिकट भिक्षाके लिये भेजे, वह वहाँ जाकर भिक्षाको मागे, श्रीपार्वतीजी भिक्षुक की वाणी श्रवण कर शंकरजीके वीर्यका भिक्षा दिया, अग्नि सहर्ष उसे लेकर निगल गये, कुछ समयके बाद शंकरजी के वीर्यकी ज्वालासे ज्वलित हो अग्निदेव उसी वीर्यकी वमन द्वारा गंगाजी के विसर्जन किये, उसी समय स्नानार्थ चन्द्रमा की स्त्रीयाँ गंगाजी में गई स्नान करने के समय कृत्तिकादि छः के गर्भ में वह वीर्य

प्रविष्ट हुआ। चन्द्रमा सगर्भा स्त्रियोंके देख कुलटा जान जब उन लोगों के तिरस्कार करने का विचार किये, यह कृतिका अनुमान कर अपना और उन पांचों का गर्भ सर्पतों के बीच में गिराई वे छवों पिण्ड एकत्र हो छमुख का बालक हो गया, उसे पार्वतीजी देख उठा ले गईं। उन बालक का "षडानन" नाम रख कर पालन पोषण करी यही ताड़कासुर का संहार किये। कृतिकादि के गर्भ में वास करने के कारण इनका कार्तिकेय वा स्वामिकार्तिक नाम हुआ। यद्यपि नक्षत्रों का आरम्भ अश्विनी से होता है, परन्तु श्री स्वामिकार्तिकजी का कृतिकादिक के गर्भ में निवास के करने के कारण विंशोत्तरी दसा में,परिघ दंड में पंचसलाका, सप्तसलाका दिग्द्वार नक्षत्र के विचार में, सर्वतोभद्र चक्रादि में पूर्वादिक दिशाओं में कृतिका से सात सात का न्यास है। अट्ठाईस नक्षत्रों का सम्पूर्ण चरण ११२ होता है, और यदि २७ हो नक्षत्र माना जाय तो १०८ चरण होते हैं ऐसी स्थिति में शतपद अवकहड चक्र का हो वा होडा चक्र का असंगत हो जाता है। परन्तु विचारणीय विषय यह है कि ११२ चरण में जो १२ चरण है वह नपुंसक संज्ञक हैं, और १०० चरण २० वर्णों के पाँच २ मात्र के कारण ये १०० चरण होते हैं इसीसे इसका "शतपद" नाम है। पहिले कृतिका के आरम्भ से 'अ' के पाँच विभाग हैं फिर 'व' के पांच विभाग हैं, फिर 'क' के पाँच विभाग हैं, फिर 'ह' के पाँच विभाग हैं. फिर 'ड' के पाँच विभाग हैं अतएव इसका "अवकहडादि' चक्र नाम होने में निर्विवाद सिद्ध है। इस सर्वतोभद्र चक्र में पूर्व में स्थापित नक्षत्रों के नीच' अवकहड' ए पाँच लिखें गये हैं प्रत्येक अक्षरों का विचार इस प्रकार हैं कि 'अ' से कृतिका के चार चरण और रोहिणी के प्रथम चरणागत वर्णों का बोध होता है। और 'व' से रोहिणी के द्वितीय तृतीय चतुर्थ चरणों का और मृगशिरा के प्रथम द्वितीय चरणगत वर्णों का बोध होता है। 'क' से मृगशिरा के तृतीय चतुर्थ और आर्द्रा के प्रथम पुनर्वसु के प्रथम द्वितीय चरणागत वर्णों का बोध होता है। 'ह' से पुनर्वसु के तृतीय चतुर्थ, पुष्य के प्रथम द्वितीय तृतीय चरणों का बोध होता है। 'ड' से पुष्य के चतुर्थ, चरण श्लेषा के प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ वर्णोंका बोध होता है। दक्षिण में जो मघादि नक्षत्र के सामने "मटपरत' लिखा है, सो'म' से मघा के चारो चरण का और पूर्वाफाल्गुनी के प्रथमचरणागत वर्णोंका बोध होता है। 'ट' से पूर्वाफाल्गुनी के द्वितीय तृतीय चतुर्थ और उत्तराफाल्गुनी के प्रथम द्वितीय चरणागत वर्णों का बोध होता है।

'प' से उत्तराफाल्गुनी के तृतीय चतुर्थ और हस्त के प्रथम चरण चित्राके प्रथम द्वितीय चरणागत वर्णों का बोध होता है। 'र' से चित्रा के तृतीय चतुर्थ और स्वाती के प्रथम द्वितीय तृतीय चरणागत वर्णों का बोध होता है। 'त' से स्वाती का चतुर्थ चरण और विशाषा के सम्पूर्ण चरणागत वर्णों का बोध होता है। पश्चिम में अनुराधादिक जो सात् नक्षत्र हैं उनके सामने जो "न य भ ब ख" वर्ण है सो 'न' से अनुराधा के चारो चरण ज्येष्ठाके प्रथम चरणागत वर्णों का बोध होता है। 'य' से ज्येष्ठा के द्वितीय तृतीय चतुर्थ मूल के प्रथम द्वितीय वर्णों का बोध होता है। 'भ' से मूल के तृतीय चरण और पूर्वाषाढा के प्रथम चरणागत प्रथम द्वितीय तृतीय चरणागतवर्णों का बोध होता है।'ख' से अभिजित् का चतुर्थ चरण और श्रवण के सम्पूर्ण वर्णों का बोध होता है। उत्तर में जो-धनि-ष्ठादि सात नक्षत्र हैं, उनके सामने "ग स च द ल" जैसे धनिष्ठा के चारोचरणों का और शतभिष के प्रथम चरणागत वर्णों का बोध होता है। 'स' से शतभिष के द्वितीय चतुर्थ और पूर्वभाद्र के प्रथम द्वितीय चरणागत वर्णों का बोध होता है। 'द' से पूर्वाभाद्र पद के तृतीय चतुर्थ चरण और उत्तरा भाद्रपदके प्रथम रेवती के प्रथम द्वितीय चरणागत वर्णों का बोध होता है। 'च, से रेवतीका तृतीय और अश्विनी का प्रथम द्वितीय चरणागत वर्णों का बोध होता है। 'ल' से अश्विनी के और भरणी के चारो चरणागत वर्णों का बोध होता। इन चतुर्दिक के सात २ नक्षत्रों में चतुर्थ २ नक्षत्रके द्वितीयादि तीन २ चरण नपुंसक हैं, पूर्व के आर्द्रानक्षत्रके "घ ङ ड" दक्षिण के हस्त नक्षत्रके "ष ण ठ' पश्चिम के पूर्वाषाढ़ नक्षत्रके "ध फ ढ, और उत्तर के उत्तरा भाद्रपद के नक्षत्र "थ झ ञ,, वर्ण नपुंसक हैं। इन बारह वर्णों का अन्यमात्र गतवर्ण नहीं देख पड़ते हैं अतःनपुंसक अवश्य हैं। नपुंसकों में आर्द्रा हस्त के तृतीय चरण और पूर्वाषाढा उत्तराभाद्र पदके चतुर्थ चरणोत्पन्न बालकों का नाम अतिविज्ञ दैवज्ञ ही बताय सकते हैं अन्य शास्त्रों के जाननेवालों की बुद्धि देखतेही विचलित हो जाती है।

इति श्रीदैवज्ञ भूषणमातृप्रसाद पाण्डेय गुम्फित सर्वतोभद्र चक्रस्य भाषाटीका समाप्त।

अथ द्वादश पक्षी शकुन विचार ।

प्रश्न कर्त्ता प्रातः काल किसी ज्यौतिषी के यहाँ जाकर उसके कथनानुसार इन बारहों कोष्ठों में से एक पुंगीफल किसी एक कोष्ठ में रखदेय, तदुपरान्त उस कोष्ठ पक्षी के कथनानुसार गणक उसके फल को कहैं ।

चक्रम्—

ममोल १	चकवा २	बकुला	तोता ४
मुर्गा ५	नीलकंठ ६	मोर ७	कोइल ८
सारस ६	कपोत १०	चील्ह ११	खंजन १२

वन में एक ब्रह्म ऋषि आये ।
द्वादश पक्षी निकट बुलाये ॥
अपनी अपनी बानी कहिये ।
तुमते सगुन लियो कछु चहिये ॥
ते बोले पुनि आपन बानी ।
तेहिते सगुन परिच्छा जानी ॥
ले पूगीफल कोष्ठ हि धरै ।
हरि सुमिरत मनते तब करे ॥

(१) ममोल वाक्यम्—

हो खंजन उत्तम वदन, मुख देखत जो कोय ।
धनप्राप्ति सुख लाभ अति, अति नीके फलहोय ॥

(२) चकवा वाक्यम्—

सुनु चकवा सब निशि गई, बीते तोर वियोग ।
कमल मुदित आदित उदय, कहिये सुख संयोग ॥

(३) बकुला वाक्यम्—

कहन करौ जनिमोर कछु, बचन कहत बकराज ।
जानहु ऋते ताल में, होत न मन के काज ॥

(४) तोता वाक्यम्—

करि संतोष समारि प्रभु, बसिये उत्तम धाम ।
अति आनन्द मनाइये, फल अति ललित ललाम ॥

(५) मुर्गा वाक्यम्—

कहत मुंचुर सुनु मुंचुरी ।
तिमिर गयो प्रगटे अवसूरी ॥
भयो भोर तम भाग्यो दूरी ।
तरणि प्रकाश ताप जग पूरी ॥

(६) नीलकंठ वाक्यम्—

कम्पित तन पियरे वदन, पिय सब काल वियोग ।
बहु विलाप निस दिन करहु होहिहैं नहिं संयोग ॥

(७) मोर वाक्यम्—

बिहरहिं नित जनि चित्त, कर धीरज धरता मोर ।
ऋतु पावस होइहैं बहुरि, खुलिहैं किसलै तोर ॥

(८) कोइल वाक्यम्—

कह कोइल सुनु कोकिला, होइहैं मन आनन्द ।
पाके विमल रसाल फल, मिटिहैं सब दुख द्वंद ॥

(९) सारस वाक्यम्—

सारस कह सुनु सारिका, या बन से सुख नाहि ।
बधिक बहुत जहँ तहँ रहत, धरे कपट मन माहि ॥

(१०) कपोत वाक्यम्—

कह कपोत चित चलि गयी, रहि गइ रस रीति ।
बहुत दिवस बीते मुनी, परै बहुरि परितीति ॥

(११) चन्द्रवाक्यम्—

कहत चील्ह मन मिलन रुचि, दिलमें रहै निसोस ।
कारज नहिं होने आहै, काह करब अफसोस ॥

(१२) खंजनवाक्यम्—

जल पक्षी चिन्ता न करु, बाढ़ी प्रीति विशाल ।
अतिशय सब सुख पाइये, मिटै सबै जंजाल ॥

इति द्वादश पक्षी शकुन बिचार समाप्तः ।

मुष्टि प्रश्नप्रदीप ।

श्रीगणेशं नमस्कृत्य मुष्टि प्रश्नप्रदीपकम् ।
मातृप्रसादः तनुते शिष्यबुद्धि विवृद्धये ॥ १ ॥

मुष्टि प्रश्न की इच्छा से आनेवाले मनुष्य से ज्योतिषी कहै कि तुम्हारी मुट्ठी में की वस्तु इन पाँच चक्रों में से किसमें है, जिस चक्र में वह अपने मुट्ठी के वस्तु को स्वीकार करे, उस चक्र को अच्छे प्रकार से समुझ ले फिर उससे कहै कि तुम्हारे मुट्ठी के वस्तु के सामने उस कोष्ठ में जो अंक हो उसको पहिचान लो और बताओ वह अंक किस २ चक्र में है जिस २ में वह बताता है उस २ चक्रों का नाम समुझ लेवै, फिर उन चक्रों के नाम का जो अंक हो उसको जोड़ने से प्रश्न कर्ता के प्रश्न की संख्या पंडित को मालूम हो जायगा । रजवन्ती चक्र की संख्या १, चन्द्रावती चक्र की संख्या २, कलावती चक्र की संख्या ४, ईशराजी चक्रकी सख्या ८, शुक्र वन्ती चक्रकी संख्या १६, सावित्री चक्र की संख्या ३२, है । इस ६ चक्रों में विचार करै ।

उदाहरण—किसी ने अपने मुट्ठी के वस्तु को चन्द्रावती चक्र में बताया उस कोष्ठ का अंक शुक्रवन्ती और सावित्री चक्र के कोष्ठ में भी बताया तो चन्द्रावती चक्र की संख्या २, शुक्रवन्ती चक्र की संख्या १६, सावित्री चक्र की संख्या ३२, इन चक्रों की संख्या जोड़ने से ५० हुआ, प्रश्न सूची में ५० वाँ 'भूषण' नामक चक्र में लिखा है, इससे मुट्ठी में "भूषण" बतावै ।

प्रश्न सूची ।

संख्या	नाम	संख्या	नाम	संख्या	नाम
१	फूल	२२	तार	४३	सूत या मोम
२	फल	२३	नून	४४	चीयाँ, लाही, चूरी
३	पत्ता	२४	मीठा	४५	रूई
४	वृक्ष	२५	पंखा	४६	सोट
५	काठ	२६	कौड़ी	४७	दाम (द्रव्य)
६	माटी	२७	मसाला	४८	रंग
७	खपड़ा	२८	औषधि	४९	काँच
८	कपड़ा	२९	चमड़ा	५०	भूषण
९	ईंटा	३०	रबड़	५१	कन्द
१०	लोहा	३१	केचुरि	५२	घास भूसा
११	पत्थर	३२	हाड़	५३	खुखुड़ी
१२	गोबर	३३	कंकड़	५४	सन
१३	सोना	३४	कोइला	५५	बीयाँ
१४	चाँदी	३५	छाल	५६	ऊख
१५	अन्न या तेलहन	३६	दुद्धी	५७	काँट
१६	काँसा	३७	मैनसिल	५८	किरवना या जीव
१७	जस्ता	३८	तुतिया	५९	हींग
१८	पीतल	३९	गन्धक	६०	खरी
१९	तामा	४०	पिनसिन्	६१	बालू
२०	कागज	४१	सुतरी	६२	चूना
२१	शीशा	४२	बटन	६३	खैर

रजवन्ती (१)

१ फूल	३ पत्ता	५ काठ	७ खपड़ा
६ ईन्टा	११ पत्थर	१३ सोना	१५ अन्न यातेलहन
१७ जस्ता	१६ तामा	२१ सीसा	२३ नून
२५ पंखा	२७ मसाला	२६ चमड़ा	३१ केचुरि
३३ कंकड़	३५ छाल	३७ मैनसिल	३६ गन्धक
४१ सुतरी	४३ सूत या मोम	४५ रूई	४७ दाम द्रव्य
४६ कांच	५१ कन्द	५३ खुखुड़ी	५० बीयां
५७ कांट	५६ हींग	६१ बालू	६३ खैर

चन्द्रावती (२)

२ फल या साग	३	६ माटी	७
१० लोहा	११	१४ चांदी	१५
१८ पीतल	१६	२२ वार	२३
२६ कौड़ी	२७	३० रवड़	३१
३४ कोइला	३५	३८ तुतिया	३६
४२ बटन	४३	४६ सोर	४७
५० भूषण	५१	५४ सन	५५
५८ किरवना या जानवर	५६	६२ चूना	६३

कलावती (७)

४ तृण	५	६	७
१२ गोबर	१३	१४	१५
२० कागज	२१	२२	२३
२८ औषधि	२९	३०	३१
३६ दुद्धी	३७	३८	३९
४४ चीयाँयालाहीयाचूरी	४५	४६	४७
५२ घास भूसा	५३	५४	५५
६० खरी	६१	६२	६३

* ईशराजी (८)

८ कपड़ा	९	१०	११
१२	१३	१४	१५
२४ मीठा	२५	२६	२७
२८	२९	३०	३१
४० पिनसिन	४१	४२	४३
४४	४५	४६	४७
५६ ऊख	५७	५८	५९
६०	६१	६२	६३

* उपनाम (पद्मावती)

शुक्रवन्ती (१६)

१६ कांसा	१७	१८	१९
२०	२१	२२	२३
२४	२५	२६	२७
२८	२९	३०	३१
४८ रंग	४९	५०	५१
५२	५३	५४	५५
५६	५७	५८	५९
६०	६१	६२	६३

सावित्री (३२)

३२ झाड़	३३	३४	३५
३६	३७	३८	३९
४०	४१	४२	४३
४४	४५	४६	४७
४८	४९	५०	५१
५२	५३	५४	५५
५६	५७	५८	५९
६०	६१	६२	६३

* उपनाम (चम्पा)

मातृ प्रसाद ज्योतिष

श्रीजगदम्बाकेचरण, रज कै पाइ प्रसाद।
रचते मातृ प्रसादको, द्विजवर मातृ प्रसाद ॥ १ ॥
जैसे ईश्वर सत्य है, सूर्य्य चन्द्र हैं सत्य।
तैसे मातृ प्रसाद को, भी जानैं सब सत्य ॥ २ ॥

प्रातःसायंकाल स्नानादि करके पुष्प फल द्रव्य लेकर ज्योतिषी के समीप जाय, नित्य कर्म से निवृत्त हुए ज्योतिषी को देख पुष्प फल द्रव्य देकर मित (थोड़े) अक्षरों में प्रश्न करे ज्योतिषी प्रश्न करे ज्योतिषी प्रश्न को सुनकर उससे कहै कि इस प्रश्न फल दाता नामक कोष्ठ में ईश्वर का नाम लेकर फूल या सोपारी अथवा अंगुरी धरो जिस कोष्ठ में वह अंगुरी धरी होय उस कोष्ठ की संख्या जानकर जिस पत्र में वह प्रश्न होय उस पत्र में उसी संख्या के सामने देखने से प्रश्न का फल ज्योतिषी जानकर कहै।

उदाहरण—रामनन्दन नामक ब्राह्मण गर्भिणी के पुत्र होगा की कन्या यह प्रश्न किया उससे कहा गया कि प्रश्न फल दाता नामक कोष्ठ में पुष्पादि में से कोई चीज धरो, वह रजवन्ती नामक कोष्ठ में सोपारी धरा, रजवन्ती नाम कोष्ठ की संख्या ४ है इससे गर्भिणी के पुत्र होगा की कन्या होगी इस हेडिङ्गवाले प्रश्न के नीचे चार संख्या के सामने देखा तो गर्भिणी को पुत्र होगा यह कहै।

* प्रश्नसूची *

१ वह हमारा सच्चा प्रेम करता है।
२ क्या मुझे दूसरी जगह जाना होगा।
३ स्वदेश छोड़ कर विदेश वास करना होगा।
४ परदेशी के घर आने में क्या बिलम्ब है।
५ जिस विवाह की बात उठी है इसका क्या फल होगा।
६ मेरी स्त्री अथवा मेरा स्वामी कैसा होगा।
७ गर्भिणी के पुत्र होगा।
८ जो आशा करता हूँ वह पूर्ण होगी।
९ जिस विषय का चेष्टा करता हूँ क्या वह पूर्ण होगा।
१० इस व्यापार में लाभ होगा।
११ नष्ट द्रव्य मिलैगा।
१२ बन्धु के समीप सद्व्यवहार पावोगे।
१३ मुझे आज का दिन शुभ है।
१४ जो स्वप्न देखा है उसका फल क्या है।
१५ मुकद्मा जीतैंगे।
१६ रोग अच्छा होगा।

* प्रश्न फल दाता *

१ जगदम्बा प्रसाद	२ आनन्दी	३ राधारमण	४ रजवन्ती
५ सरस्वती	६ अछैवर	७ मानकी	८ वृन्दावन
९ द्वारिका	१० रामलोलार्क	११ राम खेलावन	१२ उदित नरायण
१३ प्रभुदत्त	१४ हरिहर	१५ विश्वनाथ	१६ गौरीशंकर

* १ वह हमारा सच्चा प्रेम करता है *

१ वह प्रेम त्याग दो ।
२ सच्चा प्रेम करता है ।
३ प्रेम को छोड़ो अनिष्ट फल होगा ।
४ जिसको तुम मित्र समुझते हो वह तुम्हारा शत्रु है ।
५ सावधान रहो उस दुष्ट के प्रेम में न फँसो
६ हृदय से मित्रता है ।
७ प्रेम का परिणाम ठीक नहीं है ।
८ मित्रता निर्विकार चिरकाल तक रहने वाली है ।
९ यह प्रेम चिरकाल तक न रहेगा ।
१० सरल कपट रहित प्रेम है ।
११ प्रेम थोड़े दिनके लिये है ।
१२ वह तुम्हारा प्रेम चाहता है ।
१३ अच्छा प्रेम है ।
१४ तुमको वह विशेष प्यार नहीं करता ।
१५ छिः वह दुष्ट है ।
१६ कष्ट से प्यार करती है किन्तु किसी के समुझाने नहीं देती ।

* २ क्या मुझे दूसरी जगह जाना होगा *

१ घुमने मत जाव विपत आनेवाली है
२ परमेश्वर शीघ्रही तुम्हारा कल्याण करेंगे ।
३ वृथा घूमने मत जाव ।
४ बुद्धिमानी से रहने से यात्रा सुफल होगी
५ परदेश जाने से विपत् की डर है ।
६ जाव विशेष लाभ होगा ।
७ थोड़ी दूर जाने के तैयार रहो ।
८ कामना सफल होगा परदेश जाने के तैयार हो जाव ।
९ बिना कारण अन्य जगह जाना होगा ।
१० दूसरी जगह जाने से आनन्द होगा ।
११ परदेश में कष्ट होगा ।
१२ दूसरी जगह लाभ होगा ।
१३ दूसरी जगह मत जाना ।
१४ तुमको ईश्वर का भरोसा है ।
१५ बिना परदेश गये लाभ नहीं होगा ।
१६ निर्भय जाइये ।

* ३ स्वदेश छोड़कर विदेश वास करना होगा *

१ यह स्थान छोड़कर अन्यत्र मत जाव।
२ यहाँ नहीं रहना होगा दूसरे जगह की चेष्टा करो।
३ भाग्य वश आपको यहाँ ही रहना होगा।
४ धन कमाने की इच्छा हो तो विदेश में रहो।
५ बन्धु गणों के साथ रहो भला होगा।
६ परदेश में धन लाभ होगा।
७ घर में बन्धुगणों के साथ रहो विपद का डर नहीं है।
८ परदेश में अमङ्गल होगा।
९ स्वदेश छोड़ने से हानि होगी।
१० विदेश में सुखी होगे।
११ स्वदेश में रहो परदेश में न जाव।
१२ विदेश में आशा पूर्ण होगी।
१३ परदेश में श्रष्टता के साथ नहीं रहना उस में विपद होगी।
१४ अपरचित लोग से तुम्हारा सौभाग्य बढ़ेगा।
१५ स्वदेश मत छोड़ो।
१६ परदेश में सुख से रहोगे।

* ४ परदेशी के घर आने में क्या विलम्ब है *

१ परदेशी राजी खुशीसे शीघ्र आवेगा।
२ प्रेममें फसनेसे आने में बाधा पड़ी है।
३ बीमार है इससे देर होती है।
४ परदेशी की आशा छोड़ दो।
१५ ,, थोड़े विलम्ब में फिर आवेगा।
६ ,, बहुत शीघ्र आवेगा।
७ ,, विशेष कारण से न आवेगा,
८ ,, चिन्ता न करो।
९ परदेशी शीघ्र आवेगा।
१० ,, घबड़ाना नहीं शीघ्र उन्नति लाभ होगी।
११ ,, थोड़ा धन लेकर शीघ्र आवेगा।
१२ ,, लौटने में सन्देह है।
१३ ,, विलम्ब सेफिर आवेगा।
१४ ,, उसको भूल जाव।
१५ ,, बीमार इस समय है।
१६ ,. बहुत शीघ्र आवेगा।

* ५ जिस विवाह की बात उठी है उसका क्या फल होगा *

१ इस विवाह में तुम्हारे मित्रशत्रु होंगे।
२ इस विवाह से तेरा मंगल होगा।
३ इस विवाह को छोड़ दो नहीं तो कष्ट मिलेगा।
४ इस विवाह में सुख और सौभाग्य बढ़ेगा।
५ इस विवाह में तुम्हारा सर्वनाश होगा।
६ वासना परित्याग करो नहीं तो कष्ट की पारी हैं।
७ वह विवाह मत करो नहीं तो दुःख पावोगे।
८ इसका विवाह करने से सुखी होगे।
९ इस विवाह से तुम सुखी नहीं हो सकोगे।
१० पहिले कष्ट पीछे सुख होगा।
११ इस विवाह में बहुत विपद घटेंगी।
१२ इस विवाह में शुभ होगा।
१३ इस विवाह में कुछभी अच्छा नहीं है।
१४ विवाह में तुमको विशेष सुख होगा।
१५ इस विवाह में थोड़ा धन मिलेगा।
१६ इस विवाह में तुमको बहुत सुख मिलेगा।

* ६ मेरी स्त्री या मेरा स्वामी कैसा होगा *

१ गुणवान् पति या पतिव्रता स्त्री मिलेगी ।
२ सावधान अंशदार आता है सावधान रहो ।
३ इसकी अवस्था मध्यम है ।
४ इसकी अवस्था खराब होने पर भी यह सीधा है ।
५ इस विवाह में सुख नहीं पीछे पछताना होगा ।
६ लायक आदमी है ।
७ थोड़े उमर का विनयी मनुष्य मिलेगा ।
८ शीघ्र विवाह होगा व तुम्हारा मंगल हो ।
९ विवाह में विघ्न होगा ।
१० इस विवाह में बहुत विघ्न होगा ।
११ तुम्हारा परस्पर मन सुखी रहेगा ।
१२ तुम्हारे इच्छानुसार होगा ।
१३ बड़े घर में तुम्हारा विवाह होगा ।
१४ तुम धर्म में मनदेव सुख से रहोगे ।
१५ अच्छा नहीं होगा ।
१६ अपनी स्त्री से बहुत सुखी हो सकोगे ।

* ७ गर्भिणी के पुत्र होगा या कन्या *

१ एक कन्या होगी ।
२ एक अच्छा लड़का होगा प्रसव होगा ।
३ कन्या होगी ।
४ पुत्र होगा ।
५ कन्या होगी पीछे सुखी होगी ।
६ पुत्र होगा ।
७ एक दुर्बल कन्या होगी ।
८ बहुत अच्छा पुत्र होगा ।
९ सुन्दरी कन्या होगी ।
१० पुत्र होगा ।
११ गर्भिणी को कष्ट होकर कन्या होगी ।
१२ भाग्यमान लड़का होगा ।
१३ इस प्रसव से संतोष लाभ नहीं कर सकोगे ।
१४ दीर्घायु पुत्र होगा ।
१५ सावधान रहना कष्ट है ।
१६ इस गर्भ का फल दुःखदायक है ।

* ८ जो आशा करता हूँ वह पूर्ण होगी *

१ आशा शीघ्रही पूर्ण होगी ।
२ अभी आशा छोड़ो ।
३ असंभव न होने से तुम्हारी आशा असफल हो सकती है ।
४ आशा छोड़ो नहीं दुःख मिलेगा ।
५ कोई बन्धु तुम्हारा मनोरथ सफल करेगा ।
६ विलम्ब से फिर आवेगा ।
७ नहीं होगा ।
८ तुम्हारी वासना पूरी होगी ।
९ तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा ।
१० संकल्प छोड़ो मंगल होगा ।
११ मनोरथ पूरा होगा ।
१२ शीघ्र मनोरथ पूरा होगा ।
१३ ईश्वर जो देता है उसी में सन्तुष्ट रहो ।
१४ आशा छोड़ो ग्रह खराब हैं ।
१५ जिसके साथ सादी होगी कष्ट होगा ।
१६ वर्तमान अवस्था में सन्तुष्ट रहो ।

* ९ जिस विषय का चेष्टा करता हूँ क्या वह पूर्ण होगा *

१ तुम्हारा भाग्य अच्छा नहीं इससे ईश्वर से प्रार्थना करो ।
२ तुम्हारे सुख से दूसरा सुखी होगा ।
९ तुम्हारा भाग्य अच्छा नहीं ।
१० कार्य सफल होगा ।
११ तुम्हारे भाग्य में अनेक कष्ट लिखे हैं ।

३ भाग्य मन्द है मंगल का पूजा करो।
४ कार्य हो जायगा।
५ ग्रह खराब है ईश्वर से प्रार्थना करो।
६ अभी बहुत विघ्न अति क्रम करना होगा।
७ ईश्वर की कृपा से तुम्हारा भला होगा।
८ मनोरथ पूर्ण न होगा।
१२ आशा से अधिक लाभ होगा।
१३ मनोरथ सिद्धि होगा।
१४ तुम्ह शीघ्र ही सुखी हो सकोगे।
१५ तुम भाग्य के ऊपर सब बात मत निर्भर करो।
१६ तुम सुख से अभी दिन व्यतीत कर सकोगे।

* १० इस व्यापार में लाभ होगा *

१ ईश्वर तुम्हारे कार्य का अच्छा उपाय करें।
२ चतुर मनुष्यों के सदृश सावधान रहो लाभ की आशा नहीं है।
३ तुम्हारी भाग्य से बहुत लाभ होगा।
४ पुरुषार्थ से काम करने से बहुत धन लाभ करोगे।
५ जो खोजते हो वह थोड़े दिन बाद मिलेगा।
६ तुमको बहुत धन लाभ होगा प्रतीक्षा करो।
७ इस कार्य में तुमको लाभ नहीं है।
८ तुम्हारे व्यापार में बहुत विघ्न होंगे।
९ अभी कृतकार्य नहीं होंगे।
१० अभी कृतकार्य नहीं होंगे।
११ सामान्य लाभ होगा।
१२ लाभ की आशा व्यर्थ है।
१३ जिसकी आशा नहीं करते वही मिलेगा।
१४ नहीं लाभ होगा।
१५ घबड़ाना नहीं पीछे लाभ होगा।
१६ सरल भाव से कार्य करने से निश्चय लाभ होगा।

* ११ नष्ट द्रव्य मिलेगा *

१ खोया माल नहीं मिलेगा।
२ मिलैगा।
३ नहीं मिलैगा।
४ कुछ व्यय तथा परिश्रम से मिलेगा।
५ तुम्हारी वस्तु सहज में नहीं मिलेगी।
६ खोजने से मिलैगा।
७ व्यय होने से घबड़ाना नहीं पीछे लाभ होगा।
८ नहीं पावोगे।
९ किसी दुष्ट की सहायता से मिलेगा।
१० नहीं मिलैगा तुम्हारा व्यय होगा।
११ तुम्हारा खर्च होगा चोर दंड पावेगा।
१२ किसी समय तुम्हारी वस्तु फिर मिलैगी।
१३ नहीं मिलेगा।
१४ शीघ्र मिलैगा।
१५ नहीं मिलैगा।
१६ तुम्हारी भाग्य है इष्ट लाभ होगा।

* १२ बन्धु के समीप सद् व्यवहार पावोगे *

१ कपट मैत्री है।
२ कपटी मित्र से सावधानी से रहना।
३ सच्चा मित्र है विश्वास करो।
४ वह कपटी है उसकी बात का विश्वास मत करो।
९ तुम्हारा मित्र सरल स्वभाव का है।
१० कपटी बन्धु का विश्वास नहीं करना।
११ सच्चा प्रेम है विश्वास करो।
१२ उसका विश्वास मत करो।

५ यह सीधा है इसका सन्मान करो।
६ इसका विश्वास करने से पीछे पछताना होगा।
७ ये तुम्हारे सच्चे मित्र हैं।
८ जिसे तुम बन्धु समुझते हो वह तुम से घृणा करता है।
१३ कपटी मित्र है विश्वास न करना।
१४ सावधान रहो यह मित्र नहीं है गुप्त शत्रु है।
१५ हमेशा विश्वास करो।
१६ विश्वास मत करो वह दगाबाज है।

* १३ मुझे आज का दिन शुभ है *

१ सावधान रहना कुछ खराबी होने वाली है।
२ सावधान रहो शत्रु तुम्हारे पीछे हैं।
३ आज विपद् की संभावना है सावधान रहो।
४ आज सब आशा छोड़ो।
५ अनिष्ट होने वाला है सावधान रहो।
६ सावधान रहो काम होने वाला है।
७ शीघ्र भारी कष्ट आने वाला है।
८ तुम्हारे अच्छे दिन आते हैं।
९ शत्रुगण तुम्हारे अनिष्ट की चेष्टा करते हैं।
१० घबड़ाना नहीं शीघ्र लाभ उन्नति होगी।
११ तुम्हारा कोई कुछ नहीं कर सकता।
१२ भविष्यत् की आशा न करना।
१३ अच्छा दिन आने वाले हैं।
१४ शीघ्र महा कष्ट में पड़ोगे।
१५ आज तुम्हारे सुख का दिन है।
१६ आज कोई खराबी होने वाली है सावधान रहो।

* १४ जो स्वप्न देखा है उसका फल क्या है *

१ ईश्वर की उपासना करो अच्छा नहीं है।
२ किसी बड़े आदमी के कृपा का पात्र होगी।
३ तुमसे तुम्हारे कुटुम्ब के लोग प्रसन्न रहेंगे।
४ तुम्हारा अभीष्ट सिद्धि होने में अनेक विघ्न हैं।
५ ,, शत्रु छिप कर सर्वनाश करना चाहते हैं।
६ तुम्हारे भाग्य में दुःख लिखा है।
७ शीघ्र निष्कृति मिलेगी।
८ आज से आप का सौभाग्य उदित होगा।
९ बिना कारण चिन्ता मत करो।
१० कई एक मनुष्य तुम्हारी खराबी करना चाहते हैं।
११ तुम्ह भी कुछ धन लाभ करोगे।
१२ शीघ्र ही विवाह ठीक होगा।
१३ दुःख के बाद सुख होगा।
१४ जल्दी शुभ समाचार मिलेगा।
१५ आज सावधान रहो।
१६ तुम्हारे बन्धु गण सच्चे दिल से प्यार करते हैं।

* १५ मुकद्दमा जीतेंगे *

१ नहीं।
२ ठीक फैसला न होगा।
३ आकारण कष्ट भोगना होगा।
४ जय लाभ होने का संभावना है।
५ धन नष्ट होगा मन में कष्ट पावोगे।
९ धोखे बाजी का फल भोगना होगा।
१० अनर्थ मिथ्या साबूत मत देना।
११ बड़ी दुर्घटना की संभावना है।
१२ बदनामी होगी।

६ किसी पक्ष को आशा के अनुसार फल न मिलेगा।
७ राजीनामा करलो।
८ बहुत तकलीफ से जय होगा।
१३ कोई भय नहीं है।
१४ अधर्म की पतन ईश्वर की इच्छा।
१५ उदासीन मत रहना।
१६ जीतने की संभावना नहीं है।

*** १६ रोग अच्छा होगा ***

१ मृत्यु निकट है अच्छा नहीं होगा।
२ रोगी के अच्छा होने की आशा कम है।
३ रोगी शीघ्र आराम होगा।
४ खराब बिमारी है ईश्वर से प्रार्थना करो।
५ कोई चिन्ता नहीं शीघ्र अच्छा होगा।
६ अच्छा होना कठिन है।
७ अच्छा होगा।
८ रोगी आरोग्य होगा।
९ रोगी फिर आरोग्य होगा।
१० मृत्यु निकट है सावधान रहना।
११ रोगी जल्दी आरोग्य होगा।
१२ आरोग्य होना कठिन है।
१३ इस रोग से छुटकारा पा सकोगे।
१४ आरोग्य नहीं होगा।
१५ आरोग्य होगा।
१६ पीडा विशेष होगी।

* ग्रन्थकर्तुः परिचयः *

श्रीसाङ्कृत्यकुले मनीषिमुकुटोविश्वेश्वरोऽभूत् ततः।
श्रीकालीचरणोऽङ्ग दर्शन बुधोसद्धर्म विज्ञस्ततः॥
श्रीमच्छत्र धराद्वरैकगणकान्मातृप्रसादोऽस्तियः।
पञ्चाब्धीभमहीशकेऽव्यरचयत् सोऽदःशिवप्रीतये॥१॥

श्रीसांकृत्यकुल में विद्वानों का मुकुटमणि पूज्यपाद श्रीविश्वेश्वर पाण्डेयजी हुए उनके पुत्र सम्पूर्णदर्शवेदाङ्ग के विज्ञ सद्धर्मज्ञ श्रीकालीचरण जी हुए उनके पुत्र जिसके सदृश भूमितल में अन्य विद्वान नहीं ऐसे श्री छत्रधर जी हुए जिसके पुत्र मातृप्रसादजी हैं जो शिव के प्रसन्नार्थ इस ग्रन्थ को टीका सहित शाका १८४५ में निर्माण किये।

॥ समर्पण ॥

पुष्पं सप्तदशं दिव्यं जनानां स्वस्तिदं सदा।
प्रेमात्समर्पयेत् पाणौ पितुः कैलाश वासिनः॥

इति श्रीदैवज्ञभूषणमातृप्रसादगुम्फित ज्योतिस्सारे विशेषदिग्दर्शने दैवज्ञरत्नहारे पद्मरत्नः समाप्तः।

॥ इतिशम् ॥

श्री विश्वेश्वर प्रेस, काशी में मुद्रित।